श्री गुरुजी समग्र

खंड
८

पत्र-संवाद

स्वत्वाधिकार

डा हेडगेवार स्मारक समिति
डा हेडगेवार भवन
महाल नागपुर-४४००३२

प्रकाशक

सुरुचि प्रकाशन
देशबन्धु गुप्ता मार्ग
नई दिल्ली-११००५५

प्रथम संस्करण

माघ कृष्ण एकादशी युगाब्द ५१०६

मुद्रक

गोपसन्स पेपर्स लि
नोएडा-२०१३०१

मूल्य प्रति सच

दो हजार रुपए



पारिभाषिक शब्द

सरसघचालक – सघ के मार्गदर्शक।

सरकार्यवाह – सघ के निर्वाचित सर्वोच्च पदाधिकारी।

सघचालक – स्थानीय कार्य व कार्यकर्ताओं के पालक।

मुख्यशिक्षक – नित्य चलनेवाली शाखा के कार्यक्रमों को सचालित करनेवाला।

कार्यवाह – शाखा क्षेत्र का प्रमुख।

गटनायक – शाखा क्षेत्र के एक छोटे भौगोलिक भाग का प्रमुख।

प्रचारक – सघकार्य हेतु पूर्णत समर्पित अवैतनिक कार्यकर्ता।

शाखा – सस्कार निर्माण हेतु नित्यप्रति का एकत्रीकरण।

उपशाखा – एक स्थान पर चलने वाली विभिन्न शाखाएँ।

बैठक – विचार-मथन व सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया हेतु एकत्र बैठने की प्रक्रिया।

बौद्धिक – वैचारिक प्रबोधन का कार्यक्रम भाषण।

समता – अनुशासन के प्रशिक्षण हेतु शारीरिक कार्यक्रम।

सपत् – कार्यक्रम प्रारभ करने हेतु स्वयसेवकों को निश्चित रचना में खडा करने की आज्ञा।

विकिर – शाखा-कार्यक्रम की समाप्ति की अतिम आज्ञा।

दड – लाठी।

चदन – एक साथ मिल-बैठकर जलपान करना।

सहभोज – अपने-अपने घर से लाए भोजन को एक साथ मिल-बैठकर करना।

शिविर – कैंप।

सघ शिक्षा वर्ग – सघ की कार्यपद्धति सिखाने हेतु क्रमबद्ध त्रिवर्षीय प्रशिक्षण योजना।

सार्वजनिक समारोप – शिविर तथा वर्ग का अतिम सार्वजनिक कार्यक्रम।

खासगी समारोप – वर्ग का केवल शिक्षार्थियों के लिए दीक्षात कार्यक्रम।

खड - ८

पत्र-सवाद

इस खड मे प्रत्यक्ष सघकार्य से सबधित स्वयसेवको कार्यकर्ताओ तथा अधिकारियो को कार्य के विषय मे अथवा उनकी व्यक्तिगत समस्याओ के विषय मे लिखे श्री गुरुजी के पत्रो का समावेश है।

पत्र-सवाद

१ सघकार्य वृद्धि मे प्राणपण से जुटे

श्री मद्गोपालजी, वाराणसी ७ जुलाई, १६३६

सघकाय हमारे लिए ज्वलत प्रश्न है। सघ हमारे खून में इस तरह समाया हुआ है कि अब वह अगभूत हो गया है। सभी प्रकार के निजी स्वार्थ के ऊपर हमें उठना है। क्योंकि हम लोगों ने जीवन के मर्म को ही स्पर्श किया है। हमारे अपने स्नायु हृष्टपुष्ट कर बाहु बलशाली बनानेवाले व्यायाम-प्रकारों के विषय में सोचना ठीक नहीं। जब हमारा जीवन-रस ही सूख रहा हो, तब ये गतिविधियाँ लाभदायक नहीं, अपितु घातक हैं। कुछ सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों का आश्रय लेना भी, मानो जिस रोगी की नाडी छूट रही है, उसके गले में पौष्टिक अन्न ठूँसने के समान है। रोगी के लिए ये उपाय नहीं, किंतु ऐसे उपायों का सहारा लेना चाहिए कि जिनसे रोगी का हृदय सशक्त हो, रुधिराभिसरण ठीक से होने लगे तथा मस्तिष्क को चेतना मिले।

विराट हिंदू समाज-शरीर के विषय में भी ऐसा ही विचार करना होगा। उसे केवल पोष्टिक आहार की नहीं, किंतु जिन उपायों से उसका हृदय सशक्त होगा, श्वासोच्छवास प्रक्रिया ठीक होकर उस शरीर को नवचैतन्य प्राप्त होगा, ऐसे उपायों की आवश्यकता हे। पौष्टिक आहार यह बाद की आवश्यकता है। तब तक ये उपाय अनावश्यक ही नहीं, अपितु हानिकारक भी हैं।

मुझे लगता है कि आपको उपदेश करने का मेरा अधिकार नहीं, क्योंकि बुद्धिमत्ता एव इतर गुणों में आप मुझसे बडे हैं। मुझे लगा, मैं आपको याद दिला दूँ कि आप जगल के राजा सिंह है, बडबडाते सियार

नहीं। हम आपकी सिंहगर्जना तथा संपूर्ण उत्तरप्रदेश और पंजाब में संघ के विजय-अभियान की वार्ता सुनना चाहते हैं। हम कदापि न भूलें कि बहुत कुछ कार्य करना है तथा समय बहुत कम है। विश्व का वातावरण प्रतिक्षण तेजी से बदल रहा है। कौन जाने, कब और कैसे अनपेक्षित और पूर्व संकेत के बिना कोई अवसर आ जाए तथा हमें अकस्मात कर्मक्षेत्र में कूदना पड़े। उस समय यदि अवसर का उचित लाभ नहीं उठाया गया तो फिर कभी यह पुन: प्राप्त ही न हो। फिर आपत्तियों और अध:पतन का चक्र चलता रहेगा तथा आशा की किरण की प्रतीक्षा में अंधेरे घेरे में बैठे रहना पड़ेगा।

हमें यह कहने का मौका न आए, कि समय ने हमें धोखा दिया। उसके आते ही उसको पकड़ लेने के लिए हम कटिबद्ध रहना सीखें। जिस प्रकार हम सन् १९१४ की पीढ़ी पर, मौके का लाभ न उठाने का दोषारोपण करते हैं, उसी प्रकार आनेवाली पीढ़ी भी हमपर दोषारोपण करेगी कि हमने मौके को हाथ से निकलने दिया। समय रहते हम चेतें और देशभर में संघ की शाखाओं का लोहसदृश कठिन तथा रेशम-सा मृदुजाल बिछाने के कार्य में इस तरह प्राणपण से जुट जाएँ कि समय रहते उनसे लाभ उठा सकें।

सब कुछ भूल जाना, सब भावनाएँ नियंत्रण में ही रखना, अपनी सब गतिविधियों को उच्च क्षणों के लिए पीछे छोड़ देना, और जीवन के आखिरी क्षणों में ही सब कार्य करना हमें शोभा नहीं देता।

आप श्रद्धा की जीवंत ज्योति है। आप अपने हृदय की श्रद्धा-ज्योति से युवकों के हृदय प्रज्ज्वलित करें, ताकि वे ध्येय से विचलित न हों, झूठे प्रलोभनों से अपने मार्ग से न हटें। 'खाओ, पियो और जियो'– इस तरह के क्षुद्र स्वार्थ के लिए जीवन के अन्य प्रलोभनों में फँसकर पशुतुल्य जीवन की ओर अग्रसर न हों। उच्च ध्येय प्राप्ति के लिए युवकों को शहीद एवं त्यागी बनने दें।

मुझे आशा है कि आप मेरे विचार समुचित परिप्रेक्ष्य में ग्रहण करेंगे। काम करो, काम करो, अपने ध्येयप्राप्ति के लिए निश्चयपूर्वक काम करो: केवल पता, नाम, प्रसिद्धि तथा संसार के नश्वर सुखों की चिंता न करो।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ध्वज बढ़ते हुए क्षेत्रों में लहरा रहा है, यह वार्ता मैं वाराणसी से सुनूँगा। मुझे मालूम है, मैं जरूर सुनूँगा।

(मूल अंग्रेजी)

२ अटक पार भगवा ध्वज लहराता रहे

पू आवाजी हेडगेवार, नागपुर

ऑफिसर ट्रेनिंग कैंप (लाहौर)
३१ अगस्त, १६३८

वहुत देर होने से उन्होंने (पू डाक्टर जी) सघ का हिंदू-राष्ट्र सरक्षक, सघटनात्मक, शक्ति-सवर्धक तत्त्वज्ञान तथा कार्यपद्धति समझाकर सघ की अलिप्तता भी सक्षेप में परतु सुस्पष्ट रीति से वताई उसी प्रकार वर्तमान परिस्थिति में सघ ही हिंदूधर्म, सस्कृति, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा करने का अचूक मार्ग है अत्यत मार्मिकता से रखा। इतने थोडे समय में (आधे घटे मे) इतने स्पप्ट तथा सूत्रवद्ध रीति से सघ का सर्वांगीण विवेचन क्वचित सुनने को मिलता है। भापण इतना मधुर और आकर्पक था कि इच्छा निर्माण हो कि वह घटा आधा घटा और चलता रहे।

डा सर गोकुलचद नारग पजाव के अत्यत प्रतिष्ठित, सुज्ञ, हिंदुत्वाभिमानी तथा सघ प्रेमी सज्जन हैं। उन्होंने इस वर्ष नागपुर के विजयादशमी महोत्सव का अध्यक्ष पद स्वीकार किया है। उनपर इष्ट परिणाम होकर सघ के कार्य के प्रति आत्मीयता उत्पन्न कर सकें, तो पजाव प्रात सघमय हो जाएगा। उनका प्रात में वहुत प्रभाव है। वे सभी पक्षोपपक्ष के हिंदुओं में अत्यत लोकप्रिय हैं। उनपर उत्कृष्ट सस्कार करने से पजाव में अत्यत शीघ्र तथा सुलभता से सघ मजवूत नींव पर खडा होगा। नागपुर का इस वर्प का विजयादशमी उत्सव अत्यत धूमधाम से मनाए जाने की वहुत वडी जिम्मेवारी केंद्र पर है। आप इस पत्र का यह अश अधिकारियों तथा योग्य स्वयसेवकों को पढकर सुनाएँ तथा उन्हें सपूर्ण शक्ति जुटाकर भर्ती (रिक्रूटिंग) तथा प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) में सपूर्ण समय लगाने को उत्साहित करें। एक ही वाक्य में कहना हो तो इस वप का सफल विजयादशमी महोत्सव, याने राघोवा पेशवा की सुप्रसिद्ध दौड हो। अतर इतना ही है कि राघोवा पेशवा द्वारा अटक पर फहराया गया झडा शीघ्र ही स्थानच्युत हो गया, किंतु अपना ध्वज यावच्चद्रदिवाकरौ इस एक उत्सव के कारण पचनद में अटक पार तक वैभव से लहराता रहेगा।

(मूल मराठी)

३ समाज-सपर्क ही प्रचार का प्रभावी साधन

श्री धर्मवीर जी, लाहौर ६ दिसबर, १६३६

प्रचार के विषय में हमारा दृष्टिकोण इतना स्पष्ट है कि किसी को भी इसके बारे में सशय नहीं होना चाहिए। हमें अपने कार्य के प्रचार के लिए वृत्त-पत्रों का सहारा नहीं लेना चाहिए। समाज-सपर्क के हमारे अन्य स्थानों में हमारा प्रचार-कार्य तेजी से चल रहा है। कृपया पजाब की समस्त शाखाओं के कार्य का मासिक वृत्त मुख्य कार्यालय में भेजें। (मूल अग्रेजी)

४ शिक्षा-केन्द्रो के लिए आवश्यक बाते

मा वि गो आप्टे, पुणे ५ फरवरी, १६४०

जिन जिलों में शिक्षा-केंद्रों की सुविधाजनक व्यवस्था करना आवश्यक तथा सभव हो, वहाँ उन्हें प्रारभ किया जा सकता है। जिस गाँव में यह शिक्षा-केंद्र खोलना हो, वहाँ सघ का वातावरण तेजस्वी तथा चैतन्ययुक्त चाहिए। वहाँ सघ की विचार-प्रणाली तथा भावनाओं से समरस हुए कायकर्ता शिक्षक हों, प्रतिष्ठित सघनिष्ठ सज्जन हों।

मा काशीनाथराव लिमये (महाराष्ट्र प्रात सघचालक) के परामर्श से जो उचित तथा व्यवहार्य लगे वह करें। सप्रति आप पर तृतीय वर्ष (सघ शिक्षा वर्ग) का भार सौंपने का विचार नहीं है। प पू डाक्टर साहब राजगीर गए हुए हैं। मार्च में लौटकर आएँगे। (मूल मराठी)

५ सघ मे सस्कृत प्रार्थना का प्रारभ

श्री यादवराव जोशी, झासी २२ अप्रैल, १६४०

परसों प पू डाक्टर साहब राजगीर से वापस आए। OTC (सघ शिक्षा वर्ग) में सस्कृत प्रार्थना शुरू करनी है। प्राथना कहने का दायित्व आप पर होगा। लिखित प्रार्थना आपको भेज रहा हूँ। उसको अच्छी प्रकार कठस्थ करें। अच्छी प्रकार सस्वर नि सकोच गाने की तैयारी की जाए।

प पू डाक्टरजी का स्वास्थ्य सामान्य है। दिनाक २६ को पुणे में जाकर वहाँ के OTC में १५ दिन रहकर वापस आएँगे। (मूल मराठी)

६ संघ-कार्य विशिष्ट कार्यक्रमों पर निर्भर नहीं

श्री राजाभाऊ पातुरकर, २४ अप्रैल, १९४०

बदली हुई परिस्थिति में अपने कार्य की प्रगति तेजी से हो रही है, इसका अर्थ है कि अपना कार्य किन्हीं भी विशिष्ट कार्यक्रमों पर पूर्णत निर्भर नहीं है। अपने उद्दिष्ट तथा कार्यपद्धति के भीतर इतनी अदरूनी शक्ति है कि सब प्रकार की परिस्थितियों में से मार्ग निकालते हुए वह सफल ही होता जाएगा। (मूल मराठी)

७ श्री गुरुजी का प्रथम पत्रक

नागपुर,

परम मित्र

सप्रेम नमस्कार।

अपने सरसंघचालक परमपूजनीय डा हेडगेवार जी के स्वर्गवास का वृत्त आपको पता होगा ही। गत डेढ महीने से उन्हें हल्का बुखार रहता था। किंतु इस बुखार का परिणाम उनकी मृत्यु में होगा इसका बोध किसी को नहीं था। गुरुवार दिनाक २० को अकस्मात उनका स्वास्थ्य बिगड गया, दूसरे दिन ज्येष्ठ वद्य २ को अर्थात् शुक्रवार २१ जून सबेरे ९ बजकर २७ मिनट पर कालपुरुष उन्हें हम से छीन कर ले गए।

अपने परमपूजनीय डाक्टर जी की मृत्यु के कारण हम सभी पर जो आघात हुआ है, उसे बताने की आवश्यकता नहीं, किंतु परमेश्वर की इच्छा के सम्मुख मानव कुछ भी नहीं है। केवल यह बात ध्यान में रखकर, धैर्य के साथ प्राप्त स्थिति में उन्होंने जो संघकार्य निर्माण किया है, उसे दिन-प्रतिदिन वृद्धिगत करने हेतु प्रयत्नरत होना आवश्यक है।

परमपूजनीय डाक्टर जी की मृत्यु की तेरहवीं ३ जुलाई को आ रही है। सभी शाखाओं में इसे मनाया जाना चाहिए। शाम को संघस्थान पर सभी स्वयंसेवकों को एकत्रित किया जाए, ध्वज और परमपूजनीय डाक्टर जी के चित्र को पुष्पहार समर्पण कर उनके गुणों का गौरवपूर्ण उल्लेख कर, उनके द्वारा निर्माण किया हुआ राष्ट्रीय संगठन का विचार तथा कार्यवृद्धि पर जिम्मेदार अधिकारियों के समयोचित भाषणों की योजना बनाई जाए

तत्पश्चात् प्रार्थना व ध्वजप्रणाम हो। अत में 'सरसघचालक प्रणाम १,२,३' इस आज्ञा के साथ कार्यक्रम समाप्त करें। यह कार्यक्रम सघचालक के नेतृत्व में सामान्य वेश में करें। अपने शहर के सघ-हितचितकों को आमत्रित किया जाए। केंद्र में परमपूजनीय डाक्टर जी का मासिक श्राद्ध रविवार २१ जुलाई को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आपकी शाखा से कुछ अधिकारी बधु भी बुलाए जाएँगे। शीघ्र ही औपचारिक प्रपत्र आप तक पहुँचेगा।

८ सूचना

श्री रावसाहेब बागडे, २५ जून, १९४०

सलग्न पत्रक की एक प्रति अपने जिले की प्रत्येक सघशाखा को भेजिए व इस प्रसग के व्यवस्थित कार्यरूप हेतु उनसे विनती करें। प्रसग कितना ही दु:खद हो तो भी उससे भावी कार्य हेतु प्रेरणा मिलेगी व समस्त स्वयसेवकों के हृदयातर्गत तीव्रतम स्फूर्ति अखड स्फुरित रहेगी, इस तरह का गाभीर्य उत्पन्न हो, इस प्रकार के सक्षिप्त व नियोजित भाषण हों। केंद्र के २१ जुलाई के सबधित पत्रक शीघ्र भेज रहे हैं।

सभी सघचालक व कुछ आवश्यक प्रमुख व्यक्तियों की नागपुर में अनिवार्यत आने की व्यवस्था हो।

पुनश्च– पत्रक सभी सघचालकों को दिए जाएँ। भूलवश एक-दो पत्रक आने पर प्रतिलिपि कर कमी-पूर्ति करने की कृपा कीजिए। (मूल मराठी)

९ त्वमेव माता, पिता त्वमेव

श्री विनायकराव आप्टे, पुणे (महाराष्ट्र) २७ जून, १९४०

जिन्होंने पिता, माता, बधु, मित्र, गुरु, नेता सभी नाते से प्रत्येक स्वयसेवक के जीवन में अविचल अधिष्ठान प्राप्त कर लिया था, जिस एकमेव व्यक्ति की ओर सभी अत करण आकृष्ट हुए थे, जिनके विषय में असीम निष्ठा सभी हृदयों में थी और रहेगी, उस महापुरुष के अकस्मात समाधिमग्न होने से सभी की अवस्था क्या हुई होगी, यह बतलाना असभव है।

अपने इस सघकार्य को बढाना ही प पू डा हेडगेवार जी का चिरस्थायी स्मारक होगा। यही एकमात्र कार्य अब शेष है। शाखा के तरुणों-प्रौढों में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, विश्वास तथा आदर कैसे पैदा

होगा, इसकी वे अहोरात्र चिंता किया करते थे। उनकी जीवितावस्था में जो नहीं हो पाया, वह उनके पुण्यस्मरण को साक्षी रखकर उनका ही जीवित कार्य अपने कर्तृत्व और त्याग से पूर्ण करने की प्रतिज्ञा कर, हम सफल बनाएँ। अभी तक जो कभी नहीं हो सका, वह प पू डाक्टर जी की पुण्याई से होकर रहेगा तथा सघकार्य अप्रतिहत वेग से बढेगा। सभी को उत्साह तथा प्रतियोगिता के भाव से कार्यक्षेत्र में कूद पडने को उद्यत करें।

(मूल मराठी)

१० कार्यकर्ता का लक्षण

श्री सद्गोपालजी, प्रयाग — १५ जुलाई, १६४०

मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप दु ख एव अनावश्यक पश्चाताप करना छोड दें। सगठन के एक बहुमूल्य व्यक्तित्व के रूप में मैं आपको जानता हूँ। ऐसे बहुत कम लोग होंगे, जिनके लिए कार्य बोझ नहीं, किंतु स्वयस्फूर्ति से स्वीकृत किया गया कार्य है। आप उन व्यक्तियों में से एक हैं। अपने कार्य से आप यह बात सिद्ध कर देंगे, यह मुझे पूर्ण विश्वास है। जितना कार्य करना चाहिए, उतना आप कर नहीं सके, ऐसा यदि आपको लगता है, तो यह बात स्वाभाविक है। कोई भी प्रामाणिक कार्यकर्ता कभी अल्प सतुष्ट नहीं रह सकता। अपनी कार्य-निष्पत्ति से अतृप्ति ही, निष्ठावान तथा अविचल कार्यकर्ता के एक प्रकार से दिव्य असतोष का ही लक्षण है। इसलिए यदि आप विचलित हैं तो यह स्वाभाविक है, किंतु परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं कि विचार करते बैठने के लिए, तथा अपने को छोटा समझने के लिए गुजाइश नहीं है। इसलिए आप अपने को छोटा क्यों समझते हैं? स्वय को न्याय दो और अपनी सचेतना जागृत कर कार्य के रथचक्र को सँभालो। आप इन निराशाजनक विचारों का त्यागकर अपने में उत्साह भर देंगे, ऐसी आशा करूँ? (मूल अग्रेजी)

११ हिंदू सगठन हमारा लक्ष्य

प्रा मलकानी, हैदराबाद (सिंध) — १६ अगस्त, १६४०

सेना का निर्माण हमारा उद्देश्य नहीं है। हम सगठित समाज-जीवन निर्माण करने पर विश्वास रखते हैं। हिंदू-समाज में एकात्मता निर्माण करना हमारा ध्येय है।

१२ संघ का ध्येयसूत्र

के सदाशिव राव, मंगलोर — २४ अगस्त, १६४०

सभी हिंदू एक हैं। एकता हमारा अधिष्ठान है। भाषा, प्रांत, रहन-सहन आदि विविधताएँ केवल ऊपरी आभास हैं। इसकी अनुभूति आज की नितांत आवश्यकता है। यह है संघ का ध्येय और उसके साक्षात्कार के लिए हम कटिबद्ध हैं। (मूल अंग्रेजी)

१३ यह ईश्वरीय कार्य है

श्री एकनाथ कुलकर्णी, भाग्यनगर (आंध्रप्रदेश) — २६ अगस्त, १६४०

लगता है कि आप उत्तम रीति से शाखा चला रहे हैं। आपके हृदय की यह व्याकुलता कि अपनी इच्छानुसार अभी तक कार्य नहीं हो रहा, भावी सफलता की जननी है। अपने सिद्धांत शुद्ध हैं, अधिष्ठान पवित्र है तथा सारे श्रेष्ठ गुणों तथा भावों पर अपना कार्य आधारित है। इसलिए सफलता मिलनी ही चाहिए। अपना मार्ग कंटकमय है, परंतु वह निश्चित सफलता और उज्ज्वल भविष्य की ओर अचूक ले जानेवाला है। यह एक ही मार्ग है। प्रत्येक विचारवान व्यक्ति इसे स्वीकार करेगा। किसी भी परिस्थिति में अपनी धृति खंडित न होने देते हुए, कर्तव्य-तत्पर रहना चाहिए। यह ईश्वरीय कार्य है और धैर्य एवं लगन से कार्य करनेवालों के साथ ईश्वर रहकर, उनका मार्गदर्शन कर सफल बनाएगा— यह मेरा अटल विश्वास है। यही विश्वास रखकर कार्य करते रहें। (मूल मराठी)

१४ कार्यकर्ता में अदम्य निष्ठा हो

श्री दादाराव परमार्थ, चेन्नै (प्रांत प्रचारक) — २७ अक्तूबर, १६४०

यहाँ के उत्सव सभी बाधाओं में से मार्ग निकालते हुए ठीक प्रकार से संपन्न हुए। बाधाओं के बावजूद उत्साह बढ रहा है। शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम पूर्णतः चालू रखने में कोई रुकावट दिखाई नहीं देती। इस संबंध में आपने क्या सोचा, यह सूचित करें। संप्रति ऐसा लगता है कि हम सब ऐसा व्यवहार करें कि कार्यक्रमों के बिना ही अपने कार्य की प्रगति होती रहे तथा प्रतिष्ठा बढती रहे। मेरे प्रवास में मुझे सर्वत्र उत्साह दिखाई दिया।

प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने निर्दोष व्यवहार, त्याग, शील, सघ के प्रति अदम्य निष्ठा से सभी के आदर और प्रेम का पात्र होना चाहिए। इससे केंद्र के प्रति निष्ठा निमाण होगी तथा उस निष्ठा में से कर्तृत्वशक्ति पैदा होकर वास्तविक सगठित कार्य निर्मित होगा। (मूल मराठी)

१५ समस्त हिंदू जनता सघमय हो

श्री अनलराव पटवर्धन, देवास ४ नववर, १६४०

सुविज्ञ, सुसस्कृत तथा समाज द्वारा सम्मानित लोगों द्वारा ही इस कार्य की धुरा वहन करनी चाहिए। तभी हिंदू-समाज को सगठित कर जो महान सामाजिक सामर्थ्य निर्माण करने का अपना प्रयास चल रहा है, वह शीघ्र पूर्ण होगा। वर्तमान परिस्थिति में समस्त हिंदू जनता को सघ में लाना नितात आवश्यक है। (मूल मराठी)

१६ डाक्टर जी के उपदेश पर चले

श्री भाऊसाहेब शुक्ल, नासिक २६ जून, १६४१

एक वर्ष हुआ। एक बडी बीमारी में से आपने प्राणपण से मेहनत कर परमपूजनीय डाक्टर जी को बचाया तथा उन्हें आरोग्य लाभ करवाया। एक वर्ष की अवधि में कितना वज्राघात हुआ। परतु इस घटना या आघात से दिल नहीं बैठना चाहिए। धीरज से कार्यतत्पर होने का निश्चय कर, अपने में उत्साह भरना चाहिए। यद्यपि चारों ओर अधकार दिखाई देता हो, तो भी उस महापुरुष के जीवन-चरित्र का प्रखर सूर्य हमें मार्ग दिखाने को दीप्तिमान है। उसके प्रकाश में हम कार्यप्रवण हों तथा यश सपादन करें।

परम पूजनीय डाक्टरजी की बीमारी की अवस्था डिलिरियम' (बेहोशी) में उन्हें एक बात का बार-बार स्मरण होता था कितनी ही बार व्याकुलता से मुझसे कहा शाखा में कितने उत्तम, कितने स्नेह भरे कार्यकर्ता हैं, परतु उन सब लोगों में Harmony (सामजस्य) क्यों नहीं निर्माण हो सका। यदि वैसा हुआ तो वह शाखा प्रथम श्रेणी की अवश्य होगी।

और उनकी वह आतरिक इच्छा पूर्ण करना, अर्थात् उनके बारे में अपने हृदय में रहनेवाला प्रेमादर-भाव वास्तविक रूप में प्रकट करना है।

हम उनसे अशत उऋण कैसे हो सकेगे? एक ही मार्ग है। उन्होंने सगठन को प्राणों से अधिक सभाला, रात-दिन बूँद-बूँद रक्त सुखाकर बढाया। वह उनका महान स्मारक है। उनकी व्यक्तिदेह जाने के बाद दिखाई देनेवाला यह उनका समष्टितनु है। उस सगठन की प्राणपण से सेवा करना, व्यक्ति की सारी आशा-आकाक्षाएँ जलाकर, विशेषत व्यक्ति का व्यक्तित्व, मान-अपमान, रागद्वेष सब भूलकर एक विचार एक ध्येय से कार्यरत हो, 'नान्य पथा विद्यते'– इसके सिवाय अन्य मार्ग नहीं है, के भाव से कार्य करना।

और मानापमान किससे? सघ के स्वयसेवकों के परस्पर सबध मानापमान के परे रहने चाहिए। उनमे राग-द्वेष को स्थान न हो। परमपूजनीय डाक्टर जी कहते थे कि पूर्ण विश्वास, प्रेम, अचल ध्येयनिष्ठा को सदैव मन में जागृत रखकर कार्य करते रहना, व्यक्ति का विचार छोड देना, यही एकमेव कार्य होना चाहिए। उनका उपदेश आचरण में लाने के लिए हम कमर कसें तथा उनके जीवन का एकमात्र ध्येय पूर्ण करें।

आपका निरपेक्ष प्रेम है, इसलिए यह सब लिखा है। अप्रसन्न न हों। (मूल मराठी)

१७ दक्षिण मे प्रथम सघचालक की नियुक्ति

वि राजगोपालाचारी, चेन्नै २ मार्च, १९४२

मैंने आपसे चेन्नै में अपने कार्य का दायित्व स्वीकारने का प्रारभिक अनुरोध किया था। मेरा आत्मविश्वास है कि आप जैसे जिम्मेदार व्यक्ति के मार्गदर्शन में हमारे कार्यकर्ता बधु अधिक सफल होंगे और कार्य को वृद्धि एव पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। इस मन से ही मैंने रेलवे स्टेशन पर आप व सजीव कामत से बातचीत की थी। श्री दादाराव परमार्थ से भी मैंने यह बात कही है। अपने मन में मैंने निश्चित किया है कि आगामी मार्च १७ को आप औपचारिक ढग से स्वयसेवक बनेंगे और चेन्नै का सघचालक-पद स्वीकार कर आप कार्य में सहकारी बनेंगे, यही है मेरी प्रार्थना। आशा करता हूँ कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे। (मूल मराठी)

१८ काम बिलकुल शाति से हो

श्री बाबूराव तेलग, तिरुअनतपुरम (केरल) १५ मार्च, १६४२

' आपने लिखा है कि क्विलोन में भी प्रयास किया जा सकता है। परतु मुझे लगता है कि आपने इस रियासत में अभी प्रवेश किया है। मुझे ज्ञात हुए कुछ समाचारों से सभी रियासतों के समान वहाँ भी यह भावना है कि हमारी रियासत भी पृथक है तथा उस दृष्टि से कदाचित सप्रति अपना काम बिल्कुल नया तथा प्रारभिक होने से एकदम धूमधाम से हुआ तो विरोध होगा ही नहीं, ऐसा नहीं। काम बिल्कुल शाति से हो एव जहाँ तक बन सके, पाँव रोपे बिना उसकी प्रतिक्रिया जोर से उठने न पाए। अन्यथा गडबड हो सकती है। आप सर सी पी से मिलनेवाले हैं, इसमें कोई आपत्ति नहीं है, परतु उनसे उनका सारा रुझान देखकर ही बातचीत की जाए तथा कोई उत्सुकता या अनुकूलता दिखाई नहीं दी, तो केवल नागपुर का उन्हें निमत्रण देकर ही सतोष कर लें। मुझे लगता है कि हम कुछ कर रहे हैं इसकी ओर बिल्कुल साधारण सा ध्यान खींचा जाए सब कुछ सोच समझकर करना योग्य होगा। उस रियासत में केवल वही एक स्थान ठीक करें। क्विलोन से यदि एकाध कोई ओ टी सी में आ सके तो उसके लिए प्रयास करने में आपत्ति नहीं। (मूल मराठी)

१६ दक्षिण मे कार्य-विस्तार

श्री दादाराव परमार्थ, १५ मार्च, १६४२

कल श्री बाबूराव तेलग का पत्र प्राप्त हुआ। उससे पता चला कि आप त्रिवेंद्रम, तिरुनलवेली आदि स्थानों में दौरे पर थे।

तात्या चिचाळकर के पत्र आए हैं। उनसे पता चला कि ईस्टर के समय तिरुची में सभी प्रौढ स्वयसेवकों की बैठक रखने का विचार है। इसके बारे में स्पष्ट जानकारी दें चेन्नै प्रात में एक-दो स्वयसेवकों को भेजने का विचार है। श्री मोरु चौधरी को नेल्लूर में रखने का निश्चय आपने किया है, यह ज्ञात हुआ और ठीक भी है। आपकी योजना के अनुसार उस क्षेत्र में काम करने हेतु श्री दत्तोपत ठेंगडी, जो लॉ कालेज के विद्यार्थी एव नागपुर के अनुभवी कार्यकर्ता हैं, दिनाक १८ को ग्रैन्ट ट्रक एक्सप्रेस से रवाना होकर दिनाक १६ को चेन्नै में पहुँचेंगे योग्य स्थान पर उनकी नियुक्ति हो

२० किसी भी व्यक्ति की कमी अनुभव न हो

श्री नेमागोंजू पाटील, जयसिंगपुर (महाराष्ट्र) ६ अप्रैल, १६४२

के निधन से अपनी शाखा की बहुत हानि हुई है, परंतु विश्वास है कि आप सब मिलकर उनका स्थान भरने का प्रयत्न करेंगे, क्योंकि संगठन में एक व्यक्ति के तिरोधान से उसका स्थान लेने के लिए एक से अधिक स्वयंसेवक आगे आना चाहिए। किसी भी व्यक्ति की कमी खटकनी नहीं चाहिए। जो गया, उसका दु:ख होगा। उनकी स्मृति ही सदा मन में रहे तथा उनके स्मरण से ही अधिक उत्साहित होकर कार्य करनेवाले बहुत से स्वयंसेवक आगे आएँ। (मूल मराठी)

२१ उत्तरदायित्व का बोध आवश्यक

श्री भाऊसाहब मोडक, सातारा (महाराष्ट्र) ६ अप्रैल, १६४२

मैंने श्री रामभाऊ आठवले से थोडी बातचीत की तथा उन्होंने बताया कि उनके द्वारा दायित्व स्वीकार कर अधिक उत्साह से कार्य करना कैसा आवश्यक है। तब उन्होंने आनंद और तत्परता से उत्तरदायित्व स्वीकारने की सिद्धता दिखाई। यह सोचकर कि सातारा शाखा के संघचालक की योजना की दृष्टि से यह सब तरह से योग्य होगा, इस प्रश्न को अपने हाथ में लेकर उन्हें कार्य का ज्ञान करा देकर तथा दिशा दिखाकर ऐसी व्यवस्था करें कि वे यह स्थान मंडित करें। दायित्व आ पडने पर उनके जैसे संघनिष्ठ तथा उत्कृष्ट अन्त:करण के सज्जन, उसे पूरा करने का भरसक प्रयत्न कर सफलता प्राप्त करते ही हैं। जब तक जिम्मेवारी समझती नहीं, तब तक मनुष्य का कर्तृत्व प्रकट होता नहीं। इसलिए मुझे लगता है कि यथाशीघ्र यह योजना कार्यान्वित की जाए (मूल मराठी)

२२ क्रोधित न हो

श्री तात्या तेलंग, त्रिची (तमिलनाडु) १५ अप्रैल १६४२

बंगलौर के बारे में अभी मैं कुछ नहीं लिखूँगा, क्योंकि उस विषय में जो पत्र आया है वह लगता है कि गुस्से से ही लिखा गया है। क्रुद्ध हुए कार्यकर्ता से क्षमा माँगने के अतिरिक्त मेरे हाथों में कुछ भी नहीं

है। इसलिए मैं नम्रतापूर्वक आपसे क्षमा माँगता हूँ तथा आप क्रोधित न हों ऐसी प्रार्थना करता हूँ। इस प्रकरण में मेरी ही धारणा एव नीति है, ऐसा आपका अभिप्राय मुझे कैसे अग्राह्य होगा? (मूल मराठी)

२३ सारी परिस्थिति मे सब सामजस्य से रहे

श्री दादाराव परमार्थ, चेन्ने १६ अप्रैल, १६४२

' दिनोदिन काल बदल रहा है इसलिए परिस्थिति में परिवर्तन दिखाई देने से जो कुछ होगा, वह भविष्यकाल ही दिखलाएगा। इस सारी परिस्थिति में आप सब सामजस्य से रहें। यथासभव लोगों का धीरज बना रहेगा ओर अपने लोगों में चचलता नहीं आएगी— इस ओर ध्यान रखकर ही स्वय को सकट में न डालकर काम चलाना चाहिए। यदि कदाचित कार्य स्थगित हुआ तो भी कोइ आपत्ति नहीं, परतु परिश्रम व्यथ जाए एव प्राण सकट में पड जाए— यह ठीक नहीं होगा और सकट उठाया भी तो कोई लाभ नहीं है। इसलिए कुशलता से आप यह सब कुछ करवा लेंगे। (मूल मराठी)

२४ शीघ्रातिशीघ्र कार्य करे

श्री नाथ काळे, प्रचारक तिरुनलवेली (तमिलनाडु) १६ अप्रैल, १६४२

तिरुनलवेली से पत्र प्राप्त हुआ और वहाँ के कार्य का समाचार विदित हुआ। यह सच है कि कार्य कठिन है, क्योंकि पहले ही लोग अकर्मण्य हैं, साथ ही वर्तमान परिस्थिति में घबराए हुए हैं। इसलिए अडचनें और लोगों की उदासीनता अधिक रहना स्वाभाविक है। फिर भी आप ओ टी सी की दृष्टि से प्रयत्न करेंगे ओर उसमें सफल होंगे, ऐसी बलवती आशा है। वर्तमान परिस्थिति की ओर देखते हुए आप तत्काल शीघ्रातिशीघ्र कार्य करें। समय ऐसा है कि दिनोदिन अधिक से अधिक चिता उत्पन्न हो रही है। ऐसे समय जब दिखाई दे कि वहाँ अधिक समय रहना अयोग्य है, तो ऐसा नहीं है कि सकट उठाकर वहाँ रहा जाए, क्योंकि उसका उपयोग न तत्स्थानियों को और न अपने कार्य को होना सभव है। इस प्रकार आपने विचार निश्चित किया होगा। श्री परमार्थ के साथ भी इसका विचार हुआ होगा। (मूल मराठी)

२५ दान को हमने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया

श्री सेठ रतनचदजी हीराचदजी, मुबइ (महाराष्ट्र) १८ अप्रेल, १६४२

आप तो जानते ही हैं कि सघ सघियों के सिवाय किसी के पास द्रव्य की याचना नहीं करता हे। परतु अपने विशाल समाज में ऐसे अनेक उदारधी, सघप्रेमी धनी हैं, जो सघ के बढते हुए विस्तार को देखकर, स्वयस्फूर्ति से तथा सहृदयता से सघ को धन की सहायता करते हैं। उन्हीं लोगों के समान प्रेम से प्रेरित होकर, सघ का महत्व जानकर आपने यह उदार दान हमें दिया है। इस दान के पीछे आप का जो विशुद्ध प्रेम प्रकट होता है, वह अनमोल है। इसी प्रेम से आबद्ध होने से आपका यह उदार दान बाहर के किसी मनुष्य ने दिया है ऐसा न समझकर, हम ऐसा मानते हैं कि घर के ही किसी कर्तृत्ववान पुरुष से वह प्राप्त हुआ है। इसलिए यह निश्चय रहते हुए भी कि स्वयसेवक के अतिरिक्त किसी से धन मॉगेंगे नहीं, आपके इस दान को हम अत्यत आनद, और कृतज्ञता से स्वीकार करते हैं। (मूल मराठी)

२६ अपने काम मे त्यागपत्रादि का झझट नहीं

श्री भाऊराव जोशी, मुधोळ (महाराष्ट्र) १२ जून, १६४२

अपने काम में त्यागपत्र आदि की झझटें नहीं हैं। हम इतना ही जानते हैं कि जहाँ हम होंगे वहाँ रहकर सघकार्य अधिक से अधिक करते रहना अपना कर्तव्य है तथा यह बात सब जानते हैं कि हम अपनी कर्तव्यपूर्ति पर बाह्य वायुमडल का कुछ परिणाम होने नहीं देते। इस विषय में इतना ही सूचित करना है कि इन बातों की ओर ध्यान न देकर सघकार्य मन पूवक बढाते जाएँ, जिससे सारे प्रश्न अपने आप मिट जाएँगे। यह भी आवश्यक नहीं है कि आपको प्राप्त हुए पत्र का आप उत्तर दें। (मूल मराठी)

२७ पुत्र की सघनिष्ठा के विषय मे पिता को

श्री एस एच प्रयाग, पुणे (महाराष्ट्र) १२ जून, १६४२

आपके सब सत्पुत्र सघ के उत्कृष्ट कार्यकर्ता रहने के कारण मैं आपके परिवार से सुपरिचित हूँ। आपने गुरुनाथ के विषय में मुझे लिखा

है। उससे सबधित स्वयसेवकों द्वारा मुझे जानकारी है कि उसका सघकार्य से घनिष्ठ सबध है और कार्यवृद्धि में अधिकाधिक सहयोग करने की उसकी स्वाभाविक इच्छा है। हम चाहते हैं कि सघकार्य में स्वय को हृदयपूर्वक समर्पित करने से पूर्व वह आज के जैसा ही लगन से कार्य करता रहे। अपनी पढाई आदि छोडकर सघ का काम करने के लिए हम किसी को भी प्रोत्साहित नहीं करते। न ही कोई ऐसा कदम उठाए, इसलिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हम सूचित करते हैं। इसी कारण गुरुनाथ को ऐसा कुछ करने के लिए हम प्रवृत्त नहीं करेंगे। वह अपना शिक्षाक्रम पूर्ण कर सुशिक्षित बने और गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करे, यही हमारी इच्छा है। इसी पथ पर वह अग्रसर हो, ऐसा हम प्रयास करेंगे। परतु यदि कोई स्वयसेवक हमारे पास आकर कार्य में हृदयपूर्वक समर्पण करना चाहता है, बशर्ते वह अपने निश्चय पर सुदृढ है और कार्य की निष्ठा से सारासार विचार कर वह अपना निर्णय कर चुका है, तब तो कार्यवृद्धि की चिता में हम उसे ना भी नहीं कह सकते, इसलिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। हम हमेशा चाहते हैं कि सघ के लिए स्वय को समर्पित करते समय स्वयसेवक अपने घर एव पारिवारिक जीवन को असतुलित न करे। गुरुनाथ के सदर्भ में हम आपसे पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करते हैं और यही चाहते हैं कि वह अपना शिक्षाक्रम पूर्ण कर कार्य करने की अधिक क्षमता प्राप्त कर सके इसी हेतु आप उसे प्रोत्साहित करें।

२८ एकाग्रता से काम की ओर

श्री विट्ठलराव पतकी, कोलकाता २६ जून, १९४२

हवा का रुख देखकर, धीरज और कुशलता से कार्य करते रहना तथा जितना बन सके उतना अधिक बढाते रहना आवश्यक है। आनेवाले सभी लोगों में अधिकाधिक निष्ठा तथा नीतिगत समझदारी निर्माण करना है। अपना ही काम करना चाहिए। बाहरी बातों में नहीं उलझना चाहिए। तूफान आए तो स्थान पर डटे रहकर, साहस न करते हुए सुरक्षितता पर ध्यान रख कर शाति से रहना तथा थोडा तूफान का जोर कम होते ही पुन अपना काम प्रारभ करना तथा इधर-उधर बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा कर वायुमडल शात और धैर्यमय बनाना है। आप सब स्वयसेवकों में यह समझ निर्माण होगी, ऐसा उन्हें मार्गदर्शन करेंगे ही।

(मूल मराठी)

२९ सावधानी से कार्य बढाएँ

श्री दादाराव परमार्थ (चेन्नै) ३ जुलाई, १९४२

त्रावणकोर तथा मलबार मे अधिक ध्यान देना होगा पूरी सावधानी के साथ काम करने की आवश्यकता है। शब्द और व्यवहार पर नियत्रण रखकर, स्वयसेवको मे उत्तम ध्येयवादिता उत्पन्न होगी तथा दृढता निर्माण होगी, इस ओर ध्यान देकर काम करना है। किसी भी प्रकार का सकट नहीं आ पडेगा, इधर ध्यान रहना आवश्यक है। पूरी ताकत लगाकर काम बढाएँ।

(मूल मराठी)

३० जबरदस्ती हमारी नीति नहीं

श्री विनायकराव गोरे, आजर्ले (महाराष्ट्र) ६ जुलाई, १९४२

आपके सुपुत्र के विषय में मुझे स्वय को कुछ कहना नहीं है, क्योकि जबरदस्ती से किसी को सघ का काम करने को बाध्य करना हमारी नीति नहीं है। कोई मन में पूर्ण निश्चय कर आता हो तो, उसे हम जबरदस्ती से ना कहें, ऐसा आपका भी हठ न हो। यह तो प्रत्येक स्वयसेवक की रजामदी का प्रश्न है। हम प्रत्येक के घर की पूछताछ करते हैं, क्योंकि हमारी भावना है कि प्रत्येक स्वयसेवक का घर, हमारा ही घर है। अर्थात् किसी को भी अकारण पीडा न हो तथा कार्य मात्र सपन्न हो, इस नीति का हम पालन करते हैं। आपके अन्य मतों के विषय में भी पत्र के माध्यम से कुछ ऊहापोह नहीं करूँगा। केवल आपने अपने पत्र में सघ में लडको को भेजने के विरुद्ध अपने विचार लोगों के सामने रखकर एक तरह से सघ के विरुद्ध प्रचार करने की धमकी दी है जो मुझे लगता है कि अप्रस्तुत है। आप जैसे समझदार सज्जन के मन में ऐसी इच्छा पैदा होती है, इसका दु:ख होता है। सघ पर आपका प्रेम उत्तरोत्तर वृद्धिगत होता रहे, ऐसी परमेश्वर के निकट प्रार्थना कर पत्र पूर्ण करता हूँ। '

(मूल मराठी)

३१ अधिक से अधिक प्रगति करते जाएँ

श्री अण्णासाहब गोरेगॉवकर, मुबई 　　　　　　　　१६ अगस्त, १६४२

अपने सभी स्वयसेवक विचारपूर्वक तथा सयम बरतकर अपना काम करते रहें तथा अधिक से अधिक प्रगति करते जाएँ, यही योग्य है। ऐसे समय अनेकों में उत्साह भर जाता है, परतु क्षणभगुर लहरों में न बहते हुए अपना सगठनात्मक स्थायी काम ही सभी पूरी ताकत लगाकर आगे बढाएँ। इस समय जिस उत्साह से सभी स्वयसेवक विगत दो मास से कार्य कर रहे हैं, उससे हमने कार्यवृद्धि का जो लक्ष्य रखा है, वह लगता है कि पूरा हो जाएगा। अपने सभी लोग हमेशा आपस में मिलते रहें, मिल-जुलकर तथा घरेलू स्नेहभाव से काम करें। वह वैसा हो ही रहा है तथा इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके आगे अधिक मात्रा में होता रहेगा। (मूल मराठी)

३२ अपनी ही पद्धति और तत्र से कार्य करे

श्री मधुकरराव भागवत, कर्णावती (गुजरात) 　　　　१६ अगस्त, १६४२

सप्रति सभव है कि हमें काम करते समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडेगा, क्योंकि जनता में अनेक विचारों का तूफान उठा है। परतु हमें अपना कार्य अपनी ही पद्धति और तत्र से करना है। यदि इस बात की बहुत चिता हो कि काम शीघ्र बढना चाहिए तो भी जल्दबाजी न करना आवश्यक है। अपने-अपने स्थान पर अपने सभी स्वयसेवकों को सयम बरतकर धीरे-धीरे शाखा-वृद्धि करनी चाहिए। अकारण उत्साह की चपेट में न आकर कार्य करते रहें। (मूल मराठी)

३३ कार्य के स्थायी रूप पर ध्यान रखे

श्री वसतराव देव, सूरत (गुजरात) 　　　　　　　　१६ अगस्त, १६४२

सप्रति चारों ओर हो रही थोडी-बहुत गडबड समाचार पत्रों से मालूम होती है, परतु अपना कार्य कैसा स्थायी स्वरूप का है एव इन घटनाओं का स्वय पर असर न होने देते हुए हमें अपना ही काम करना कैसा आवश्यक है, यह आप जानते ही हैं। चारों ओर कुछ भी हो रहा हो, तो भी अपना कार्य बढता ही है, क्योंकि सभी को सगठित तथा समष्टि

जीवन की महत्ता हर बार समझ में आई है। इसलिए हमें अपने काम में यत्किंचित् भी कसर न करते हुए, उलटे अधिक दृढता से, जुटे रहना चाहिए। (मूल मराठी)

३४ अपने ही कार्य मे सदा दक्ष रहे

श्री भाऊराव कुलकर्णी, धुले (महाराष्ट्र) १६ अगस्त, १६४२

अब हमें होनेवाली घटनाओं के बीच अपना काम निर्लिप्त एव सुरक्षित रखना है। वास्तव में जहाँ कुछ अव्यवस्था नहीं हुई है, उन सभी स्थानों पर अपना काम पूर्ववत चालू है, परन्तु सार्वत्रिक गडबडी के बीच यही उचित है कि हम शात रहें। सप्रति आपने यह ठीक किया है कि जिले के कुछ उत्सव स्थगित कर दिए हैं, यदि आपको लगता हो कि अपने नित्य के कार्य में बाधा आती है या आने की सभावना है, तो आप कार्य को अनेक बैठकों का रूप देकर, खुले मैदान के, फिर वह निजी मैदान ही क्यों न हो– कार्यक्रम फिलहाल स्थगित रखें। आप कहते हैं कि इस भाग में आदेशों का क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। केवल ऐसा दिखता है कि जिन सस्थाओ ने विरोध का रुख अपनाया उनपर ही कार्यवाही की गई है। इस विषय मे आगे सरकारी नीति क्या रहेगी, हमे अनुमान लगाने का प्रयास करने का प्रयोजन नहीं है। आपने जिस आदेश का उल्लेख किया हे वह किस तारीख को एव कहाँ प्रकाशित हुआ, यह सूचित करें, जिससे अधिक विस्तार से आपको सूचित किया जा सकेगा। अपना सगठनात्मक काम नित्य के अनुसार शाति से करना है एव उसके लिए स्वयसेवको में परस्पर जो सबध रहना चाहिए। वह निर्माण करना तथा टिकाए रखना एव और अधिक घनिष्ठ बनाना इसके लिए मुख्य-मुख्य काम करनेवालों को रात-दिन परिश्रम करते रहना चाहिए। हमेशा मिलने-जुलने का सिलसिला चालू रखना चाहिए। सख्या और गुणात्मकता की वृद्धि की ओर ध्यान देते रहे। सभी कार्यकर्ता स्वयसेवको को उठे हुए आँधी-तूफान से बचते हुए, उसके विषय में कुछ भी प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुए अपने ही काम के विषय में दक्ष रहने के बारे में बताएँ, जिससे बहुत सा कार्य-भाग पूरा हो सकेगा। (मूल मराठी)

३५ अकारण विवाद टाल दें, पूर्ण ध्यान कार्यपर

श्री भैयासाहब दाणी, इंदौर (मध्यभारत) १६ अगस्त, १६४२

संघकार्य ही एकमेव कार्य है, इस निष्ठा से सभी को सम्प्रति अनेक प्रकार से संयमपूर्वक अपना काम करना चाहिए, क्योंकि अनेक स्थानों पर ऐसा वायुमंडल दिखाई देता है कि प्रक्षोभ पैदा हो। इस क्षुब्धता का कुछ लोगों पर परिणाम संभव है। ऐसे समय अकारण विवाद टालकर अपने ही कार्य में संपूर्णतः ध्यान देने तथा शीघ्रता से कार्य बढाने की ओर ही सबका ध्यान खींचना आवश्यक है। (मूल मराठी)

३६ कार्यक्रम ही अपने कार्य का अपरिहार्य अंग नहीं

श्री वसंतराव ओक, दिल्ली २६ अप्रैल, १६४३

अपना कार्य समाज-संगठन का है। वह सभी प्रकार के पक्षोपपक्षों से पूर्णतः अलिप्त है। संगठन के लिए लोकसंग्रह आवश्यक है। लोकसंग्रह के लिए उपयोगी तथा अपने घटकों में स्नेह आदि सद्गुण तथा दैनिक जीवन में आवश्यक अनुशासन निर्माण करने के लिए हम विभिन्न कार्यक्रमों की योजना करते हैं। हम लोगों ने कभी यह नहीं माना था कि कार्यक्रम ही अपने कार्य का प्रमुख या महत्त्वपूर्ण अपरिहार्य अंग है, परंतु नियोजित कार्यक्रम नियम के नाते अनुशासन तथा संपूर्ण शक्ति से करते हैं।

आपको विदित ही है किसी भी विशिष्ट कार्यक्रम से हम लोग बँधे नहीं हैं। परिस्थिति के अनुसार कोई भी बंधन स्वीकार न करते हुए, ऐसे कार्यक्रमों में परिवर्तन और नूतन कार्यक्रमों की योजना अपने मूल उद्दिष्ट के अनुसार हम करते हैं। इस दृष्टि से सन् १६४० के अगस्त मास में लागू हुए निर्बंधों को ध्यान में रखते हुए पूर्व के अपने कार्यक्रम में रखा हुआ तथा सैनिक नाम से पहचाना जानेवाला अंश अपने शिक्षाक्रम से स्थगित कर दिया गया था। पहले भी सर्वसाधारण मनुष्य को उतने ही अनुशासन आदि गुणों की प्राथमिक शिक्षा दी जाती रही, जिससे उसके दैनिक जीवन में योग्य व्यवहार करने की क्षमता निर्माण हो सके। वास्तव में अपनी यह धारणा कभी नहीं रही कि उन कार्यक्रमों का सैनिक दृष्टि से कुछ महत्त्व है। उस सामान्य शिक्षा-शाखा को अन्य सुयोग्य शब्दों के अभाव में ही 'सैनिकी' नाम से संबोधित करते थे। परंतु अगस्त १६४० से

'सैनिकी शिक्षा' नाम से परिचित शिक्षा हम लोगों ने स्थगित कर दी।

ऐसा होने पर भी, परिस्थिति शीघ्र ही पूर्ववत् होगी, इस विचार से हम लोगों ने वह विभाग अपने शिक्षाक्रम से पूर्णत नहीं हटाया था। केवल स्थगित कर, वह शिक्षा देना स्थगित कर दिया था। परतु अब ऐसा लगता है कि परिस्थिति पूर्ववत हो या न हो, आज उसकी प्रतीक्षा न करते हुए कुछ निश्चित करें। आगे जो समयानुकूल करना पडेगा, वह होगा। किंतु आज यह विभाग, जो निरुपयोगी हो गया है, पूर्णत बद करने का निश्चय हुआ है। इस विभाग के लिए हम लोग 'सेनापति' आदि नाम से जो अधिकार-योजनाएँ बनाते थे, उन्हें पूर्णत बद कर दिया जाए। ये अधिकार-पद हमने अपने कार्यक्रमों की योजनाओं में से निकाल डाले हैं, इसलिए यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह अधिकार-योजना अपने-आप समाप्त हो गई है। (मूल मराठी)

३७ राखी विद्यमान भावनाओं का प्रतीक

श्री काशीनाथपत लिमये, सागली(महाराष्ट्र) १८ अगस्त, १९४३

राखी प्राप्त हुई। यह विद्यमान भावनाओं का वार्षिक प्रतीक है। वास्तव में अपने सबध बधु-भावना से अधिक श्रेष्ठ आत्मीयता के हैं। केवल इस आत्मीयता को योग्य शब्द कोन-सा प्रयुक्त किया जाए? निकट के शब्द के नाते हम उसे बधु-भाव कहते हैं। इस आत्मीयता के कारण ही रक्षाबधन जैसे प्रसग पर अत करण में बडी खलबली होती है, लगता है कि सबको एक ही समय पर एक में ही देखा जाए। व्यवहार में यह होना सभव नहीं है, इसीलिए इन प्रतीकों का सहारा लेने को बाध्य होना पडता है। मुझे लगता है कि सबके स्नेह से ही मैं जी रहा हूँ। क्योंकि औषधियों का एव अन्य उपचारों का शरीर पर कितना परिणाम होता है, यह मेरे बारे में बतलाना अत्यत कठिन दिखता है। अनेक बार दिखाई नहीं देता है।

(मूल मराठी)

३८ निराशा, निरुत्साह का त्याग करे

श्री परिमल बाबू सिन्हा, बहादुर शुशाग (बगाल) २२ अगस्त, १९४३

लगता है कि वातावरण का आपपर परिणाम हुआ है। निराशा या निरुत्साह का त्याग करना होगा। परिस्थिति जल्दी ही बदलेगी, और

परिवर्तन की तीव्र इच्छा को साकार करने में मनुष्यों के प्रयत्नों का वहुत वडा योगदान होता है। इस विषय में मैं आपसे और कुछ नहीं कहूँगा। आप स्वय गहन चिंतक और विवेकशील हैं। (मूल अंग्रेजी)

३९ आपसे बहुत अपेक्षाएँ

श्री गोपाल दाडेकर, (आगरे द्वारा ग्वालियर भेजे) २३ अप्रैल, १९४३

आपसे वहुत सी अपेक्षाएँ हैं सद्भावपूर्ण व्यक्ति के नाते; विशेष कार्यक्षमता से युक्त स्वयसेवक की दृष्टि से, हम आपकी ओर देखते हैं। कभी भी मन को नियत्रण के वाहर न जाने दें एव शातचित्त से भावनाओं के तीव्र आवेग को वश में रखकर काम करते रहें। अपना काम ऐसा नहीं है कि तत्काल फल दिखाई दे। सच्चे कार्यकर्ता को यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। शीघ्रातिशीघ्र यशप्राप्ति की दृष्टि से जी-जान से परिश्रम करते रहकर, यश दूर दिखाई दे या दृष्टि पथ में नहीं आए, तो भी यही एकमात्र मार्ग है, इस पर अनन्य श्रद्धा रखकर केवल कार्य ही करते रहने का स्वभाव वना तो समय सचमुच सार्थक होगा। (मूल मराठी)

४० कार्यक्षम स्वयसेवक तैयार करे

श्री मनोहर पाडे, शिमोगा (कर्नाटक) २ सितवर, १९४३

वेलगॉव ओ टी सी में शिक्षा के लिए गए हुए स्वयसेवकों से तुम्हारा परिचय हो चुका है। उनके बीच में रहकर एव जहाँ तक बने स्थानीय भाषा तथा सामान्य वोलचाल के वाक्यप्रचार सीखकर तथा उसी में ही व्यवहार कर अपने बारे में आत्मीयता और आदर निर्माण होगा— ऐसा व्यवहार करें। सघ के अतिरिक्त अन्य किन्ही बातों में न पडें। अन्य कुछ न बोलें। किसी ने अकारण वितडवाद छेडा तो उसे रोकें और अपने वोलने में यह सावधानी बरतें कि किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह, पक्षोपपक्षों पर टीका या अनादर युक्त उल्लेख न आने पाए एव सदा सघ की ही वात करें। नित्य के आचरण में भी अपने सान्निध्य में आनेवाले सभी स्वयसेवकों में एव अन्य सहानुभूति धारण करनेवालों के मन में यह स्पष्ट ज्ञान हो कि तुम्हे अन्य किसी बात की आसक्ति नहीं है। इसके बारे

में प्रयत्न करें। शरीर-स्वास्थ्य की चिंता करें। अधिक से अधिक उद्योग कर शाखा की उन्नति होगी ऐसे कार्यक्षम स्वयंसेवक तैयार करें।

(मूल मराठी)

४१ मजबूत गट ध्यानपूर्वक खड़ा करें

श्री दत्ता पांडे, मैसूर (कर्नाटक) ३ सितंबर, १९४३

बहुत शीघ्रता से संख्या नहीं बढ़ी तो भी कोई आपत्ति नहीं है, परंतु उत्तम निष्ठावान एवं कार्यकुशल स्वयंसेवक एकत्र कर उन्हें सब दृष्टि से तैयार कर उनके द्वारा शाखा का कार्य योग्य प्रकार से चलाने की व्यवस्था करना ठीक होगा। अतः अभी कुछ समय शाखा बढ़ी हुई दिखाई नहीं दी, तो भी चिंता नहीं है, परंतु एक मजबूत गट शीघ्र तैयार करने का काम ध्यानपूर्वक करें। पढ़ाई और संघकार्य दोनों का उत्तम रीति से समन्वय करें। स्वास्थ्य उत्तम रखना न भूलें।

(मूल मराठी)

४२ कार्य प्रारंभ के पश्चात् दृढ़ीकरण का महत्त्व

श्री वेंकटराव देशपांडे, अथणी (कर्नाटक) ४ सितंबर, १९४३

तहसील में भी शाखा प्रारंभ कर उन्हें चलाने का प्रयास प्रारंभ हुआ है– यह जानकारी संतोषजनक है। शाखा प्रारंभ करना विशेष कठिन बात नहीं है, परंतु उसके बाद हमेशा उन्हें भेंट देकर देखभाल करना एवं एक बार स्थापित हुई शाखा निष्ठा, वृत्ति, सभी दृष्टियों से योग्य ही होती जाएगी–इस ओर ध्यान न दिया तो सारे प्रयास व्यर्थ होकर क्षेत्र आगे के कार्य की दृष्टि से बिगड़ जाता है। यह ध्यान में रखकर स्थापित होनेवाली शाखाओं की जिम्मेदारी से देखभाल करनेवाले प्रतिष्ठित स्वयंसेवक रहना चाहिए एवं वे अपने दैनिक कार्य में स्वयं प्रत्यक्ष उत्साह से भाग लेकर संघ के वातावरण में रमे हुए होने चाहिए। इस विषय में सफल प्रयास होना आवश्यक है।

(मूल मराठी)

४३ प्रगति जीवतता का धर्म

श्री अण्णासाहब गोरेगाँवकर, (मुबई) ४ सितबर, १६४३

प्रतिवर्ष प्रगति हो– यह जीवन्तता का धर्म अपने कार्य का है एव मुबई का कार्य, यानी मूर्तिमान खौलनेवाली जीवतता है, यह मैं प्रत्यक्ष देखकर ही आया हूँ। इसके लिए आपका प्रेमभाव एव अदम्य उत्साह कारण है, इसे नए सिरे से दोहराना आवश्यक नहीं है।

४४ प्रश्न है तुम्हारे स्वय के मन का

श्री माधव आप्टे, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) ६ सितबर, १६४३

शेष प्रश्न है, तुम्हारे स्वय के मन का। उसके विषय में कहना योग्य है। फिर भी एक बात हम हमेशा ध्यान में रखें कि हम एक नया जीवन निर्माण करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। आमूलाग्र परिवर्तन लाते समय मूल कायम रखना एव शातिपूर्वक, पूर्ण सात्विकता से सभी व्यवहार करना अपना धर्म है। ऐसी अवस्था में अपना ही मन अस्वस्थ हुआ तो हम क्या कर सकेंगे? यह बात नहीं है कि मैं इस पत्र में तुम्हें कुछ उपदेश करूँगा। क्योंकि हम लोग 'उपदेशक' की भूमिका नहीं लेते हैं, परतु इतना कहूँगा कि शाति से अपने कार्य के भविष्यकालीन चित्र की ओर देखना सीखें, तो मन दृढ होगा एव यावज्जीवन इस कार्य के अतिरिक्त अन्य किसी में रममाण नहीं होगा। (मूल मराठी)

४५ कौन किसकी सात्वना करे

श्री भैयालालजी सराफ, सागर ६ सितबर, १६४३

के पत्र में एक अति दु खदायक समाचार है कि आपका पुत्र प्रभु अकस्मात न्यूमोनिया के विकार से स्वर्गवासी हो गया। इससे यहाँ के सभी कार्यकर्ताओं को कितना दु ख हुआ, यह मैं कह नहीं सकता। आपके दु ख की कल्पना भी दु सह है। यह तो ठीक है कि बीती बात लौट नहीं आती– इसी प्रकार के विचारों से अपना समाधान जैसे-तैसे करना पडता है। मनुष्य धैर्य से सब सकटों का सामना करे और सब दु खों को सहन करे– यह भी चिरपरिचित उपदेश ही है। आपके धैर्य के सबध में किसी को

सदेह नहीं। फिर भी दु खमय घटना अपना प्रभाव डाले बिना कैसे रहेगी? आपकी सात्वना करना अपनी शक्ति के बाहर की बात समझता हूँ। आपका पुत्र हम दोनों के लिए स्वयसेवक के नाते से अत्यत प्रिय था, उसका वियोग आपको तथा मुझे भी अति कष्टप्रद है। अत कौन किसकी सात्वना करे? हम लोग परस्पर एक-दूसरे के दु ख को देखकर मूक वृत्ति से ही सब समझ लें और आगे के जीवन की ओर ध्यान देते हुए कर्तव्य के निमित्त सिद्ध हों। और क्या लिखूँ?

४६ शरीर कार्यक्षम करे

श्री बाबा देशपाडे, मुरादाबाद(उ प्र) १० सितबर, १९४३

मेरा मत है कि आप दिल्ली जाएँ और स्वास्थ्य की पुन जाँच करवाकर कुछ दिन वहीं रहकर योग्य उपचार कराएँ, तब तक परिश्रम न करें। यह सच है कि काम बहुत-से हैं, फिर भी इस विषय में तारतम्य छोडकर आचरण करने का अधिकार कुछ ही लोगों को हो। आप वह अधिकार कम से कम आज न जताएँ। आगे वैसी आवश्यकता हुई, तो मैं वैसा बताऊँगा कि पूर्ण रूप से शरीर की उपेक्षा करने में भी कोई आपत्ति नहीं है। तब तक स्वास्थ्य की चिंता अवश्य करें। शरीर अधिक कार्यक्षम करें। (मूल मराठी)

४७ सस्कार हृदय मे अटल रहेगा

श्री केवलकृष्ण जी, लाहौर (पश्चिम पजाब) १४ अक्तूबर, १९४३

मेरे नागपुर आने के पूर्व ही आपका शुभ विवाह कानपुर में हो चुका होगा। आपने जो नवजीवन स्वीकार किया है, उससे बहुत प्रसन्न हुआ। यह ठीक है कि अनेकों के विपरीत उदाहरणों से आपको यह भीति लगती है कि कहीं आप सुख की कल्पना से पकडे जाकर कार्यच्युत न हों। परतु आप इस विषय में चिंता न करें। जो पहले से ही भीति रखता है, वह आगे चलकर अवश्य सावधानी से जीवन में पदार्पण करता है। मुझे यह विश्वास है कि जिस कर्तव्य का हम सभी स्वयसेवकों ने अगीकार किया है, उसकी पवित्रता तथा महत्ता का सस्कार आपके हृदय में अटल रहेगा तथा जिस जीवन को आपने स्वीकार किया है, उसमें आप अपने कार्य में अधिक ही स्फूर्ति पाएँगे।

४८ समाधान कौन कैसे कर सकेगा?

श्री काकासाहब फडके, मुंबई १५ अक्तूबर, १६४३

आप पर जो दुर्दैव का आघात हुआ है, उससे आप का समाधान कौन कैसे कर सकेगा? मानवी ज्ञान का घमंड बिलकुल व्यर्थ होने का प्रत्यय आकर आपकी आत्यंतिक असहायता का तीव्र ज्ञान होता है एवं यह कोई भी टाल सकने में असमर्थ है। असह्य दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्राप्त होने के लिए परमेश्वर की विनम्र प्रार्थना करना, यही एक मार्ग बचता है। वह सर्वसाक्षी आपको धीरज एवं मन:शांति दे, ऐसी उसके चरणों में प्रार्थना करता हूँ। और कुछ अधिक लिखना इस मन:स्थिति में मेरे बस के बाहर है। (मूल मराठी)

४६ स्थानीय सज्जनों को कार्य-भार अवश्य उठाना चाहिए

श्री द्वारकाप्रसाद जी खत्री, धार (म.प्र.) १६ अक्तूबर, १६४३

शाखाएँ ठीक चल रही हैं— ऐसा दिखता है, किन्तु कहीं कहीं प्रचारक का अभाव यह कार्य न होने का कारण बन जाता है। प्रचारक योजना का यह अर्थ तो नहीं है कि स्थानीय सज्जनों का कर्तव्यपराङ्मुख रहना और बाहर से अच्छा काम करने आया है, ऐसा समाधान मानते हुए उसके यश के हिस्सेदार बनना। स्थानीय सज्जनों को अपने ऊपर कार्य का बोझ अवश्य ही उठाना चाहिए तभी कार्य ठीक हुआ, तथा शाखा अच्छी नींव पर खड़ी हुई, ऐसा कहना उचित होगा।

५० कुशलता से मनुष्यों का चयन करें

श्री शंकरराव कुर्वे, तिरुनलवेली (तमिलनाडु) १६ अक्तूबर, १६४३

ठीक से ध्यान देकर मनुष्यों का चुनाव करें। कोई आगे-आगे करता है, कोई जोर से कहकर समर्थन करता है, इस पर से ही वह अच्छा है, यह समझने का कारण नहीं है। ज्येष्ठ लोगों के बारे में अगला-पिछला इतिहास देखकर, परखकर कदम बढ़ाएँ। कभी-कभी पहले कहीं भी सार्वजनिक कार्य न करनेवाला व्यक्ति अपनी दृष्टि से सुयोग्य साबित होता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। शाखा बहुत तेजी से बढ़ती हुई न दिखाई दी,

तो भी चलेगा, परतु अनिष्ट या निरुपयोगी एव केवल ढोंगी, पाखडी लोगों की भर्ती न हो। इन लोगों का दूर रहना ही अच्छा है। आपको यह सब बतलाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, परतु कभी-कभी भोली आशावादिता अपनी विचार शक्ति पर हावी हो सकती है। यह कहा जा सकता है कि यह मानवी धर्म ही है, परतु ध्यान रखकर विचार को ही आचार का स्वामी बनाना बिल्कुल सभव है। इसलिए स्मरण कराने के लिए उपर्युक्त चार शब्द लिखे हैं। (मूल मराठी)

५१ कार्य परमेश्वर का, फल सुनिश्चित

श्री यशवतराव लोहोकरे, सोलापुर (महाराष्ट्र) १८अक्तूबर, १९४३

आप स्वय के बारे में बहुत विचार करते हैं। सभवत आप के द्वारा अत्यधिक प्रयत्न करने के बाद भी आपको अपेक्षा के अनुसार यश न मिला हो। विचार के लिए हम मान कर चलें कि शायद अपनी कार्यपद्धति में कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। इस विषय में मुझे क्या लगता है, वह बाद में देखेंगे। सम्प्रति विचार के लिए हम ये सारे दोष गृहीत मानकर चलें। परतु अत्यत महत्त्व की बात यह हे कि स्वय के दोष देखकर आत्मावज्ञा करना, स्वय की ही निदा कर दु खी होना यह शास्त्रसम्मत नहीं हे। अपेक्षानुसार काम न हुआ हो, परतु ऐसा अनेक स्थानों पर हुआ है। अपना काम कुछ सरल नहीं है। भाग्यवशात् कुछ स्थानों पर एकदम जैसे चाहिए वैसे लोग मिल जाते हैं, तो अनेक स्थानों पर आप जैसे श्रद्धावान कार्यकर्ताओं को परिश्रम करने के बाद भी फल मिलता नहीं है। अपना काम केवल आत्म-निरीक्षण करते हुए उत्साह में खड न पडने देते हुए, निराश न होते हुए प्रयत्न करते रहना है एव वह आप आत्यतिक लगन से करते आ रहे हैं। आप एव मा श्री बाबूराव कुलकर्णी ने कोई अन्य सहायक न होते हुए भी जो परिश्रम किए एव सब प्रकार की घरेलू अडचनें झेलकर भी कर रहे हैं, इसकी मुझे सपूर्ण जानकारी है एव यह आप ध्यान में रखें कि आपके बारे में न्यूनता की भावना भूलकर भी मन को स्पर्श नहीं कर सकी है।

इसलिए कुछ भी उदासीन विचार मन में न रखकर एव यह समझकर कि आपपर मेरा पूर्ण विश्वास है, आप अपनी पूर्ण शक्ति से एव नित्य के अदम्य उत्साह से काम आगे बढाते जाएँ। फल परमेश्वर के हाथों

में है एव यह उसी का ही कार्य होने से वह प्राप्त होगा ही, इस विषय में निश्चित रहें। (मूल मराठी)

५२ निरतर कार्य मे मग्न रहे

श्री गोपाल देशपाडे, पुणे (महाराष्ट्र) १६ अक्तूबर, १६४३

मुझे स्वयसेवकों का सहवास ही सुखदायक है। उसमें भी सब वैयक्तिक आकाक्षाओं को एक ओर रखकर, केवल सघकार्य में ही जो जीवन खपाते हैं, उनके साथ थोडा-बहुत समय बिताना मुझे भाग्यविधान का ही लाभ जैसा है। पुणे जिले का काम निश्चय ही सुधरेगा। आज ही बिलकुल निराश होने जैसी स्थिति नहीं है। आप अपना काम करते समय काम का ही विचार मन में रहने दें। यही उत्तम है। केवल कार्य से ही अत करण व्याप्त रहे तो क्षुद्र अहकारादि भावनाओं को स्थान कहाँ से मिलेगा? मुझे अहकार है या नहीं, इसका विचार करते बैठे रहने के लिए किसे समय है? ऐसी स्थिति हो तो प्रश्न पैदा ही नहीं होते हैं। परतु हम इसका विचार करने लगे तो धोखा खाने की सभावना है। इसलिए इन सब सकटों से छूटने का एक ही मार्ग है– निरतर कार्य में मग्न रहना, उसी का ही चितन करना, उसी के लिए व्यवहार, उसी के उपलक्ष्य में किसी से भी भेंट करना एव बातचीत करना, मन-बुद्धि को इसी से व्याप्तकर सब समय इसी में खर्च करना। ऐसा नहीं कि मुझे यह लिखना चाहिए, क्योंकि आप सब कार्यकर्ता इसको समझते हैं। तुम्हारे पत्र से जो कुछ सूझा, वह पत्र में लिखा गया। (मूल मराठी)

५३ चुनावी लडाई का पथ्य

श्री माधवराव जी शुक्ल, नासिक (महाराष्ट्र) २१ अक्तूबर, १६४३

आप नगरपालिका का चुनाव लड रहे हैं। सबकी इच्छा हो तो रुकावट नहीं है। हमने सदैव एक ही ध्येय सामने रखा हुआ है, इसलिए उसमें कोई बाधा भी आप आने नहीं देंगे। केवल प्रत्यक्ष चुनाव के समय विपक्ष के विषय में अत्यधिक विपरीत प्रचार आदि करने की आधुनिक प्रथा हमें नहीं चाहिए। चुनाव का परिणाम कुछ भी निकले फिर भी सभी विपक्ष के मन में यही भावना रहनी चाहिए कि अपनी ओर से सपूर्ण व्यवहार

विल्कुल प्रामाणिकता का, खरा एव सौजन्यता का हुआ एव उनके मन में अपने विषय में अनिष्ट भावना पैदा नहीं हुई। यह कठिन है, परतु आवश्यक है, अन्यथा सगठन करने के स्थान पर, इस चुनाव से अनेक अत करणों को दु खी कर विघटन का दोप अपने मत्थे मढ लेंगे।

(मूल मराठी)

५४ प्रखर आदर्शवादिता जगानी पडेगी

श्री खानचद जी, कराची (सिंध) — १५ दिसवर, १९४३

मुझे विश्वास है कि अव तक आपने कराची में चलनेवाले सभी उपकेंद्रों को देखा होगा और अधिकाश प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ आप का परिचय भी हो चुका होगा। जिस प्रकार का अपना कार्य है, उसमें यह सव आवश्यक है। एक प्रकार से आप कराची के शाखारूपी परिवार के मुखिया हैं एव इस नाते युवक आपके पुत्र हैं। यह पारिवारिक वातावरण हमें अधिक व्यापक बनाना होगा और उसके माध्यम से सपूर्ण शाखा में प्रखर आदर्शवाद की भावना जगानी पडेगी। मुझे विश्वास है कि आप यह अल्पावधि में पूर्ण कर सकेंगे एव यहाँ के कार्य में योग्य चेतन्य निर्माण कर सकेंगे। (मूल अंग्रेजी)

५५ मनसा चिंतित कार्यं दैवमन्यत्र चिंतयेत्

श्री मुकुद करदीकर, जलगाँव (महाराष्ट्र) — १५ दिसवर, १९४३

यह पढकर अत्यत दु ख हुआ कि आपके पिताश्री का स्वास्थ्य अव तक अच्छा नहीं हो पाया है। इस घटना के कारण आपको काम छोडकर घर लौट जाना पडा। इसका आपको दु ख होना स्वाभाविक है। परतु घर जाना भी आवश्यक था। मुझे लगता है कि इस समय अर्थोत्पादन कर घर की सहायता करना एव पिताश्री को विश्राम देना उचित है। अच्छी नौकरी ढूँढें। अपने ध्येय से सुसगत काम स्वीकार करें। आगे जव भी इस रीति से सपूण समय सघ कार्यार्थ मिलेगा, तो उसके वारे में भी मन में विचार रहे। मुझे लगता है कि आज की घर की आवश्यकता पूरी करते समय स्वय की अलग जिम्मेवारी वढाने की जल्दवाजी न करें। कालातर से छुटकारा मिलेगा। इसकी प्रतीक्षा करते रहें। यदि वैसा असभव दिखाई दे तो फिर अपनी गृहस्थी वसाएँ। यह मानकर कि अपने भाग्य में

नि सगता से इतना ही सघकार्य करना था, इस प्रकार जीवन की रचना करें कि गृहस्थी सँभालते हुए अधिक से अधिक काम करना सभव हो सकेगा। गृहस्थी एव सघकार्य दोनों का विरोध नहीं है। दोनों का समन्वय कर उत्तम जीवन जिएँ। मन में एक उद्देश्य रखा एव दूसरा ही करना पडा, इसके बारे में दु ख अनुभव करना उचित नहीं है। दुनिया की यही रीति हे–'मनसा चिन्तित कार्य देवमन्यत्र चितयेत्', यही अनेक बार होता है। इसलिए प्राप्त परिस्थिति में उदास न होते हुए धीरज से एव उत्साह से गृहस्थी एव सघ का समन्वय साध्य करें। (मूल मराठी)

५६ घनिष्ठ सपर्क आवश्यक

श्री शकरराव, बगलौर (कर्नाटक) १५ दिसबर, १६४३

न्यू टाइम्स या ऐसे ही किसी नाम के समाचार पत्र में प्रकाशित अपनी बगलौर बैठक के सक्षिप्त वृत्त का अतिम वाक्य कि 'श्री सपतगिरि राव जैसे अहिंसानिष्ठों के लिए यह गहरा आघात करनेवाला अनुभव रहा होगा', मेरे लिए बहुत महत्व की और दु खद घटना है। इस प्रकार का अनाहूत और असमर्थनीय अभिप्राय किसी प्रकार से न्यायोचित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अपने कार्य में हम किसी की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुँचाते, न ही किसी पर मानसिक या भावनिक आघात करना चाहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि यदि श्री सपतगिरि राव ने यह समाचार पढा होगा तो उस अभिप्राय की निरुपयोगी अर्थक्षमता को वे भलीभाँति समझ गए होंगे और अपने कार्य के विषय में उनकी सही धारणा पर चोट पहुँचकर होनेवाली गलतफहमी और गलत धारणा से वे बच गए होंगे। यदि सभव हो तो उनके साथ वाद-विवाद के चक्कर में न पडते हुए, उनसे घनिष्ठ सपर्क प्रस्थापित कर और उनको अपने कार्य के अधिक निकट लाने का प्रयास कर, उनकी सघ-विषयक धारणा में कहीं सदेह या उनके हृदय पर कुछ अवाछनीय परिणाम हुआ होगा तो सघकार्य की प्रत्यक्ष जानकारी के द्वारा ही उसका अनायास निर्मूलन उचित होगा। (मूल अग्रेजी)

५७ कार्यकर्ता का प्रवास

श्री विनायकराव आप्टे, पुणे (महाराष्ट्र) २२ दिसबर, १६४३

ऐसा लगता है कि आज भी बहुत-से स्थानों पर काम की सही

कल्पना न होने से, या अन्य कारणों से उसपर श्रद्धा पैदा नहीं हुई है एव यह एक अच्छा, परतु गौण काम है, ऐसी ही उदासीन दृष्टि से बहुत से लोग कार्य की ओर देख रहे हैं। इसलिए इन सबको जागृत कर कार्यप्रवण करना आप जैसे सवेदनशील गृहस्थ कायकता को ही सभव है। आप में ये गुण हैं साथ ही आपका सघ की सुस्पष्ट भूमिका का ज्ञान, प्रभावी वक्तृत्व, ओजपूर्ण एव प्रेममय सभाषण जैसे दुर्लभ गुणों का परिपोष हुआ है, इसलिए इस काम के लिए आप जैसा दूसरा सुयोग्य व्यक्ति मिलना कठिन है। इसलिए आप आत्मीयता से इस कार्य के लिए प्रयास कर रहे हैं यह देखकर मैं निश्चिंत हूँ। (मूल मराठी)

५८ सात्वना के साथ प्रेरणा

श्री वसतराव देवकुळे, पुणे (महाराष्ट्र) १५ जनवरी, १९४४

अनेक दिनों से अपेक्षित घटना ज्ञात हुई। दु ख होना स्वाभाविक है। समाधान के लिए एक जगह है कि आप अत तक अनेक कामों को सँभालते हुए उनकी उत्तम सेवा कर सके। घर के काम करना, घर के लोगों की सेवा कर उनकी तबीयत सँभालना—ये सब करते हुए सघ का काम निरतर करने का उदाहरण आपने सामने रखा है। यह इच्छा है कि इस प्रकार के उदाहरण सब दूर हों। आप पर ही एक जिम्मेवारी, एक आवश्यक काम न रहने से जो रिक्तता निर्माण हुई होगी उसे आप सघकार्य में अधिक रममाण होकर भर सकेंगे। (मूल मराठी)

५९ उत्तम परिणाम का लाभ ले

श्री आबासाहेब हेळेकर, मुबई १६ जनवरी, १९४४

आपके शिविर की पूरी जानकारी प्राप्त हुई। उससे ज्ञात हुआ कि आपका यह कार्यक्रम बहुत ही उत्तम व्यवस्थित हुआ एव मुबईवासियों पर उसका उत्तम परिणाम हुआ। इस परिणाम का लाभ आप सब लेंगे ही। जिन मुबईवासियों ने शिविर को देखा, उनपर हुए सस्कारों का लाभ, उनका उत्साह ठडा पडने के पूर्व उठाया जाए एव उत्तम, नियमित एव वजनदार स्वयसेवकों की दृढ बढती हुई सख्या तैयार करनी चाहिए। यह बात भी सब कार्यकर्ताओं के ध्यान में है ही। (मूल मराठी)

६० धृत्युत्साहसमन्वित कार्य करे

श्री दत्ता जोशी, बीजापुर (कर्नाटक) २८ जनवरी, १६४४

यह सभी जानते हैं कि बीजापुर का क्षेत्र वैसे कठिन ही है। वहाँ जिला शिविर हुआ, यह प्रगति भी कम नहीं है। कार्य बिल्कुल मन के मुताबिक नहीं बढा तो भी उससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है। स्थिरता से यश मिलने तक, याने सब लोगों के मन आदर से एव श्रद्धा से अपने कार्य की ओर आकृष्ट होने तक अपने को परिश्रमपूर्वक काम करते रहना है। यश मिलेगा, इसमें कोई सदेह नहीं है। इसके लिए कितना समय लगेगा यह कहना कठिन एव अयुक्त है। कितना भी समय लगे, तो भी अपना अतिम पडाव हासिल करने तक अविरत कार्य करते रहना एव प्रत्यक्ष प्रथमत अपयश दिखाई दे तो भी उत्साह बढता रखकर लगन से हमें आगे बढते रहना है। तुमसे ऐसे ही उत्साह, धैर्य एव तीव्र लगन से कार्य करते रहने की यहाँ सबकी अपेक्षा है, जिसे तुम निश्चय ही पूर्ण करोगे, ऐसा विश्वास है। (मूल मराठी)

६१ कार्य-विस्तार की सघदृष्टि

श्री माधव नातू, मगलौर (कर्नाटक) २६ जनवरी, १६४४

जिले में काम का विस्तार बहुत हुआ है तो भी लगता है कि अभी तक वृत्ति अधिक स्थिर एव श्रद्धायुक्त नहीं हुई है सब स्वयसेवकों में अभेद्य एकात्मता पैदा करना भी नितात आवश्यक है। इस दृष्टि से हम काम करनेवालों को आपस में शुद्धात करण से रहना चाहिए सरल मन से व्यवहार कर विश्वास का वातावरण पैदा करना आवश्यक है, इस ओर ध्यान देते रहें। कार्य दृढ करते समय, आज जो विस्तार हुआ है, वह अधिक न बढा या थोडा-बहुत कम होता दिखाई दिया, तो भी कुछ काल चल सकता है परतु यह न हो कि विस्तार बढा हो एव सघ की दृष्टि न हो, विश्वास न हो, दृढता न हो, निष्ठा न हो, त्याग की सिद्धता न हो, तो इन एव एतत्सदृश गुणों से विरहित काम कितना ही बडा दिखता हो, तो भी उपयोगी नहीं है। यह विवेक सदा जागृत रखकर कार्य करें। (मूल मराठी)

६२ दु ख मे आप एव मैं एकत्र

श्री केशवराव जोगळेकर, भिवडी (महाराष्ट्र) 9 फरवरी, १९४४

आप पर हुए काल के आकस्मिक आघात की आपने मुझे सूचना दी। यह हमेशा का अनुभव है कि सघ के काम में तन्मयता से रममाण होनेवाला पुत्र घर में अत्यत प्रिय होता है। सबको निरपवाद प्रिय होगा, ऐसा ही आपका चि. वह था। सघ की पद्धति के अनुसार कर्तव्य के नाते प्रत्येक स्वयसेवक पर पुत्रवत स्नेह करना चाहिए, अब वह कर्तव्य-भावना एक दृढ स्वभाव ही बन गया है। अब कर्तव्य का भाग कभी का ही समाप्त हो गया है एव स्वभावत स्वयसेवक कहने पर उसका सुख-दु ख मन को आदोलित करता रहता है। इस दु ख में आप एव मैं एकत्र हैं। इससे अधिक लिखना असभव है। (मूल मराठी)

६३ स्वास्थ्य सुदृढ हो, चित्त प्रसन्न हो

श्री गोपाळ वाकरे, हुबळी (कर्नाटक) ६ मार्च, १९४४

'यद्यपि पत्र में यह उल्लेख है कि स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है, तथापि सपूर्ण पत्र की ध्वनि मन को अत्यत दु ख देनेवाली एव चिता उत्पन्न करनेवाली है। स्वास्थ्य ठीक होने तक कदाचित अपेक्षा से अधिक समय लगा, तो भी शाति से, उतावले न होते हुए प्रतीक्षा करनी ही चाहिए। यह शरीर का भोग है। वह शात चित्त से भोगना एव मन प्रसन्न रखकर शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होने में अपनी चित्तवृत्ति सहायक होने देना योग्य है। उतावले होकर मन क्षोभ कर लेना ठीक नहीं है। काम में खड पडे तो भी चलेगा, परतु ऐसे स्वास्थ्य से काम आगे बढाना समव नहीं होगा। इसलिए खड पडने से कोई आपत्ति नहीं है। स्वास्थ्य शीघ्र सुदृढ करने के उद्योग में प्रसन्नचित्त से व्यवहार करना ही ठीक है। (मूल मराठी)

६४ समर्पित जीवन वदनीय

श्री गणेशपत देवकर, १२ जुलाई, १९४५

अपने बधु की सत्कार्य में मृत्यु हुई। शास्त्र कहता हे कि ऐसे लोगों को सदा सद्गति प्राप्त होती है। इहलोक का जीवन सार्थक हुआ तथा

परलोक में उत्तम गति— ऐसा उनका आदर्श जीवन रहता है। उनकी दिव्य मृत्यु से हम जैसे शेष लोगों को स्फूर्ति मिलनी चाहिए। परतु कुछ दृश्य स्वरूप के बिना ऐसे जीवन का किसी को स्मरण होता नहीं। इसलिए स्मारक की नितात आवश्यकता है। यह अत्यत सतोष की बात है कि इस प्रकार का उपक्रम हाथ में लिया गया है।

मैं आशीर्वाद दूँ, ऐसा मेरा अधिकार नहीं है। जो केवल काम करता हुआ जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखता है, उसे काम करते समय ईश्वरार्पण हुआ प्रत्येक व्यक्ति गुरुस्थान पर रहता है तथा ऐसे लोगों का स्मारक, उस स्मारक के लिए होनेवाले प्रयास तथा वह प्रयत्न करनेवाले सभी वदनीय रहते हैं। मेरा तो केवल प्रस्तावित स्फूर्तिप्रद स्मारक को नमस्कार करने का अधिकार है।

मन-बुद्धि को जो विचार जँचे, वे लिखे हैं। त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। (मूल मराठी)

६५ विजिगीषु वृत्ति से काम मे जुटे

(प्रातीय सम्मेलन की दृष्टि से मार्गदर्शन)

मा बाबा जी पाध्ये, प्रात सघचालक ४ मार्च, १९४६

सप्रति देश में अनेक विचार और विकार पनप रहे हैं। अनेकों तो स्वतत्रता आगन में पहुँचने के स्वप्न देख रहे हैं। अकाल की भीषण छाया भी सुखस्वप्नों को चकनाचूर कर रही है। ऐसे समय चित्त-वृत्ति विचलित होना अस्वाभाविक नहीं। परतु ऐसे समय ही जो गभीरता से बुद्धि-गृहीत मार्ग पर अडिग रहता है तथा आगे बढता है, वही खरा। 'विकारहेतो सति विक्रियन्ते येषा न चेतासि त एव धीरा , (अर्थ— विकार के साधन समुपस्थित होने पर भी जो विकारवश नहीं होता, वही धैर्यवान है)

सबके सामने अपना लक्ष्य स्पष्टतया बार-बार रखना चाहिए। सब प्रकार की विस्फोटक अवस्था सच्ची जागृति नहीं। ठहर-ठहर कर विद्रोह होने से लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक सभव है। और सबसे बढकर बात तो यह है कि सब दूर सूत्रविहीनता का बोलबाला है। मानो नई-नई जातियाँ निर्माण होकर कर्तव्य के लिए नहीं, अपने-अपने अधिकार के लिए, अलग-अलग सघर्ष करते हुए सब दूर अव्यवस्था फैला

रही हैं। इन सब बातों में से कुछ निष्पन्न होनेवाला ही हो, तो वह उससे कितना विसगत रहेगा, जिसे हम अपने हृदय में शताब्दियों से सजोए हुए हैं तथा विगत बीस वर्षो से परिश्रमपूर्वक प्रकट करने के लिए प्रयत्नशील हैं। सबको यह बोध कराना उचित होगा। यह ज्ञान मन में रखकर, अपने इष्ट ध्येय की तेजोमय मूर्ति प्रत्येक के अत करण में स्पष्टतया प्रकट होगी– ऐसा व्यवहार हुआ, तो अपने कार्य के बारे में निष्ठा दृढतर होकर पूरी ताकत के साथ करने की प्रवृत्ति निर्माण होगी। चारों ओर का वातावरण जितना प्रक्षुब्ध तथा बाह्य दृष्टि से प्रतिकूल हो, उतनी ही कार्यकर्ताओं की ताकत बढनी चाहिए, निष्ठा दृढ होनी चाहिए तथा हम सफल होंगे ही– इस विश्वास से, निश्चय से तथा विजिगीषु वृत्ति से सबको काम में जुट जाना चाहिए। इस प्रकार का सारा वातावरण रहे तथा सर्वत्र दिखनेवाली अस्थिरता ही अपने लिए उत्तम अवसर है– ऐसा समझकर आत्मविश्वास दृढ करना, यही इस वर्ष के सम्मेलन का उद्दिष्ट प्रमुखता से रहना चाहिए। (मूल मराठी)

६६ पुत्रवत वात्सल्य से प्रोत्साहन दें

मा श्री भाई सेठ दयाल जी, मुबई १० जून, १९४७

' आपकी छत्र छाया में मुबई की शाखा को विलोभनीय तथा प्रतिष्ठित स्वरूप प्राप्त होगा। आपकी योजना मुबई के कार्य के अग्रस्थान पर हुई है। आपकी छत्रछाया में मुबई के सब छोटे-बडे कार्यकर्ता अतीव उत्साह से शाखा बढाकर ही रहेंगे। आप इन सबमें पुत्रवत वात्सल्य का भाव रखकर उन्हें प्रोत्साहित करेंगे और उनके कार्य करने में जो भी बाधा या अडचन होगी, दूर करेंगे ही। वयस्क सज्जनों में अपने दैनिक कार्य की कल्पना आपसे प्रसृत हो सकेगी और मुबई की शाखा को विलोभनीय तथा प्रतिष्ठित स्वरूप प्राप्त होगा।

६७ अपनी नीति ही सही है

श्री आबासाहेब देव, धुळे (महाराष्ट्र) ७ जुलाई १९४७

इसमें कोई सदेह नहीं है कि वर्तमान स्थिति सभी सहृदय सज्जन व्यक्तियों को दु खदायक है। उसमें भी यह विशेष दु खदायक

बात है कि अपने समाज के अनेक व्यक्ति ही इसके लिए जिम्मेदार दिखाई देते हैं। इसका सबको प्रतिवाद करना योग्य है। हम अपनी पद्धति से काम करते हैं एव उसकी वृद्धि, यही अपनी ओर से होनेवाला बडा प्रतिवाद है। यह अपनी नीति सर्वश्रुत है कि राजकीय घटनाओं के दिन-प्रतिदिन बदलनेवाले उन रगों का अपने कार्य पर परिणाम न हो। सभी घटनाओं में 'आतर कोऽपि हेतु' होता है, यह जनसाधारण मे कितने लोगों को ज्ञात होगा? यह ज्ञात न होने से हमें कौन-सी नीति का अवलब करना चाहिए, इसके निर्णय में भूल हुई तो अपने लिए सकट की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी, इस विषय में विश्वास करना असभव है। इतना ही नहीं तो जो नहीं होना चाहिए, वही होना सभव है। यह विषय बहुत गूढ एव समय खानेवाला है। भेंट में स्पष्टीकरण करूँगा एव अपनी नीति ही सही है—यह आपके सहज ध्यान में आएगा।

(मूल मराठी)

६८ देवरस कुल का अभिमानार्ह महत्कार्य

श्री भास्कर राव देवरस, बिलासपुर (म प्र) २१ जुलाई, १९४७

मनोहर देवरस मिलकर गया। इस समय अधिक कर्तृत्ववान एव धैर्यवान, शात प्रकृति के तरुणों को बगाल के कार्य के लिए भेजना आवश्यक होने से उसकी उस ओर योजना हुई है। अपने सब लोग सुरक्षित हैं। स्वय की एव स्वयसेवक बधुओं की रक्षा कर रहे हैं। पश्चिम बगाल में सुरक्षितता है। देवरस कुल ने सघ के लिए जो काम किया है एव कर रहा है, उसका उल्लेख आपने किया है। अभिमान करने योग्य ही वह महत्कार्य है। आपके बधुवर्गों की पीढी ने पूरे भारत के सगठन में अपना नाम उजागर किया है एव युवा पीढी मे मनोहर, कुलकीर्ति में चार चॉद लगा रहा है। अनेक दिनों से मुझे विश्वास हो रहा था कि यह एक लडका कर्तृत्व एव दृढता दिखायेगा। मनोहर ही कार्य की दृष्टि से पूर्णत योग्य एव अत्यत आवश्यक दिखाई दिया एव इसीलिए उसकी योजना वहॉ हुई। यदि आप भली-भाति विचार करेंगे तो मन पर तनाव नहीं पडेगा।

(मूल मराठी)

६६ सत्य की जीत

मा चारू बाबू, भागलपुर (बिहार) १५ अगस्त, १६४७

२ अगस्त से निलंबित मामले में अपने सभी बंधुओं की मुक्ति होने का आनंददायी समाचार श्री काशीनाथ मिश्र से प्राप्त हुआ। मामला मिथ्या धारणा पर आधारित था एवं अन्य एवं कुटिल शक्तियाँ कार्यरत न होतीं तो उसका इसी प्रकार अंत होना था।

मुझे आशा है कि अपना कार्य अन्य स्थानों जैसा ही प्रगति पथ पर है। अपने को राजनैतिक शत्रुता से मुक्त रखकर, हम दृढ़ता से उत्तम समाज का, जो अपने पूर्व गौरव के अनुरूप होगा, निर्माण कर सकते हैं।

मैं भारत भर प्रवास कर रहा हूँ एवं अब तक सर्वत्र अपने कार्यकर्ताओं में उत्तम उत्साह का अनुभव किया है। (मूल अंग्रेजी)

७० मनोबल बनाए रखने के लिए आवश्यक

श्री धीरेश बहादुर, शुशांग (पूर्व बंगाल) १८ अगस्त, १६४७

यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि आपने शुशांग में ही रहने का निश्चय किया है। लोगों का मनोबल बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है। भय एवं घबराहट से लाभ नहीं होगा। आपकी उपस्थिति लोगों का धैर्य बँधाने में परिणामकारक हो सकती है। मनोहरजी (बंगाल के प्रांत प्रचारक) का पत्र मुझे प्राप्त हुआ है। उन्होंने सूचित किया है कि आप विजयादशमी उत्सव के समय नागपुर पधार रहे हैं। (मूल अंग्रेजी)

७१ पुन सिंध कब जा सकूँगा?

डा मोहनलाल, क्वेटा (बलूचिस्तान) २२ अगस्त, १६४७

मुझे अपेक्षा थी कि हैदराबाद (सिंध) में आपसे भेंट होगी। परंतु आप नहीं आए। श्रीमान् गोविंद अचानक ही चले गए। मैं उनसे कुछ विशेष विषयों पर बातचीत नहीं कर सका। मैंने उन्हें पत्र लिखा है एवं उनके उत्तर की अपेक्षा कर रहा हूँ मुझे विश्वास नहीं है कि मैं पुन कब सिंध जा सकूँगा। (मूल अंग्रेजी)

७२ निद्रित समाज को जागृत करे

श्री आर श्रीनिवासन, तिरुच्ची (तमिलनाडु) २६ अगस्त, १६४७

प्रत्येक चितनशील मनुष्य के मन-मस्तिष्क में अनेक प्रश्नों का तॉता सा-लगा हुआ है। वैसे तो समस्याओं का हल सुलभ है, यदि किसी विशेष विचारप्रणाली या कार्यप्रणाली की ओर हमारा झुकाव न हो और हम उन समस्याओं से सीधा सघर्ष करें। समस्याओं की इस जटिलता में मैं एक मार्ग का अनुसरण करता हुआ सुदृढ निर्मिति के कार्य में प्रयत्नशील हूँ। निकटवर्ती भविष्य में मैं दक्षिणक्षेत्र में जाने का सोच रहा हूँ और अपने सभी सबधित लोगों की उपस्थिति में इस विषय का विस्तृत विवरण करने की आशा करता हूँ। तब तक हम सभी को चाहिए कि अपनी अनवरत उद्यमशीलता से सभी सामाजिक स्तरों में कार्य वृद्धि करें और अपने निद्रित समाज को जागृत करने का प्रयास करें। (मूल अग्रेजी)

७३ कई वर्षों के अनुभव का नया उदाहरण

श्री दत्तोपत ठेंगडी, कोलकाता (प बगाल) ६ सितबर, १६४७

वहाँ की स्थिति ज्ञात हुई। समाचार-पत्रों द्वारा अच्छा प्रचार किया गया। अब यह देखना है कि शाति कब तक टिकनेवाली है। वास्तव में इस दॉव में योजना हिंदुओं की नहीं, अपितु प्रतिष्ठित हिदू व्यक्तियों का उपयोग कर, हर पग अपने लाभ के लिए उठाने की नीति का अवलब कर चलनेवाले अहिंदुओं की है। यह घटना पिछले कई वर्षों के अनुभव का ही एक नया उदाहरण है। इससे कुछ समय तक भ्रम का राज्य फैलाकर लोगों को समझाना कठिन सा होगा। परतु हम लगन से अपना काम करनेवाले ही है एव उसे सबदूर फैलानेवाले ही हैं। (मूल मराठी)

७४ काम का प्रसार हो

माननीय बाबा भिडे, पुणे (महाराष्ट्र) ६ सितबर, १६४७

काम का प्रसार हो। वह दृढ हो एव अन्य प्रणालियों का प्रभाव जनमानस में से कम हो– यह अत्यत आवश्यक है। अपनी कार्यप्रणाली, नीति, परिभाषा न छोडते हुए, यही नहीं तो उस पर दृढ रहते हुए काम

करते रहना चाहिए। इस दृष्टि से सबको अधिक प्रयत्न करने को कहा जाए। यह स्वीकार करना ही पडेगा कि आपको यह लिखते समय अत्यत सकोच होता है। (मूल मराठी)

७५ शरणार्थियो का प्रवाह, व्यवस्था की आवश्यकता

श्री वसतराव ओक, दिल्ली १६ सितवर, १९४७

लोकमान्य जेटले को दिल्ली भेज रहा हूँ। जोधपुर रियासत में एव सभी स्थानों पर शरणार्थियों की कम से कम अस्थायी व्यवस्था शीघ्र एव बडे पैमाने पर होनी चाहिए। अनेक स्थानों पर लोग आने लगे हैं। सिध प्रात की स्थिति बहुत ही तेजी से बदल रही है। कराची में हुई एक घटना का लाभ उठाकर प्रमुख स्वयसेवकों पर जुल्म ढाए जा रहे हैं। हिदू-समाज की दृष्टि से भी जीवन दूभर हो उठा है। कानूनी शिकायत करने पर भी लाभ नहीं है, उल्टे जान के लाले पड जाते हैं। भय है कि कहीं पजाब की घटनाओं की अधिक योजनापूर्वक पुनरावृत्ति आनेवाले ८-१५ दिनों में घटित न हो। इसलिए हिदू व्यक्तियों को हटाना जरूरी है। कराची के अधिकारीगण केवल उदासीन ही नहीं, तो हिदुओं की सुरक्षितता के बारे में विरोधी ही हैं। अत दिल्ली के अधिकारी वर्ग ने आतर राजकीय योजना एव आवश्यक रेलगाडियाँ, हवाई जहाज आदि के साथ प्रयत्न किया, तो ही कुछ राहत मिल सकती है। सिध से आने को खुश्की का मार्ग नहीं है। विद्युत नौकाएँ अपर्याप्त हैं। सरकारी बाधाएँ भी हैं। हैदराबाद-जोधपुर रेलमार्ग से ही यात्रा केवल कम से कम सुरक्षित है। कार आदि वाहनों को बाहर निकलने का स्थान नहीं है। स्थिति यह है कि प्रमुख स्वयसेवकों पर आए हुए सकट से व्यवस्था करने को कोई नहीं है। ऐसे समय दिल्ली के सिवाय थोडी-बहुत क्यों न हो- हलचल असभव ही है। सब बातों का विचार कर प्रयत्न किए जाएँ।

७६ कार्य श्रेष्ठ, उसमे धीरज देने का श्रेष्ठ गुण

मा बाबाराव भिडे, पुणे (महाराष्ट्र) २० सितवर, १९४७

कितने ही निकट के मित्र सकट में पडे हैं। कुछ स्वर्गवासी हो चुके हैं। कुछ की तलाश पूरी नहीं हुई है। इससे जब एकात मिलता है तो मन उद्विग्न हो जाता है, परतु कार्य श्रेष्ठ है। सब दु खों को निगलकर,

वृत्ति का सतुलन विगडने न देते हुए, वह करने का धीरज देने का श्रेष्ठ गुण उसमें है। इसी प्रकार सब दूर स्वयसेवक बधु कार्य को सँभालते हुए, उत्साह से विस्तार एव दृढता दोनों दृष्टि से प्रगति पर ले जा रहे हैं। उनका यश देखने का सौभाग्य परमेश्वर ने मुझे दिया है एव इससे मन बेकाबू न हो, इसलिए प्रिय बधुओं के वियोग-दु ख की परपरा खडी कर वे मन को लगाम लगा रहे हैं। (मूल मराठी)

७७ पजाब सहायता निधि

श्री वी राजगोपालाचारी जी, चेन्नै १४ नवम्बर, १९४७

पजाब सहायता कोष के विषय में अपने सभी स्वयसेवकों पर भार न डालते हुए कुछ प्रौढ स्वयसेवक जो दान में अच्छी धनराशि दे सकते हैं, ऐसे समाज के अन्य लोगों से मिलकर एक लाख या कुछ अधिक निधि एकत्रित करें और इसे क्रॉस ड्राफ्ट से दिल्ली के पते पर यथाशीघ्र सभवत दो सप्ताह की कालावधि में भेजें। इससे सर्दी के मौसम में आसन्नमरण अनेक बधुओं के प्राण बच सकेंगे। आपके द्वारा चयन किए गए ऐसे दानशूरों से मिलते समय अपने प्रौढ स्वयसेवकों के पास यदि आपका पत्र रहा तो अपेक्षित धनराशि सुविधा से भेजी जा सकती है। परिस्थिति की गभीरता को सोचते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि अपने आपद्ग्रस्त बधुओं के लिए आपके द्वारा आवश्यक सभी प्रयास किए जाएँगे। कबल आदि अन्य आवश्यक वस्तुओं को भी वितरण के लिए दिल्ली के पते पर भेजा जा सकता है।

अपना कार्य प्रगति कर रहा है और इसी कारण कुछ अनाहूत विरोध से सघर्ष भी आवश्यक है। अपना तमिलनाडु प्रदेश भी, परमात्मा की कृपा से, प्रगति पथ में आनेवाली सभी कठिनाइयों से ऊपर उठकर, शीघ्रता से वृद्धि कर रहे अपने अन्य प्रदेशों के समान प्रगति करेगा। (मूल अग्रेजी)

७८ प्रभु कृपा से मै आपसे पुन मिल सकूँगा

(श्री नद बदलानी तथा १२ अन्य स्वयसेवकों को पाकिस्तान को पुन अखड भारत में विलीन करने के प्रयास के आरोप में कराची जेल में रखा गया था। श्री गुरुजी के इलाहाबाद से लिखे इस पत्र को उन तक पहुँचाया गया था।)

श्री नद वदलानी, करार्ची (सिंध) इलाहाबाद, २६ नवबर, १९४७

आप पर अनपेक्षित, अकारण आई विपत्ति की जानकारी मुझे प्राप्त हुई है। स्वय को निर्दोष, प्रमाणित करने में परमात्मा को आपकी सहायता करने के लिए मैं विनती करता हूँ। यदि इस विलक्षण ससार में कोई न्याय बचा है तो आप निश्चित ही मुक्त होंगे तथा आप का भविष्य उज्ज्वल होगा।

मुझे पता लगा कि आप मौन एव एक प्रकार से उदासीन रहने लगे हैं। यदि यह महान न्यायप्रिय परमात्मा की सर्वहितकारी इच्छा में आपके विश्वास का प्रकटीकरण है, तो मैं पूर्णतया आपके साथ हूँ। स्मरण रहे कि हम विशेष एव घृणा की उन भावनाओं और कृत्यों से, जिनके कारण हमारे विश्व का वातावरण दूषित हो रहा है, पूरी तरह से ऊपर उठकर, अपने लोगों के बारे में स्नेह का भाव रखते हुए मानवता उत्सर्ग के पवित्र कार्य में जुटे हैं। अत इस प्रकार प्रभु हमारा कभी परित्याग नहीं करेंगे। ये विपदाएँ अपने उद्देश्य एव परमात्मा में हमारे विश्वास की परीक्षा मात्र हैं। अत मैं आपको निवेदन करता हूँ कि मेरे ऊपर भरोसा रखते हुए आप प्रसन्न रहें, क्योंकि गरिमामय परमात्मा ने जॉच द्वारा सत्य स्थापित करने हेतु आपका चयन किया है। मैं सच्चे हृदय से विधाता की आराधना करता जाऊँगा ताकि सहयोग करते हुए वे आपको ऐसा धैर्य प्रदान करें, जो इस पवित्र कार्य में सबल बन सके।

मेरा पक्का विश्वास है कि कानूनी दृष्टि से अपेक्षित सब कुछ किया जा रहा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सभी श्रेष्ठतम सभव प्रयत्न कर रहे हैं, ताकि न्याय प्राप्तकर आप सभी आरोपों से मुक्त हो जाएँ। इन प्रयत्नों को परमात्मा सफल बनाएँ तथा एक बार पुन आपसे शीघ्र मिल सकूँ, ऐसी कृपा करें। फिलहाल अन्तर्बाह्य मुस्कान के साथ दैवी अनुग्रह की प्रतीक्षा करें।

७६ सगठन शास्त्र के अनुसार व्यवस्थित विचार करें

श्री विट्ठलराव जोशी, अदन २३ दिसबर, १९४७

हम सब एक ही पथ के यात्री हैं। लक्ष्य एक ही है। उसके लिए प्रत्येक को, जो सारे योग्य मार्ग सूझते हों, उनका अवलबन करना उचित है। इन प्रयासों में कदाचित् एक-दूसरे को अच्छी न लगनेवाली बात घटित हो, तो भी उस विषय में क्रोध या गलतफहमी रखना अनुचित है।

अपने कार्य में तो किन्हीं भी विपरीत भावनाओं को स्थान नहीं है। व्यक्ति एव प्रकृति की विचित्रता के कारण यह अपना कर्तव्य होता है कि कुछ अरुचिकर आचार-विचार हुआ, तो भी सगठन शास्त्र के अनुसार व्यवस्थित विचार कर, मन में सदेह पैदा नहीं होने देना चाहिए। इसलिए यद्यपि आपके द्वारा किए गए परिश्रमों के सभी पहलुओं से मैं सहमत नहीं हूँ, तथापि आपके शुद्ध हेतु, मन की श्रेष्टता, सर्वांगीण उन्नति के लिए आपके अन्त करण में विद्यमान छटपटाहट के प्रति आदरयुक्त स्नेहपूर्ण स्मृति मेरे हृदय में है। तव यही प्रार्थना है कि क्षमा आदि की औपचारिक दिखनेवाली रस्म छोडकर हम शुद्ध हृदय मित्र के नाते एक ही ध्येय-मदिर के मार्ग की यात्रा के सदैव साथी बने रहें। सह्याद्रि में प्रकाशित आपका लेख पढकर आनद हुआ। (मूल मराठी)

८० सिंध के कारावास से कार्यकर्ताओ की मुक्ति

श्री राजपालजी, मुबई — २४ दिसबर, १९४७

श्री दफ्तरी जी से सब बातचीत करके, शुल्क आदि पक्का करके मुझे सूचना दें। जैसे भी हो उसका प्रबध करूँगा। वे चिंता न करें और आप भी निश्चिंत रहें। कराची के बैंक में जो द्रव्य है उस विषय में डियलमल से पृच्छा कीजिए तथा मा श्री होतचद जी से भी परामर्श करके मुझे सूचित कीजिए। केस में वकील देने का काम सब मिलकर ठीक करें। डियलमल तो मा खानचद जी के लिए और आप जैसा तय करेंगे, वैसा बाकी के लोगों के लिए और वकील देने में कुछ चिंता नहीं, परतु सबका आपस में मेल होना चाहिए। काम की एक ही दिशा होनी चाहिए।

८१ सघ की नीति सही तथा अमोघ है

श्री चक्रपाणी उल्लाळ, मगलौर (कर्नाटक) — ३० दिसबर, १९४७

मुझे खुशी है कि अधानुसरण जैसा आप सघकार्य नहीं कर रहे हैं। अपने स्वयसेवकों को चाहिए कि वे स्वतत्र रूप से सोचें। ऐसा ही सोचते हुए आप बीच की ही एक सीढी पर आ पहुँचे हैं, जहाँ अपने तथाकथित श्रेष्ठ पुरुष रुके हुए हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि इस वैचारिक चिंतन में न रुकते हुए आप अपनी चिंतन-प्रक्रिया चालू रखें और

उसे तर्कसगत निष्कर्ष तक ले चलें। इससे आपको सघ की विचार-प्रणाली एव कार्यपद्धति का यथार्थ स्वरूप दृष्टिगोचर होगा और सघ की नीति सही तथा अमोघ है, ऐसा आपका विश्वास दृढ होगा।

शीघ्र ही आपसे मिलने की आशा है । (मूल अग्रेजी)

८२ परीक्षा की घडी है

श्री राजा देशपाडे, पुणे (महाराष्ट्र) ३० दिसबर, १६४७

सपूर्ण परिस्थिति ध्यान में है। हानि की नहीं, परीक्षा की घडी है। इसमें से हम अधिक विस्तृत एव दृढ स्वरूप में ही बाहर निकलेंगे। विरोध करने के पातक में न पडते हुए वाणी में या आचरण में कटुता न आने दें। कार्य पर ही दृष्टि रखें तो यश मिलेगा एव अनुकूलता प्राप्त होगी। (मूल मराठी)

८३ जितने व्यक्ति, उतने विचार

परममित्र अप्पा पेंडसे, पुणे ५ अगस्त, १६४६

मैंने पूरा पत्र विस्तार से पढा। आनद हुआ। इसमे सघ-विरोधी भूमिका उत्पन्न हुई है, ऐसा मुझे कहीं प्रतीत नहीं हुआ। सब दृष्टि से विचार कर कार्य की प्रगति की इच्छा दृढ रूप से व्यक्त हुई है, यही लगा, 'जितने व्यक्ति, उतने विचार' इस न्याय से कुछ सहकारी उन विचारों से सहमत होंगे, कुछ नहीं। लेकिन इसके पीछे की सद्भावना विवादातीत है।

आपके बारे में मेरे मन में किसी भी प्रकार का भ्रम नहीं होगा, इस विश्वास से आपने यह पत्र लिखा, इससे ही मुझे विशेष समाधान हुआ। आपका यह विश्वास उचित है, यह मैं अपनी ओर से स्पष्ट करना चाहता हूँ।

पत्रोल्लिखित विचार एव योजनाओं पर यथाशीघ्र मैं आपसे प्रत्यक्ष बातचीत करूँगा। तब तक मन में कोई विकल्प या व्यक्तिविशेष के विषय में पूर्वाग्रह न रखते हुए मन में बसी पूर्ण निष्ठा से सघकार्य करने की सिद्धता, आप माननीय श्री बाबा भिडे जी को बतलाएँ एव योजनानुरूप कार्य प्रारभ करें। पश्चात् हम मिलकर अधिक विचार से अत्यत लाभदायी मार्ग तथा कार्य की दिशा निश्चित कर कार्य करेंगे। (मूल मराठी)

८४ सुयोग्य उदाहरण

मा श्री के सदाशिवराव, मगलौर (कर्नाटक) ५ अगस्त, १९४९

मगलौर जिले में अपना कार्य फिर से प्रारंभ हुआ है। पूरे देशभर में अपने कार्यकर्ता गत अठारह मास में हुई कार्यहानि की पूर्ति करने के लिए पूरी शक्ति के साथ कार्य में लगे हैं। मुझे किंचित् भी सदेह नहीं है, अपने कर्नाटक प्रात के कार्यकर्ता भी प्रात को पुराना स्थान प्रदान कर प्रगति की ओर अग्रसर होंगे।

चेन्नै और अन्य स्थानों पर अपने स्वयसेवक बधुओं से बात करते हुए मैंने यह बताने का प्रयास किया कि हम एक नया और सुयोग्य उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जिसमें यह आवश्यक नहीं होता कि जो व्यक्ति जेल में जाएगा, वही कोई स्थान, पद या सम्मान प्राप्त करने के लिए पात्र होगा। आदोलन में जिनको कुछ भुगतना पडा, उन्होंने विशिष्ट परिस्थिति में अपना कर्तव्य निभाया। उनको गर्व से फूल जाने की या जिन्होंने आदोलन में भाग नहीं लिया, ऐसे कार्यकर्ताओं को नीचा दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। आखिर लोग विशिष्ट परिस्थिति या समय में अपने गुण और योग्यता के आधार पर उसका सामना करते हैं। इसीलिए मैंने अपने पुराने मा सघचालकों से प्रार्थना की है कि उनको जो अपनी विफलता लगती है, ऐसी भावना का त्याग करना चाहिए और विद्यमान परिस्थिति की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अपने सगठन को फिर से शक्ति प्रदान करने के प्रयास में लग जाना चाहिए।

मैं आपको यह इसलिए लिख रहा हूँ कि, आप अत्यत सवेदनशील होने के कारण सभवत ऐसा सोचेंगे कि आपने आदोलन में भाग नहीं लिया, इसलिए आपको अपने पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं। कृपया इस प्रकार के भाव मन में न लाएँ। अभी परिस्थिति सामान्य हुई है और कार्य के लिए आपके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन की आवश्यकता है। मुझे आशा है कि आप इस विषय पर सोचेंगे और स्वयसेवकों को प्रोत्साहित करके अधिक उत्साह से कार्य प्रेरित करने के लिए अपना पुराना दायित्व स्वीकारने का निर्णय करेंगे।

(मूल अग्रेजी)

८५ पिताश्री का आदर्श सामने रखें

श्री भाई महावीर जी, १० सितबर, १९४९

आपने अकारण ही बडा वैचारिक द्वद्व मन में खडा कर रखा है। इस प्रकार का द्वद्व उत्पन्न होने से कई बार योग्य विचार न होकर मन धोखेबाजी करता है तथा अयोग्य बातों को भी योग्य बताता है। परतु आपके विषय में द्वद्व का कुछ भी कारण नहीं है। सर्व दृष्टि से आपने पारिवारिक जीवन स्वीकार कर उसमें अविरत सघकार्य द्वारा राष्ट्रसेवा करने का आदर्श खडा करना और अपने पूज्य पिताश्री के कर्मयोगी जीवन के उदाहरण को उज्ज्वल रखना उचित है। गृहस्थाश्रम में कार्यगति घटने की आशका आप जैसे को करना अनुचित है। मुझे कोई सदेह नहीं कि आप गृहस्थ जीवन तथा राष्ट्रसेवा रूपी सघकार्य दोनों को व्यवस्थित रूप से निभा सकेंगे। अतएव सब सदेह त्याग कर मन में निश्चित हो कर इस गृहस्थजीवन के मार्ग का अवलब करें। इस आश्रम में रहकर प्रात के सघकार्य का भार पूर्ववत सँभालते रहें। परमपिता परमात्मा से मेरी यह सदैव प्रार्थना रहेगी कि आपके द्वारा गृहस्थजीवन में रहकर उत्कृष्ट राष्ट्रकार्य का आदर्श निर्माण करने का वह आपको सामर्थ्य दे, जिससे आप अपने पूज्य पिताश्री के सर्ववद्य नाम को अधिक तेजस्वी बना सकें।

८६ विरोधियों के प्रति भी स्नेहभाव प्रभावी

श्री काशीनाथराव लिमये, सागली २० सितबर, १९४९

२३ ९ १९४९ को हवाई जहाज से दिल्ली जाऊँगा। उसी दिन शाम को प नेहरू से भेंट तय हुई है। २४ या २५ को नागपुर लौट आऊँगा।

समाचारों के दो भाग रहते हैं। वृत्त-पत्रों में वृत्त अतिरजित तथा कई बार विकृत आते हैं। स्वयसेवकों द्वारा प्राप्त वृत्तों में भावुकता, अत्यधिक चिता रहती है। दोनों प्रकार के वृत्तों में से भावुकता, विकारवशता, अतिरजितता आदि निकाल डालने पर बचने वाला सत्याश सूक्ष्मदर्शक यत्र से ढूँढने पर भी खोजना कठिन है। यह ध्यान में रखकर आप निश्चित रहें। उसी प्रकार नागपुर पहुँचने पर ही मुझ पर हमला होने की वार्ता मुझे वृत्त-पत्रों से प्रथम ज्ञात हुई। उसमें तथ्य क्या है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

उत्तर के प्रवास में सयुक्त प्रात और बिहार में तथाकथित समाजवादियों ने कुछ प्रदर्शन आदि करने का प्रयास किया। परतु उसे 'nuisance value' (कटक) से अधिक महत्त्व देने का कारण नहीं। अत्यत छोटे पैमाने पर ऐसी घटनाएँ हुई। उनके पैरों के नीचे की जमीन खिसकने लगी है। म गॉधी की हत्या का लाभ उठाकर, कहीं की ईंट और कहीं का रोडा जोडकर सघकार्य को हमने नष्ट कर डाला– इस ख्याल में सब विरोधी थे, परतु जब उन्होंने देखा कि उसकी लोकप्रियता बढ रही है तथा उसकी निर्बाध रूप से वृद्धि हो रही है, तब उन्होंने महसूस किया कि उन्हें अब आसन जमाना कठिन हो जाएगा– इस बोध से उनमें जो क्षुद्र क्रोध जागृत हुआ वह 'शेप कोपेन पूरयेत्' न्याय से प्रकट हुआ। वह प्रयास मरते-मरते लत्तियाँ झाडने के समान था, यह कहना ही सही होगा। अर्थात् कुछ काल तक यह चिडचिडापन रहेगा, उसका थोडा बहुत उपद्रव होगा। परतु उसका अनिष्ट परिणाम होने की सभावना नहीं है। समाचार-पत्रों में वे कितनी ही चिल्ल-पों करें, उनकी इस कृति से साधारण जनता के मन में उनके बारे में अनादर बढ गया है। इसके साथ ही मैंने और अपने अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा धारण की गई क्षमा और विरोधियों के प्रति स्नेह भाव का जनमानस पर परिणाम हो रहा है।

पजाब से बगाल के प्रवास में उत्साह तथा सर्वसाधारण जनता की आत्मीयता का जो वातावरण दिखाई दिया, उससे अपना भविष्यकाल उज्ज्वल है, इस विषय में सदेह नहीं रहता है। अब अपने सामने पहला और महत्त्व का कार्य है, अपने कार्य की रचना ठीक कर पहले से अधिक शक्ति से उसे अधिक बढाने का प्रयत्न करना तथा ऐसा सामर्थ्य खडा करना, जिससे जनता के मन में आदर बढता जाए अपने सभी अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं को इस आवश्यकता का बोध है। इसलिए थोडी-बहुत पीडा हुई, तो भी तथा अपने घरेलू काम में कुछ व्यवधान आया, तो भी वह सब सहकर कार्य दृढ तथा विस्तृत करने के लिए सभी छोटे-बडे स्वयसेवकों को मेहनत करनी पडेगी। इसमें आलस्य, देरी अथवा टालमटोल बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। इस विषय में आप अपने प्रात में समय-समय पर सूचनाएँ भेजकर सभी को कार्यप्रवण करते रहेंगे।

(मूल मराठी)

८७ कार्य-वृद्धि के लिए सपर्क आवश्यक

श्री दादाराव परमार्थ, १२ अक्तूबर, १९४९

अपना कार्य सुचारू रूप से प्रारभ होकर बहुत काल बीत चुका है। अत प्रारंभिक उत्साह के आवेग में घोषणाएँ, जय-जयकार, शोभायात्राएँ भीड, गडबडी आदि जो कुछ हुआ, उसे अब छोड देना होगा। वह मनोवृत्ति अपने कार्य में सदा बनी रहना उचित नहीं। अपनी शात, सयमित पद्धति ही उत्तम है।

कार्य की पुनर्रचना करते समय विशेष रूप से तथा हमेशा कार्य करते समय सर्वसाधारण नियम के रूप में अनेक परहेजों का पालन करना पडता है। नित्य और निकट सपर्क में से अपना कार्य होता है, इसलिए वैसे सबध प्रस्थापित करते समय यह सावधानी बरतनी होगी कि उसमें से किसी के भी मन में विपरीत भाव पैदा नहीं होगा। कार्यकर्ताओं के कुछ व्यक्ति प्रिय, कुछ अप्रिय हैं, इस पक्षपात-व्यवहार से स्वय के उपेक्षित होने का भाव किसी के मन में पैदा न होने देना, स्वय की सहनशीलता बढाकर मन सतुलित रखना, कार्य की पुनर्रचना होते समय किसी को ठेस न पहुँचाते हुए उदार अत करण से तथा स्नेह से सबको कार्य समझाकर उनसे वह करवा लेना, ये और ऐसे ही निर्बंध अपने पर लगाकर व्यवहार करना सभी कार्यकर्ताओं तथा विशेषत प्रचारकों को आवश्यक है। (मूल मराठी)

८८ केवल जेल जाना ही योग्यता का प्रमाण नहीं

श्री रामेश्वर दयाल जी, १७ अक्तूबर, १९४९

आपको मैं एक बात का स्मरण दिलाना चाहता हूँ, जो कि मैंने स्वयसेवकों की बैठक में कही थी। अपने कार्य की रचना में किसी भी स्वयसेवक को इस बात का गर्व नहीं करना चाहिए कि वह कारागार में गया था। यह तो उसने ठीक ही किया, क्योंकि वह उसका कर्तव्य ही था कि सघकार्य के लिए आवश्यक जो कुछ हो, वह करे। साथ ही जो किसी कारण कारागार में नहीं जा सके, उन्हें अपने मन में यह सोचने का कारण नहीं कि अब उनको कार्य में स्थान नहीं है अथवा उन्हें अधिकार पद ग्रहण करने का अधिकार नहीं। जब कार्य व्यवस्थित चलता है कोई आपत्ति या अशाति नहीं रहती, तब काम को ठीक चलाने के गुण जिनमें हों, वे

अधिकारी रहें, कारावास यह अधिकारी होने का प्रमाणपत्र नहीं होना चाहिए, ऐसी मेरी धारणा है।

८६ परिस्थिति के अनुरूप गुण चाहिए

श्री बाबूराव आप्टे, बडोदरा १७ अक्तूबर, १६४६

बीच के सकटकाल में किसने कैसा व्यवहार किया, उसकी शारीरिक और मानसिक तैयारी कितनी और कैसी थी आदि बातों की ओर मैंने बहुत कुछ दुर्लक्ष्य किया है। केवल जिन्होंने अपने होकर भी भूल से विरोध किया उसके बारे में ही विचार करने की आवश्यकता है। दूसरों के बारे में मेरी भूमिका मैं अनेक बार सार्वजनिक रूप से कह चुका हूँ। जिस प्रकार अन्य सस्थाओं में यह धारणा है कि जो कारागार में गया, वही अधिकार-पद पर आरूढ होने के योग्य है, वह मेरी दृष्टि से ठीक नहीं है। अन्य सब गुण समान होते हुए कारागारादि कष्ट सहने की सहजसिद्धता एक और गुण हो सकता है, परतु मेरी दृष्टि से वही एकमेव सर्वश्रेष्ठ गुण मानना तथा उसी पर ही अधिकार बाँटने का निर्णय करना योग्य नहीं। धकाधकी, सघर्ष के काल में विपदाएँ सहने को जिन गुणों की आवश्यकता है, वे भिन्न हैं तथा शाति-काल में कार्य निर्बाधता से तथा व्यवस्थित चलने के लिए जो गुण चाहिए वे भिन्न रहते हैं। दोनों प्रकार के गुण एक ही व्यक्ति में रह सकते हैं या नहीं भी रह सकते हैं, यह ध्यान में रखकर ही कार्य की रचना करना तथा अधिकारियों की योजना करना, मेरी दृष्टि से लाभदायी होगा। कष्ट सहना स्वयसेवक का स्वाभाविक कर्तव्य है और वह उसने किया, परतु उससे कुछ अधिकारादि की अभिलाषा रखना भूल है, यही सब स्वयसेवकों की धारणा रहनी– चाहिए ऐसी मेरी धारणा है तथा किसी ने किसी कारणवश सघर्ष में भाग नहीं लिया इसलिए वह सदैव अयोग्य माना जाए यह, मुझे लगता है कि बिल्कुल ही भूल है। इस सबध में उदाहरण देना हो, तो प्रत्यक्ष युद्ध-क्षेत्र पर लडनेवाला तथा उसमें आघात सहनेवाला सैनिक कुछ गुणों के कारण श्रेष्ठ सैनिक कहलाएगा, परतु उसके कारण वह मत्री बनने के योग्य सिद्ध नही होगा। परतु जिसने युद्ध क्षेत्र की ओर झॉक कर भी नहीं देखा हो, कदाचित् युद्ध के नामोच्चार से जिसमें हडकप पैदा होता हो, वह शाति के काल में अपने गुणों के कारण मत्री होने की योग्यता का होगा। ऐसे समय बुद्धिमान लोग किस को चुनेंगे, यह

स्पष्ट है। युद्ध जीतनेवाला चर्चिल युद्धोत्तर पुनर्रचना के काल में पीछे धकेल दिया गया, यह उदाहरण है। मेरे इन विचारों पर आप सोचें। फिर भी मैं आपको अधिक आग्रह कर पीड़ा नहीं दूँगा।(मूल मराठी)

६० सतत निरपेक्ष कार्य आनंद का स्रोत

श्री बाळासाहेब हरकरे, २१ अक्तूबर, १९४६

कभी-कभी मन में परस्पर-विरोधी विचार आकर वह उद्विग्न हो उठता है, परंतु मन शांत रखना नितांत आवश्यक है।

आपने अपने पत्र में अपने मन का नकारात्मक पहलू ही सामने रखा है, जिससे आप निश्चित रूप से क्या चाहते हैं, इसका बोध नहीं होता। ऐसे समय अत्यंत सावधानी से अपने मन का निरीक्षण करना पड़ता है। आपका यह कथन कि आपको विशिष्ट जीवन-क्रम भाता नहीं, अपूर्ण है। इसलिए संभवतः गलत भी है। अनुभव है कि अनेक लोगों के जीवन में ऐसा समय आता है, जब मन में अपूर्ण विचार ही उत्पन्न होते रहते हैं। केवल हम एक विशिष्ट कार्य की ओर मन एकाग्र कर उसके अनुरूप जीवनक्रम चले ऐसा प्रयत्न कर रहे हैं, अतः अपूर्ण और नकारात्मक विचार मन में आना कहाँ तक उचित है। अतएव आप निश्चित रूप से किस प्रकार का जीवन-क्रम अपनाना चाहते हैं तथा उसमें किस प्रकार अपना कर्तृत्व लगाना चाहते हैं, इसका विचार करना अत्यंत लाभदायी होगा।

मेरे मत से अपने मन को संतुष्ट और प्रसन्न करनेवाला जीवनक्रम सर्वोत्तम है। व्यक्ति की विशेष रुचि के अनुसार वह जीवनक्रम भिन्न-भिन्न होगा। क्षणिक सुख देनेवाली बातों में मन की प्रसन्नता नहीं मिलती। संपूर्ण जीवन में उदात्तता भरकर मन को ऊँचा उठाने से एक निरपेक्ष आनंद निर्माण होता है। उसे साध्य करनेवाली बातों पर आचरण करने से मन की प्रशांत अवस्था निर्माण होती है इस बात का कदापि विस्मरण न हो।

वर्तमान में पैदा हुए हिंदुओं के जीवन की चरम सार्थकता है -

- अधिक से अधिक व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन से अलिप्त रहने का प्रयास।
- अपने समाज के सांस्कृतिक उत्थान के लिए समष्टिभाव निर्माण करना।

– ऐहिक अभ्युदय के लिए निरपेक्ष भाव से तथा योग्य मार्ग से प्रयत्न करना।

उपरिनिर्दिष्ट गुणों से युक्त प्रचुर कार्यकर्ता अपने पास हैं क्या? ऐसी शका मन में आकर यदि ध्येयवादी मन अस्वस्थ होता है और विचार करने लगता है कि कार्य से पराङ्मुख होकर बिल्कुल साधारण जीवन क्यों न बिताया जाए? परतु आदर्शवाद तथा वास्तववाद का समन्वय हो, तो मनुष्य अधिक सातत्य, जीवट तथा धीरज से किसी भी परिस्थिति में निरुत्साहित न होकर लक्ष्य-प्राप्ति के लिए परिश्रम करता है तथा प्रतिकूल परिस्थिति से उसके निमित्त सघर्परत रहने में आनद का अनुभव करता हुआ इस सघर्ष की हार-जीत की पूर्ण जिम्मेवारी भगवान पर डालकर निश्चिंतता से कार्य करता हुआ सुखी रहता है। (मूल मराठी)

६१ सस्कार करने की जिम्मेदारी हमारी है

श्री टेकचद, मोतीहारी, बिहार — २१ अक्तूबर, १९४९

मैं जब विद्यार्थी था, तब से ही इस क्षेत्र के कई युवकों से सपर्क आया था और यह धारणा हुई थी कि लोग अच्छे हैं, परतु अनुशासन और सयम की इच्छा कम है। भीड-भाड, सार्वजनिक पद्धति का उत्साह इत्यादि में रुचि अधिक है।

अब अपना प्रयत्न यही होना चाहिए कि अपने कार्य तथा पद्धति का दृढ परिणाम अपने स्वयसेवकों के मन पर करते हुए अनुशासनबद्ध शात कार्य नियम से करते रहने की प्रवृत्ति उत्पन्न करें। यह करते हुए मन में शुद्ध भाव ही रखना योग्य है। यदि यह सोचा कि लोग बुरे हैं, तो काम ठीक नहीं हो सकेगा। लोग अच्छे ही हैं, केवल अपनी कार्यप्रणाली से ठीक परिचय उनका हुआ नहीं। उसके लिए जिम्मेदारी तो उनपर नहीं, किन्तु अपने ही ऊपर है। ऐसा ही सोचकर धीरे-धीरे योग्य सस्कार निर्माण कर पक्के करने का प्रयत्न करने से आपको सफलता प्राप्त होगी।

६२ विरोधी प्रचार की चिता न करे

श्री रामेश्वर प्रसाद जी, पटना — २१ अक्तूबर, १९४९

विरोधी प्रचार का जवाब देना अपनी कार्यपद्धति के प्रतिकूल है।

अत अपने मन को दृढ रखना और जितने आज अपने सहकारी हैं, उनके मन में भी दृढता बनी रहे, इस प्रकार विचार का आदान-प्रदान करना उचित है।

६३ सर्वेषा अविरोधेन

श्री भाऊसाहेब खरे, दयापुर १५ दिसबर, १६४८

आपने जो पत्र-व्यवहार भेजा, वह मैंने समग्र पढा। आपकी यह अपेक्षा कि मैं श्रीमान् मश्रुवाला को पत्र भेजकर स्पष्टीकरण दूँ, मैं पूर्ण नहीं कर सकूँगा, क्योंकि मुझे उससे कोई लाभ दिखाई नहीं देता। अपने कार्य की पूर्वापार पद्धति देखें तो स्पष्ट होगा कि समाचार-पत्रों में किसी ने कितना ही विरोधी प्रचार किया या अन्यत्र अपप्रचार किया, तो उसपर ध्यान न देते हुए, अपने मन पर यत्किंचित् भी परिणाम न होने देते हुए, अपना काम अपनी शात, गभीर पद्धति से, किसी के साथ भी विरोध न करते हुए तथा प्रत्यक्ष विरोधियों के विषय में भी विरोध प्रकट न करते हुए या हृदय में न रखते हुए करते रहना तथा प्रेम से जनमानस में प्रवेश कर कार्यवृद्धि करना, यही अपनी पद्धति है। अब उसमें परिवर्तन किया जाए, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। इसलिए मैं तो इस शाब्दिक तूफान में नहीं पडूँगा।

आपने जिस सद्हेतु से यह पत्र-व्यवहार किया, उसके लिए मुझे आपके प्रति आदर है, परतु मुझे लगता है कि आपने यह कष्ट अकारण ही किया। (मूल मराठी)

६४ समाज-बधुओ की सेवा मे जीवन काम आए

श्री भालजी पेंढारकर, कोल्हापुर १५ दिसबर,१६४८

मेरी देखभाल आप सब और अपने स्वयसेवक बधु स्वय को सकट में डालकर भी करते ही हैं और सब पर श्री परमेश्वर का कृपालु वरद्हस्त है ही इसलिए मैं स्वय की देखभाल करूँ, ऐसा नहीं। इन सब घटनाओं में दु ख यह है कि ये सारे अपने ही बधु हैं, उन्हीं के सुख के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाकर कष्ट करना है। यह वे जानते नहीं, अज्ञानवश अपना-पराया पहचानते नहीं, और इसलिए उनकी ओर से प्रमाद होता है।

उनके इस अज्ञान का दु ख होता है। बाकी विशेष चिंतनीय नहीं है। कुछ भी हो, परतु उन्होंने इतना विरोध और विद्वेष प्रकट किया हो, तो भी मैं उनपर क्रोध नहीं कर पाऊँगा। वे सारे मेरे ही हैं तथा उनकी सेवा में जीवन किसी भी प्रकार काम आया तो भी वह परमेश्वर की कृपा होगी, यह मेरी दृढ श्रद्धा है। इसलिए जैसी प्रभु की इच्छा होगी, वैसा होने दो, इसलिए मैं निश्चित हूँ।

(मूल मराठी)

६५ कार्य के लिए सर्वस्व त्याग की प्रथा प्राचीन

श्री देवपुजारी, छिंदवाडा　　　　१५ दिसबर, १६४६

आज भी मैं जल्दी में ही हूँ, क्योंकि कल प्रात काल मुझे प्रवास के निमित्त जाना है। तिस पर भी आपको आया क्रोध देखकर अधिक काल होने से आपको इस विकार से कष्ट होंगे– यह सोचा और यह पत्र लिख रहा हूँ।

अपने समाज में समाजहिताथ घर-बार छोडकर श्रेष्ठ काय करने की प्रथा अत्यत प्राचीन और सर्वमान्य होने से और अपनी सास्कृतिक प्रणाली में इस त्याग की सराहना की जाने से, सघकार्य में भी (जो कि सास्कृतिक कार्य है) उस प्रणाली का प्रभाव रहना स्वाभाविक ही है। यदि अपनी सस्कृति को छोडकर अन्य जीवन-प्रणाली लेना उचित होता तो यह कार्य किया ही न होता और आपकी समस्या भी न रहती। परतु अपनी सस्कृति छोड अन्य लोगों की जीवन-प्रणाली स्वीकार करना आप उचित नहीं समझेंगे, ऐसा मैं विश्वास करता हूँ।

इस अवस्था में ये दो विचार– कार्यार्थ यदि आवश्यक हो तो सब छोड काम करते जाना और घर-बार चलाकर यदि हो सके तो कार्य करना पहले से ही चलते आ रहे हैं। हम लोग दोनों विचारों को ठीक समझते हैं। इसीलिए इस कार्य में दोनों प्रकार के कार्यकर्ता हैं उनमें घर-बार सँभालनेवालों का ही प्रमाण बहुत अधिक है। कुछ सब छोड जानेवाले हैं और रहेंगे, उनका रहना आवश्यक भी है। मैं आशा करता हूँ कि आप पूर्वाग्रहनिरपेक्ष होकर विचार करेंगे।

(मूल

९६ आत्म निंदा से दूर रहें

श्री बाळू ओगले, पुणे २० मार्च, १९५०

सदैव मन में आत्मनिंदा, आत्मावज्ञा के भाव पनपते रहें और वे किसी भी सत्कार्य की ओर बढने न देते हों, वह अवस्था ठीक नहीं है। कुछ अत्यल्प अपवाद छोडकर प्राय प्रत्येक के जीवन में कुछ न कुछ त्रुटि, बुराई, दुर्गुण आदि रहते ही हैं। अपने गतजीवन की ओर निष्पक्ष दृष्टि से देखते समय प्राय सभी के जीवन में ऐसे अवसर अनेक बार आए हुए रहते हैं जब पश्चाताप होने लगता है कि दुबारा उनकी पुनरावृत्ति नहीं होगी। परन्तु उन प्रसगों का मन में चर्वण करते रहने से मन विषण्ण और निराश होता है। यह ठीक नहीं है। बीत गई, सो बीत गई। अब जीवन का नया और उत्तम अध्याय प्रारभ करने का निश्चय कर भावी जीवन परिवार और कार्य– दोनों दृष्टि से सब प्रकार से उत्तम करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। (मूल मराठी)

९७ आवश्यक युक्तिवाद श्रेयस्कर

चि शरद कळणावत, लाखादूर १६ अप्रैल, १९५०

श्री तुपटे मास्टर अपने अत्यत निष्ठावान स्वयसेवक हैं। तुम शहर के रहनेवाले तथा अधिक पढे-लिखे हो इसलिए तुमसे वाद करना उन्हें कठिन लगता हो, परतु उससे यह न समझो कि उनकी श्रद्धा या योग्यता कम है।

केवल वाद-विवाद से काम नहीं होता। प्रेममय तथा आदरयुक्त व्यवहार से आत्मीयता बढाकर अपने जैसी कार्यनिष्ठा सक्रामित करने से सच्चा और स्थायी काय होता है।

वाद-विवाद से कभी-कभी बहुत बडी हानि भी होती है। कम पढा-लिखा व्यक्ति वाद-विवाद में निरुत्तरित होने पर अपने को अपमानित समझ कर नाराज हो जाता है और कार्य से दूर चला जाता है। ऐसा हुआ तो अपना काम कैसे बढेगा?

अतएव सघ समझाने के लिए जितना आवश्यक है, उतना ही युक्तिवाद किया जाए, परतु केवल बुद्धि-वैभव के प्रदर्शन के लिए वाद-विवाद न किया जाए। (मूल मराठी)

९८ देश विभाजन की पीडा

श्रीमान जे पी दीवानी, ठाणे (महाराष्ट्र) १ जुलाई, १९५०

देश-विभाजन के बाद पजाब, सिध और पूर्व बगाल में उध्वस्त हुआ। अपना जनजीवन देखकर, बाह्यत यद्यपि आनद दिखाता हूँ, किन्तु अत करण में व्यथित हूँ। जिनसे बहुत प्रेम किया, जिनका आदर किया, अपने प्रियजनों से बिछुडे हुए उन लाखों बाधवों के दुर्भाग्य का जब भी मैं विचार करता हूँ, तब मैं अत्यत व्यथित होता हूँ। हमारा कार्य इन बाधवों का असह्य दु ख मिटाने में इतना समर्थ नहीं, यह सोचकर तो दु ख की सीमा ही नहीं रहती। मन की इस विचलित अवस्था में, जब मुझे विस्थापित होकर भी धैर्य, शाति से सब सकटों को सहता हुआ, प्रामाणिक उद्योग से अपने जीवन को बहुत हद तक सँभालता हुआ, परिचित, प्रिय व्यक्ति मिलता है, तो मुझे बडी प्रसन्नता होती है। अपने परिश्रम से निर्माण किए हुए आपके घर पर में जब आया, तब इसी के फलस्वरूप मुझे मन शाति का अनुभव हुआ।

आपके अथक परिश्रम से मुझे विश्वास है कि आपने जिस सगठन के प्रति अपनी निष्ठा हृदयपूर्वक समर्पित की है, उसके द्वारा समाजसेवा का व्रत सफलतापूर्वक निभाएँगे। आपके सपूर्ण कार्य में ईश्वर आपको यश प्रदान करे।

(मूल अग्रेजी)

९९ कार्यदक्ष स्वयसेवको का निर्माण आवश्यक

श्री विठोबा पेंढारकर, कोयटूबर (तमिलनाडु) २१ जुलाई, १९५०

परिस्थिति को ठीक से पहचानकर कार्य की पुनर्रचना करते समय केवल चिकनी-चुपडी बातें करनेवाले, परतु कृतिशून्य लोगों को प्रारभ में ही बहुत महत्त्व न दिया जाए। लगता है कि पहले ऐसा हुआ था। जो आए, वे ऐसे थे और सज्जन थे, परतु अपनी भावनाओं से तद्रूप होकर कार्य करने की शक्ति और कार्य के लिए कडी मेहनत करने की इच्छा न होने से कार्य नहीं हो सका। दूसरों पर इससे यह सस्कार हुआ कि सहानुभूति दिखाना ही पयाप्त है। इसकी पुनरावृत्ति न हो। कायदक्ष, उत्साही, नियमित स्वयसेवकों का प्रारभिक कार्यकारी गुट निर्माण करने का प्रयत्न कि.

१०० संघ-बंधुत्व का नाता अटूट

श्री रा कु चाडक, संगमनेर (महाराष्ट्र) — १८ अक्तूबर, १९५०

आपने जो कहा है कि आप संघकार्य से नाता तोडकर मनोनुकूल कार्य तथा उसके लिए प्रथम परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करनेवाले हैं, वह उचित है। मन के विरुद्ध, स्वयं की प्रतारणा कर संघकार्य का केवल दिखावा खडा करने से आपका भी कुछ लाभ नहीं होगा तथा संघकार्य का भी कुछ लाभ नहीं होगा। संघकार्य के प्रारंभ से ही अपनी यह नीति रही है कि कार्य से सहमत होने के पश्चात्, पूर्ण श्रद्धा से वह किया जाए उसमें कुछ श्रद्धावान व्यक्ति अपवाद रह सकते हैं, परंतु यह सब जगह होता है, इसलिए उसके विषय में भ्रांत धारणा रखना अनावश्यक है। इसलिए संप्रति आपकी संघकार्य से सहमति न होने से आप उसके साथ नाता तोड रहे हैं, इसका मुझे दु ख नहीं। अर्थात् आप-सा प्रज्ञावान तथा कार्योपयोगी हो सकनेवाला स्वयंसेवक दूर जाने का दु ख मन से दूर होना असंभव ही है। परंतु मुझे आपके इस वाक्य से कि 'मैं अकेला हूँ' मुझे घर और हृदय को शूल-सा चुभनेवाला दु ख हो रहा है। इसके बारे में मैं क्या कहूँ? आपने संघ से दूर जाने की ठान ली है, फिर भी एक बार स्वयंसेवक के नाते आपसे बंधुत्व का अटूट नाता जोड लेने के कारण मैं आपको नहीं छोड सकता। संपूर्ण समाज से तादात्म्यता का प्रयास, यही समाज-जीवन का मेरा अपना ध्येय होने से मैं शरीर से दूर रहा, तो भी मन से आपके निकट ही रहूँगा। मैं निरुपाय हूँ। इसलिए आप अकेलेपन का भाव मन में न रखकर एक मित्र-बंधु के नाते मेरे जीवित रहने तक मैं आपके लिए हूँ, यह आप न भूलें। परमेश्वर की कृपा से संघ कार्य होगा।

निवेदन है कि आप इतना अवश्य स्मरण रखें कि मेरे और आपके जो आत्मीयता के संबंध हैं, वे वर्तमान तात्कालिक कार्यनिवृत्ति के कारण खंडित नहीं हो सकते। इसका आप स्मरण रखेंगे तो मुझे अतीव प्रसन्नता होगी।

१०१ हम आजीवन कार्य करने के लिए कटिबद्ध

श्री अच्युत कोल्हटकर, सातारा — १६ दिसंबर, १९५०

हम संघ के स्वयंसेवक हैं। अनेक वर्षों तक आपने प्रचारक के नाते सफलतापूर्वक कार्य किया है। उस पद की गरिमा को शोभा देनेवाला कार्य

आगे भी करना है, इस बात का स्मरण रखकर ऐसा कार्य ढूँढा जाए, जिसे आप निबाध रूप से कर सकें। आगे प्रचारक के नाते कार्य न कर सकने के कारण कोई न्यूनता निर्माण हुई है, ऐसा नहीं है। कोई-कोई यह भूल धारणा बना लेते हैं तथा उसके कारण प्रचारक-कार्य से निवृत्त होते ही कार्य नहीं करते। यह ठीक नहीं है। कुछ लोग यह धारणा बना लेते हैं कि कुछ समय तक प्रचारक रहे, अपना जीवन कृतकृत्य हो गया। अब अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं रही। परतु हम लोग आजीवन कार्य करने के लिए कटिबद्ध हैं, उसी में स्वयसेवक के नाते अपने जीवन की सार्थकता है, यह बात वे भूल जाते हैं। आप इसका ध्यान रखेंगे तथा अपने उत्तम कार्य से श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। (मूल मराठी)

१०२ समुचित श्रद्धाजलि

डा दोशी, राजकोट २१ दिसबर, १९५०

देश की वर्तमान सकटमय अवस्था में सरदार पटेल की मृत्यु से देश को बहुत बडा आघात पहुँचा है। इस भयानक आघात में से यशस्विता से उबरने की शक्ति ईश्वर देगा, यही आशा है। भारत के महान सुपुत्र के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित कर इस आघात के लिए सपूर्ण देश द्वारा शोक व्यक्त करना स्वाभाविक है। राजकोट में श्री रसिकभाई पारेख की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की ओर से शोकसभा का आयोजन कर, सौराष्ट्र के इस महान देशभक्त एव समर्पित श्रेष्ठ कार्यकर्ता के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करना अत्यत समुचित था। देश को क्षति पहुँचने से प्राप्त शोकाकुल अवस्था में भी मैं श्री रसिकभाई तथा शोकसभा में उपस्थित सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञ हूँ। (मूल अग्रेजी)

१०३ सगठित राष्ट्रजीवन सब समस्याओ का उत्तर

श्री एस वैकुठन, तिरुनलवेली १६ जनवरी, १९५१

कुछ जगह पर अपने कार्य की जो थोडी-सी हानि हुई है, उसके कारणों का आपने सकेत दिया। क्या केवल बैठे-बैठे शिकायत करने से ही वर्तमान समस्याएँ सुलझ जाएँगी? इसलिए अपने अन्य बाधवों को उत्साहित कर इतना मजबूत सगठन बनाएँ कि परिस्थिति पर अपना प्रभाव

समस्याओं को सुलझाने के कोई उपाय हम सोचें, यह अधिक आवश्यक नहीं है क्या? इसलिए सुदृढ सुसगठित राष्ट्रजीवन निर्माण कर, उसके द्वारा आर्थिक विषयों सहित सपूर्ण समस्याओं का निराकरण हम कर सकें। यही हमारा प्रमुख कार्य है। कठिन परिस्थितियों के ऊपर केवल आँसू बहाने से कोई लाभ नहीं होगा, बल्कि उससे समाज का मनोबल और टूटेगा। अत अपने बधुओं को समुचित प्रेरणा दें, प्रोत्साहित करें, शिक्षा दें, सगठित करें, और यह कार्य भी परिश्रमपर्वूक एव तेजी से करें। यही हमारा प्रधान और तत्काल कतव्य है। (मूल अंग्रेजी)

१०४ उपनयन सस्कार का महत्त्व

चि रघुवीर माटेगॉवकर, मुबई ११ फरवरी, १९५१

उपनयन एक महत्त्वपूर्ण सस्कार है। जीवन-भर परिश्रम कर सच्ची विद्या प्राप्त करने, शुद्ध जीवन व्यतीत कर अपने समाज-बधुओं की सेवा कर उनके दु ख-निवारणार्थ तथा सुख-प्रदानार्थ तन-मन-धनपूर्वक प्रयत्न करने तथा इस प्रकार अपने राष्ट्र को वैभव तथा गौरव प्राप्त करा देने का निश्चय इस दिन करना चाहिए।

इस पवित्र दिवस पर इस महान लक्ष्य के लिए जीवन समर्पित करने, क्षुद्र व्यक्तिगत स्वार्थ के वश न होकर जीवन-भर ध्येयसिद्धि के लिए अविरत परिश्रम करने का दृढ सकल्प कर, वह पूरा करने की शक्ति परमेश्वर के निकट मॉगी जाए। वह सर्वशक्तिमान यह शुद्ध प्रार्थना सुनकर सभी उत्तम इच्छाएँ पूर्ण करेगा। (मूल मराठी)

१०५ श्री गुरुगोविदसिह जी का प्रेरक जीवन

श्री मदीप सिह जी, कानपुर १४ फरवरी, १९५१

'दशमेश' का जयती अक पढकर पूरा किया। अत्यत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। आज की पथभ्रष्ट हिंदू जाति को इस महान ब्राह्मक्षात्र परिपूर्ण श्री गुरु का स्मरण करने की आवश्यकता है। यह जीवन ही वह जीवन था, जो कि आज भी समाज को मृततुल्य अवस्था से उठाकर जीवन दे रहा है। हम लोग सर्व प्रयत्न करें कि इस 'जीवन के अमृत का समाज

को पान करवाकर, उसे समर्थ, सपन्न, राष्ट्रजीवन (अमर राष्ट्रजीवन) निर्माण करने में सफल करें।

१०६ पारिवारिक जीवन राष्ट्र-कार्य को पोषक

श्री कृष्णराव करदीकर, पुणे १६ फरवरी, १६५१

विवाह होना, याने जीवन पर वधन लगना-- ऐसा नहीं है। इसके विपरीत उससे जीवन में स्थिरता, मन पर नियत्रण, अपना जीवित कार्य पूर्ण करने की अधिक शक्ति प्राप्त होनी चाहिए। आपने भी सघकार्य में प्रचारक के नाते प्राणपण से परिश्रमपूर्वक कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि उसका स्मरण रखकर, अपनी दृढता से सुसगत ऐसे कर्तव्यदक्ष जीवन की रचना करेंगे तथा पारिवारिक जीवन से राष्ट्रसामर्थ्य निर्मिति का अपना कार्य विसगत न होकर, वह काय को सर्वथा पोषक तथा वधक है, ऐसा उदाहरण आप स्वय के आचरण से प्रस्तुत करेंगे। (मूल मराठी)

१०७ अपप्रचार से भी अपना कार्य रुकता नहीं

श्री दक्षिणामूर्ति, मदुरै १६ फरवरी, १६५१

समाचार-पत्रों में लेख एव कुछ लोगों द्वारा प्रस्तुत किए हुए पत्रकों से अपने विरुद्ध होनेवाले अपप्रचार से अपने कार्य की गति रुक नहीं सकती। अपने महान उद्देश्य के प्रति श्रद्धा रखते हुए तथा अपने तथाकथित विरोधियों के प्रति भी विद्वेष न रखते हुए हम अपने समाज के सुदृढ सगठन का कार्य करते रहें। वह दिन दूर नहीं, जव इन्हीं 'घर लौटे बिछुडे पुत्रों' (Prodigal Sons) को आलिगन देने का आनद हमें मिलेगा।

अपना कार्य बढाने की दिशा में अधिक प्रयत्न कर, हम इन आलोचनाओं का, फिर वे कितनी भी निदाव्यजक हों, सदैव उत्तर देते आए हैं। वाद-विवाद या न्यायालयीन कार्यवाही में उलझने से समय एव शक्ति का व्यर्थ अपव्यय होता है। अपने कार्य के अतिरिक्त दूसरी बातों के लिए हम समय एव शक्ति खर्च नहीं कर सकते। हम स्वय को अच्छी तरह से जानते हैं तथा स्वय के बारे में दृढ विश्वास होने से दूसरों की कीचड उछालने की कवायदों से, जिन्हें वे स्वस्थ देशभक्ति का कार्य समझते हैं, अपना मनोरजन मात्र होता है। (मूल अग्रेजी)

१०८ कर्तव्य करे, फल की आशा न करे

श्री सपत विठ्ठल शिंदे, फलटण — ६ अप्रैल, १९५१

मन में बहुत काम करने की उमग रहती है, उसके अनुसार मनुष्य परिश्रम भी करता है। कुछ फल मिलता है, परतु और अधिक फल मिले ऐसी इच्छा होने से अस्वस्थ होता है। फल-प्राप्ति अनेक बातों पर निर्भर रहने से बिल्कुल गणित के हिसाब से वह मिले, ऐसी अपेक्षा करना भूल है। कभी दिखाई देता है कि अत्यत परिश्रम होकर भी उसका कुछ भी उपयोग नहीं हुआ, तो कभी अल्प प्रयत्न से अपरिमित सफलता प्राप्त होती है। परतु ऐसे सहज प्राप्त हुए यश के पीछे कितने लोगों के किस प्रकार के ज्ञात या अज्ञात परिश्रम होंगे, इसका हमें सही क्या, बिल्कुल ही ज्ञान नहीं होता। इस भावना से कि सुलभ यश हमें भी प्राप्त हो, कि सप्रति चल रहे परिश्रमपूर्वक कर्तव्यपूर्ति के नित्य काम के कारण, यदि उतना अपेक्षित यश न मिला तो अस्वस्थता पैदा होती है। परतु ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता अकल्पित फल से मोहित नहीं होता अपितु योग्य मार्ग से परिश्रमपूर्वक प्रयत्न करते रहने पर भी कभी अल्प, तो कभी शून्य भी फल मिला, तो खिन्न नहीं होता।

सघ कार्यकर्ता ऐसा ही हो। आप वैसा बनें। अपने सघ-निर्माता इसी प्रकार दृढव्रती थे। हम उनका आदर्श अपने सामने रखकर, उनकी स्मृति सामने रखकर, उनकी स्मृति से प्रेरणा ग्रहण कर, प्राणपण से परिश्रम करें तथा राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ बनाने का निश्चय करें। यश मिलेगा। (मूल मराठी)

१०९ वर्षप्रतिपदा पर शुभ सकल्प करे

१३ अप्रैल १९५१

श्री सुधाकर पचवाघ तथा श्री सदाशिव हिरवे, फलटण (महाराष्ट्र)

वर्ष प्रतिपदा के शुभ पर्व पर आप लोगों ने पत्र लिखे इसलिए आनद हुआ। इस दिन से नए सवत्सर का प्रारभ होता है। उस दिन प्रारभ होनेवाले सवत्सर में सब प्रकार से उत्तम जीवन बनाने का सकल्प करना चाहिए। उत्तम आदतें डालने तथा दोष त्यागने का सकल्प कर उसके अनुसार आचरण करने का दृढ निश्चय करना चाहिए। सघ के स्वयसेवक

के नाते प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श होने का प्रयत्न करना चाहिए। घर का व्यवहार, पाठशाला का व्यवहार, स्वयसेवकों के साथ व्यवहार, शाखा के सारे काम मन पूर्वक समय पर करना, शाखा में नियमितता, अनुशासन का पालन आदि सभी उत्तम बातों में आदर्श होने का दृढ सकल्प करना चाहिए। इससे अपना प्रिय सघकार्य उत्तम रीति से करने का सामर्थ्य बढेगा। आपको तथा अन्य छोटे-बडे स्वयसेवक बधुओं को इन गुणों के पोषण की ओर ध्यान देना आवश्यक है। विश्वास है कि आप उत्तम गुणसपन्न शुद्ध व्यवहार करेंगे तथा सबके प्रेम-भाजन बनेंगे। ऐसी मेरी इच्छा भी है।

आप 'विजय' नामक साप्ताहिक प्रारभ कर रहे हैं। उसके कारण उत्तम विषयों का अध्ययन करने का अभ्यास होगा तथा उत्तम पवित्र विचार सुव्यवस्थित शब्दों में प्रतिपादित करने का गुण आएगा। उत्तम विचारों का नित्य अभ्यास करने से, उनके अनुसार उत्तम बनने की प्रेरणा मिलेगी। इसलिए यह उत्तम उपक्रम है। उसे सफल बनाएँ। उसमें आपको सफलता प्राप्त हो। (मूल मराठी)

११० स्वय का व्यवहार आदर्श हो

श्री सरदार चेतनसिह, मानसा (पजाब) १४ अगस्त १९५१

अब यदि समाज के सर्वसाधारण नैतिक स्तर के विषय में देखा जाए, तो यह सत्य है कि नैतिकता कम हो रही है। दुर्दैव यह है कि हर कोई नैतिक अध पतन में ही आनद मान रहा है तथा कुछ लोग तो इसे गौरवास्पद मानते दिखाई देते हैं। सभवत उन्हें लगता है कि यह अनैतिक आचरण ही दैनदिन जीवन के नियमों से स्वतत्रता, स्वच्छदता, उन्मुक्तता है। परतु हमें दृढता से अपना कार्य करते हुए, उनके प्रति अपना विरोध या क्रोध न दर्शाते हुए अपने जीवन का आदर्श उनके सामने रखना चाहिए। अपना उत्तम आचरण एव उन मित्रों से दृढ सपर्क रखते हुए ही समाज का नैतिक स्तर बढा सकेंगे। केवल आलोचना एव शिक्षक अथवा धर्मोपदेशक के समान उपदेश करने से काम और बिगडेगा। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्वय में दृढ श्रद्धा रखें। सुयोग्य प्रयत्नों से ही हम इस परिस्थिति को बदल कर रहेंगे। (मूल अग्रेजी)

१११ समाज मे स्थायी हुए व्यक्तियो द्वारा सघकार्य

श्री श्रीराम आडप, करहाड १२ मई, १९५१

आप प्रचारक न रहकर घर जानेवाले हैं। योग्य विचार करने के पश्चात् ही आपने ऐसा निर्णय किया होगा। वापस जाने पर अपने स्थान पर आज तक के प्रचारक-कार्य के योग्य काम आप करेंगे ही। क्योंकि, मुख्य रूप से सघ का काम समाज में स्थायी हुए और होनेवाले व्यक्तियों द्वारा होना चाहिए । प्रचारक प्रेरक प्रवासी कायकर्ता है तथा एकसूत्र प्रस्थापितकर्ता है। प्रत्येक स्थान का प्रत्यक्ष शाखाकार्य सबधित क्षेत्र के स्थायी स्वयसेवकों द्वारा होना चाहिए। आपके जीवन से वह उदाहरण सामने आना चाहिए। (मूल मराठी)

११२ सघ-शाखा का महत्त्व

श्री बाबू साहेब मोडक, कल्याण २७ मई, १९५१

शाखा अत्यधिक महत्त्व की बात है। वह एक सुयोग्य सस्कार करने की तथा आवश्यक गुणों का सवर्धन करने की योजना है। गुणसपन्न एव सत्सस्कार पूर्ण समाज ही उन्नत हो सकता है। अत राष्ट्रीय उत्थान की दृष्टि से हमारा कार्य तथा उसका शाखास्वरूप निरपवाद रीति से आवश्यक है। यह तो बिल्कुल सीधी सी बात है। परतु कदाचित सरल होने के कारण ही वह अनेकों की समझ में नहीं आ रही है। हम सब वरिष्ठ कार्यकर्तागण यदि स्वय प्रेरणा से तथा अपने आदर्श व्यवहार से उसको हरेक के मन पर अकित करते हैं, तब वह बात हरेक को जँचेगी, भाएगी, और फिर शाखा का स्वरूप शुद्ध चेतन्यपूर्ण बनने में अधिक समय नहीं लगेगा।

आपने वैसा निश्चय किया ही है। माननीय श्री दादासाहब दाडेकर जैसे अथक परिश्रमशील आदरणीय व्यक्ति आपके सहकारी हैं। अत प्रतीत होता है कि आपके जिले में कार्य भली-भाँति बढेगा। (मूल मराठी)

११३ गृहस्थ जीवन कर्तव्यदक्ष हो

श्री किशाभाऊ पटवर्धन, पुणे ५ जून, १९५१

जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा उत्तम कार्य में उत्तम रीति से तथा योग्यता से व्यतीत कर अब आप गृहस्थाश्रम स्वीकार कर रहे हैं। यह

आश्रम सही अर्थ में तथा पूर्णत्व से समाज का आधार माना गया है। उसमें समाज की उन्नति के लिए अधिक प्रयत्न तथा परिश्रम करना कर्तव्य होता है। गृहस्थ जीवन भोग-वासना तृप्त कर श्वान-सूकर के समान केवल प्रजनन करते रहने के लिए नहीं है, ऐसा श्रेष्ठतम लोग कहते हैं। आपका पिछला कुछ वर्षो का कर्तव्य-परायण, समाजोपयोगी जीवन देखते हुए आपका गृहस्थाश्रम आदर्श होकर अपना जीवन-कर्तव्य अधिक निश्चिंतता से तथा मन पूर्वक आप करते रहें— आजन्म करते रहें, यही उचित होगा। मेरी यही अपेक्षा है। आप सघ के एक जिम्मेवार स्वयसेवक, प्रचारक के नाते अनेक स्वयसेवकों को अधिक त्यागपूर्वक काम करने के लिए कहते आए हैं। उस पूर्व जीवन को तथा उसके अपने शब्दों के योग्य, ऐसा आपका दापत्य जीवन हो। इसलिए मैं श्री परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि आपको सपूर्णत सुखी, सफल तथा कर्तव्यदक्ष गार्हस्थ्य जीवन प्राप्त होने के लिए वह आपपर पूर्ण कृपादृष्टि रखे। (मूल मराठी)

११४ प्रचारक एकातिक निष्ठा का परिचय दे

श्री नाथ काळे, चेन्नै — १६ जुलाई, १६५१

कार्य का ओज तथा वृद्धि आप जैसे जिम्मेवार प्रचारक कार्यकर्ताओं के उत्साह तथा लगन पर निर्भर है। आपकी मनोवृत्ति द्विधा हो, तो उसका कार्य पर जाने-अनजाने परिणाम हुए बिना नहीं रहता। इसलिए आवश्यक है कि आप तथा अन्य पुराने प्रचारक एकातिक निष्ठा और दृढता का चलता-फिरता जीवत उदाहरण स्वत के विचारों, भावों, मनोनिग्रह तथा व्यवहार से उपस्थित करें। आप इसमें सफल होंगे, ऐसा विश्वास है।

(मूल मराठी)

११५ स्पर्धा व ईर्ष्या दुर्गुणो का परिपाक

बै नरेंद्रजीत सिह जी, कानपुर — २० जुलाई, १६५१

तीन-चार दिन पूर्व 'स्वदेश' और कल 'पाचजन्य' में एक शोकपूर्ण समाचार पढा कि शाहजहाँपुर के किसी स्वयसेवक की हत्या हुई। हत्यारे आर्यवीर दल के बताए जाते हैं। जिनके प्रति आत्मीयतापूर्वक सद्भाव लेकर हम लोग चलते हैं उन्हीं में से कुछ ऐसे अविचार से भरे दुष्कृत्य करने को उधत हों, यह अतीव दुःख की बात है। क्षुद्र अभिमान और उससे निर्मित

स्पर्धा, इत्यादि घृणित दुर्गुणों का ही यह परिपाक है। मुझे मृत स्वयंसेवक बधु के आकस्मिक निधन पर जितना शोक है, उससे कहीं अधिक इन सत्पथविस्मृत अविचारी इत्यादि की मनोवृत्ति पर है। परन्तु यह तो सर्वसाधारण समाज का, विशेषकर समाज में ऐसे परस्पर विरोध और विद्वेष की अग्नि जलाते रहनेवाले तथाकथित नेताओं का ही, विशेष रूप में दोष होने के कारण उन दुर्दैवी युवकों के सबध में क्रोध नहीं, अपितु खेद ही होता है। दूषित वायुमडल की विकारवशता के कारण शिकार बन गए, यही कहना योग्य दिखता है।

११६ कार्यकर्ता अपनी योग्यता बढाएँ

३ सितबर, १९५१

श्री प्रभाकर देशपाडे, माखजन (जि रत्नागिरि) महाराष्ट्र

सघ-स्थान के कार्यक्रमों में सुव्यवस्थितता, नित्य के जीवन में स्वयसेवकों में अकृत्रिम स्नेहपूर्ण बधुभाव तथा सपूर्ण समाज में अपने कार्य के प्रति आत्मीयता बढाकर नए-नए स्वयसेवक जोडने के लिए प्रयास करते हुए शाखा के प्रभाव का क्षेत्र बढाने की ओर ध्यान दिया जाए। उसी प्रकार जो अवकाश का समय मिलेगा, उसमें अपनी बहुश्रुतता में वृद्धि करने के लिए ज्ञान-सपादन करने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे कार्यवृद्धि के साथ-साथ अपनी व्यक्तिगत तथा कार्य करने की योग्यता वृद्धिगत होगी।

(मूल मराठी)

११७ प्रयत्नो का फल मिलता ही है

श्री प्रभाकर लाखे, कोलकाता

३ सितबर, १९५१

काम करते समय बीच-बीच में अतर्मुख होकर विचार करना अत्यत लाभदायक होता है। ऐसा विचार करते समय बाहरी कार्यसिद्धि मनोनुकूल न दिखने पर विषण्णता आती हे तथा कुछ निरुत्साह, कुछ आत्मग्लानि मन में पैदा होती है। यह स्वाभाविक है परतु काय करनेवाले को किसी भी परिस्थिति में आनद से बेहोश नहीं होना चाहिए, उसी प्रकार विपरीत परिस्थिति में हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। कई बार अपने द्वारा किए जानेवाले प्रयत्नों का प्रत्यक्ष फल दिखाई नहीं दिया, तो भी यह सच है कि प्रयत्नों का परिणाम अवश्य होता ही है। केवल मन पूर्वक एकाग्र चित्त

से प्रयत्न करना चाहिए। तुम इस प्रकार प्रयत्नरत हो, इसलिए इधर-उधर की परिस्थिति या प्रयत्नसिद्धि के बारे में विशेष चर्वित-चर्वण न करते हुए नि शकता से अपना काम तेजी से तथा उत्साह से करते रहो। (मूल मराठी)

११८ सघकार्य की नितात आवश्यकता

७ सितबर, १९५१

श्री नरसिह बालकृष्ण जोशी, हसूरचद (जि कोल्हापुर, महाराष्ट्र)

अपने कार्य की नितात आवश्यकता है। परस्पर अत्यत स्नेह, सहयोग, आत्मीयता— ये गुण वृद्धिगत होकर सपूर्ण समाज में सही अर्थ में सगठन निर्माण होना तथा एकता के सूत्र में बँधा हुआ समाज अनुशासन में रहकर स्वराष्ट्र के जीवत बोध से ओतप्रोत होना नितात आवश्यक है। यह कार्य हुए बिना बाहरी सकटों तथा भीतरी दु ख दैन्य, दारिद्रय से मुक्ति नहीं मिलेगी। सपूर्ण समाज एक बृहत् परिवार है, इस जागृत भावना से हम सब बधुओं को काम में जुट जाना चाहिए। श्री परमेश्वर की कृपा से हमने यह जो कार्य नि स्वार्थ मन से स्वीकार किया है, उसमें अवश्य यश मिलेगा।

(मूल मराठी)

११९ राष्ट्रकार्यार्थ सर्वस्वार्पण

श्री पद्मनाभन, कोयबटूर

८ सितबर, १९५१

आप एक पुराने एव अनुभवी कार्यकर्ता हैं, अत आप अपने कार्यक्षेत्र में व्यस्त ही होंगे। आपको कुछ बताने की आवश्यकता नहीं। लेकिन मैं यह बात अवश्य कहूँगा कि आप स्थानीय कार्यकर्ताओं की उदासीनता तथा आलस्य हटाकर उनमें उत्साह भरें। सपूर्ण समाज एक बृहत् परिवार है, जिसमें समाज के प्रत्येक घटक में राष्ट्रभक्ति की प्रखर भावना से प्रेरित अनुशासित, सुसगठित जीवन का सुदृढ भाव जगाकर सपूर्ण समाज एक अटूट प्रेमबधन में बाँधा जाए। प्राणपण से इस चिरजीवी राष्ट्र को सुखी, वैभवशाली, अजेय, प्रभावी तथा विश्ववद्य बनाने के लिए सर्वस्वार्पण करने की सिद्धता निर्माण की जाए। सघ की यही पहचान है और इस कार्य में आप निश्चित सफल होंगे।

इस पवित्र कार्य में स्वय को जितने दृढ निश्चय से समर्पित कर देंगे, उतना अधिक यश आप प्राप्त करेंगे। (मूल अंग्रेजी)

१२० विद्यार्थियो मे काम करने की रीति

श्री र द शेवडे, सातारा — ६ सितबर, १९५१

सातारा शाखा की अवस्था मुझे ज्ञात है। यह वढती नही। इसका कारण क्या है—'बाधाएँ', 'विरोध' के बारे में स्वयसेवकों द्वारा निष्कारण हो-हल्ला करने की अकार्यक्षमता? शालाओं के बारे में अपना विचार बिल्कुल स्पष्ट है। उत्तम अभ्यास करना, शाला में उत्तम व्यवहार से विद्यार्थियों में लोकप्रिय तथा आदरणीय होना, अपनी सौजन्यता तथा नम्रता से अध्यापक वर्ग के आशीर्वादयुक्त प्रेमभाजन बनना तथा अपने विद्यार्थी बधुओं में हिल-मिलकर अपनी बोल-चाल से अपने पवित्र कार्य का प्रभाव उनपर डालना, विद्यार्थी-वर्ग में योग्य मार्गदर्शन के अभाव में जो उच्छृखलता दिखाई देती है, उसमें न बहते हुए अपना प्रभाव सब पर पडेगा, ऐसा शुद्ध व्यवहार होना, यही मार्ग है। यही उपाय है। (मूल मराठी)

१२१ पुराने स्वयसेवक कार्यप्रवण कैसे होगे

श्री कुमारिल भागवत, — ११ सितबर, १९५१

यह सच है कि पुराने स्वयसेवकों को कार्यप्रवण करने में सफलता नहीं मिलती। परतु उसके बारे में दु ख करने का कारण नहीं। पुराने स्वयसेवकों से स्नेह-आत्मीयता के सबध स्थायी रहेंगे, दुराव निर्माण नहीं होगा तथा उन्हें भी इस सबध से, हम स्वयसेवक थे और हैं, इतना स्मरण रहेगा, इस हद तक उनसे बोलचाल रखेंगे तो पर्याप्त है। वे शाखा में आएँ आदि विषयों पर उनसे चर्चा न की जाए, परतु व्यक्ति की परख कर, उनकी मनोदशा देखकर यह विषय भी मृदुता से, आज तक की अनुपस्थिति के बारे में दोष न देते हुए, कह सकते हैं। इसके लिए सूक्ष्मता से विचार कर व्यवहार करें। (मूल मराठी)

१२२ ऋणभार मे आनद

श्री भालजी पेंढारकर, कोल्हापुर — १९ सितबर, १९५१

अनेक वर्षों का हमारा स्नेह सबध है। इस काल में आपने मेरे लिए तथा हमारे कार्य के लिए न मालूम कितनी हानि उठाई है, और कितनी

बार उठाई है। परतु मैं आज तक आपके लिए कुछ भी नहीं कर सका। आपको अपरिमित, कष्ट, दु ख तथा सब प्रकार की हानि पहुँचाने के लिए ही मैं कारणरूप रहा हूँ। अब यह एक ऐसा प्रसग उपस्थित हुआ था, उसमें मुझे कुछ स्वल्प सेवा का भाग्य प्राप्त हो सकता था, परतु आपके स्वावलबनपूर्ण कर्तृत्वसपन्नता ने वह अवसर भी मेरे हाथ नहीं लगने दिया। अस्तु, प्रतीत होता है कि आपका ऋण सिर पर बनाए रखकर ही इस देह को छोडना पडेगा। कदाचित् यह विधि का विधान है। वह भी कोई खराब बात नहीं है, क्योंकि अगले जन्म में इसी कारण से मुझे आपका स्नेहपूर्ण सहवास प्राप्त होगा– ऐसी ही यदि परमेश्वर की योजना हो, तो वह उसकी कृपा ही है।

(मूल मराठी)

१२३ सभी व्यक्तियो से सबध रखे

श्री भास्कर दामले, चिदबरम् २५ सितबर, १९५१

आप पुराने तथा जिम्मेवार प्रचारक है। आपके मन में सदेह को स्थान न रहे। जिस प्रकार के कुछ व्यक्तियों से भेंट होने की अफवाहों के विषय में आपने लिखा है, उनके बारे में विचार करना हो, तो मान लो भविष्य में वे मुझसे आकर मिले, तो उससे आपका मन सभ्रमित क्यों हो? मुझे आवश्यक लगा तो चाहे जिस व्यक्ति से मिलूँगा तथा चाहे जिस व्यक्ति को भेंट करने की छूट दूँगा। क्योंकि अपने हिंदू-समाज के किसी व्यक्ति को बहिष्कृत करना– बिल्कुल निकृष्ट और त्याज्य व्यक्ति हुए बिना– अपने कार्य में बैठता नहीं। क्या आपको यह विदित नहीं है कि मेरे सारे कार्य का एकमात्र सूत्र यह है कि सब दृष्टि से सघकार्य को पोषक व्यवहार होता रहे।

अन्य स्वयसेवकों को भी दृढता सिखानी चाहिए। अन्य लोग क्या कहते है, इसका किसी भी स्वयसेवक के मन पर विपरीत परिणाम नहीं होना चाहिए। अपना कार्य करते समय स्वयसेवकों में इन सारे आवश्यक गुणों का सवर्धन करना तथा उसके लिए आपका अत्यत दृढ रहना आवश्यक है।

(मूल मराठी)

१२४ यह कार्य याने चैतन्य शक्ति का अखंड प्रवाह

प्रा. राजेन्द्रसिंह (रज्जूभैया), प्रयाग — २७ सितंबर, १९५१

कार्य की अपनी रचना एवं पद्धति की निर्विवाद श्रेष्ठता का ध्यान रखकर सब स्वयंसेवक बंधु इसे बढ़ाने तथा दृढ़ करने के लिए प्रयत्नरत होंगे ही। यह कार्य, याने चैतन्यशक्ति का अखंड प्रवाह, इसके शुद्ध निर्मल धारावाही तथा उत्साहोर्मियुक्त अविरत रूप से वर्धमान रहने से जीवन के प्रत्येक रूप में प्रभाव निर्माण हो, सफलता प्राप्त होगी।

१२५ स्थायी और तात्कालिक कार्य

श्री बाबासाहब भिड़े, पुणे — २ अक्तूबर १९५१

हमारे समाज की उदासीनता पर्वत जैसी विशाल है। उसे तोड़ने के हेतु बहुत परिश्रम करने पड़ेंगे। स्थायी राष्ट्र-संस्थापना का कार्य तथा तात्कालिक सेवा-कार्य, इन दोनों का महत्त्व आँकने में बड़े-बड़े भी गलत कर सकते हैं। दोनों प्रकार के कार्य सम्मुख उपस्थित होने पर कुछ प्रमाण में मन संभ्रमित होने की भी संभावना है। इस उलझन को दूर हटाने के लिए आप सर्व प्रकार की उपाययोजना कर ही रहे हैं तथा मार्गदर्शन दे ही रहे हैं। अतः प्रतीत होता है कि कार्य सुचारु रूप से संपन्न होगा।

(मूल मराठी)

१२६ समवयस्क बंधुओं के साथ निष्कपट मैत्री हो

श्री व्यंकटेश कुलकर्णी, वाडे — ३० अक्तूबर, १९५१

अपना कार्य करते समय अनेक समवयस्क बंधुओं के साथ निष्कपट मित्रभाव निर्माण करना पड़ता है। छोटे तथा बड़े लोगों से योग्य रीति से आत्मीयतापूर्ण व्यवहार कर सबके मन में स्वयं के विषय में आदर तथा स्नेह पैदा किया जाए, सब स्वयंसेवकों के घर पर नित्य जाना-आना रहे तथा प्रत्येक के घर के ज्येष्ठ व्यक्तियों के साथ ऐसा आदर, नम्रता तथा प्रेमपूर्ण स्वाभाविक व्यवहार करें, जिससे उन्हें लगे कि यह अपना ही पुत्र है। अपने मित्रों से भी मिल-जुलकर रहें और समय-समय पर उन्हें संघ के बारे में बतलाकर उन्हें अपनी ओर तथा संघकार्य की ओर आकर्षित करें। अपने इस अति प्राचीन राष्ट्र के इतिहास में श्रेष्ठ घटनाएँ घटी हैं तथा

अनेक अलौकिक महापुरुष हुए हैं, उनके विषय में स्वय पठन आदि से जानकारी प्राप्त कर उत्तम सस्कार ग्रहण करें तथा वह जानकारी अपने बधुओं को देकर, उनके मन में हम भी वैसे ही श्रेष्ठ बनने तथा राष्ट्र की सेवा करने की पात्रता आत्मसात कर स्वकर्तव्यपूर्ति की उत्कट इच्छा पैदा करें। इस प्रकार नित्य नए-नए विषयों पर बोलते रहे, तो आनद निर्माण होगा तथा सब एकत्र रहकर प्रेम से जीवन व्यतीत करने की इच्छा सबमें पैदा होगी। इस इच्छा की प्रत्यक्ष अनुभूति होने के लिए सघ दैनदिन कार्य, याने शाखा कितनी आवश्यक है, यह सब बधुओं को समझाते रहें। इससे तुम कार्य में सफल होगे। मेरी इच्छा है कि इस प्रकार आचरण कर तुम उत्तम कार्यकर्ता बनो और तुम्हारा सारा जीवन उत्तम बने। (मूल मराठी)

१२७ कर्तव्य-निष्ठा का विलोभनीय उदाहरण

श्री रामप्रसाद, बराकपुर (बगाल) — १ नवबर, १९५१

इतना महान शोक होनेपर भी आवश्यक कर्तव्य की पूर्ति के लिए आप अपने मन को सयम में रखकर लौटे हैं, यह अत्यत उचित है। इसी प्रकार सब विचार-विकारों पर विजय पाकर दृढता से अपने सघकार्य रूप सर्वश्रेष्ठ कर्तव्यपथ पर अडिग रहकर आगे बढते रहना यह प्रत्येक स्वयसेवक का गुण रहना चाहिए। अपने कार्य का ज्ञान आपको है ही। वह निरपवाद श्रेष्ठ है, यह स्पष्ट है। इसको पूर्ण करने का भाग्य अपने स्वयसेवकों का है। और इस भाग्य के अनुरूप सबको गुणसपन्न, दृढ, श्रद्धापूर्ण, निश्चयी बनना है। आपने एक बहुत ही लोभनीय उदाहरण उपस्थित किया है। ऐसा ही श्रेष्ठ भाव आप में सदा वर्धमान रहे।

१२८ चुनाव लडने की स्वतत्रता

श्री के सदाशिवराव, मगलौर — १० दिसबर, १९५१

आप चेन्नै विधानसभा की सदस्यता के लिए चुनाव लड रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। कुछ प्रामाणिक तथा दृढ चारित्र्यवाले सदस्यों की आवश्यकता है, ताकि कुछ उद्दड सदस्यों के हाथों उच्छृखलता की ओर बढनेवाले शासन की स्थिति में बहुत हद तक सुधार आ सके। कई वर्षो से यह स्वच्छद वृत्ति, धृष्टता के साथ बेरोकटोक चलती आ रही है। मुझे

आशा है कि मतदाता अपनी सूझबूझ एवं न्यायप्रियता का परिचय देते हुए आपको विधानसभा के माध्यम से लोकसेवा का अवसर देंगे।

किन्तु इस कारण संघ के विद्यमान दायित्व से मुक्त करने के लिए आपने मुझे क्यों लिखा, यह मेरी समझ में नहीं आया। संघ के स्वयंसेवक अपितु पदाधिकारी को भी चुनाव लड़ने से रोकने का कोई भी प्रावधान संघ के संविधान में नहीं। किसी राजकीय दल के पदाधिकारी के लिए संघ के पदाधिकारी के रूप में बने रहने में केवल बंधन है। इसके अतिरिक्त, चुनाव लड़ने के लिए तथा किसी भी राजकीय दल का सदस्य होने के लिए पूर्ण स्वातंत्र्य है। संघ का विद्यमान पद छोड़ने के विषय में मुझे लिखने की कोई आवश्यकता नहीं थी। (मूल अंग्रेजी)

१२९ संघ-कार्य के निर्माता का आदर्श सामने रखें

श्री हरिचंद्र, पीलीभीत १२ मार्च, १९५२

आप और मैं दोनों ही इस संगठन के स्वयंसेवक हैं। अपने सबके सम्मुख अपने कार्य के निर्माता का पवित्र जीवन है। उसे ही अपनी स्फूर्ति का उगमस्थान के रूप में हम सब पहचानते हैं। उस स्फूर्ति से अपने जीवन में कार्य के लिए योग्य जीवन व्यवहार करने का हम सब प्रयत्न करें। यद्यपि अनेक स्वयंसेवक बंधु अपने दायित्व को न समझकर आचरण सदोष रखें, तो भी हम लोगों को उनकी ओर दोष की दृष्टि से न देखते हुए अपने श्रेष्ठ स्फूर्तिदाता का ही आदर्श व्यवहार में लाने का प्रयत्न करना है, एवं अपने उत्तम व्यवहार से स्वयंसेवकों के सम्मुख अच्छा उदाहरण उपस्थित कर कार्य को शुद्ध करना है, उसकी गति बढ़ानी है।

मुझे आशा और विश्वास है कि आप अपनी हृदयस्थ व्यथा को उत्तम जीवन तथा सफल कार्य की प्रेरणा बनाकर योग्य रीति से अपने कर्तव्य पूर्ण करेंगे।

१३० स्वयं का परिशीलन करें

श्री लक्ष्मीनारायण एस. तिरुवनंतपुरम् २८ जुलाई, १९५२

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में यदि वह जीवन के प्रति गंभीर हो, एक अवसर ऐसा आता है, जब वह स्वयं को अनेकानेक भावनाओं में बँटा पाता

है। यही समय है कि वह आत्मपरीक्षण करे। मैं आशा करता हूँ कि आप इस समय का उपयोग कर स्वय का परिशीलन करें, क्रियात्मक एव भावनात्मक– दोनों ही प्रकार से, अर्थात् स्वय को उससे पृथक कर। आपके विचार हेतु मैं एक विषय आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ। सभवत आपने उसपर ध्यान न दिया हो अथवा उसे आप अभिव्यक्त न कर सके हों। क्या सामान्य व्यक्ति की तरह अपनी रुचि के अनुरूप जीवन-साथी की कामना करते हैं, जिसके मिलने के उपरात स्वय को स्थिर पाकर जीवन के अन्य कर्तव्यों को सही ढग से निभा सकेंगे? इसपर विचार कीजिए तथा इसका उत्तर दीजिए, जिससे आपकी उथलपुथल कम होगी। मेरा विश्वास है कि जगज्जननी की कृपा से आपको कोई कमी नहीं रहेगी तथा आप किसी भी झिझक से मुक्त, मानसिक अस्थिरता अथवा अन्य किसी भी मानसिक विफलता से मुक्त, इस पवित्र कार्य में जुट जाएँगे। मैंने जो कुछ लिखा है, उस पर विचार करें तथा शीघ्र उत्तर भेजें। (मूल अंग्रेजी)

१३१ कर्मचारियो से राष्ट्रभक्तिपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा

श्री राम गोपाल, २८ सितबर १९५२

सपूर्ण शासन व्यवस्था राष्ट्रीय-भावना से ओतप्रोत रहे, ऐसा कहते समय आपने अपनी भीतियुक्त मन स्थिति व्यक्त की है। ऐसी मन की अवस्था में कर्मचारी बधुओं से निर्भय राष्ट्रभक्तिपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा रखना आपको असभव सा है।

जब तक यह मनोवृत्ति है, ऐसा ही चलेगा। अपना राष्ट्र-जीवन दु खपूर्ण एव सकटग्रस्त ही रहेगा। अत स्वय अपने से प्रारभ करें। निर्भय होकर विशुद्ध राष्ट्रीय चारित्र्य से पूर्ण बनकर राष्ट्र सेवा करने का निश्चय करें। इससे प्रचलित शासन से कुछ कष्ट हुए तो आनद और उत्साह से उनको सहने की सिद्धता रखकर निरतर कार्यरत रहना आवश्यक है। इसका विचार करें।

१३२ भयानक विदेशी दवाइयाँ

डा भा वा मुले, सोलापुर २६ अक्तूबर, १९५२

आप अखिल भारतीय वैद्यकीय सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए हैं, यह जान कर बहुत हर्ष हुआ।

गोहत्या-बंदी के विषय में मेरे मन का एक विचार आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ। औषधियों के रूप में हमारे देश में विदेशों से गोमांस आता है। वैद्यकीय परामर्शवश अनेकों को उसे ग्रहण करना पड़ता है। 'विनकारनिस' तथा 'वोवरिल' इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। ऐसी और भी अनेक औषधियाँ हैं। ऐसा नहीं है कि उनके बिना रोगमुक्ति नहीं हो सकती। उन्हें पर्याय रूप बहुत दवाएँ मिल सकती हैं। अतः इस प्रकार के गाय के मांस, मेद, जठररस, यकृत, आदि से बनी हुई सब औषधियों को दृढ़ता से बहिष्कृत कर दिया जाए। उनके द्वारा हमारे लोगों के उदर में गोमांस प्रविष्ट होता है। अप्रत्यक्ष रीति से हम गोहत्या के कारण बनते हैं। हम धर्म-परम्परा-भ्रष्ट, और संस्कृतिहीन बनते हैं। हमारे समाज की राष्ट्रवृत्ति विच्छिन्न होती है। हमारे उदरों में, गोहत्यानिर्मित द्रव्यों को प्रच्छन्न रूप से घुसेड़ने का यह जो प्रयास चल रहा है, उसे शीघ्रातिशीघ्र रोका जाए, ऐसी कामना है। प्रार्थना है कि आप इस दृष्टि से प्रयत्नशील हों।

इसी प्रकार, रोगियों को कहा जाता है कि दूध पिओ। दूध पथ्यकर है। इत्यादि रुग्णों को पथ्यकर आहार सुझाते समय उन्हें निश्चित रूप से गाय का दूध सेवन करने के लिए ही बताया जाए- यह विचार भी सब डाक्टरों के सम्मुख रखा जाए, ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

(मूल मराठी)

१३३ दैनिक शाखा में समाज-पुरुष का दर्शन

श्री श्रीराम जोशी, नादागोमुख — २३ अप्रैल, १९५३

वहाँ के सुप्त कार्य को पुनः जागृत करने का योग्य मार्ग से प्रयत्न चल रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। वहाँ के पुराने स्वयंसेवक मन से अच्छे हैं। जिस प्रकार अन्यत्र भी नियमितता तथा अखंडता से समाज-संगठन कार्य करते हुए उसमें आत्मीयता का आनंद लेते रहने की वृत्ति कम है, उसी प्रकार वहाँ भी वही वृत्ति है। दिन-प्रतिदिन केवल एकत्र होकर परस्पर के दर्शन से समाज-पुरुष के विराट स्वरूप का दर्शन लिया जाए। इस विराट शरीर के हम अंग हैं, इसका अनुभव किया जाए। यह विराट पुरुष प्रत्यक्ष परमेश्वर का आविष्कार है, यह विशुद्ध बोध मन में उत्पन्न हो। इस प्रकट परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा मन में धारण कर काया-वाचा-मनसा

उस सेवा के लिए जीवन अर्पण करूँगा, ऐसा दृढ निश्चय जागृत रहे। इस निश्चय से प्रेरित होकर जीवन तेजस्वी करने के लिए परिश्रम किया जाए– इस निश्चय के अनुसार हम अपने सारे व्यवहार कर सकें, इस प्रकार अपने जीवन की रचना करें। व्यक्तिगत जीवन में सुख-दु ख आदि अनुभव आते ही रहते हैं। उनके सामने न झुकते हुए किसी भी परिस्थिति में कार्यरत ही रहना चाहिए। ये सारे सस्कार प्राप्त कर, वे नित्य जागृत रहने के अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य की अतुलनीय पद्धति का आश्रय लिया जाए, ये सारी बातें प्रत्येक को सहृदयपूर्वक समझा कर उसे कायप्रवण करने का परिश्रम अविरत करना नितात आवश्यक है । (मूल मराठी)

१३४ पत्र-सचालन की दिशा

श्री महादेवराव कोली, माण्कापुर (कर्नाटक) २५ अप्रैल, १९५३

आप अपने गाँव के छोटे-बडे सभी व्यक्तियों के साथ आत्मीयता से व्यवहार कर उन्हें यह समझाएँ कि अपना सघ सभी हिंदू बधुओं का है, हम मिल-जुलकर रहें तथा अपने में एकता, अनुशासन तथा अपने सपूर्ण राष्ट्र के प्रति प्रेम उत्तम रीति से रखें। सघ के दैनिक कार्य में अधिक से अधिक लोग आएँगे, इसके लिए सदैव प्रयत्नशील रहें। शाखा के कार्यक्रम भी अनुशासन, नियमितता तथा उत्साह से चलाएँ। परमपूज्य डा हेडगेवार जी का चरित्र, विचारों तथा सस्मरणों का सामूहिक पठन किया जाए। छोटे-बडे स्वयसेवकों को प्रात स्मरण, अर्थात् भारतभक्ति स्तोत्र कठस्थ कर उसका सामूहिक पठन करना चाहिए। इस तरह शाखा का काम उत्तम होने के लिए उत्साह निर्माण होगा। (मूल मराठी)

१३५ परमेश्वर न्यायी है

श्री विठ्ठलराव करदीकर, सातारा २० अगस्त, १९५३

'जलमदिर' मामले के सब तथाकथित अभियुक्त दोषमुक्त घोषित हुए। अत बहुत आनद हुआ। आप मेरी ओर से श्री बापू साहब आप्टे आदि सारे अभियुक्तों से मिलें तथा उनके निर्दोष सिद्ध होने के फलस्वरूप मुझे जो आनद हुआ है, उसका उन्हें निवेदन करें। मैं उनका अभिनदन नहीं करता, क्योंकि उनपर लगाए गए आरोप मिथ्या हैं, वे पूर्णत निर्दोष हैं। इस विषय में मुझे तनिक भी शका नहीं थी। उनका विद्यमान शुद्धत्व मान्य

हुआ, यह स्वाभाविक ही हुआ। अत उनका अभिनंदन करने की अनु न्याय देवता का और उसके प्रतिनिधियों का अभिनंदन करूँगा। चारों — असत्य की धूल उड़ रही है, फिर भी उन्होंने अपनी दृष्टि को मंद नहीं होने दि और सत्य को ही लक्ष्य बनाकर सत्य ही प्रकट किया। उनकी सत्यान्वेषी न्या पूर्ण बुद्धि का तथा संतुलित वृत्ति का हमें अभिनंदन करना चाहिए।

सत्य पर असत्य का, शुचिता पर अशुद्धता का, प्रामाणिकता प अप्रामाणिकता का, निःस्वार्थता पर स्वार्थपरता का आक्रमण ऐसा ह हो होता है। अनेक बार ऐसी परिस्थिति आती है कि लगता है अब उत्तम नष्ट हुआ, अधम से ग्रस्त हुआ। परंतु अंत में अच्छाई की ही जीत होत है। कोई भी ग्रहण नित्य के लिए नहीं बना रहता। उसे लाँघकर तेज बा प्रकट ही होता है। ऐसी घटनाओं से मनुष्य के हृदय का विश्वास दृढ़ हो जाता है कि परमेश्वर न्यायी है। (मूल मराठी)

१३६ निरर्थक बातों मे समय नष्ट न करे

श्री आर वेंकटराम,   ५ सितंबर, १९५१

दैनिक संघ-शाखाओं में उत्तम उपस्थिति रखने का तथा संघ की आत्मा एवं उत्साह का संचार स्वयंसेवकों में करने का उत्तरदायित्व स्वयंसेवकों पर है। यह तभी संभव होगा जब हम सब अपने आदर्शों एवं कार्यपद्धति का सदैव चिंतन करेंगे, अपना दैनिक कार्य तथा संभाषण सुचारु रूप से जागरूकता के साथ नियंत्रित करेंगे। मुझे आशा है कि शाखाओं के कार्य में आपको सफलता मिलेगी। अपने पास मेरा हस्ताक्षर सुरक्षित रखने का विचार निरर्थक है। यह आदत लाभदायक नहीं, अपितु हानिकारक है, क्योंकि इससे ध्यान अपने आदर्शों से हटकर क्षुद्र बातों की ओर बँट जाता है। इसका एक और हानिकारक कारण है। मेरे पास महानुभावों के हस्ताक्षर या अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के स्मृतिचिह्न हैं, इस बात से अनजाने में व्यक्ति अहंकारवश हो जाता है और अहंकार पतन का पूर्वचिह्न है। इसलिए हस्ताक्षर संग्रह की रुचि छोड़ो, अपने हृदय में अपने आदर्शों के प्रति जीवंत तथा दृढ़ विश्वास धारण करो, उसके लिए प्राणपण से आजीवन अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्य करने का संकल्प करो। मेरी बात समझकर यथायोग्य कार्य आप करेंगे, यही आशा है।

(मूल अंग्रेजी)

१३७ अवकाश भी सघकार्यार्थ लगाएँ

श्री उत्तम गुर्जीकर, ६ सितबर, १९५३

परीक्षा के पश्चात् अपने विभाग में योजना के अनुसार पूर्ण समय देकर काम करने का विचार बहुत ही योग्य है। अपने स्वयसेवक का स्वभाव ऐसा हो कि उसे जो भी अवकाश मिलता हो, वह अन्य किसी भी आकर्षण में न पडते हुए सघ-कार्यार्थ लगाएँ। (मूल मराठी)

१३८ अविरत प्रयत्न फलदायी होते ही हैं

श्री वा गो बर्वे, विटे (महाराष्ट्र) ११ सितबर, १९५३

आपका वहाँ सभी लोगों के साथ सपर्क है। आपको स्वभावत ही आदर से देखा जाता है। इसलिए आप किसी से किसी भी प्रकार की प्रत्यक्ष तथा त्वरित अपेक्षा न रखते हुए, अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार, शिक्षा, निरपेक्ष सेवा से सब को अपना बनाने का यह कार्य जीवटता से करते रहें, तो सपूर्ण वायुमडल बदल कर शुद्ध हो जाएगा। समय तो लगेगा ही, परतु प्रारभ में कुछ भी परिणाम नहीं दिखाई दिया, तो भी अपनी अच्छाई तथा शुद्ध दृष्टि का असर होता रहता है तथा उसका अदृश्य परिणाम भी होता है। प्रयत्न अविरत होते रहे तो पर्याप्त असर निर्माण होकर अपेक्षित फल एकदम प्राप्त होता है। यह सभी कार्यो का अनुभव है। अपने मनोविकार हटाकर शुद्ध मनोधर्म निर्माण करने के कार्य तो इसी नियमानुसार होते हैं।

यह सब समझकर तथा सत्वस्थ होकर उत्तम कार्य करनेवालों के समान धृति, उत्साह धारण कर तात्कालिक सिद्धि या असिद्धि की परवाह न करते हुए, सोचे हुए उद्दिष्ट की प्राप्ति के लिए न रुकते हुए, निर्धारित मार्ग पर, बढते रहना अततोगत्वा फलदायी है। (मूल मराठी)

१३९ धैर्य खोना ठीक नहीं

श्री नारदप्रसाद जी यादव, खरोद ६ नवबर, १९५३

वहाँ के अकाल का वर्णन पढकर दु ख हो रहा है। बिलासपुर में अपने जो प्रमुख हैं, उनकी ओर से इस विषय में कदम उठाया जाने से आगे यहाँ से योजनाएँ करना योग्य होता है।

अपने स्वयसेवक बधुओं का ऐसे अवसर पर धैर्य खोना ठीक नहीं।

परिस्थिति का सामना तो करना होगा, परतु केवल चिंतावश होकर शाखा में ढीलापन आने देने से अकाल तो दूर होगा नहीं। फिर, ऐसा सब ओर से हानिकर क्यों किया जाए? इसका विचार कर अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य में दृढ़ता से जुटे रहना अत्यत ठीक होगा। आशा है कि सब स्वयसेवक बधु इस प्रकार योग्य विचार कर कार्य सुचारु रूप से चलाते रहेंगे।

१४० शरीर निमित्त मात्र

श्री राजाभाऊ नेने, ६ नवबर, १९५३

दीपावली के शुभ पर्व पर स्वाभाविकतया आपने मेरे प्रति अति आत्मीयता के भाव तथा इच्छाएँ प्रकट की हैं। सघ की पुण्याई के कारण अपने सबके मन में परस्पर के प्रति अटूट आत्मीयता तथा प्रेम सदैव बना रहता है और इसलिए कार्य में बीच-बीच में कितनी ही त्रुटियाँ दिखाई देती हों, तो भी चारों ओर से पूरी ताकत से प्रयत्न होकर बिल्कुल अल्पावधि में सब दूर प्रगति होने का विश्वास है। यह शीघ्र ही साकार होगा। उसमें मेरा शरीर बिल्कुल न्यूनतम निमित्त है। फिर भी इस शरीर के प्रति जो शुभेच्छाएँ आपके द्वारा प्रकट की गई हैं, उनके प्रति तथा आपके उत्तम अत करण के प्रति आभार व्यक्त करना ठीक नहीं होगा, क्योंकि उसमें अपने स्वाभाविक अनोपचारिक एकात्मता की श्रेष्ठ भावनाओं की उपेक्षा-सी होगी। (मूल मराठी)

१४१ गृहस्थाश्रम बाधक नहीं

श्री माधवराव बापट, कटनी २८ दिसबर, १९५३

ऐसा नहीं है कि गृहस्थाश्रम स्वीकार करने से कार्य में बाधा पहुँचती है। वास्तव में ऐसे जीवन से मन स्वास्थ्य प्राप्त होना चाहिए, क्योंकि मन और शरीर की क्षुधाओं का उसमें सतोष हो सकता है। इसके कारण अधिक उत्साह से कार्य होगा। अपना कार्य भी समाज- सगठन का, अर्थात् समाज में रहकर व्यक्ति, परिवार तथा समाज--इस क्रम से अधिकाधिक उत्तरदायित्व स्वीकार करनेवाले पारिवारिक गृहस्थों का है। योग्य यही होगा कि वे उसे सँभालें तथा हम जैसों को मुक्त करें। इसलिए आप जैसे मँजे हुए

लोगों को गृहस्थ होकर दृढता से कार्यभार कधों पर उठाना चाहिए तथा ध्येयनिष्ठ जीवन-क्रम से अपना कर्तव्य पूर्ण करने के लिए लगातार परिश्रम करने चाहिए। अतएव आप उचित समय पर वर्तमान प्रचारक जीवन से निवृत्त हों। (मूल मराठी)

१४२ अपने सद्गुणो से राष्ट्र-आराधना करे

(आई ए एस सेवा में चुने गए स्वयसेवक को लिखा गया पत्र)

श्री आई महादेवन, १४ अप्रैल, १९५४

आपके चयन के लिए अभिनदन। मुझे विश्वास है कि नए जीवन में आपकी कर्तव्यपरायणता से आपकी कीर्ति, आपका सम्मान, प्रतिष्ठा तथा योग्यता वृद्धिगत होगी। अत आप अपने सगठन की प्रखर राष्ट्रभक्ति की भावना के अनुरूप कर्तव्यपूर्ति करें तथा परिणामस्वरूप आप अपने राष्ट्र का गौरव, जो कि अपने जीवन तथा कर्तव्य का अत्यत महत्त्वपूर्ण अग है, बढाएँ।

मैं दयालु परमेश्वर से आपके अभ्युदय तथा श्रेष्ठता की वृद्धि के लिए प्रार्थना करता हूँ तथा आपकी दीर्घायु एव उज्ज्वल सुखी जीवन के लिए उससे आशीवाद की अपेक्षा करता हूँ। अटूट कतव्य-भावना से जिस राष्ट्र की हम पूजा करते हैं, उस प्राचीन राष्ट्र के प्रति आप अपना सपूर्ण जीवन समर्पित करेंगे-- यही ईश्वर से प्रार्थना है। (मूल अग्रेजी)

१४३ प्रामाणिकता से सरकारी नौकरी करे

श्री सरनामसिह, आगरा २० अप्रैल, १९५४

आपने सरकारी नौकरी करने का जो विचार किया है, ठीक है। उत्तम प्रकार से ध्यान देकर सचाई के साथ नौकरी करना उचित होगा। यद्यपि सरकार का रुख अपने सघकार्य के प्रति कुछ विरोध का प्रतीत होता है, हमें भूलना नहीं चाहिए कि यह सरकार चलानेवाले नेता तथा अन्य व्यक्तियों के भ्रम के कारण है। हमें उनके रुख की प्रतिक्रिया के रूप में सरकार से रूठना नहीं, अपितु सरकार स्वदेशी है, इस बात को ध्यान में रखकर उसके कार्य को सचाई से करना है।

सघ का एक स्वयसेवक, इस नाते से कहना उचित समझता हूँ कि आपने सर्वसामान्य जनता, आर्य समाज, काग्रेस, सरकार आदि सब के प्रति जो घृणा अपने पत्र में प्रकट की है, वह मुझे अति अनुचित लगती है। सब के सब मानव निंद्य और आप उनके शिकार (स्वय अति शुद्ध सुयोग्य होते हुए भी शिकार) यह भाव मिथ्या है और आपकी उन्नति के लिए हानिकारक है। इसमें सुधार करना आवश्यक है। मैंने मेरा मत आपके सम्मुख रखा है।

१४४ माता का आशीर्वाद

श्री वी राजगोपालाचारी, एडवोकेट, चेन्नै — १४ जुलाई, १९५४

दिनांक १३ का आपका पत्र मिला। आपकी पूजनीय माताजी के दु खद निधन का समाचार मिला।

मुझे ३१ १ १९४८ का स्मरण हुआ। सकटकाल के दिनों में जब मैं चेन्नै से नागपुर के लिए प्रस्थान करनेवाला था, तब आपने माताजी को मुझे 'वज्रदेहम्' एव सर्वोत्कृष्ट प्राप्ति के लिए आशीर्वाद देने को कहा, यह बात मैंने सार्वजनिक रूप से भी कही है। स्वय भी कृतज्ञतापूर्वक मान्य किया है कि आगे की भयानक अग्निपरीक्षा से बिना चोट-खरोंच के बलवान बनकर बाहर निकला, वह उनके आशीर्वाद का ही फल है। अत आपका पत्र पढकर मेरे मन की जो भावाकुल स्थिति हुई, उसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

१४५ डा रघुवीर का प्रेरक भाषण

श्री पी परमेश्वरन, कोझीकोड — २४ अगस्त, १९५४

'केसरी' कैसा चल रहा है? मुझे आशा है कि स्थायी रूप से एकात्मता तथा सगठन का भाव जागृत करने और अपने अविश्रात प्रयत्नों एव त्याग से भारतमाता का उज्ज्वल भविष्य-निर्माण करने के बारे में जनजागृति का कार्य ठीक तरह से चल रहा होगा।

यहाँ का रक्षाबधन उत्सव भारत की राजभाषा हिंदी के अतर्राष्ट्रीय विनिमय शब्दावली के अपूर्व कोशकार तथा बहुभाषाविद् सासद डा रघुवीर की अध्यक्षता में अधिक उत्साह से सपन्न हुआ। उन्होंने अपने

भाषण में अपनी चिरतन सस्कृति का अत्यत विद्वत्तापूर्ण एव गौरवपूर्ण वर्णन किया। जिन्होंने उनका भाषण निष्पक्षतापूर्वक सुना, वे उनके इस निष्कर्ष से निश्चय ही प्रभावित हुए कि जिन्हें भारत की गरिमा के प्रति प्रामाणिक तथा दृढ श्रद्धा है, भारतीय जीवन पद्धति से प्रेम है, वे ही इग्लैंड-अमरीकी या रूसी-चीनी जीवन-पद्धति के घृणित अनुकरण से दूर रहकर, अपने राष्ट्र का गौरव बढाने एव मानव-जाति को अधिक सहृदय तथा दिव्य बनाने के प्रयत्न में सफल होंगे। (मूल अग्रेजी)

१४६ दृढ निश्चय तथा ध्येय पर अविचल निष्ठा हो

श्री सुधाकर इनामदार, २८ अगस्त, १९५४

आपकी तहसील की शाखाओं के काम में पुनश्च उत्साह पैदा होने लगा है, यह समाचार पढकर अत्यत आनद हुआ। सब लोग प्रयत्न करें और अपना मन शुद्ध रखकर किसी भी परिस्थिति में अडिग रहें, तो अपेक्षित स्नेह का वायुमडल निर्माण होता ही है। कभी कहीं थोडा विलब होगा, प्रारभ में उपेक्षा, उपहास, विरोध आदि का सामना करना पडेगा। परतु ये अवस्थाएँ कार्य में आती ही हैं। उन्हें पार कर जाना कार्यकर्ता का कर्तव्य है। दृढ निश्चय तथा ध्येय मार्ग पर अडिग निष्ठा हो, तो सफलता प्राप्त होगी ही। (मूल मराठी)

१४७ आत्मश्लाघा से दूर रहे

श्री बसीलाल सोनी, सिलीगुडी २८ अगस्त, १९५४

उधर वर्षा तथा बाढ का प्रकोप होकर जनसाधारण को बहुत कष्ट उठाना पड रहा है। आपने वहाँ बहुत सेवा की, यह पता चला है। यह समाचार हृदय को बहुत आनद देनेवाला हुआ है। एक बात बहुत कुछ खटकी। दिल्ली के अग्रेजी साप्ताहिक 'आर्गनायजर' में आपकी सहायता का वर्णन आया है। उसमें आत्मस्तुति की गध होने से ठीक नहीं लगा। यद्यपि आत्मश्लाघा या अहकार, आपका स्वभाव नहीं है। समाचार देते समय ध्यान रखना तथा सतर्क रहना आवश्यक है। यथार्थ वर्णन करना ठीक है, किन्तु यह कहना कि जनता में सब लोग सघ की तारीफ कर रहे हैं, आपके मुँह से शोभा नहीं देता। यही समाचार वहाँ के किसी मान्य नागरिक के नाम

से दिया गया होता, तो बहुत ही अच्छा होता। आगे के लिए आप ध्यान देंगे ही।

१४८ मन अडिग रहे

श्री रामदास कलसकर, ३० अगस्त, १९५४

आपके पिता की मृत्यु होकर एक मास हो गया है। ईश्वर की कृपा से घर के सभी लोगों की मानसिक अवस्था पूर्ववत होने लगी होगी। पूज्य माताजी तथा बडे भाई का, कार्य में आपको प्रोत्साहन रहने से आप स्वस्थ मन से कार्य करने में जुट गए होंगे। यही होना चाहिए। मन चचल है। कोई भी कारण उसे कार्य-विमुक्त होने को पर्याप्त है। कम से कम कार्यिक जीवन से मुँह फेरकर साधारण जीवन स्वीकार कर उसका एक साधारण अश के रूप में कार्य ग्रहण करने की वृत्ति मन में पैदा होना स्वाभाविक है। इसलिए मन पर काबू पाना, ध्येय तथा मार्ग पर श्रद्धा और निष्ठा अधिकाधिक दृढ करते रहना तथा चारों ओर के वायुमडल का मन पर परिणाम नहीं होने देना, कार्य की दृष्टि विचलित न हो, इसके लिए नित्य चितन-मनन से दृढता लाना, आवश्यक है। अपने पिता की मृत्यु देखकर आपने यह सोचकर कि वह स्वाभाविक है, अपने मन को विचलित नहीं होने दिया, यह अत्यत उचित हुआ। इसी प्रकार चिरतन कर्तृत्व की दृष्टि से अन्य विचार भी दूर करते रहें। (मूल मराठी)

१४९ कर्मण्यता जागृत करे

श्री सुदरसिह सक्रवार, रीवा १ सितबर, १९५४

वहाँ का क्षेत्र अच्छा है। जनसाधारण में भावुकता है। किन्तु अपनी अवस्था, परिस्थिति, काल का महत्त्व सोचकर कर्तव्य निर्धारित करने की इच्छा तथा कर्मण्यता अभी जागृत करना है। स्थानीय बधुओं के हृदय में अपनेपन का भाव अधिकाधिक मात्रा में जागृत कर सुदृढ शाखा बने, यही प्रयत्न हो।

सब प्रकार से कार्य के लिए परिश्रम करते हुए भी कुछ अच्छा अध्ययन तथा शरीर-स्वास्थ्य के लिए कुछ व्यायामादि करते रहना बहुत लाभदायक होगा।

१५० आपका प्रयोग समष्टि भावना का प्रतीक

श्री सुधाकर देशपाडे (असम) २ सितवर, १६५४

कार्य में उत्साह निर्माण होने लगा है, यह पढकर अत्यत आनद हुआ। अपना मन आनदित रहा, तो वह उत्साह अपने सपक के अन्य वधुओं के अन्त करण में प्रवेश करता है तथा उसमें से कार्यवृद्धि होने लगती है, यह इस समय आपने अनुभव किया होगा ही। अब कुछ स्थानीय युवकों का सहयोग प्राप्त करें तथा उन्हें शाखा चलाने, कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से लेने, स्वयसेवकों से बातचीत करने, स्वय योग्य विचार करने आदि के विषय में मार्गदर्शन करें तथा उनपर अधिक जिम्मेवारी सौंप कर, उन्हें योग्य बनाने की ओर थोडा अधिक ध्यान दें। इससे नगर के अन्य लोगों से मिलने, बोलने, आसपास के स्थानों का निरीक्षण कर वहाँ शाखा खोलने का प्रयास करने के लिए आपको अवकाश और मन स्वास्थ्य मिल सकेगा।

मैं अपने पत्रों में 'आप', 'आपका' आदि शब्दों का प्रयोग इसलिए करता हूँ कि वह मेरा स्वभाव हो गया है। अपने कार्यकर्ताओं की आयु आदि न देखते हुए 'गुणा पूजास्थानम् गुणिषु न च लिग, न च वय' इस नियम के अनुसार सबका आदर करने की इच्छा से वह प्रयोग करता हूँ। और विशेष महत्वपूर्ण बात यह है कि सब स्वयसेवक बधुओं की समष्टि-भावना के प्रतीक के रूप में बहुवचन का प्रयोग योग्य है, इसलिए करता हूँ। क्वचित् किसी को तू-तुम का प्रयोग होता है, परतु वह अपवाद है। अतएव सकोच न करें।

१५१ स्वास्थ्य लाभ के लिए मन प्रसन्न रखे

श्री वेणुगोपाल, निलबूर (केरल) २७ सितवर, १६५४

विश्राम, योग्य उपचार तथा योग्य देखभाल से शीघ्र ही आप स्वास्थ्य लाभ कर सकेंगे। आपको केवल इतना ही करना है कि अधीर न हों, चिता न करें, शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ करने का मन में दृढ विश्वास रखें। सभी व्याधियो में रोगी को चिकित्सक का सहयोग करना चाहिए। प्रसन्न, चितारहित मनोवृत्ति धारण कर, विश्राति, आहार, नियमित औषधि सेवन इन विषयों में चिकित्सक की सूचनाओं का पालन करना चाहिए। यह करने से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ निश्चित है। (मूल अग्रेजी)

१५२ उत्तम सस्कार प्रदान करे

श्री फूलसिंह साहू, पनागर, जि जबलपुर — २८ सितबर, १५

जबलपुर जिले में अपने कार्य का सुचारु रूप से विकास करने का कार्य आपपर है। जहाँ शाखा है, वहाँ के बधुओं में एक विशाल पारिवारिक भाव जागृत कर, तदनुरूप व्यवहार करने को प्रोत्साहन देना, नित्य कार्यक्रम के द्वारा सुसगठित अनुशासन का अभ्यास देह-मन बुद्धि को हो, इस दृष्टि से सतर्क रहना तथा नित्य बातचीत, चर्चा आदि से सघकार्य की उत्तम दृष्टि प्राप्त करवाना- सक्षेप में उत्तम सस्कार प्रदान कर दृढ कार्य की प्रगति का प्रयत्न करना, यह एक प्रमुख कार्य है। साथ ही अनेक अन्य स्थानों में जाकर, स्नेहयुक्त सपर्क स्थापित कर, वहाँ भी शाखा स्थापनार्थ उद्योग करना है। क्रमश आपको अन्य बधुओं के सहयोग से यह करना है। दृढ निश्चय से कार्य करते रहने से फल मिलता ही है।

१५३ आत्मनिरीक्षण करे

श्री कँवल नैन, मेरठ — २६ सितबर, १९५४

कोई कुछ भी लिखे, आप यदि स्वयसेवक के नाते सघ-विषयक जानकारी रखते हैं, तो उससे आप विचलित क्यों होते हैं समझ में नहीं आता। वास्तविक आपको तो दृढ रहना चाहिए कि अन्य लोग भ्रमवश विकृत प्रचार करें, तो भी अपना कार्य तो शुद्ध ही है। लोगों की विचित्र बातें पढ-सुनकर वही सत्य होगा ऐसा मानकर अपने कार्य के सबध में अविश्वास करना और वह भी बिना विचार के, कितना योग्य है, इसे आप सोचें।

दूसरी बात गुरुदक्षिणा के विषय में आपने लिखी है। अन्य स्वयसेवक बधु आपसे क्या कहते हैं, उससे अधिक महत्त्व की बात जो आपको सोचनी चाहिए, वह यह है कि आपका स्वय का कार्य से कितना सबध है। आपके लिखे वृत्त के अनुसार प्रतीत होता है कि आप बहुत काल से शाखा से सबधित नहीं, ध्वजपूजन जैसे पवित्र कर्तव्य का भी आपसे बार-बार स्मरण करवाना पड़ता है, तो भी आपको इच्छा होने के लिए बहुत समय लगता है। दक्षिणा समर्पण करने की आपकी प्रवृत्ति नहीं। समर्पण के लिए कहा तो आपको अच्छा नहीं लगता, इस प्रवृत्ति के समर्थन

के लिए परमपूजनीय डाक्टर जी का नाम तक लेते हैं। उस समय यह स्मरण नहीं करते कि उन्होंने अपना पूरा जीवन ही समर्पण कर दिया था। परिवार की चिंता छोड दी थी और स्वय परिश्रमपूर्वक धन प्राप्त कर दक्षिणा-समर्पण करते थे। स्वयसेवक इस कार्यक्रम को लेकर ही क्यों न हो, वर्ष में एक बार तो आपसे मिलने का प्रयास करते हैं, परतु आप अपनी ओर से ऐसा कुछ प्रयत्न करते हुए प्रतीत नहीं होते।

अन्य बधुओं के व्यवहार पर टीका-टिप्पणी करने के पूर्व, अपना यह कर्तव्य है कि स्वयसेवक के नाते आत्मनिरीक्षण करें। अपना जो कर्तव्य स्वयसेवक के नाते है, उसका सर्वप्रथम और सदा के लिए निभाने का कार्य दैनदिन शाखा में उपस्थित रहकर करना। यह भी तो आपसे होता नहीं, ऐसा आपके पत्र से स्पष्ट है। अत विचार कर योग्य रीति से कार्य सबधी अपना कर्तव्य पूर्ण करने का ही निश्चय आपको करना उचित है। अन्य सब बातें इसी से ठीक होगी।

यद्यपि पश्चिम पजाब से आए हुए अपने बधुओं को अत्यत कष्ट का सामना करना पडता है, तो क्या जीवन भर जिस कार्य को चरितार्थ करने का आपने निश्चय किया है उसका विस्मरण होने देना उचित होगा?

मेरे पत्र की आपको अपेक्षा है, वह ठीक ही है, किन्तु मेरा पत्र न आया तो आप राह से भटकेंगे, यह जो आपने लिखा है, वह अत्यत आश्चर्यजनक है। इसमें आपने अपने स्वयसेवकत्व, निश्चयी बुद्धि, दृढव्रत, सचाई, आदि सब श्रेष्ठ गुणों का स्वय ही अपमान कर लिया है। यह दु ख की बात है।

आप गभीरता से इन बातों को सोचें और स्वयसेवक के अपने उचित कर्तव्यों को करने में न चूकने का निश्चय कर चलें। आज तक की त्रुटियों का इसी प्रकार परिमार्जन होकर जीवन कृतार्थ हो सकेगा।

१५४ अपने को नाम से काम नहीं

श्री रामसिह ठाकुर, २६ सितबर, १९५४

डिब्रुगढ के चित्र से स्थिति स्पष्ट हो रही है परतु आशा है कि सरकार ने तत्परता से नदी का प्रवाह रोककर नगर बचाने के जो प्रयास किए, वे सफल हो चुके होंगे।

जितने व्यक्तियों के मकान नष्ट होने के कारण उन्हें हानि का सामना करना पड रहा है। उन्हें जो सहायता सभव है, आप दे रहे हैं। अपने को नाम से काम नहीं। अत मारवाडी रिलीफ सोसायटी को पूर्ण सहयोग देकर पीडितों को सहायता करने का आपने जो सोचा है, वह पूर्णरूपेण योग्य है।

पूरे देश में ही इस वर्ष कहीं अधिक वृष्टि, कहीं अनावृष्टि, कहीं तूफान आदि से कोई न कोई काड हो ही रहा है। मानो प्रकृति भी अपने राष्ट्र के धैर्य की परीक्षा कर रही है। इसमें परस्पर सहयोग से चलें तो सुगमता से राष्ट्र खरा उतर सकता है। देखें, क्या होता है।

१५५ आपद्ग्रस्तो की सहायता

श्री बापूराव मोघे, हैदराबाद २६ सितबर, १९५४

आज के समाचार-पत्र में, सिकदराबाद और काझीपेठ के मध्य में अलूर के निकट अति भीषण अपघात होने का समाचार पढा। पूरी की पूरी एक्सप्रेस गाडी बाढ से घहराती हुई नदी में जा गिरने की वह वार्ता भयानक थी।

अनेकों के देह लापता होने की सभावना दिखती है। कितने परिवार शोकग्रस्त हुए होंगे, कहना कठिन है।

जिनसे हमारा अधिक निकट सपर्क आया था, ऐसे कोई व्यक्ति इस दुर्धर दुर्घटना की चपेट में तो नहीं आए, इस शका मात्र से मन भयग्रस्त हुआ है। अत इस सबध में शोध करें। व्यक्तिनिरपेक्षत सबके लिए दुख का अनुभव तो हुआ ही, परतु जो निकट के हैं और आपद्ग्रस्त हैं, उनकी ओर अधिक ध्यान न देना सभव नहीं है। अत शोध लें और सूचित करें। सब सबधित घरों में जाकर सात्वना दें। यथासभव तात्कालिक सहायता देने का प्रयास आप करेंगे ही। (मूल मराठी)

१५६ सब अवस्थाओ मे मन ध्येयाकार रखे

श्री जगदीश अवरोल, अमृतसर ३० सितबर, १९५४

आप इतने पुराने कार्यकर्ता हैं कि आपको कुछ सुझाव देना मेरी धृष्टता मात्र होगी तथापि अपने को कार्य करना है। वह जीवन भर का

ार्य इस नाते से ग्रहण किया है। अत सब प्रकार की अवस्थाओं में मन ध्येयाकार रखते हुए अपनी कृति, वाणी तथा स्वभाव को कार्यानुकूल बनाना, अनेक व्यक्तियों से आनेवाले अपने सबध परस्पर प्रेम, विश्वास तथा सहयोग के हों, इसलिए अपने अदर भी उचित परिवर्तन करने की सिद्धता रखना तथा वैसा व्यवहार निर्माण करना आवश्यक है, इतनी बात ध्यान में रखकर आप चलेंगे एव समय-समय पर कर्तव्य-कठोर न्यायाधीश की भाँति अपना आत्मनिरीक्षण तथा परीक्षण करेंगे, इससे योग्य पाठ अपनाएँगे तो सब प्रकार आपकी योग्यता बढकर आपके उत्साह, निष्ठा, उद्योगशीलता आदि श्रेष्ठ गुणों का अत्यधिक लाभ कार्य को होकर आपका जीवन भी कृतार्थ होगा एव आप हृदय में सतोष का अनुभव करेंगे। आशा है कि आप मेरे इन शब्दों का गर्भितार्थ समझेंगे तथा मैंने यह आपको लिखा, इस मेरी धृष्टता के लिए रोष न करेंगे।

१५७ श्रेष्ठ पुरुषों के गुणों का अनुकरण करें

श्री शेषगिरिराव, यादगिरि — ३० सितबर, १९५४

स्वयसेवकों को उत्तम गुण प्राप्त हों, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। प्रभु रामचद्र, भगवान श्रीकृष्ण, शकराचार्य, माधवाचार्य, इत्यादि श्रेष्ठ पुरुष तथा छत्रपति शिवाजी आदि राष्ट्रपुरुषों के चरित्र का वर्णन कर उनके अच्छे-अच्छे गुणों को अपने में लाने का उत्साह उत्पन्न करना चाहिए।

(मूल अंग्रेजी)

१५८ राष्ट्र के स्वाभिमान की रक्षा हो

श्री डा रा ग डागा, चिखली — ३० सितबर, १९५४

ऐसा समय आया है कि चोर को छोडकर ही नहीं, तो उसे प्रश्रय देकर सन्यासी को फाँसी दी जाती है। इसका परिणाम यह होगा कि देश के राष्ट्रीय जीवन पर सकट के बादल मडराएँगे। देश का बडा दुर्भाग्य है कि तथाकथित बडे-बडे नेतागण इसे समझ नहीं पाते या समझकर भी उसकी ओर से ऑखें मूँद लेते हैं। इसके लिए जन-जागरण तथा सुसगठित शक्ति निर्माण कर ऐसी परिस्थिति पैदा करें जिससे ऐसी घटनाएँ न हों। ऐसी घटनाएँ हुई भी, तो उनके सूत्रधारों को प्रश्रय देने का विचार भी मन

में न आने पाए। राष्ट्र के स्वाभिमान की रक्षा हो, ऐसा करना आवश्‍
है। अपना यही एकमेव कार्य है। अपने संघकार्य में से यही शक्ति निर्मा
होनेवाली है। (मूल मराठी)

१५९ उत्साह स्थायी रहे

श्री भीमराव तुवडे, काटोल ४ अक्तूबर, १९५५

उत्साह निर्माण होने पर, वह ठंडा होने के पहले योग्य व्यक्तियों के प्रवास तथा कुछ काल स्थान-स्थान पर स्थिर रहकर अनेक व्यक्तियों से योग्य बातचीत कर शाखा को प्रत्यक्ष प्रेरणा देने का प्रयत्न किया जाए, तो अपेक्षित वृद्धि होगी। (मूल मराठी)

१६० अनासक्त भाव से कार्य करें

श्री लेखराज शर्मा, जयपुर ८ अक्तूबर, १९५५

एक बात की सतर्कता रखना आवश्यक है कि अपना मकान होने पर 'पजेसिवनेस', 'परिग्रह' का जो भाव निर्माण होता है तथा कुछ आसक्ति उत्पन्न होती है, उससे मुक्त रहकर कार्य करने की दृढता सबमें जागृत रखनी चाहिए।

१६१ हम खम ठोककर खड़े हैं

श्री बड़ू आठवले, सांगली १० अक्तूबर, १९५५

अपना कार्य करते समय मन की भावनाएँ तथा बुद्धि का सोचना स्पष्ट तथा शुद्ध हो तथा शरीर भी अपना नियोजित कार्य ठीक तरह से करता हो, तो मन में आत्मविश्वास-शून्यता तथा आत्मविश्वास-न्यूनता क्यों अनुभव होगी मन में ऐसे दुर्बलता के विचार क्यों आएँगे? चारों ओर का विपरीत वायुमंडल, कार्यकर्ताओं के प्राणपण से किए परिश्रम में से उचित मात्रा में प्रतिफल न मिलना, अच्छे-अच्छे लोगों का बुद्धि-विभ्रम तथा तेजोभंग होता देखकर भी हम कार्य करते हैं। कामों के पहाड़ उठाना है क्वचित् उसके नीचे दबकर मरना पड़ेगा ऐसा लगता हो तो भी हम वीरवृत्ति से परिस्थिति से टक्कर लेने के लिए खम ठोककर खड़े हैं। हम

लोग परिस्थिति के सामने झुकनेवाले नहीं हैं, तो कुछ समय के बाद उसे मात देकर अभीप्सित जीवन निर्माण करनेवाले हैं। हम दृढता से डटे रहें। इस सही विचार तथा बोध से सारे बादल दूर होकर, दुर्दमनीय उत्साह निर्माण होगा।

हमें नित्य इस प्रकार से सोचना होगा कि परमपूज्य डाक्टर जी ने कितनी कठिन परिस्थिति में सघ का निर्माण किया, उसे बढाया तथा उसे सुभावना पुष्ट रूप प्रदान किया तथा उसकी आगे की उन्नति का भार हम लोगों के सुपुर्द किया। इसका श्रद्धापूर्वक हम स्मरण करें। एकाग्र चित्त से भगवान की प्रार्थना करें कि वह हमें 'मुक्तसगोऽनहवादी धृत्युत्साहसमन्वित । सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकार ' ऐसा श्रेष्ठ कार्यकर्ता बनने में कृपापूर्वक सहायता करें। मन शात तथा चिर उन्मेष-सपन्न तथा नित्य सोल्लास होगा एव कार्य के प्रति अदम्य विश्वास पैदा होगा। (मूल मराठी)

१६२ रुग्ण कार्यकर्ता को परामर्श

श्री वेणुगोपाल, निलबूर — १० अक्तूबर, १९५४

रुग्णावस्था में प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह वहाँ के वातावरण में भी मन शाति रखे, बुजुर्गों तथा डाक्टरों की सलाह पर चले। मैं शीघ्र पूर्णत व्याधिमुक्त बनूँगा, शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ हेतु चिकित्सक तथा बुजुर्ग लोग अत्यावश्यक सब उपचार कर रहे हैं, ऐसी दृढ श्रद्धा रखें। यही शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए आवश्यक है। रोगोपचारों में विश्वास रखने से औषधि का परिणाम बढता है, पुन शक्ति प्राप्त होती है तथा आप थोडे ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ एव अधिक सशक्त बन सकते हैं।

अत रोगमुक्ति के उपचारों में प्रसन्नतापूर्वक दृढ सहयोग दें। आपको शीघ्र ही पूर्ववत् स्वस्थ देखने के आनद का अनुभव करूँगा, ऐसा विश्वास है। (मूल अग्रेजी)

१६३ सेवा करने से हृदय शुद्ध होता है

श्री मणिलालजी, — ११ अक्तूबर, १९५४

आपकी दिनचर्या पढकर आनद हुआ। इसमें कुछ समय रामायण, महाभारत, भागवत तथा सतों के वचन पढने के लिए एव उनपर चितन

करने के लिए निश्चित कर लगाना लाभदायक होगा। निद्रा के पूर्व का समय इसलिए अच्छा होता है।

वहाँ आपने पीड़ितों की सेवा, स्वयंसेवक बंधुओं से मिलने का इत्यादि जो नित्य कार्य ले रखा है, वह बहुत ठीक है। सेवा करने से शुद्ध होता है, अहंभाव दूर होता है, सर्वत्र परमात्मा-दर्शन करने का अभ्यास होकर बहुत शांति प्राप्त होती है।

१६४ संघकार्य दल-निरपेक्ष है

श्री भाऊसाहब खरे, तहसील संघचालक, विदर्भ प्रांत २३ नवंबर, १९५

पत्र में लिखे आपके विचार सुस्पष्ट हैं। जैसा आपने लिखा है कि संघकार्य दलनिरपेक्ष है, परंतु अन्य दलों के कार्यकर्ता और लोग निरर्थक संघविरोधक मानते हैं, ऐसे कांग्रेस आदि दलों के कार्यकर्ता संघ को ही एक दल समझने का दुराग्रह कर रहे हैं। इसका अकारण ही राजनीति से संबंध जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। वे जनसंघ का सीधा संबंध जोड़ते हैं, इतना ही नहीं तो दोनों एक ही हैं, ऐसा अपप्रचार करते हैं। ऐसे लोगों को रोकना कैसे संभव होगा? जनसंघ अभी-अभी प्रारंभ होने के कारण असत्य बातों का आधार बनाकर अपप्रचार करने को उन्हें और एक विषय मिल गया। १९४२-४८ के कालखंड में प्रारंभ में अंग्रेजी शासन ने और तत्पश्चात् कांग्रेस शासन ने राजनैतिक क्षेत्र में संघ को खींचने का अव्यापारेषु व्यापार किया ही था। राजनीति के विषय में हमने एक अक्षर भी नहीं कहा, तो भी हम जो संघ के बारे में कहेंगे, उसे राजनीति न मानने की समझदारी अन्य दलों में आज दृष्टिगोचर नहीं होती। उदाहरणस्वरूप- गोहत्या बंद कराने हेतु हमने हस्ताक्षर-संग्रह किया, उसका प्रचार किया, शासन के सम्मुख वैसी अपनी माँग रखी, तो भी यह राजनीति के खेल में एक चाल मात्र है, ऐसा अपप्रचार प्रसृत करने में अन्य दलों ने कुछ कसर नहीं रखी। अपनी वैचारिक भूमिका दल निरपेक्ष है, ऐसा विश्वास दृढ़ रखकर कार्य करते रहना चाहिए। सद्य फल-प्राप्ति नहीं हुई तो भी हिम्मत न हारते हुए अपना कार्य करते रहना, यही आवश्यक और सफलता प्रदान करनेवाला विचार है।

कुछ स्वयंसेवक बंधु जनसंघ में काम करते हैं। पूर्वकाल में हिंदू सभा, कांग्रेस आदि दलों में भी स्वयंसेवक बंधु थे। आज अपने स्वयंसेवकों

को हमारी ओर से कुछ प्रतिबध नहीं है। जनसघ में काम करें, ऐसा प्रोत्साहन नहीं है, वैसी सूचना भी नहीं है। परतु स्वयसेवकों को प्रवेश न देने की अन्य दलों की नीति है। अपने दल के चारों ओर उन्होंने मानो दीवार खडी कर दी है। इसलिए इस क्षेत्र में जिनको काम करना है, उन्हें सभवत जनसघ में प्रवेश मिल सकता है, ऐसा दिखता है। अत आपने इस विषय में भ्रामक धारणा बनाने का और कुछ बधु काम कर रहे हैं, इससे व्यथित होने का कारण समझ नहीं आता।

आपका पत्र मुझे बहुत उपयुक्त सिद्ध हुआ। सघ का सर्व-सग्रह स्वरूप, दलगत भेदों में न उलझकर सभी हिंदुओं को स्नेह-बधन में दृढ करने का कार्य और शाखाओं के रूप में चलनेवाले अपने दैनदिन कार्य से ही विकसित हो रहा सगठन का सर्वांगपूर्ण स्वरूप अपने सब कार्यकर्ताओं के सम्मुख समारोप-समारोह में सुविधा से प्रतिपादन करना आपके पत्र के कारण सभव हो पाया। (मूल मराठी)

१६५ असह्य पीडा के क्षण

श्री जी कृष्णन, चेन्नै ९ मार्च, १९५५

आपने अत्यत दु खद समाचार मुझे दिया है। आप सबके कठोर सताप की कल्पना करना भी कठिन है। आपके घर में प्रियतम चिरजीव हिमालय के साथ सानद बीता समय, उसकी मधुरता एव प्रेम की स्मृतियाँ मेरे मन में उभर आई तथा उसे मैं फिर नहीं देख सकूँगा, वह हमसे हमेशा के लिए दूर चला गया, यह विचार मन को अत्यत व्यथित कर रहा है।

आपका सात्वन मैं किन शब्दों में करूँ। इस भयकर आपत्ति में ईश्वर ही आपको सात्वना एव धैर्य दे, उसकी दया आपके परिवार पर बनी रहकर, वह ही आप सबको पीडाओं से सुरक्षित रखे, यही ईश्वर से प्रार्थना है। (मूल अंग्रेजी)

१६६ वैशिष्ट्यपूर्ण सघकार्य

श्री हरिहरसिह, कटक १२ अप्रैल, १९५५

आपके प्रागण में शाखा प्रारभ हो गई है, यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। प्रारभ में बहुत थोडे स्वयसेवकों की उपस्थिति अपेक्षित

है। आपने स्वय देखा ही होगा कि आज के युवक केवल शब्दजाल एव अनेक वादों-सिद्धातों की रट लगाने में आनद मनाते हुए, और जिनमें निरपेक्षता, तथा प्रसिद्धिपराङ्मुखता अपेक्षित है, ऐसे कार्मों से जी चुराते हैं।

अपने कार्य में धीरज, सभी बधुओं के साथ मिल-जुलकर रहने का अभ्यास, अति प्राचीनकाल से अपने पूर्वज जिन आदर्शों पर टिके रहे, उनके प्रति प्रेम एव श्रद्धा तथा भविष्य में भी उनपर सदैव अडिग रहने का निश्चय अपेक्षित है। सार्वजनिक तथा राजनैतिक मापदड से जिसका मूल्याकन नहीं हो सकता, ऐसा वैशिष्ट्यपूर्ण हमारा कार्य है। मुझे बिल्कुल सदेह नहीं कि हमारी दिव्य आध्यात्मिक प्रकृति के कारण चैतन्यपूर्ण नवजीवन प्राप्त करना हमारे रक्त में है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना समाज अततोगत्वा सफल होगा यह निश्चित है। आपने इस कार्य में अधिक वैयक्तिक रुचि लेना प्रारम्भ किया है, यही हमारी सफलता का पूर्व चिह्न है। मन की अविचल शाति, धीरज एव दीर्घोद्योग से यह कार्य अवश्य सफल होगा।

(मूल अंग्रेजी)

१६७ मन पर पटल छाने न दे

श्री दत्ता देशपाडे, नारायणगॉव — १५ अप्रैल, १९५८

आपके पत्र से एक ओर भाव तथा अत स्थ खलबली से युक्त मन की अवस्था व्यक्त हो रही है। उत्तम कार्यकर्ता को सदैव सावधान रहना चाहिए कि उसके मन पर किसी भी प्रकार का पटल नहीं छाएगा। एक बार पटल छा गया तो मन की मलिनता मिटाना कठिन होता है, अनेक बार उसे मिटाने की इच्छा और प्रेरणा भी नष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं, किसी ने मिटाने की बात छेडी, तो उस व्यक्ति पर गुस्सा आता है। उसके प्रति मन कलुषित होने लगता है। श्रेष्ठ व्यक्तियों में पटल न छाने देने, तथा अन्यों की सूचनाओं का स्वागत करने की श्रद्धापूर्ण सुजनता रहती है। यह श्रेष्ठत्व अपेक्षित है। विचार करें।

(मूल मराठी)

१६८ ध्येय-समर्पित जीवन

श्री कुमारिल भागवत, नगर २१ अप्रैल, १९५५

सघकार्य करने का निश्चय हुआ हो, तो वह प्रचारक रहकर या घर-गृहस्थी सँभालकर भी किया जा सकता है। न्यूनाधिक हो सकता है, परतु कार्य कर सकते हैं। यह दृष्टि रखकर ही काम-धधा ढूँढना और जीवन की सारी रचना करना आवश्यक है। परतु सपूर्णत सघकार्य ही करना हो, तो जीवन-विषयक अन्य सारी कल्पना-आकाक्षाओं को विचारपूर्वक दृढ निश्चय से राम-राम कहकर सघ ही परिवार है, अतएव सेव्य, तद्व्यतिरिक्त अन्य रिश्तों की पकड और अधिकार तुलनात्मक दृष्टि से कम हैं, ऐसी मन की अविचल धारणा बनाना आवश्यक है। कार्य करते समय अनेक बार सुख-दु ख, मान-अपमान, यश-अपयश आदि का अनुभव होता है। इन अनुभवों के समय अविचल चित्त से कार्यरत रहना सर्वथा कार्य-समर्पित तथा ध्येय-समर्पित वृत्ति से जीवन उजागर करने का दृढ निश्चय करना अनिवार्यत आवश्यक है।

(मूल मराठी)

१६९ सकटों से विचलित न हो

श्री दत्तोपत म्हसकर, सोलापुर २५ अप्रैल, १९५५

आपके बडे भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर अतीव दु ख हुआ। कार्य करते समय ऐसे अवसर आते ही हैं। दुनिया अपनी रफ्तार से चलती है, प्रिय व्यक्तियों का विछोह होता है। ऐसे समय मन का सतुलन रखना, अकल्पित रीति से पैदा हुए व्यक्तिगत या पारिवारिक सकटों या दायित्वों से जीवनादर्श ओझल न होने देना, आए हुए सकट से धीरज न खोते हुए स्वीकृत मार्ग पर अपनी चिरतन साधना से पूजनीय ध्येय की ओर बढने के लिए सभी विकार एक ओर रखकर कदम बढाना, वीरव्रती कार्यकर्ताओं का जीवन राष्ट्रार्पण करनेवाले कृतिमान स्वयसेवक का लक्षण प्रकर्ष से प्रकट होता है। जिस परमेश्वर के कार्य के लिए हम सभी स्वयसेवक कटिबद्ध हुए हैं, वह हमें इस दु ख में धीरज देकर उचित मार्ग से जाने की शक्ति प्रदान करेगा।

(मूल मराठी)

१७० त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम्

श्री रामभाऊ म्हालगी, पुणे — २ जून, १९५५

आप गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर रहे हैं। यह अत्यंत हर्ष की बात है। गृहस्थाश्रम की शीतल छाया में जीवन को सुख तथा श्रम के पश्चात् उत्तम परिहार होता है। अतएव आपके कर्तृत्व तथा उद्यमशीलता में इस नवगृहस्थ जीवन से वृद्धि ही होगी। इस जीवन में न्यूनाधिक मात्रा में कर्तव्यच्युति का खतरा भी रहता है, क्योंकि बड़ों-बड़ों को किंकर्तव्यविमूढ़ करवाने स्त्री-पुरुष सौख्य, व्यामोह पैदा करने जैसे स्वरूप धारण कर, सदैव दृष्टि के सामने रहते हैं। परंतु परमेश्वर पर विश्वास रखकर, उसकी सेवा में 'त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम्' इस निश्चय से चलनेवालों को उसकी ही कृपा से ध्येयनिष्ठ, कर्तव्यपरायण जीवन सफल करने की शक्ति तथा प्रेरणा प्राप्त होती है, ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

आपने ऐसा ही कठोर कर्तव्य का कंकण हाथ में धारण किया है। भारत का पुनरुत्थान करने की दृढ प्रतिज्ञा की है, उसके लिए बड़ा दायित्वपूर्ण काम भी हाथ में लिया है। इसके साथ ही अपने संघ के परम पवित्र ईश्वरीय कार्य को आपने स्वयं को समर्पित किया है। काया-वाचा-मनसा लक्ष्य प्राप्त्यर्थ परिश्रम करने का आपने निश्चय किया है तथा वह प्राप्त होने के लिए श्रीप्रभु के आशीर्वाद प्रतिदिन आप माँगते ही हैं। अतएव आपको कोई भी मोह स्पर्श नहीं कर सकेगा। इतना ही नहीं, तो आपकी जीवन-सहधर्मचारिणी केवल सुखोपभोग की सहकारिणी न रहकर, कर्तव्यपूर्ति के कार्य में उत्तम भार्या की सारी गुणसंपदा प्रकट करनेवाली होकर, आपकी कार्यक्षमता अनेक गुना बढ़ाएगी– ऐसा विश्वास है तथा ऐसा ही हो, ऐसी श्री परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

१७१ संघ अपना ईश्वर है

श्री पद्माकर महाजन, पुणे — ३० जून, १९५५

शरीर के व्याधि-मुक्त होने में विलंब लग रहा है इसके कारण निराश होना ठीक नहीं। इस आयु में मन में दृढ विश्वास हो, तो कठिनतम रोग भी निर्मूल हो सकता है। अतएव मन में निराशा के विचारों को स्थान न दें। हम लोग एक अति महनीय कार्य के अंग हैं, अतएव उसे करने के

लिए शरीर भी हृष्टपुष्ट करूँगा ही, ऐसा अदम्य विश्वास तथा निश्चय रखें। इससे अल्पावधि में ही शरीर रोगमुक्त होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

उसी प्रकार भावी जीवन की रचना के विषय में असहायता के विचार भी मन में नहीं आएँगे, इसके बारे में सावधान रहें। भावी जीवन की ऐसी रचना आवश्यक हुई कि काम-धधा करते हुए उसमें से समय निकालकर अपना कार्य करना, तो भी कोई आपत्ति नहीं। उस अवस्था में भी उत्तम रीति से कार्य किया जा सकेगा। परतु आज ही वैसा सोचते बैठकर, मन को सत्रस्त न करें। आज स्वास्थ्य दुर्बल होने से धनोपार्जन कर उपचार कराने की कल्पना मन में क्यों आई? उपचार में कोई कमी है क्या? वैसा हो, तो नि सकोच योग्य व्यक्ति से कहकर उपचार में कोई न्यूनता नहीं रहेगी, ऐसी व्यवस्था करवा लें। अथवा मुझे सूचित करें जिससे मैं पूरी व्यवस्था करवा दूँगा।

सघ अपना ईश्वर है, अतएव अपने सुख-दु ख की कथा उसके निकट कहने में सकोच न हो। इस ईश्वर की सेवा ही जीवनव्रत है, अतएव उसी पर सारा बोझ डालकर रहने में आनद है। किसी दूसरे के सामने नौकरी आदि कर दीनता क्यों प्रकट करें? शरीर पूर्ण स्वस्थ होने पर जीवन की रचना करने की दृष्टि से धनोपार्जन का कुछ काम-धधा करना तथा उस जीवन में उत्तम सघ-सेवा ठीक है, परतु सकोचवश अन्यत्र आश्रय खोजने के लिए दीन होना उचित नहीं।

यह सब विचार कर प्रसन्न चित्त से सारे उपचारादि पूर्ण कर शीघ्र सुदृढ होने का ध्यान रखें तथा वर्तमान दुर्बलता का चितन पूर्णत छोड दें।

(मूल मराठी)

१७२ सघ ही करणीय कार्य

श्री अनतराव देवकुळे, पुणे ५ जुलाई, १९५५

अपना कार्य हमेशा के उत्साह तथा परिश्रम से चल रहा है, यह पढकर बहुत आनद हुआ। सभी समझदार तरुण-बाल स्वयसेवकों के सामने सघ ही करणीय कार्य, यही अतत फलदायी, सफल कार्य, यही राष्ट्रीय अस्मिता जगाने, टिकाने तथा प्रज्ज्वलित करने का कार्य है, इस प्रकार का पूर्ण आत्मविश्वास निर्माण करना आवश्यक है। अनेक प्रकार से अनुकूल-प्रतिकूल (साधक-बाधक) प्रमाण देकर, अन्यान्य विचार-आचार

पद्धतियों का खण्डनमण्डनात्मक विश्लेषण कर, निस्संदेह निष्ठा निर्मा॰
तथा उसमें से अविरत परिश्रम करने का उफनता उत्साह स्थायी रू
अंत करण में अंकुरित होकर बढ़ने लगेगा, ऐसा अखंड प्रयास करते
आवश्यक है। और ऐसा करते समय अपनी नम्रता तथा व्यवहार
मधुरता एव स्नेह का सहजता से प्रत्यक्ष अनुभव होकर सभी अपने
अकृत्रिम स्नेह-सूत्र में बँध जाएँगे, इसकी ओर जागरूकता से ध्यान
अत्यंत हितकारी है। किसी भी परिस्थिति में जिनसे हम अपना
स्थापित करते हैं तथा कार्य की दृष्टि से जिनकी प्रगति होने के लिए
करते हैं, उनके मन में अपने बारे में, यह विपरीत धारणा निर्माण न
होगी कि यह स्वय को बहुत बड़ा समझता है, इतना सहज स्नेहपूर्ण
तथा आत्मीयता का व्यवहार आत्मसात करने की आवश्यकता है।
अपने सभी सहयोगी कार्यकर्ता बधुओं के सामने मेरे ये विचार (यदि
आपको योग्य प्रतीत हों तो) अवश्य रखकर, मेरी ओर से उनसे आग्रहपूर्ण
प्रार्थना करें कि इस धारणा से वे कार्य में मग्न रहें। (मूल मराठी)

१७३ कार्यकर्ता चाहिए

श्री नाना ढोबले, धुले (महाराष्ट्र) ५ जुलाई, १९५५

अभी कितने ही उत्साही युवकों की आवश्यकता है। वय दो-चार घर की चिंता छोड़कर कार्य करनेवाले तथा परिस्थिति के अनुसार घर जाकर उसके बाद व्यक्तिगत उद्योग करने को विवश होने पर, काम धंधा शुरू कर पहले जैसे उत्साह और शक्ति से खून-पसीना एक कर कार्यरत होनेवाले अनेक युवक सामने आएँ, यह कार्य की आवश्यकता है। परंतु यह एकदम कैसे सभव है? जिस प्रकार एक-एक मणि जोड़कर माला गूँथी जाती है, इस प्रकार धीमे-धीमे कार्य करना होगा। आपके (नासिक) विभाग में शांति से प्रयत्न करने पर कुछ मात्रा में सफलता मिलेगी ही। (मूल मराठी)

१७४ मृदुता से स्वयसेवकों को समझाएँ

श्री मा द खरवडीकर, पूर्णा, जि परभणी ६ जुलाई, १९५५

नए क्षेत्र में पदार्पण करने पर धीरे-धीरे क्रमश सभी स्वयसेवक बधुओं को कार्य करने के लिए प्रवृत्त करना चाहिए। धीरे-धीरे उनके सामने

अपना कार्य, अपनी परिस्थिति, काय की अनिवार्यता, प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य आदि बातें मृदुता से समझानी चाहिए, किसी के भी वर्तमान जीवन पर विघातक या विदारक टीका टिप्पणी न करते हुए, क्योंकि बलात्कार से किसी के मन में परिवर्तन नहीं होता, अपितु अनेक बार विपरीत परिणाम होता है, इन सभी बातों के अनुसार आचरण करवा लेना आवश्यक होता है। वह करते समय शाखा में थोडी सख्या रही, तो भी बीच-बीच में अनुशासन के कार्यक्रम कराते रहें। उसी प्रकार नियमितता, व्यवस्थितता तथा अनुशासन का अभ्यास प्रारभ से ही रहेगा, इस ओर बारीकी से ध्यान दें, अन्यथा एक बार अव्यवस्थितता की आदत लग गई, तो वह छूटना दुष्कर होकर, कार्य में गडबडी होने की सभावना रहती है।

नियमित व्यायाम, सत्‌विचारपूर्ण ग्रथों का पठन आदि से शरीर, मन तथा बुद्धि शुद्ध एव सुदृढ रखने का प्रयास आलस्य न करते हुए प्रतिदिन चलता रहे। (मूल मराठी)

१७५ केंद्र सघ स्थान का चैतन्यपूर्ण वायुमडल

श्री राजाराम भोंसले, ईश्वरपुर ६ जुलाई, १९५५

ईश्वरपुर तथा उसके निकटवर्ती अनेक स्थानों पर बहुत पहले से अपने कार्य का सपर्क है। वहाँ के अनेक छोटे-बडे व्यक्तियों का कार्य से प्रेम और सहानुभूति है। बीच में सर्वत्र जो शिथिलता आई, उसमें इस प्रेम का अनुभव लेकर उसका प्रतिदान करनेवाले कार्यकर्ताओं का ही अभाव हो जाने से कार्यवृद्धि न होकर उसकी कुछ परागति ही हुई। विश्वास है कि अब आप अपने परिश्रम से तथा व्यवहार से सारे पुराने सबध जागृत करेंगे तथा कार्य को उचित चालना देंगे।

कल शाम को श्री गुरुपौर्णिमा निमित्त श्रीध्वजपूजन का कार्यक्रम केंद्र सघस्थान, रेशमबाग में हुआ। सघस्थान की सुदर हरियाली, शात प्रसन्न वातावरण कार्यक्रम में सहायक हुआ। सघ शिक्षा वर्ग के पश्चात् और वह भी वर्ष का श्रीगुरुपूजन का अति पवित्र उत्सव होने से सब शाखाएँ एकत्र हुई थीं। निसर्गरमणीयता, दिवस की पवित्रता, वर्षारभ का उत्साह तथा सघस्थान पर अखड रूप से स्फूर्ति देनेवाली परमपूजनीय डाक्टर जी की समाधि के सान्निध्य के कारण ऐसा लगा कि एक अवर्णनीय चैतन्य का अनुभव सभी बधुओं के अत करण को झकझोर कर जागृत कर

रहा है। मेरे मन को इस सारे दृश्य का तथा स्वयसेवक बधुओं के सानु
सहवास का असीम आनद हुआ। (मूल मराठी)

१७६ तिल-तिल जलना है

(गोवा-आदोलन में सत्याग्रह कर लौटे स्वयसेवक को पत्र)

७ जुलाई, १९५५

श्री बाल कयाल (नासिक)

आप ऐसे सकट में कूद पडे, जिसमें धीरज की परीक्षा हुई, सब सहकर भी मन की दृढता और भी मजबूत कर आप कुशलपूर्वक लौटे, यह परमेश्वर की कृपा है। मन में अपने उद्दिष्ट के प्रति लगन हुए बिना सकटो का सामना करने की शक्ति पैदा नहीं होती। ऐसी ही लगन जागृत रहे तथा उसके लिए केवल ऑखों की चकाचौंध करनेवाले एकाध प्रसग का ही नहीं तो दिन-प्रतिदिन तिल-तिल घुलकर स्वराष्ट्र-सामर्थ्य के पुनर्निर्माण-कार्यार्थ जीवन सार्थक करने का अविराम प्रयास करने का दृढ निश्चय अत करण में जागृत रहे, यह अपने सब बधुओं के लिए श्री प्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

१७७ शाखा कार्य सफलता की कुजी

७ जुलाई, १९५५

श्री रघुनाथ आप्टे, राजापुर (महाराष्ट्र)

इस क्षेत्र में प्रथम ही काम करने के लिए आए हो। सर्वत्र परिचय प्राप्त करना, स्नेह-सबध प्रस्थापित करना, शाखा के स्थानीय स्वयसेवकों को दैनिक कार्य का भार उठाने के लिए तैयार कर शाखा के कार्यक्रम में नियमितता, योग्य पद्धति का पालन, सुव्यवस्था तथा अनुशासन उत्तम रहेगा, ऐसी योजना करना आदि कार्य करते समय धीरे-धीरे हर एक से अपना देश समाज, राष्ट्र, वर्तमान स्थिति, सगठन मत्र, उस कार्य की अनिवार्यता, कार्यार्थ आवश्यक गुण स्फूर्तिप्रद महापुरुषों के सस्मरण आदि विषयों पर कुशलता से बोलते हुए निष्ठा तथा कार्य का निश्चय अधिकाधिक स्वयसेवकों में बढेगा इसकी ओर ध्यान रहे। शीघ्रता न करें। एकदम ही सभी विचार पूर्ण तीव्रता से रखने पर अननुभवी नए स्वयसेवक बिचकते हैं। परतु थोडा अनुभव हुआ, थोडा कार्य का ज्ञान बढा, भावना जागृत हुई, तो उनकी ही अधिकाधिक निष्ठा जगानेवाली बातें जानने की लालसा बढती है

तथा उन्हें उच्चतम समर्पण भावना बताई गई, तो उसे वे समझ पाते हैं तथा स्वीकार करते हैं एव उस पर आचरण करने की उत्सुकता उनमें निर्माण होती है। इस प्रकार योग्य आचार-विचार से कार्य में आप सफल हों। (मूल मराठी)

१७८ कार्य कैसा करे

श्री बाल पालवणकर, यावल — ८ जुलाई, १९५५

उत्साह-निरुत्साह के झटके बडों-बडों को भी आते हैं। जो विवेकी हैं, वे विचारपूर्वक 'हाथ में लिया हुआ कार्य पूर्ण करूँगा ही' इस निश्चय से मन को नित्य पाठ देते रहते हैं। वे मन की दुर्बलता पर विजय प्राप्त कर, लगन से तथा सफलतापूर्वक काम करनेवाले सघकार्य के आधारस्तभ के नाते स्थान-स्थान पर खडे हुए दिखाई देते हैं। अपने क्षेत्र में भी सभी अच्छे स्वयसेवकों को, धीरे-धीरे कार्य की कल्पना स्पष्ट करते हुए प्रोत्साहित करें, तो वे भी ऐसे दृढ-निश्चय से खडे रहेंगे। परतु जल्दबाजी उपयोगी नहीं। जिस प्रकार औषधि प्रतिदिन थोडी-थोडी लेकर अनेक दिनों में उसकी पूरी मात्रा लेने का श्रेय-सपादन करने पर वह अमृत सी गुणकारी होती है, परतु एक ही बार सपूर्ण मात्रा पेट में डालने की विक्षिप्तता करने पर वही अमृततुल्य औषधि भी तीक्ष्ण विष होकर प्राणघातक होती है, उसी प्रकार स्वयसेवकों की ग्रहण-शक्ति तथा पाचनशक्ति का विचार न करते हुए उच्चतम विचार, सर्वस्वार्पण आदि आत्यतिक त्याग की भावनाएँ उनके सामने रखने से वे डरकर कार्य से दूर रहना ही अच्छा, ऐसी वृत्ति धारण कर बैठते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि उनके हृदय के किवाड मानो बद से हो जाते हैं तथा फिर उनमें चेतना पैदा करना कठिन होता है। आज भी अनेक पुराने स्वयसेवकों की ओर देखकर इस कथन का प्रमाण मिल ही रहा है।

हम लोग जिस पद्धति से प्रवास पर रहकर काम करते हैं, उसमें अति व्यायाम वर्ज्य है। व्यायाम न करना भी अयोग्य है। सूर्यनमस्कार करने पर केवल पाँच-दस मिनिट में श्वसन योग्य होकर अधिक उत्साह बढा, थकावट अनुभव नहीं हुई या आराम करना आवश्यक नहीं लगा, तो समझें कि व्यायाम ठीक हुआ। एक और बात की ओर ध्यान रहे। हम जो अन्न ग्रहण करते हैं, उसके अनुरूप व्यायाम हो। सूर्यनमस्कार

रहा है। मेरे मन को इस सारे दृश्य का तथा स्वयसेवक बधुओं के सामूहिक सहवास का असीम आनद हुआ। (मूल मराठी)

१७६ तिल-तिल जलना है

(गोवा-आदोलन में सत्याग्रह कर लौटे स्वयसेवक को पत्र)

श्री बाल कयाल (नासिक) ७ जुलाई, १९५५

आप ऐसे सकट में कूद पडे, जिसमें धीरज की परीक्षा हुई, सब सहकर भी मन की दृढता और भी मजबूत कर आप कुशलपूर्वक लौटे, यह परमेश्वर की कृपा है। मन में अपने उद्दिष्ट के प्रति लगन हुए बिना सकटों का सामना करने की शक्ति पैदा नहीं होती। ऐसी ही लगन जागृत रहे तथा उसके लिए केवल आँखों को चकाचौंध करनेवाले एकाध प्रसग का ही नहीं, तो दिन-प्रतिदिन तिल-तिल घुलकर स्वराष्ट्र-सामर्थ्य के पुनर्निर्माण-कार्यार्थ जीवन सार्थक करने का अविराम प्रयास करने का दृढ निश्चय अत करण में जागृत रहे, यह अपने सब बधुओं के लिए श्री प्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

१७७ शाखा कार्य, सफलता की कुजी

श्री रघुनाथ आप्टे, राजापुर (महाराष्ट्र) ७ जुलाई, १९५५

इस क्षेत्र में प्रथम ही काम करने के लिए आए हो। सर्वत्र परिचय प्राप्त करना, स्नेह-सबध प्रस्थापित करना, शाखा के स्थानीय स्वयसेवकों को दैनिक कार्य का भार उठाने के लिए तैयार कर शाखा के कार्यक्रम में नियमितता, योग्य पद्धति का पालन, सुव्यवस्था तथा अनुशासन उत्तम रहेगा, ऐसी योजना करना आदि कार्य करते समय धीरे-धीरे हर एक से अपना देश, समाज, राष्ट्र, वर्तमान स्थिति, सगठन मत्र, उस कार्य की अनिवार्यता, कार्यार्थ आवश्यक गुण, स्फूर्तिप्रद महापुरुषों के सस्मरण आदि विषयों पर कुशलता से बोलते हुए निष्ठा तथा कार्य का निश्चय अधिकाधिक स्वयसेवकों में बढेगा इसकी ओर ध्यान रहे। शीघ्रता न करें। एकदम ही सभी विचार पूर्ण तीव्रता से रखने पर अननुभवी नए स्वयसेवक बिचकते हैं। परतु थोडा अनुभव हुआ, थोडा कार्य का ज्ञान बढा, भावना जागृत हुई, तो उनकी ही अधिकाधिक निष्ठा जगानेवाली बातें जानने की लालसा बढती है

तथा उन्हें उच्चतम समर्पण भावना बताई गई, तो उसे वे समझ पाते हैं तथा स्वीकार करते हैं एव उस पर आचरण करने की उत्सुकता उनमें निर्माण होती है। इस प्रकार योग्य आचार-विचार से कार्य में आप सफल हों। (मूल मराठी)

१७८ कार्य कैसा करे

श्री बाल पालवणकर, यावल ८ जुलाई, १९५५

उत्साह-निरुत्साह के झटके बडों-बडों को भी आते हैं। जो विवेकी हैं, वे विचारपूर्वक 'हाथ में लिया हुआ कार्य पूर्ण करूँगा ही' इस निश्चय से मन को नित्य पाठ देते रहते हैं। वे मन की दुर्बलता पर विजय प्राप्त कर, लगन से तथा सफलतापूर्वक काम करनेवाले सघकार्य के आधारस्तभ के नाते स्थान-स्थान पर खडे हुए दिखाई देते हैं। अपने क्षेत्र में भी सभी अच्छे स्वयसेवकों को, धीरे-धीरे कार्य की कल्पना स्पष्ट करते हुए प्रोत्साहित करें, तो वे भी ऐसे दृढ-निश्चय से खडे रहेंगे। परतु जल्दबाजी उपयोगी नहीं। जिस प्रकार औषधि प्रतिदिन थोडी-थोडी लेकर अनेक दिनों में उसकी पूरी मात्रा लेने का श्रेय-सपादन करने पर वह अमृत सी गुणकारी होती है, परतु एक ही बार सपूर्ण मात्रा पेट में डालने की विक्षिप्तता करने पर वही अमृततुल्य औषधि भी तीक्ष्ण विष होकर प्राणघातक होती है, उसी प्रकार स्वयसेवकों की ग्रहण-शक्ति तथा पाचनशक्ति का विचार न करते हुए उच्चतम विचार, सर्वस्वार्पण आदि आत्यतिक त्याग की भावनाएँ उनके सामने रखने से वे डरकर कार्य से दूर रहना ही अच्छा, ऐसी वृत्ति धारण कर बैठते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि उनके हृदय के किवाड मानो बद से हो जाते हैं तथा फिर उनमें चेतना पैदा करना कठिन होता है। आज भी अनेक पुराने स्वयसेवकों की ओर देखकर इस कथन का प्रमाण मिल ही रहा है।

हम लोग जिस पद्धति से प्रवास पर रहकर काम करते हैं, उसमें अति व्यायाम वर्ज्य है। व्यायाम न करना भी अयोग्य है। सूर्यनमस्कार करने पर केवल पॉच-दस मिनिट में श्वसन योग्य होकर अधिक उत्साह बढा, थकावट अनुभव नहीं हुई या आराम करना आवश्यक नहीं लगा, तो समझें कि व्यायाम ठीक हुआ। एक और बात की ओर ध्यान रहे। हम जो अन्न ग्रहण करते हैं, उसके अनुरूप व्यायाम हो। सूर्यनमस्कार

व्यायाम की मात्रा अधिक तथा अल्प और अनियमित आहार हुआ तो शरीर को हानि होने की सभावना है। यह ध्यान में रखकर व्यक्तिश सूर्यनमस्कार व्यायाम कितना आवश्यक है, यह आप तय करें।

स्मरणशक्ति के विषय में प्रत्यक्ष भेंट होने पर बातचीत करेंगे। परतु स्मरण नहीं रहता, इसलिए चितित न होते हुए नियम से सद्ग्रथों का पठन, सद्वचनों का पारायण तथा अपने राष्ट्र के श्रद्धास्पद श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्रों का श्रवण, कथन तथा मनन करते रहें। धीरे-धीरे स्मरण शक्ति भी अच्छी होगी। इसपर विश्वास रखें। (मूल मराठी)

१७६ परिवार या राष्ट्र?

श्री रामसिह जी, गुवाहाटी — ११ जुलाई, १६५५

आपका घरेलू वृत्त पढकर अत्यत कष्ट हुआ। जो अपना साधारण जीवन व्यतीत करते हैं, वे अपनी जायदाद सँभालना तथा माताजी की देखभाल, सेवा करना आवश्यक होते हुए, अपने-अपने स्वार्थ के जीवन में रमें और आप जो राष्ट्रगठन-कार्य के हेतु सब छोडकर घर से दूर अनेक कष्ट उठाते हुए कार्य में रमें हैं उन्हें घरबार तथा माताजी की देखभाल की चिंता से व्यग्र होकर कार्य का मूल्यवान समय घर की ओर लगाना पडे, यह विचार बहुत व्यथित करनेवाला है। परतु अभी तो अन्य कोई उपाय नहीं। आपके एक बार जाकर सब बातें सुलझाकर अच्छी अवस्था कर अपने क्षेत्र में लौटना आवश्यक दिखता है। अत आप शीघ्र ऐसा करें। तब तक की कार्य की व्यवस्था अन्य बधुओं पर सौंपकर जाएँ।

१८० जीविकोपार्जन का कौन सा साधन अपनाएँ?

श्री बडु आठवले, मुबई — १२ जुलाई, १६५५

मोरोपत पिगले की सूचनानुसार आपने दैनिक 'भारत' में एक वर्ष तक काम करने का निर्णय किया है। अन्यत्र कहीं नौकरी आदि मिलती भी हो, तो उसे अस्वीकार कर वर्ष-भर इस विषय के अगोपागों का ज्ञान होने में तथा उसमें काम करने की पात्रता आने में निकल जाएगा। उसके पश्चात् अन्यत्र अधिक प्राप्ति के लिए जाने का विचार किया, तो यह वर्ष-भर का काम व्यर्थ-सा होगा। उसका न आपको, न दैनिक पत्र को कुछ

उपयोग होगा। इसलिए यह वर्षभर का विचार मैं ठीक से समझ नहीं पाया। यदि अन्य कहीं नौकरी की खोज करने तक, तात्कालिक काम की प्राप्ति के हेतु यह स्वीकार किया हो, तो व्यावहारिक दृष्टि से वह समझने योग्य है अथवा वृत्त-व्यवसाय या मुद्रण-व्यवसाय कहाँ प्रारभ किया जाए, इसलिए यह प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से स्वीकार किया गया हो, तो वह दूरदर्शिता की दृष्टि से भी समझने योग्य है। अन्यथा उसका सप्रति दैनिक पत्र को एक कार्यकर्ता का लाभ तथा आपको तात्कालिक व्यवसाय की प्राप्ति, इसके सिवाय अन्य उपयोग दिखाई नहीं देता।

परतु दैनिक पत्र अपना कार्यक्षेत्र तथा उसमें होनेवाली अल्प-अधिक प्राप्ति अपनी उपजीविका का साधन, उसी में अपना सतोष और उसी में काया-वाचा-मनसा सघकार्य ऐसा निश्चय कर इस काम में पूरी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश यदि आप करें तथा अन्यत्र न जाने का मन का निश्चय करें, तो आपका दैनिक में जाना बहुत उत्तम तथा प्रशसनीय होगा। ऐसे कार्यकर्ता अपने को चाहिए। सघकार्य प्रत्यक्ष करना यह प्रमुख तथा उपजीविका चलाने के लिए केवल उपकारी, सहायक तथा सबद्ध काम स्वीकार करना तथा वह असभव ही हुआ, तो सघकार्य में बाधा न डालनेवाला अन्य कोई भी काम खोजकर स्वय परिवार का भरण-पोषण करना, ऐसा निश्चय कर केवल जीवन धारणा के लिए ही प्राप्ति की इच्छा कर, सारी बुद्धि, कर्तृत्व और शक्ति अपने इस सघ रूपी जीवित कार्य को समर्पित करनेवाले प्रचारक तुल्य गृहस्थ बहुत बडे पैमाने पर आज अपने को चाहिए। उसमें आप खडे होकर, ऐसे कार्यकर्ता की सख्या बढाकर सघकार्य की उत्तम सेवा ही करेंगे, इसलिए ऐसा विचार अत्यत श्रेष्ठ होगा।

परतु कुछ भी हुआ तो भी दैनिक पत्र का वर्ष-भर का कार्य अन्यत्र जाने के लिए सुविधाजनक सीढी समझकर उपयोग में लाने का विचार मन में भूल से भी न आने दें। यह इतना स्पष्ट आपको इसलिए लिखा है कि आपके अत करण की सघनिष्ठा तथा सरल शुद्ध भाव ऐसे हैं कि मुझे विश्वास है कि मेरे लिखने का योग्य ही अर्थ लेकर स्वय का जीवन नित्य आज जैसा ही शुद्ध निष्ठा से ओतप्रोत रखने का अपना निश्चय दृढ करेंगे।

(मूल मराठी)

१८१ घरेलू दायित्व और सघकार्य

श्री प्रह्लाद अभ्यकर, मुबई १५ जुलाई, १९५५

आप सप्रति इतने वर्षों के पुराने कार्य क्षेत्र से विदाई लेकर अकल्पित तथा अपरिहार्य रूप से सामने आए हुए घरेलू दायित्व की पूर्ति करने हेतु जानेवाले हैं। कहीं भी रहें तो भी हम स्वयसेवक अपने क्षेत्र में शीघ्र ही अनुकूलता पैदा कर शाखा के रूप में अपना कर्तृत्व तथा उसके पीछे अपनी निष्ठा प्रकट किए बिना रहेंगे नहीं। अतएव कार्यक्षेत्र बदल गया, इसका विषाद न करें। अर्थात् इसमें आपको चुभनेवाली एक बात हो सकेगी। सघ की योजना से या अन्य प्रकार से स्वेच्छा से यह परिवर्तन न होकर, गृहजीवन के बधन के कारण हुआ तथा एक प्रकार से निरुपाय होकर वह आपको स्वीकार करना पडा। परतु कार्यकर्ता इस प्रकार के विषाद को मन में अधिक समय तक प्रश्रय न दे। जहॉ परमेश्वर की कृपा से अपने को रहना पडे, वहॉ अपना उद्योग उसका स्मरण रखकर करते रहें, यह उचित है।

आशा है कि शीघ्र ही यह सुनने को मिलेगा कि आप नए क्षेत्र में हिल-मिल गए हैं तथा घर भी ठीक से चल रहा है। (मूल मराठी)

१८२ सघ-कार्य और अन्यान्य कार्य

श्री मालशे, सावतवाडी (महाराष्ट्र) १५ जुलाई, १९५५

इस क्षेत्र में प्रथम ही पदार्पण करने पर बिल्कुल प्रारभ में ही गोवामुक्ति मोर्चे के आहत लोगों की सेवा-शुश्रुषा आदि सहायता करने की जिम्मेवारी सावतवाडी के बधुओं पर आई। मा डा लेले आदि के नेतृत्व में वह उन्होंने अत्यत उत्तम रीति से सँभाली, यह समाचार अनेक सूत्रों से प्राप्त हुआ। ऐसी परिस्थिति में अपने कार्य की सचाई का ज्ञान होना चाहिए तथा अन्य सभी बातों में से मन हटाकर अपना सघकार्य, उसकी पद्धति सँभालकर वृद्धिगत करने पर सपूर्ण अत करण केंद्रित करूँगा, ऐसा निश्चय मन में दृढ होना चाहिए। अन्यान्य काम आवश्यकतानुसार करते समय इन सारी चालू घटनाओं में से अपने को यह पाठ मिलता है कि हृदय की पूर्ण श्रद्धा केवल सघकार्य पर ही हो। यही पाठ और यही ज्ञान सभी पुराने-नए बधुओं के हृदयों पर अकित

कर कार्य में दृढता और उत्साह बढाएँ।

आपके क्षेत्र में भी ऐसा प्रयास हो कि श्रीगुरुदक्षिणोत्सव उत्तम हो। इसमें धनसचयन की बात बिल्कुल गौण है, परतु स्वयसेवकों में उत्तरोत्तर त्याग, बुद्धि, सघ के लिए अधिक समय, श्रम, धन आदि अधिक खर्च करने की सत्प्रवृत्ति निर्माण होते समय उसका मूल्याकन इन सारे उत्सवों में होता है। इस दृष्टि से दक्षिणा, सख्या कार्यक्रमों की सुव्यवस्था, अनुशासन, परस्पर स्नेहयुक्त व्यवहार, जीवन में श्रेष्ट सद्गुणों का आविष्कार, सपूर्ण समाज से प्रेम तथा आदरयुक्त व्यवहार से अपने कार्य के प्रति बढनेवाली आत्मीयता तथा आदर आदि सभी बातों की ओर ध्यान रखकर, उसमें उत्तम वृद्धि होगी ऐसा प्रयास करें तथा सभी स्थानों पर स्थानीय स्वयसेवकों को जिम्मेदारी का ज्ञान कराकर वे भी ऐसा प्रयास निरतर करते रहेंगे, उनको ऐसा तैयार किया जाए।

(मूल मराठी)

१८३ *व्याधिग्रस्त स्थिति मे भी प्रसन्न रहे*

श्री कालिदास सालोडकर, कोलकाता — २१ जुलाइ, १९५५

आपके शरीर में डिसेन्ट्री ने खासा घर बना लिया है। अपने कार्यकर्ता प्रचारकों में से थोडे भाग्यशाली छोड दिए तो अधिकाश इसी व्याधि से ग्रस्त दिखाई देते हैं। कारण स्पष्ट है। परतु मन दृढ रखें, तो पीडा कम होती है तथा दु ख सुसह्य होता है, ऐसा अनेकों का अनुभव है। बीच-बीच में कुछ विशिष्ट औषधियाँ, जो लाभ पहुँचाती हों का सेवन करते रहें। कार्य के अतिरिक्त अन्य किसी ओर ध्यान न दें। इससे शरीर उत्तम रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा। अपने चारों ओर उत्साह का वायुमडल निर्माण करने की क्षमता तथा उसमें से अच्छा कार्य खडा करने के लिए अनेकों को प्रेरित करने की सहज योग्यता अत करण में स्थायी रहने का अनुभव होकर, अदम्य आत्मविश्वास पैदा होगा, सभी निराशा-उदासीनता के विचार जडमूल से नष्ट होंगे तथा अपना ध्येयपूर्ण जीवन ध्येय-समर्पित रखने की दृढता प्रकट होगी, ऐसा शारीरिक स्वास्थ्य तथा मन की प्रसन्नता आपको प्राप्त हो, यही इच्छा है।

(मूल मराठी)

१८४ सभी बाते प्रयत्नसाध्य

श्री जनार्दन रानडे, भोर   २२ जुलाई, १९५५

सभी बातें प्रयत्नसाध्य हैं। उत्तम काम के लिए उत्तम प्रयास करना आवश्यक है। ऐसा करते समय आत्मविश्वास, कार्य के प्रति विश्वास तथा सभी छोटे-बडों के साथ स्नेह के साथ दृढता का व्यवहार आवश्यक है। स्वय अत्यत दक्षतापूर्वक कार्य के सभी अगोपागों की उपासना करते समय भी, अन्य नए या दुर्बल मन प्रकृति के बधुओं से मृदुता का व्यवहार तथा स्वय का निर्दोपतापूर्ण व्यवहार आदि बातों की ओर ध्यान देना तथा उसके अनुरूप अपना मन तथा व्यवहार ढालना फलदायी होता है।

ऐसा प्रयत्न हुआ तो कितना ही बाह्य विरोध हो, तो भी धीरे-धीरे उसकी धार बोथरी हो जाती है तथा अनुकूलता प्रबल होती है। इस प्रकार मन लगाकर काम करते हुए शाखाओं का स्वरूप शुद्ध उत्साहपूर्ण, अनुशासनयुक्त रहने की ओर ध्यान रखना आवश्यक है। (मूल मराठी)

१८५ शुभेच्छाएँ

श्री वसतराव ओक,   ८ अगस्त, १९५५

इस श्रेष्ठ कार्य में मेरी सब सदिच्छाएँ आपके साथ हैं। मैं अत करण से श्री परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि वह आपके इस कार्यक्रम में आपको यश दे। प्रभु की कृपा से जो कुछ भी थोडा-बहुत पुण्यसग्रह मेरे पास होगा, वह मैं आपके रक्षणार्थ तथा यशप्राप्त्यर्थ सादर प्रस्तुत कर रहा हूँ। (मूल मराठी)

१८६ असख्य बालको पर अपत्य-स्नेह की वर्षा करे

श्री सहदेव मल्होत्रा, दिल्ली   ७ सितबर, १९५५

आपका पत्र मिला। अपार शोक हुआ है। इस अवस्था में परमात्मा की इच्छा के सामने झुककर मन को दृढ बनाना तथा उसी की कृपा से निर्मित असख्य बालकों को अपना ही जानकर अपने अपत्य-स्नेह की उनपर वर्षा करना– यही हृदय को शाति देनेवाला काम हो सकता है। अपना कार्य आपके सम्मुख है। उसी में सब प्रेम लगा दें तथा इस कर्तव्यपूर्ति के द्वारा परमात्मा से प्रेम का नाता दृढ करें, तो जीवन में श्रेष्ठ

समाधान तथा शाति स्थापित होकर जीवन-सफलता का सुख भी मिलेगा तथा व्यक्ति एव परिवार के अभाव से होनेवाला दु ख हल्का हो जाएगा।

मैं परमपिता श्रीपरमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको सात्वना देकर दु ख को सहने तथा जीवन-शक्ति को कार्य में सलग्न कर व्यक्तिगत कष्ट को विस्मृत कर देने की शक्ति एव प्रेरणा दे।

१८७ *कार्य के लिए स्वस्थ शरीर चाहिए*

श्री वेणुगोपाल, निलबूर ७ सितबर, १९५५

आप सपूर्णतया व्याधिमुक्त हो गए– यह वृत्त पढकर बडा सतोष हुआ। स्वस्थ होने के बाद कार्यभार सँभालने की सिद्धता के विषय में आपने श्री शास्त्री जी को लिखा तथा उनकी सूचनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, यह पढकर और भी सतोष हुआ। मेरा अनुरोध है कि आप कार्यक्षेत्र में लौटने के लिए इतने अधीर न हों, थोडा धीरज रखें। जिस कार्य के लिए अत्यधिक शक्ति की आवश्यकता है, उस कार्य में स्वस्थ शरीर अत्यत आवश्यक है। पहले स्थानीय क्षेत्र में और बाद में निकटवर्ती क्षेत्रों में काम करके देखें कि उस परिश्रम को बेचैनी, थकान एव आलस्य के बिना कहाँ तक सह सकते हैं। दो मास तक कार्य करने पर यदि अच्छा अनुभव आया तो पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि कार्य करने योग्य आपका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हुआ है। इससे मुझे और बाकी लोगों को चिता नहीं रहेगी और विश्वास हो जाएगा की परिश्रमपूर्ण कार्य के लिए आपका शरीर उत्साहपूर्वक साथ देगा तथा जिस कार्य में आपका मन पूर्ण श्रद्धा से जुटा है, उस कार्य को आप अच्छी तरह से कर सकते हैं। (मूल अग्रेजी)

१८८ *सामयिक कामो के प्रति दृष्टिकोण*

श्री विनायक नाईक, ६ सितबर, १९५५

गोवा सीमा पर सत्याग्रहियों की व्यवस्था तथा शुश्रूषा में अपने स्वयसेवक बधुओं ने बहुत मेहनत की, यह मुझे ज्ञात हुआ। अत्यत आनद हुआ। अधिकारी तथा अन्य पक्षोपपक्षों के प्रमुख इस समय हमारी प्रशसा करेंगे, उसमें वह नहीं जाएँ। उनका स्वार्थ सिद्ध होने तक सघ उत्तम, कदाचित् सघ लोकप्रिय होकर बढा तो, हो सकता है कि वह अपना

प्रतिद्वंद्वी होगा, इस मिथ्या भय से वे ग्रस्त होने पर हर प्रकार का विरोध और बुराई का व्यवहार करते हैं। हम लोग निंदा-स्तुति की उपेक्षा कर तथा सामयिक और तात्कालिक कामों की अस्थायी महत्ता है, यह ध्यान रखकर जिस अपने नित्य, स्थायी शाखारूपी नियमित, अनुशासनबद्ध, स्नेहपूर्ण, सद्व्यवहारयुक्त कार्य से अपने को तात्कालिक काम में भी सफलता मिलती है, वह अपना संघकार्य शाखारूप में दृढता, निष्ठा तथा अविरतता से दिन-प्रतिदिन करते रहना, बढाते रहना, उसके बारे में सब स्वयंसेवक बंधुओं की धारणा शुद्ध, स्पष्ट तथा अविचल करते रहना, ध्येय की सम्यक् कल्पना सामने रखकर पूर्ण श्रद्धा से कार्यरत होना आवश्यक है, यह पूर्णत समझकर कार्य करें तथा सब स्वयंसेवक बंधुओं से करवा लें। (मूल मराठी)

१८९ चिमटा गाडकर बैठो, धंधा चलेगा

श्री भाऊ कारीगर, ६ सितंबर, १९५५

धंधा करना हो तो बार-बार स्थानांतरण करना उचित नहीं है। जीवटता से एक स्थान पर बैठकर मेहनत, प्रामाणिकता और स्नेहपूर्ण व्यवहार से अपने चारों ओर के सब लोगों के प्रेम-भाजन और विश्वासभाजन होने तथा दक्षता से, प्रामाणिकता से धंधा करने से वह चलेगा। इसके साथ ही धंधे में निश्चिंतता आने पर अपना जीवित-कार्य संघकार्य करने का उत्साह बढेगा तथा काम में उत्तम सफलता मिलेगी। (मूल मराठी)

१९० आत्मनिंदा व मिथ्या अभिमान त्याज्य

श्री गोपाल बाकरे, २२ अक्तूबर, १९५५

जिस प्रकार अपने पर अकारण विश्वास या मिथ्या अभिमान त्याज्य, उसी प्रकार अपनी अवज्ञा करते हुए स्वयं का नित्य निषेध करना और भी हानिकारक रहने से सर्वथैव त्याज्य है। (मूल मराठी)

१९१ सगुण भक्ति की श्रेष्ठ सुगमता

श्री गजाननराव गोखले, मुंबई २७ अक्तूबर, १९५५

कार्य करते समय संपूर्ण अहंकार का त्याग करें। सत्स्वाभिमान भी न रहे। परमेश्वर सब करता है, यह समझकर स्वयं को उसकी शक्ति का

योग्य वाहक समझने का भी अभिमान न रहे। इष्ट साध्य करने को सस्था विसर्जित करने का धैर्य रहे आदि बातें, अपने कार्यकर्ताओं को श्रेष्ट-ज्येष्ठ मनीषियों द्वारा बताए गए मार्गो तथा ज्ञान का अनुकरण कर हम लोग बताते आए हैं। उसमें विवेक करना न छोडें। इष्ट के नाते जो अमूर्त सम्मुख रहता है, उसे समझानेवाला कार्य मूर्त रहता है। उसपर प्रेम निष्ठा रहने पर प्रगति होती है। सगुण भक्ति की यही श्रेष्ठ सुगमता बतलाई गई है।

विचार करते समय प्रत्यक्ष प्रयत्नशील रहकर अपने चारों ओर के अन्यों को अल्पज्ञ या अज्ञ न मानकर, सबका आदर करते गए तथा सहृदयता से सब को समझकर चलने की आदत रखी तो अपने में जगत् की ओर आत्मीयता से, सम्मान से देखने की योग्यता पैदा होकर, विचार शुद्ध तथा परिमार्जित होते हैं ओर उसमें से कार्य की प्रेरणा तथा कार्य करते रहने की वृत्ति प्राप्त होती है।

(मूल मराठी)

१६२ क्षणिक भावना से काम नहीं चलेगा

श्री मदनगोपाल गुप्त, देहरादून ७ मार्च, १९५६

आप के अत करण की चिता को देखकर बहुत सतोष हुआ। आपने जिन बातों पर सकेत किया है, उसको सुलझाने का प्रयास बहुत समय से बहुत से कार्यकर्ता करते आ रहे हैं। कभी मेरे पास भी प्रश्न आता है और मैं भी प्रयत्न कर रहा हूँ। सघ के कार्य के लक्ष्य, नीति एव पद्धति को सुरक्षित रखते हुए ही प्रयत्न करना है। यदि इनमें से किसी एक को भी चोट पहुँची तो वैसे प्रयत्न बुद्धिमानी के परिचायक नहीं होंगे। अतएव क्षणिक भावना, व्यक्तिप्रेम या अदूरदृष्टि से काम लेने से चलेगा नहीं। इन सब बातों को सोच-समझकर ही अनेक बधु प्रयत्नशील हैं। आपने अकारण व्यथित न होते हुए या इधर किसी का ध्यान नहीं केवल आपका ही गया है, इस प्रकार की भ्रमपूर्ण धारणा न रखते हुए सघकार्य को शुद्ध हृदय, दृष्टि तथा पद्धति के साथ करते रहने से इतने व्यक्ति दूर होने पर भी अपनी गति मद न होने देते हुए, सघकार्य प्रत्यक्ष प्रगति कर ही रहा है, ऐसा अपनी कृति से स्पष्ट करने से बहुत लाभ होगा। सामने का प्रत्यक्ष कार्य होते हुए, अन्य बातों से विचलित होने से लाभ नहीं होगा।

१६३ 'मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:ख न च सुखम्'

श्री शिवराय तेलग, मुबई — १२ अप्रैल, १९५५

आपकी माता के देहात का समाचार विदित हुआ।

शोक रोककर, सभी आवश्यक धार्मिक विधि करके, पूर्ववत् उनकी स्मृति से प्रेरित होकर राष्ट्र-माता की सेवा में मग्न होना ही उचित है। आप जैसे अनुभवी कार्यकर्ता को मैं कुछ सात्वना लिखूँ, ऐसा नहीं। क्योंकि कार्यकर्ता को 'मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:ख न च सुखम्' ऐसी मन स्थिति प्राप्त हो जाती है। (मूल मराठी)

१६४ मेरे लिए 'परमपूजनीय' शब्द-प्रयोग न करे

श्री सुधीर फडके, मुबई — १५ अप्रैल, १९५६

आपकी सूचना अत्यत उत्तम है। मेरा स्वभाव देखते हुए, मुझे सभी बिल्कुल साधारण मनुष्य जैसा समझें, इतना ही नहीं, तो मुझे भूल भी जाएँ। मेरी इच्छा है कि केवल कार्य पर निष्ठा तथा कार्य निष्पन्न करने के मार्ग का अविरत अनुसरण किया जाए, मैं स्वय ऐसा करने जाऊँगा, तो कदाचित भ्राति पैदा होगी। क्योंकि मुझे 'सम्मान नहीं चाहिए' ऐसा कहना, अधिक सम्मान चाहिए इस अर्थ में अनेक लोग ग्रहण कर सकते हैं। मन की विचित्र गति के कारण ऐसा होता है। आप सब लोग केंद्रीय कार्यकारिणी तथा अन्य प्रातीय अधिकारी लोगों को ऐसे शब्द प्रयोग में परिवर्तन करने के बारे में सूचित कर, तथा समझा-बुझा कर वैसा करवा लें। मुझे अत्यत सतोष प्राप्त करा देने का श्रेय आपको प्राप्त होगा।

परतु परमपूजनीय डाक्टर जी के विषय में मैं आपकी सूचना को स्वीकार नहीं कर सकता। आपने उनके प्रति ऐसा आदरयुक्त शब्दप्रयोग नहीं किया, तो मैं आपको दोष नहीं दूँगा। कुछ भी नहीं कहूँगा। परतु मुझपर इस विषय में आपकी सख्ती नहीं होनी चाहिए। आपने वैसा प्रयास किया, तो वह निष्फल सिद्ध होगा।

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्व श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्व मम तेजोऽशसभवम्।।

(गीता १०-४१)

इस नियम के अनुसार 'परमपूजनीय' शब्द का परमपूजनीय डाक्टर जी के लिए किए गए उपयोग में श्रीपरमेश्वर का अपमान न होकर श्रीपरमेश्वर के प्रति सम्मान भाव को प्रकट करने का वह सुगम, साधारण बुद्धि के व्यक्तियों को आकलन होने योग्य मार्ग है, ऐसी मेरी पूर्ण श्रद्धा है। कोई वह शब्द-प्रयोग करना छोड दे, तो भी मैं कदापि नहीं छोडूँगा। मेरी इस अल्पबुद्धि पर आप मुझपर तरस खाएँ तथा अवगुण के लिए मुझे क्षमा करें। (मूल मराठी)

१६५ आजीवन प्रचारक रहने का निश्चय

श्री ब्रह्मदेव जी, दिल्ली — १५ अप्रैल, १९५६

आपका निश्चय बहुत उत्कृष्ट है। श्री परमात्मा की कृपा से आपका हृदय अविचल रूप में इस निश्चय पर डटा रहे। परतु किसी बाह्य दबाव से या किसी तात्कालिक परिस्थिति से अभिभूत होकर आपने यह निश्चय *नहीं किया होगा, ऐसी मेरी अपेक्षा है। अन्यथा हृदय में डोलायमान* अवस्था का निर्माण होने की आशका रह सकती है।

अपने इस श्रेष्ठ निश्चय को जीवन भर चरितार्थ करने के लिए मन को अपने कार्य का ध्येय, व्यवहार, रचना, कार्य पद्धति आदि के सबध में अतीव दृढ बनाना आवश्यक है। बाह्य वायुमडल में राजनीति का आकर्षण रहता है। कभी-कभी यह अनिवार्य सा प्रतीत होता है। कभी-कभी अपने कार्य की दृष्टि से भी उसके बिना चलेगा नहीं— ऐसा भी लगता है। विशेषकर पजाब में राजनैतिक हलचलों ने ऐसा विकृत रूप धारण कर लिया है कि प्रत्येक व्यक्ति साप्रदायिकता, दल आदि से अकित होकर नित्य विरोध की, प्रतिक्रिया की, विद्वेषपूर्णता की ही बात सोचता है। ठोस राष्ट्रीय सगठित जीवन के लिए अधिक परिश्रम करते हुए मन को शुद्ध राष्ट्रभाव से ओतप्रोत रखने से ही सब समस्याओं का हल होकर उत्तम वायुमडल प्रस्थापित होगा, इधर ध्यान ही नहीं देता। इन बातों से अपने को ऊपर उठाकर विशुद्ध भाव से सघकार्य में रत होना तथा उसमें अपने भाव, विचार, उच्चार, आचरण सब लीन कर देना ही सफल कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है। इसको ध्यान में रखकर चलें, तो कभी भी हृदय विचलित होने का प्रसग उपस्थित नहीं होगा। प्रेरणा अखड बनी रहेगी और आपके उत्तम गुणों से सघ का कार्य उत्तरोत्तर प्रगत होकर रहेगा।

आप लोगों के स्वाक्षरी से आपने वर्षप्रतिपदा के पुण्य पर्वपर दोहराकर दृढ किया हुआ निश्चय मेरे हृदय को बहुत शाति देनेवाला सिद्ध हुआ है। तीनों ही कार्य के अटल आधारस्तभ के रूप में जीवनभर खडे रहें—यही श्रीभगवान के पावन चरणों में अत करणपूर्वक प्रार्थना करता हूँ।

१६६ ध्येय से प्रेरित यशस्वी व्यावहारिक अभियान

श्री लक्ष्मीनारायण, तिरुवनन्तपुरम् १५ अप्रैल, १९५६

अपने स्वयसेवकों तथा समर्थकों द्वारा मेरे नाम पर बनाया गया सारा कार्यक्रम पूर्ण हो गया है। इस विषय से सबधित आपके विचारों के बारे में मेरा इतना ही कहना है कि हम में से प्रत्येक को स्वतत्र चिंतन का अधिकार है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, प्रकट वीर पूजा मेरी प्रकृति के प्रतिकूल है। अपने सभी कार्यकर्ता इस विषय से परिचित हैं, परतु यह आवश्यक समझा गया कि किसी व्यक्ति से सबधित नाम और अवसर का उपयोग अपने अनेक नए-पुराने स्वयसेवकों में उत्साह एव आत्मविश्वास निर्माण करने का अच्छा माध्यम बनेगा। आपको अपने अनुभव से ही विदित है कि गत चार वर्षों में अपने कार्यकर्ता, एक प्रकार का अवाछित हीन-भाव, आत्मविश्वास की न्यूनता, दूसरे बधुओं से विशेषत वे, जिनके अपने कार्य के बारे में विपरीत या भिन्न विचार हैं अथवा जो अपने कार्य को कुटिल दृष्टि से देखते हैं, जाकर मिलने व अपने कार्य तथा विचारधारा के बारे में सीधी बात करना टालने लगे हैं, जिसके फलस्वरूप कार्य में एक प्रकार का ठहराव तथा कुछ स्थानों पर कमी भी आई। इससे कार्यकर्ताओं का विश्वास हिल गया तथा उत्साह-प्रदर्शन के बावजूद कार्य की अधोगति तथा उसके प्रति अरुचि रुक नहीं पाई। इस अवरोध को पार करना था, दुष्चक्र को तोडना था एव उनको अग्रसर होने की प्रेरणा देने हेतु, मेरे प्रति स्नेह व आदर तथा सगठन में मेरे स्थान के कारण इस कार्यक्रम को श्रेष्ठ तथा प्रभावी साधन के रूप में माना गया। इसीलिए उन्होंने मेरी स्वीकृति प्राप्त की तथा कार्यक्रम के उपरात आया वृत्त अत्यत उत्साहस्पद है। भविष्य में और अधिक अच्छे परिणामों की अपेक्षा है।

मुझे इस बात की सतुष्टि है कि अपने कार्यकर्ताओं को स्वय तथा लोगों को यह समझाने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि यह व्यक्ति की नहीं,

अपितु कार्य की स्तुति हो रही है। मैं तो यथास्थान पहुँच गया था। कार्य में आए उत्साह के परिणाम स्वरूप स्वयसेवक बधुओं के मन एक होने की दिशा में प्रेरित हो रहे हैं। मेरी अपेक्षा है कि आप योग्य दृष्टिकोण से आदर्शमग्न होकर कार्य में जुटें। (मूल अंग्रेजी)

१६७ क्षमायाचना

श्री परशुराम तिवारी, गया (बिहार) १२ जून, १६५६

कल रात्रि में आपके कमरे में अनौपचारिक रीति से बातचीत करते जब सब लोग जाने के लिए उठे और अन्य कई बधु आकर खडे रहे, उस समय एक ने मेरे पैरों को स्पर्श करने के कारण व्यथित होकर मैंने सबको रूखेपन से ही चले जाने के लिए कहा। जिसने यह स्पर्श किया उसे सभवत मेरी शारीरिक तथा मानसिक स्थिति, जिसमें इस शरीरधारी व्यक्ति के वैयक्तिक सम्मान की आशका भी दु सह वेदना उत्पन्न करती है, ज्ञात नहीं। इसी कारण उसने नित्य की प्रथा के अनुसार पैरों को स्पर्श किया। यह सोचकर मुझे शात रहना आवश्यक था। परतु आजकल पता नही क्यों, ऐसा कुछ होने से इतना असहनीय कष्ट होता है कि उसे शात करने के लिए कुछ समय लगता है। मेरे रूखेपन से उसे तथा उसके साथ वहाँ उपस्थित बधुओं को मानसिक कष्ट हुआ होगा। कुछ आश्चर्य व कुछ क्रोध भी हुआ होगा। मैं उन सब बधुओं का अपराधी अवश्य हूँ। तो भी आशा करता हूँ कि अपने स्नेह तथा आत्मीय सबधों को ध्यान में रखकर वे सब मुझे क्षमा करेंगे। मेरी ओर से आप सबको इस हेतु प्रवृत्त करें। मेरे उस रूखे व्यवहार की स्मृति से मन व्यथित है। आपके सम्मुख सब निवेदन इस पत्र के द्वारा कर उसे शात करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

१६८ *शरीर-स्वास्थ्य सँभाले*

श्री अप्पाजी जोशी, वर्धा १६ जून, १६५६

आप यदि शारीरिक परिश्रम कम करें, युवकों पर बडे दायित्व के काम सौंपकर उनका मार्गदर्शन करें, वे कुछ आलसी होने पर उन्हें कभी डॉट-फटकारकर, कभी समझाकर, कार्य करने के लिए बाध्य करें तो उचित होगा। वे भी सीखेंगे, आपके शारीरिक कष्ट कम होंगे और आपका स्वास्थ्य ठीक बना रहेगा। आपका शरीर स्वस्थ रहना आवश्यक है, ऐसा मुझे प्रतीत

होता है। सगठन में आपकी आवश्यकता आज है और आगे भी रहेगी। अत आप अपना स्वास्थ्य ठीक रखें और अनेकों को प्रेरणा देकर तथा अनेकों के मार्गदर्शक बनाकर, आप कार्य का विस्तार करें, ऐसी आपसे मेरी प्रार्थना है। इसके बाद आप जो करेंगे, वही होगा। अनुभव ऐसा है कि शेर को कहना कि शिकार न करो और आपको कहना कि परिश्रम न करो, दोनों बातें समान हैं। आपके मन में जो तड़पन है, वह आपको चुप नहीं बैठने देती आदि सब बातें सत्य हैं। परतु यह भी उतना ही सत्य है कि यदि हमें अपना अभीप्सित कार्य पूरा बल लगाकर करना है, तो स्वस्थ शरीर आवश्यक है। उसी प्रकार, अनेक सहयोगियों को अधिकाधिक दायित्व देकर, समझाकर, उनमें उसे पूर्ण करने की प्रवृत्ति निर्माण करना लाभदायी है। इस विषय में मैं आपको कुछ कहूँ, ऐसा मेरा अधिकार नहीं है। परतु मुझसे रहा नहीं गया, इसलिए यह पत्र लिखा है।

१६६ अहभाव कार्य को घातक

(महाराष्ट्र के एक कार्यकर्ता को लिखा पत्र)

१६ जून, १९५६

आपके पत्र में जिस भावना की अभिव्यक्ति हुई है, वह अनपेक्षित नहीं है। आपका स्वभाव भावना-प्रधान है। अत अतिप्रिय कार्यक्षेत्र से निवृत्त होने से आपके हृदय को व्यथा होनी अपेक्षित थी। आपके जीवन में कार्य निष्ठा का महत्त्व व्यक्तिगत भावना की अपेक्षा अधिक रहने के कारण आपने 'ऑटो सेंट्रिक' (एक प्रातीय बैठक का समारोप करते समय अन्य समानार्थी शब्दों के साथ इस शब्द का हुआ प्रयोग आपके स्मरण में अवश्य होगा) न होकर व्यक्तिनिरपेक्ष भाव से विचार किया तो आपको विदित होगा कि का कार्य, उस विषय में अपेक्षा आदि सब का सकलित विचार करने के पश्चात् भी वह कार्य केवल आप ही कर सकते हैं– यह आपकी भावना गत दो वर्षों में आपको प्राप्त हुए पूर्ण अपयश का एकमात्र कारण है। कार्य-वृद्धि में आपके अनेकविध गुणों का उपयोग आपके इसी विचार के कारण होता नहीं। इस विचार को अपनाना, उसी को जीवन में महत्त्व देना, सघकार्य की दृष्टि से हानिकर है। आपके ही विषय में कहना हो तो आप जैसा अदम्य उत्साही एव बहुविधगुणसपन्न पुरुष कार्य में असफल, कदाचित् हानिकर भी सिद्ध होता है।

इस सवध में औदासीन्य को त्याग कर आप सोचें। आत्मनिरीक्षण करते समय सद्गुण तो नजर आते हैं, परतु दुर्गुण देखने की अक्षमता निर्माण न हो, इसकी सावधानी बरतना आवश्यक है। इस प्रकार स्वय का निरीक्षण-चितन करें। इससे अपने या अन्य क्षेत्र में सघकार्य करने की आपकी योग्यता बढकर सगठन को लाभ ही होगा।

अभी तो आपसे एक ही प्रार्थना है कि आप उदास न हों। आपको सघकार्य करना है। उसमें जो भी दायित्व मिलेगा, सोत्साह करने की सिद्धता रखें। मन में कटुता निर्माण न हो, इसलिए दत्तचित्त रहें और अपने सगठन के सिद्धात, कार्यपद्धति, योजना ओर तन्निमित्त भिन्न-भिन्न स्थानों पर कार्यरत व्यक्तियों के सबधु में शुद्ध आत्मीयतायुक्त आदर भावना सदैव वृद्धिगत हो। (मूल मराठी)

२०० इस कीचड उछालने पर गभीर विचार होगा

श्री वी राजगोपालाचारी जी, चेन्नै — २० जून, १९५६

रोहतक में दिए गए प नेहरू जी के भाषण का वृत्त मुझे दिखाया गया। यह तो बडी दु खपूर्ण बात है कि उनके जैसे ख्यातिप्राप्त महानुभाव विचारहीन तथा असत्य वक्तव्य देने में आनद मानते हैं। कितु ऐसा लगता है कि उनका और उनके असख्य अनुयायियों का यह स्वभाव ही बन गया है। आज देश एक भयानक सकटकाल की ओर बढ रहा है। यह कहना पडेगा कि शासन का उत्तरदायित्व जिनके कधों पर है, वे ही यदि ऐसे निम्नस्तर के कार्य करने लगे, तो क्या होगा? केंद्रीय कार्यकारी मडल की बैठक में इस गैरजिम्मेदार कीचड उछालने की कृति पर गभीरता से विचार करना पडेगा। इस असत्य को दुर्लक्षित नहीं करना चाहिए। (मूल अग्रेजी)

२०१ सघकार्य से मुक्ति की अनुज्ञा माँगना असगत

(महाराष्ट्र के एक स्वयसेवक को)

२१ जून, १९५६

कुछ अतिप्रिय कार्यकर्ताओं को निष्क्रिय बने देखने का अप्रिय अनुभव मुझे आता रहता है। इसी श्रेणी में और एक अनुभव आपके कारण आ रहा है। पूर्ण विचार करने के पश्चात् ही आपके इस निष्कर्ष पर पहुँचने

के कारण विचारों का आदान-प्रदान अन्य किसी प्रकार से करना या न करना आदि चर्चा के लिए अब अवसर नहीं है। इस प्रकार की चर्चा से कुछ लाभ होगा, ऐसा मुझे भी नहीं लगता। चर्चा प्रारम्भ की तो निर्णय लेने के पूर्व आपने जो सदसद्विवेक किया, उसकी अवहेलना होकर आपकी बुद्धिमानी एव सद्भावना को एक प्रकार से अपमान करने का महापाप होगा।

इसलिए आपका निर्णय मान्य करना यही मैं उचित मानता हूँ। कार्य करने के लिए तो मेरी अनुमति आवश्यक है, परतु कार्य न करने हेतु कैसी आवश्यक होगी? अत केवल औपचारिकता पालन के लिए ही आपने यह लिखा होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। वैसे ही सघकार्य से मुक्ति पाने का और सघ-शाखा में न जाने का निर्णय आपने किया है– ऐसा लिखने के पश्चात् अनुमति रहे, ऐसा लिखना औपचारिक रूप में सम्मान प्रकट करने मात्र की एक पद्धति मैं मानता हूँ। तो भी आपका एक हितैषी, स्नेही, और आयु में कुछ अधिक रहने के कारण उपरोक्त निर्णय के लिए मैं आपका अभिनदन करता हूँ।

सघ-शाखा से निवृत्त होने पर भी पारस्परिक स्नेह एव कृपा नित्य वृद्धिगत हो यही इच्छा है। (मूल मराठी)

२०२ सघ शिक्षा वर्ग के आदर्श सर्वाधिकारी

श्री दादासाहेब कानिटकर, अचलपुर २५ जून, १९५६

सघ शिक्षा वर्ग में कष्ट सहन करने पर भी आप सदैव प्रसन्नमुख रहे और सब स्वयसेवकों के हृदय में उत्साह भर दिया। वर्ग में अपने सात्विक स्नेहपूर्ण व्यवहार का प्रत्यक्ष आदर्श उपस्थित कर स्वयसेवकों को वैसा ही व्यवहार करने की शिक्षा दी। स्वय अपने कर्तृत्व का गर्व मन में निर्माण ही न होने के आपके सौजन्य के कारण यह सब आपके कारण नहीं हो पाया, ऐसा सभवत आप कह सकेंगे। परतु [illegible] में जो शुद्ध सात्विक भावना अभिव्यक्त हो रही, देखकर है कि अपने चारों ओर सुजनता, स्नेह, आपका सहज स्वभाव है इसी कारण वर्ग पद की आपको प्रार्थना करने में एक स्वयसेवकों के जीवन में जैसा

आदर्श उनके सम्मुख एक माह तक रह सका। वर्ग के इस वायुमडल के कारण सब स्वयसेवक हृदय में उत्साह धारण कर काम में जुट जाएँगे, ऐसा विश्वासपूर्वक कह सकते हैं। इस उत्साह का सपूर्ण श्रेय आपको एव आपके अन्य सहकारी कार्यकर्ताओं को है। (मूल मराठी)

२०३ असत्य का तत्काल उत्तर देना आवश्यक

श्री सी राजगोपालाचारी जी, चेन्नै — २५ जून, १९५६

'हिंदुस्थान समाचार' के प्रतिनिधि के सम्मुख मैंने अपने कुछ विचार प्रकट किए थे। वे उन्होंने स्थानीय भाषिक वृत्त-पत्रों में प्रकाशित किए थे। अन्य, विशेषत अग्रेजी वृत्त-पत्रों में वे प्रकाशित हुए या नहीं, यह मुझे ज्ञात नहीं। पजाब, दिल्ली, पेप्सू, हिमाचल प्रदेश के हमारे प्रात-सघचालक माननीय श्री हसराज जी गुप्त ने प्रधानमत्री जी के रोहतक तथा दिल्ली के भाषणों में सघ पर लगाए गए आरोपों का कडे शब्दों में जो खडन किया, उस वक्तव्य की प्रतिलिपि मुझे कल मिली। दक्षिण के अग्रेजी वृत्त-पत्रों में यह वक्तव्य आया है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। दुर्दैव यह है कि पत्रकारों को सत्य का आदर कम है। शासकों के ताल पर नाचने में ही वे अधिक मग्न रहते हैं। दोनों पक्षों के विचार निष्पक्ष रूप से प्रकाशित करने का सौजन्य भी उनमें नहीं है। यदि दोनो पक्षों का दृष्टिकोण निष्पक्षता से प्रस्तुत कर, फिर अपनी टिप्पणी में भले ही वे तथाकथित महानुभावों का चापलूसीपूर्ण लागूलचालन करते हैं, तो मैं दुर्लक्ष्य करूँगा। जैसा भी हो, प्रचारतत्र की इस विचित्र दुनिया में असत्य का तत्काल खडन तथा यथोचित कडा प्रत्युत्तर देना अत्यावश्यक है। (मूल अंग्रेजी)

२०४ शुद्ध हृदय से कार्य करें

(प्रचारक जीवन से निवृत्त होनेवाले उत्तर प्रदेश के एक कार्यकर्ता को)

२८ जनू, १९५६

किसी भी प्रकार का जीवनयापन करने का आपने विचार किया तो भी उसे सैद्धातिक आधार बनाने का प्रयास न करें। शुद्ध हृदय से कार्य करते रहने से अहभाव, जो कर्तृत्व का शत्रु है, निर्माण नहीं

होगा। इस नियम के अनुसार अपने जीवन में विचारों एवं भावों की रचना करना आवश्यक है। (मूल मराठी)

२०५ प्रत्येक जीवमान प्राणी अपनी सेवा का अधिकारी

श्री लक्ष्मणराव इनामदार, १७ अगस्त, १९५९

ईश्वरीय प्रकोप से निसर्ग प्रतिकूल बनकर जीव और वित्त हानि किस मर्यादा तक हो सकती है, इसका अनुभव अजार की इस दुर्घटना में हमें आता है। इस समय केवल 'दैवाधीन सब कुछ है' ऐसा न सोचते हुए और आपद्ग्रस्त बंधुओं को प्रारब्ध का दोषी न मानते हुए तुरंत सहायता-कार्य में जुट जाने में मनुष्यता है। द्रव्य, अन्य सामग्री आदि उपलब्ध न रहते हुए भी पास की शाखाओं के स्वयंसेवकों ने निरलसता एवं स्वयंस्फूर्ति से पीड़ितों की सहायता की, प्राणभय की उपेक्षा कर भी जो सेवा की, उसमें स्वयंसेवक बंधुओं के सुसंस्कारित हृदय एवं व्यवहार का लोगों को परिचय हुआ और सही अर्थ में मनुष्य-निर्मिति के अपने प्रयत्नों के विषय में उनका विश्वास और आदर शतगुणित हुआ। इन सब स्वयंसेवक बंधुओं का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ और अपने समाज-बंधुओं की सहायता करने में कितने भी कष्ट हुए तो भी उसके लिए वे नित्य सिद्ध रहें, ऐसी उन्हें प्रार्थना करता हूँ। इस आपदा में, भले ही अपने-अपने जाति-बांधवों द्वारा हो, जो धन, अन्न, वस्त्र और निवास व्यवस्था में आवश्यक साधन सामग्री अनेक स्थानों से अनेक महापुरुषों ने उपलब्ध करा दी, उनके प्रति अपने कृतज्ञता के भाव कितनी भी मात्रा में व्यक्त किए, कम ही सिद्ध होंगे।

पर-पीडा के कारण पवित्र हृदय से और निःस्वार्थ, निरपेक्ष भाव से, उनके दुःख-निवारण हेतु कष्ट सहना श्रेष्ठ हृदय का परिचायक है। आपने संघ के सिद्धांतों के अनुकूल व्यवहार कर सभी हिंदुओं की सहायता की है। ऐसी दैवी आपत्ति में केवल मानवता का दृष्टिकोण रखकर ही सहायता होनी चाहिए। इतना ही नहीं तो प्रत्येक जीवमान प्राणी अपनी सेवा स्वीकारने का अधिकारी है– यह स्मरण रखकर सेवाकार्य करना चाहिए। अपनी संस्कृति का यही आदेश है। सामान्य व्यवहार में भले ही कुछ झगडे हों, स्वपराक्रम से उनको नष्ट करने की क्षमता प्राप्त करने में

पुरुषार्थ है। ऐसी नैसर्गिक आपत्ति में, दैवी प्रकोप में, आपस में झगडनेवाला पीडित देखकर आनद मानना और उसकी हानि में स्वय का लाभ देखना भीरुता है, वर्बरता है। अपनी उदात्त सस्कृति का यह सिद्धात सर्वश्रुत है। उसके अनुरूप अपने स्वयसेवक बधुओं का व्यवहार हुआ है, यह पढकर बहुत सतोष हुआ। सघ के अनुकूल अच्छी भावना का प्रसार हो जाने के पश्चात् यह अप्रत्यक्ष और अनपेक्षित परिणाम हुआ है। किन्तु सेवाकार्य करते समय आप केवल कर्तव्यपूर्ति की ही दृष्टि रखें, वही उचित है। स्वयसेवकों में इस सात्विक सेवा के कारण अधिक विश्वास एव उत्साह निर्माण होकर अनायास कार्य बढेगा। सभी लोगों के लिए उपयुक्त अपना सगठित सामर्थ्य सर्वसमाजव्यापी बनाने की आवश्यकता वे समझेंगे और उसके निर्माण हेतु निश्चय से अनवरत रूप में कार्य करने में जुट जाएँगे, यही अपना लाभ है।

कर्णावती और गुजरात प्रदेश के अन्य स्थानों पर आदोलन हुए, उनके निराकरण हेतु शासकीय दमन-नीति का प्रयोग, अश्रुधूम, लाठीप्रहार, गोलीवर्षा इत्यादि के कारण मेरा मन अत्यत व्यथित है। छोटे-छोटे कारणों से ऐसे आदोलन, उससे चिढकर अमानवीय अत्याचार करने की शासन की प्रवृत्ति और काग्रेस जैसी सस्था के श्रेष्ठ जनसेवकों द्वारा इस क्रूरता का कभी सक्रिय रूप में तो कभी परोक्ष रूप से समर्थन, इन सब बातों के कारण सर्वसामान्य जीवन में अस्थिरता है। देश की एकता और अपने राष्ट्र की विशुद्ध एकात्मता एव परस्पर स्नेह का मानो अपने समाज-जीवन में अधिष्ठान ही नहीं है– इसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। देश में अशाति और अव्यवस्था निर्माण कर या अपने व्यवहार के कारण अव्यवस्था फैलाकर उससे अपने दल का स्वार्थ सिद्ध करने हेतु प्रयत्नशील महानुभाव बहुत हैं। उनमें कुछ तो परकीय राष्ट्र से सहायता ग्रहणकर शासन सत्ता प्राप्त करने में योग्य-अयोग्य सभी साधनों का अवलबन करने में उत्सुक बन बैठे अपने चारों और हैं। यह अपने राष्ट्र का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। उनको तो यह मानो अनुकूलता का पर्व ही लगता होगा। परतु हम अपने राष्ट्र की अखडता और एकात्मता के उपासक हैं। उसी के अनुरूप आचरण कर, परस्परानुकूलता एव सामजस्य निर्माण करने का शक्ति और पूर्ण कर्तृत्व से हमें प्रयत्न करना चाहिए। परमेश्वर की कृपा से हमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। (मूल मराठी)

होगा। इस नियम के अनुसार आपको जो
करना आवश्यक है। (मूल मराठी)

२०५ प्रत्येक जीवमान प्राणी अपनी

श्री लक्ष्मणराव इनामदार,

ईश्वरीय प्रकोप से निसर्ग प्र
हानि किस मर्यादा तक हो सकती है, इसक
में हमें आता है। इस समय केवल 'देवा
हुए और आपद्ग्रस्त बंधुओं को प्रारब्ध
सहायता-कार्य में जुट जाने में मनुष्यता
उपलब्ध न रहते हुए भी पास की शाखाओं
स्वयस्फूर्ति से पीडितों की सहायता की, प्राण
की, उसमें स्वयसेवक बधुओं के सुसस्कार
को परिचय हुआ और सही अर्थ में मनु
विषय में उनका विश्वास और आदर शतगु
बधुओं का मैं हृदय से अभिनदन करता हूँ
सहायता करने में कितने भी कष्ट हुए तो
रहें, ऐसी उन्हें प्रार्थना करता हूँ। इस अ
जाति-बाधवों द्वारा हो, जो धन, अन्न,
आवश्यक साधन सामग्री अनेक स्थानों से
दी, उनके प्रति अपने कृतज्ञता के भाव कित
ही सिद्ध होंगे।

पर-पीडा के कारण पवित्र हृदय
से, उनके दु ख-निवारण हेतु कष्ट सहना
आपने सघ के सिद्धातों के अनुकूल व्यवहा
की है। ऐसी दैवी आपत्ति में केवल मा
सहायता होनी चाहिए। इतना ही नहीं
सेवा स्वीकारने का अधिकारी है– यह
चाहिए। अपनी सस्कृति का यही आदेश
कुछ झगडे हों स्वपराक्रम से उनको नष्ट

वे मसुलिपट्टम के सज्जन माननीय श्री लिगय्या जी चौधरी सघ-शिक्षा वर्ग में क्रमश दो बार सर्वाधिकारी बने। गत वर्ष प्रातीय शिविर के सर्वाधिकारी बन कर अधिकाधिक दायित्व स्वीकारने की सिद्धता व्यक्त की। इस वर्ष आध्र प्रात में पाँच स्थानों पर शिविर लगे। उनमें प्रथम शिविर में अनपेक्षित अनिवार्य कारण से उनको आना सभव नहीं हुआ, परतु अन्य चार शिविरों में वे मेरे साथ रहे और अतत उस प्रात के प्रात-सघचालक पद का दायित्व स्वीकारने हेतु सिद्ध हुए। कल भाग्यनगर में प्रात के सब प्रमुख कार्यकर्ताओं को एकत्रित कर उनकी नियुक्ति घोषित की। कल ही सायकाल भाग्यनगर शाखा के वार्षिकोत्सव समारोह में उपस्थित सब माता-बधुओं के समक्ष उनकी इस नियुक्ति की घोषणा की। आपके द्वारा किए गए प्राथमिक परिश्रमों का ही यह सुफल रहने के कारण इस आनददायी वृत्त को प्रेषित करने हेतु आपको यह पत्र लिखा है। (मूल मराठी)

२०६ परिस्थिति को दोषी ठहराना अनुचित

श्री प्रहलादपत कुलकर्णी, नासिक २६ फरवरी, १९५७

कार्य में निर्माण हुई शिथिलता नष्ट करने का आप हृदयपूर्वक प्रयत्न कर रहे हैं। अनेक स्वयसेवकों में एक प्रकार की अकर्मण्यता छाई है। उसे दूर करने का प्रयास कष्टप्रद होते हुए भी निरतर करते रहना आवश्यक है। कार्य की उपेक्षा का कारण चारों ओर की परिस्थिति की अपेक्षा स्वयसेवकों की मन स्थिति ही है। अपनी मन स्थिति के विषय में कुछ कहना अनुचित लगता है, इसलिए निरीह, निर्जीव, पराधीन परिस्थिति पर मनुष्य सुविधा से दोषारोपण करता है। कुछ अपवादस्वरूप प्रसग हो सकते हैं, जिसमें परिस्थिति का प्रभाव कार्यक्षमता से अधिक बढ जाने के कारण अपना कर्तृत्व प्रकट नहीं हो पाता। परतु ऐसा उचित ही होता है। इसलिए सबको समझाबुझाकर सौ बार अपयश आया तो भी निराश न होते हुए प्रत्येक को व्यक्तिश मिलकर कार्य के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक हो जाता है।

इस वर्ष शाखाओं ने प्रगति की तो कार्यवृद्धि में एक हिस्सा हमने पूर्ण किया ऐसा होगा। इन शाखाओं में स्वयसेवकों की उपस्थिति, नियमितता, कार्यक्रम सुसूत्र तथा सुव्यवस्थित करने की क्षमता, अनुशासन, शुद्ध स्नेहपूर्ण पारस्परिक व्यवहार, उनका उत्साह, नित्य होनेवाले विचार-विनिमय

२०६ सघ जीवन अपनाएँ

श्री डी पापन्ना, दोड, बल्लापुर (कर्नाटक) २६ अगस्त, १९५६

सब स्वयसेवक बधु सघ-भावना अपनाकर एक परिवार जैसे रहते हुए एक-दूसरे के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। इस पारिवारिक स्नेह-भावना को सपूर्ण नगर में अपने व्यवहार से प्रसार कर, आत्मीयता से सबको सघकार्य समझाकर, सघ के अनुकूल बनाकर सम्मिलित करने का प्रयास करें। इसके द्वारा ऐसा सुदृढ एकात्म समाज निर्माण करें कि आज के अस्थिर जगत् में अपना राष्ट्र निर्भयता से वैभवपूर्ण तथा सम्मान्य रूप में खडा हो सके।

(मूल अग्रेजी)

२०७ कार्यकर्ता को सात्वन

श्री शेषाद्रि, बगलौर ३० जनवरी, १९५७

आपकी पू माताजी के निधन का वृत्त पढकर असीम दु ख हुआ। एक तरह से उन्हें असह्य पीडा से मुक्ति मिल गई। आप जैसे सुपुत्र के कारण उन्हें अवश्य सद्गति मिलेगी। किन्तु माताजी का स्वर्गवास आपके लिए कभी पूर्ण न होनेवाली हानि है। अपनी यातनाएँ नियत्रित करें तथा उनकी स्फूर्तिप्रद स्मृति हृदय में नित्य जागृत रखते हुए, उनके द्वारा प्रदान किया हुआ निरपेक्ष स्नेह सभी के हृदयों तक पहुँचाएँ। दयाघन परमेश्वर आपको शक्ति एव धैर्य दें।

२०८ कार्यकर्ता का अभिनदन

(कुछ वर्ष तक आध्र प्रात में प्रचारक और तत्पश्चात् महाराष्ट्र में कार्यरत एक कार्यकर्ता)

श्री आप्पा पेंडसे, पुणे २५ फरवरी, १९५७

आनददायी समाचार आपको देने हेतु यह पत्र लिख रहा हूँ।

पूर्व परिचय न रहते हुए भी मनुष्य परखकर उनसे उपेक्षा हुई तो भी नम्रता से, दृढ ध्येयनिष्ठा से जिनको सघ की दृष्टि से अपनाने का आपने निरतर प्रयास किया था, आपके प्रयत्नों के कारण जो सघानुकूल बने, आपके पश्चात् उस क्षेत्र में कार्यार्थ गए कार्यकर्ता को जो सुलभ हुए और जिनके व्यक्तित्व का साथ लेना इन कार्यकर्ताओं को सभव हो पाया,

वे मसुलिपट्टम के सज्जन माननीय श्री लिगय्या जी चौधरी सघ-शिक्षा वर्ग में क्रमश दो बार सर्वाधिकारी बने। गत वर्ष प्रातीय शिविर के सर्वाधिकारी बन कर अधिकाधिक दायित्व स्वीकारने की सिद्धता व्यक्त की। इस वर्ष आध्र प्रात में पाँच स्थानों पर शिविर लगे। उनमें प्रथम शिविर में अनपेक्षित अनिवार्य कारण से उनको आना सभव नहीं हुआ, परतु अन्य चार शिविरों में वे मेरे साथ रहे और अतत उस प्रात के प्रात-सघचालक पद का दायित्व स्वीकारने हेतु सिद्ध हुए। कल भाग्यनगर में प्रात के सब प्रमुख कार्यकर्ताओं को एकत्रित कर उनकी नियुक्ति घोषित की। कल ही सायकाल भाग्यनगर शाखा के वार्षिकोत्सव समारोह में उपस्थित सब माता-बधुओं के समक्ष उनकी इस नियुक्ति की घोषणा की। आपके द्वारा किए गए प्राथमिक परिश्रमों का ही यह सुफल रहने के कारण इस आनददायी वृत्त को प्रेषित करने हेतु आपको यह पत्र लिखा है। (मूल मराठी)

२०६ परिस्थिति को दोषी ठहराना अनुचित

श्री प्रहलादपत कुलकर्णी, नासिक २६ फरवरी, १९५७

कार्य में निर्माण हुई शिथिलता नष्ट करने का आप हृदयपूर्वक प्रयत्न कर रहे हैं। अनेक स्वयसेवकों में एक प्रकार की अकर्मण्यता छाई है। उसे दूर करने का प्रयास कष्टप्रद होते हुए भी निरतर करते रहना आवश्यक है। कार्य की उपेक्षा का कारण चारों ओर की परिस्थिति की अपेक्षा स्वयसेवकों की मन स्थिति ही है। अपनी मन स्थिति के विषय में कुछ कहना अनुचित लगता है, इसलिए निरीह, निर्जीव, पराधीन परिस्थिति पर मनुष्य सुविधा से दोषारोपण करता है। कुछ अपवादस्वरूप प्रसग हो सकते हैं, जिसमें परिस्थिति का प्रभाव कार्यक्षमता से अधिक बढ जाने के कारण अपना कर्तृत्व प्रकट नहीं हो पाता। परतु ऐसा उचित ही होता है। इसलिए सबको समझाबुझाकर सौ बार अपयश आया तो भी निराश न होते हुए प्रत्येक को व्यक्तिश मिलकर कार्य के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक हो जाता है।

इस वर्ष शाखाओं ने प्रगति की तो कार्यवृद्धि में एक हिस्सा हमने पूर्ण किया ऐसा होगा। इन शाखाओं में स्वयसेवकों की उपस्थिति, नियमितता, कार्यक्रम सुसूत्र तथा सुव्यवस्थित करने की क्षमता, अनुशासन, शुद्ध स्नेहपूर्ण पारस्परिक व्यवहार, उनका उत्साह, नित्य होनेवाले विचार-विनिमय

रहा हूँ। आगे आप अपना विचार कर जो योग्य दिखाई दे, सो करें। आपका पत्र पढने के बाद मेरी राय यही बनी है कि आप अभी तक यदि विवाहबद्ध नहीं हुए हैं, तो शीघ्र होकर उत्तम गृहस्थ-जीवन को स्वीकार करें। श्री प्रभु आपका उचित मार्गदर्शन करें।

२१३ माता के वियोग का आघात

श्री अप्पा जोग, पुणे २६ सितबर, १६५७

आपकी पूजनीया माताश्री के स्वर्गवास का दु खद वृत्त मिला। केवल आपकी ही नहीं, तो सब स्वयसेवक बधुओं की स्नेहमयी माता का वियोग हुआ। ऐसी घटनाएँ ईश्वराधीन रहती हैं। परमात्मा की इच्छा के सम्मुख विनम्र होकर अपना मन सतुष्ट एव शात रखने का प्रयत्न करना ही उचित है। यह जानते हुए भी मातृवियोग का दु ख तो होता ही है। माता जैसा परम दैवत नहीं है, कृपाछत्र नहीं है, शुद्ध स्नेहपूर्ण जीवनाधार नहीं है। अत अन्य वियोग की अपेक्षा माता के वियोग का आघात अधिक गहरा होता है। तो भी धैर्य धारण कर चलना और जीवन लक्ष्य सामने नित्य रहने के कारण सुख-दु ख, लाभालाभ आदि की ओर उपेक्षा से देखने में जो अभ्यस्त हैं, उनको स्वय अपना, अन्य दु खियों का सात्वन कर स्वकर्तव्यरत हो जाना युक्त है। यह सब आपको ज्ञात ही है। मुझे कुछ लिखना चाहिए, ऐसी आवश्यकता नहीं। (मूल मराठी)

२१४ अकारण दोषारोपण करना मेरा स्वभाव नहीं

श्री मार्तंडराव जोग, नागपुर ६ अक्तूबर, १६५७

अत्यत आत्मीयता से आपने जो सूचित किया है, उसके लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ। मेरे भाषणों में शासन एव काग्रेस के प्रति अनुदारता प्रकट होती है, ऐसा आपने कहा है। ऐसा आपको क्यों लगा, कहना कठिन है। काग्रेस या शासन का गुणगान करनेवाला केवल स्तुतिपाठक मैं नहीं बन सकता। वैसे ही उनके सद्गुणों की ओर आँखें मूँदकर, बुद्धिपुरस्सर उनपर अकारण दोषारोपण करने का भी मेरा स्वभाव नहीं है। यह होते हुए भी भाषणों में उनकी आलोचना होती है, इसका अवश्य ही कुछ कारण होगा, इसे सभवत आप मान्य करेंगे।

सपूर्ण देश में प्रवास करते समय अनेकविध क्षेत्रों के विचारवान एव कार्यशील बधु मिलने से जैसी विविध जानकारी मुझे प्राप्त होती है, यदि आपको भी प्राप्त होती, तो किसी भी प्रकार का अन्याय न सहने के आपके स्वभाव के कारण इन लोगों के प्रति आप निश्चय ही बहुत क्रोधित बन जाते। श्री प्रभुकृपा से आपको इस विषय का केवल एक ही और हृदयानुकूल लगनेवाला पहलू ज्ञात है। इसी कारण से ये सब लोग आपके क्रोध के पात्र नहीं बने हैं।

जनहितार्थ की गई योजनाओं में सहकार्य देने का दूसरा विषय है। जहाँ समव हो, अपनी अल्प शक्ति के अनुसार सहकार्य का प्रयत्न होता है। परतु उनकी दृष्टि सदोष रहने के कारण वह सभव नहीं हो पाता, ऐसा अनेक स्थानों पर अनुभव आया है। सम्मानपूर्वक व्यवहार आवश्यक है। हमने एक महत्त्वपूर्ण कार्य अगीकृत किया है। उसका पोषण हो, उसे किसी प्रकार हानि न पहुँचे– यह सावधानी आवश्यक है। विच्छेद के कुछ उदाहरण आपने प्रस्तुत किए हैं। जिस विचार-प्रणाली एव नीति के कारण उनकी निर्मिति हुई है, उस नीति एव विचार-प्रणाली का त्यागकर, यदि आवश्यक हो तो ऐसी विचारधारा और नीति अपनानेवाले व्यक्ति की उपेक्षाकर, हमें एक हृदय होकर राष्ट्ररक्षा हेतु कार्य करना अतीव आवश्यक है। उसमें बाधा निर्माण हो, परिस्थिति अस्थिर बने, लक्ष्य अस्पष्ट हो, ऐसा कुछ भी करना घातक सिद्ध होगा।

शात चित्त और गहराई से विचार करने पर मेरे कथन की सत्यता आप अनुभव करेंगे, ऐसा विश्वास है। (मूल मराठी)

२१५ सुख-दु खो मे निर्विकार रहे

श्री भास्कर झिझर्डे, ७ अक्तूबर, १९५७

आपकी प्रदीर्घ रुग्णावस्था, उसमें कभी अच्छी तो कभी खराब शरीर की अवस्था, और अन्य आनुषगिक कारणों से निराशा के भाव सभवनीय होने पर भी आपको धैर्य त्यागना उचित नहीं है। हम सब एक सत्कार्य को समर्पित लोग है। कार्य करते समय सुख-दु ख के प्रसग तो आते ही हैं। उनमें निर्विकार रहने का अपना स्वभाव है। इस जीवनव्रत में आपको रुग्णावस्था का आघात सहना पडा। उसे निष्कप हृदय से सहकर

आगे भी कार्य करने की उमग एव धैर्य धारण कर, इस रोग से मुक्ति पाने का दृढ निश्चय हृदय में धारण करना आपके लिए उचित है। इस प्रकार मन की दृढता रहने के कारण भगवान की कृपा से आप स्वास्थ्य में सुधार का अनुभव करेंगे और कुछ समय पश्चात् सर्वसामान्य व्यवहार करने योग्य शरीर-स्वास्थ्य का आपको लाभ होगा। यही विचार अपने मन में नित्य रखें, ऐसी आपसे आग्रहपूर्वक प्रार्थना है।

अपने जीवन में रोग भी भाग्य से प्रवेश करते हैं और उनका कालखड समाप्त होते तक साथी बनकर रहते हैं। योग्य उपचार एव मन की प्रसन्नता रही, तो दु ख भोगने की अवधि क्षीण होकर रोग हट जाता है यह अनुभव सत्य माना गया है। अत प्रतीक्षा करना और अनुकूल समय आ रहा है, ऐसा विश्वास धारण कर मन को दुर्बल न होने देना उचित रहता है। यह विचार तो आते हैं, परतु रोग-व्यथा के कारण मन सतुलित रखना सभव नहीं हो पाता, यह सामान्य लोगों के लिए सत्य माना गया है। परतु सत्कार्यार्थ जीवन समर्पित दृढव्रती के लिए यह सत्य नहीं है, इसका विस्मरण न हो। इस सम्बन्ध में आगे कभी लिखूँगा। (मूल मराठी)

२१६ सत्कर्म मे कटु अनुभव विसर्जित करो

श्री बबन गुजर, १० जनवरी, १९५८

अपना जो भी काम हो, शाति से करते रहो। आप आजकल सघकार्य नहीं कर रहे हैं, तो भी स्वभाव के अनुकूल और कुछ लोगों को कल्याणप्रद हो, ऐसे किसी कार्य में जुट जाओ। कुछ समय पश्चात् फिर से सघकार्य करना उत्तम रहेगा। वह सभव न हो पाया, तो किसी भी अच्छे कार्य को करते रहो और उसमें अपने पारिवारिक जीवन के कटु अनुभव विसर्जित करो।

२१७ केवल स्त्री का आकर्षण ही जीवन नहीं

श्री शरद देव, ५ फरवरी, १९५८

इस विषय में मुझसे मार्गदर्शन की अपेक्षा नहीं रहनी चाहिए। जैसा आप समझते हैं कि आपके जैसा ही वैषयिक आकर्षण उस लडकी के अतर्मन में चलता होगा, परतु वह स्वय अनभिज्ञ है, ऐसी आपकी भावना

क्यों हुई, कहना कठिन है। उसके अतर्मन पर आपकी विचित्र भावनाओं के आरोपण से आपको ऐसा लग सकता है।

अभी तो इतना ही करें कि इन सब विचारों को दूर रखकर अपने अभ्यास की ओर ध्यान दें। अपने जीवन की दिशा निश्चित करें, कर्तव्य का निश्चय करें, और उस हेतु प्रयत्नशील रहें। केवल स्त्री का आकर्षण ही जीवन नहीं है, इसका विस्मरण न हो।

२१८ जुलुस-जलसेवाली दिखावटी पद्धति से बचे

श्री केशवदेव जी, शेरगढ ५ फरवरी, १९५८

शात चित्त से, निश्चयपूर्वक कार्य करने से तथा अपने स्थायी सगठन-कार्य को ध्यान में रखकर स्वय तथा अपने साथियों का शुद्ध, व्यक्तिगत राष्ट्रीय चारित्र्यपूर्ण जीवन बनाने की ओर विशेष ध्यान देने से फल अच्छा मिलेगा। किन्तु जुलूस-जलसेवाली आजकल की दिखावटी पद्धति मन में रही, तो जो कुछ सफलता मिलेगी भी, वह अल्पकाल की ही होगी और यथार्थ में लाभ कुछ भी मिलेगा नहीं। यह सोचकर चलें और यद्यपि मेरी ओर से पत्र का उत्तर न मिला, तो भी समय-समय पर कार्य की प्रगति की सूचना देते रहें, यही प्रार्थना।

२१९ तात्कालिक स्फूर्ति मे ही सतोष लाभकारी नहीं

श्री जयप्रकाश जी, ५ फरवरी, १९५८

अलीगढ के कार्यक्रम से आपको प्रसन्नता की प्राप्ति हुई, यह जानकर सतोष हुआ। यहॉ के अपने कार्यकर्ताओं से मिलकर अपने हृदय में जो विशुद्ध भाव जागृत हुए हैं, उन्हें स्थिर करने का तथा कार्यक्रम देने का अपना जो दैनदिन कार्य है, उसमें जुट जाना लाभदायक होगा। आकस्मिक तथा तात्कालिक स्फूर्ति में ही समाधान मानने से लाभ नहीं।

२२० बलात् नियत्रण थोपा नही जाता

श्री हरिहरसिह मर्दराज, कटक ७ मार्च, १९५८

पूर्ण विचार करके ही आपने निर्णय किया होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। इस विपय में मैं कुछ भी नही कहूँगा, क्योंकि बलात् नियत्रण करने का

विचार अपने कार्य में नहीं है, किन्तु जीवन के हर क्षेत्र में कार्यकर्ता मुक्त व्यवहार कर सकता है। सर्व आवश्यक बातों पर ध्यान देते हुए समझबूझकर जिन सिद्धातों को ग्रहण कर अपने जीवन-भर कार्यान्वित करने का हमने वचन दिया है, उनका आप नित्य स्मरण रखें, यही हमारी अपेक्षा है। जीवनभर स्वयमेवक रहूँगा– ऐसा आपने मुझे आश्वासन दिया है। किन्तु आपने स्वयसेवकत्व त्याग दिया है, इस आशय का कुछ स्थानीय वृत्त-पत्रों में प्रकाशित वृत्त असत्य ही होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। इस विषय में आपसे वार्तालाप करने का अवसर मुझे मिलेगा, ऐसा विश्वास है।

(मूल अंग्रेजी)

२२१ श्रेष्ठ कार्य कोई भी करे

श्री भाऊराव अभ्यकर, पुणे   ६ मार्च, १९५८

श्री एकनाथ खानोलकर आदि कुछ सज्जनों ने स्वातत्र्यवीर श्री सावरकर जी का अमृत महोत्सव करने का सोचा है। उसके प्रकट पत्रक पर मेरे हस्ताक्षर रहें, ऐसा उन्होंने मुझे सूचित किया है। उन्होंने वे पत्रक मेरे पास भेजे हैं। श्री कृष्णराव मोहरील जी को उन्होंने कहा है कि श्री एकनाथ खानोलकरजी को पत्र लिखकर सूचित करें कि इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

ऐसी अवस्था में हम यदि कहते है कि हम अपना निराला आयोजन करेंगे तो वह इन लोगों को तथा हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं को विरोधस्वरूप दिखेगा। ऐसे श्रेष्ठ अवसर पर विरोध न रहे, सहकार्य रहे। इस परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए, इसका आप अवश्य विचार करें। बहुधा आपको यही उचित प्रतीत होगा कि जिन महानुभावों ने इस उपक्रम को प्रारभ मे उठाया है, उन्हे कार्य करने दिया जाए। जहाँ उन्हे हृदय से ऐसा लगेगा कि इनका सहकार्य लेना चाहिए और उस हेतु वे मनोयोग से प्रयत्नशील होंगे, वहाँ हमें उन्हें सहकार्य देना चाहिए और कार्यक्रम को अधिक से अधिक सफल बनाने के लिए सहाय्य करना चाहिए।

२२३ विधर्मियों का अपप्रचार

श्री नानकराम जी के इसरानी, अजमेर ६ मार्च, १९५८

परिपत्रक के साथ आपका ४ ३ १९५८ का पत्र मिला। विधर्मियों द्वारा समय-समय पर हिंदू धर्म की निदा करने तथा अपने समाज को ही निगलने के जो प्रयास होते हैं, उसी मालिका का यह केवल एक परिपत्रक है। उसके विरुद्ध आवाज उठाना आवश्यक है, जैसा कि आप कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति में अपने प्रिय धम और सस्कृति की प्राणपण से आग्रहपूर्वक रक्षा करने की प्रवृत्ति जगाना व हिंदू समाज का एक जागरूक अभेद्य सगठन– ऐसा सगठन जो स्वय की श्रेष्ठता के प्रति जागरूक हो तथा सपूर्ण मानव-जाति अपने सर्वसमावेशक आलिगन में समा सके– खडा करना उससे भी अधिक आवश्यक है।

इस कार्य की सपूर्ण सिद्धि के लिए हम सब को प्रयास करना चाहिए। ऐसे अश्लाघ्य प्रकाशनों के विरुद्ध लोकमत जागृत कर, सत्ताधारियों पर ऐसा दबाव निर्माण करें कि ऐसे क्षुद्र प्रकाशनों पर सदा के लिए पूर्णत प्रतिबध लग जाए। (मूल मराठी)

२२३ आतरिक अमृतमयी स्नेहपूर्णता जगाना है

श्री ब्रह्मदेव जी, २० माच, १९५८

बहुत से भेद बडे कहलानेवाले नेताओं के ही निर्माण किए होते हैं। उसमें कभी किसी क्षुद्र स्वार्थ से, किसी भावना का प्रक्षोभ खडा कर देने से कटुता उत्पन्न होकर खाई पडने लगती है, बढती जाती है और कालातर से बहुत बडे भेद का रूप लेकर वह उपस्थित होती हैं। स्वभावत समाज की परपरा से, धर्म तथा सस्कृति के एकात्म्य से, जीवन में स्नेह-बधुता ही रहती है। उसे जागृत करना, जागृत रखना, कार्यक्षम तथा कार्यशील रखना और उसे इतना दृढ बनाना कि समय-समय पर ले जानेवाले हीन प्रक्षोभ तथा क्षुद्र भावनाओं के ये उद्रेक या तो उत्पन्न ही न हो सकें, यदि कहीं कुछ मात्रा में आ भी गए तो बहुताशजन उस उद्रेक से घृणा करें, उसके प्रभाव को छिन्न-भिन्न करने की क्षमता से युक्त हों, यह अपना कार्य है। इस कार्य के सिद्धात के ऐसे प्रमाण (पथ, जाति, भाषादि भेदातीत, एकात्म्यपूर्ण राष्ट्र के तत्त्व के प्रमाण) अपने कार्य की

तर्कशुद्धता, विचारशुद्धता को सिद्ध करते हैं, अपनी कार्यश्रद्धा दृढतम बनाते हैं।

इसी श्रद्धा को लेकर अपने सब अग-उपाग चलें। अधिक शक्ति, अधिक समय देनेवाले अधिक व्यक्ति जुटाकर इस आतरिक अमृतमयी स्नेहपूर्णता को जगाने के हेतु सब मिलकर प्रयत्न करें, यही इच्छा है।

२२८ निकटवर्तियो से परामर्श करे

श्री उत्तुरकर, सोलापुर २० मार्च, १९५८

जिस 'यक्ष प्रश्न' का आपने उल्लेख किया है, उस विषय में, आपने सुने और पढे हुए मेरे भाषणों एव लेखों में अभिव्यक्त विचारों के अतिरिक्त मैं और क्या कह सकूँगा? उसकी पुनरुक्ति का प्रयोजन नहीं है। अत उन्हीं विचारों का फिर से स्मरण कर, दैनदिन शाखा के स्वरूप में चलनेवाला सघकार्य, जितनी मात्रा में सभव हो, करते रहें, यही प्रार्थना है।

श्री हपी वकील आपके निकटवर्ती मित्र हैं, ऐसा आपने कहा है। उनको सघ की उत्तम जानकारी है। वे पुराने दृढव्रती निष्ठावान स्वयसेवक हैं। जनसघ का कार्य वे जानते हैं। उस कार्य का उन्हें अनुभव भी है। आपको उन्हीं के द्वारा पूर्ण स्पष्टीकरण प्राप्त हो जाता, परतु दुर्भाग्य से निकटवर्ती लोगों की अवज्ञा करने में आजकल आनद होता दिखाई देता है, और उनकी उपेक्षा करते हुए वरिष्ठ कहे जानेवाले अधिकारी को लिखकर उनसे पत्रोत्तर प्राप्त करने में स्वय की अर्हता की तुष्टि मानकर समाधान होता है। सभवत आपका ऐसा न हुआ हो। (मूल मराठी)

२२५ व्यक्ति का नहीं कार्य का परिचय

श्री पाडुरग नागले, २७ जून, १९५८

आपका पत्र प्राप्त हुआ। मेरा परिचय कर लेने से क्या लाभ होगा, नहीं कहा जा सकता। यथार्थ परिचय अपने कार्य का रहना चाहिए। कार्य के मूलभूत सिद्धात, उसकी विचारधारा, कार्य पद्धति आदि का शुद्ध स्वरूप में परिचय आवश्यक है वह लाभप्रद भी है। इस हेतु नियमित रूप से शाखा में जाना, और आवश्यक अध्ययन करना आदि उपयुक्त रहेगा। व्यक्ति इस नाते मेरे विषय में बिल्कुल विचार न करें। (मूल मराठी)

२२६ सपूर्ण हिंदू-समाज अपना कार्यक्षेत्र है

श्री किसन इनामदार, महाड २७ जून, १९५८

आपका पत्र पढा। उसमें अभिव्यक्त हुई आपकी मन स्थिति का यथार्थ आकलन हो सकता है। अच्छे-अच्छे कार्यकर्ताओं के विषय में भी ऐसा अनेक वार होता है। वुद्धि से आकलन होने पर भी वेसा व्यवहार नहीं होता, तत्त्व जानकर भी उसे जीवन में चरितार्थ करना सभव नहीं होता, ऐसा कहा गया है उसका अनुभव आता रहता है। ऐसी अवस्था में कभी-कभी सर्वसामान्य पारिवारिक जीवन स्वीकार कर उसमें 'यथासाध्य' कार्य करते रहने का 'प्रयास' करना यह एक ही मार्ग रहता है। यह निकृष्ट-सा अवश्य लगता है, परतु मन की पूर्णत श्रात अवस्था में कार्य से निवृत्त होने की अपेक्षा यह अच्छा ही है। इस प्रकार विचार करना आपको आवश्यक है। जिले में कार्य करते समय सर्वस्पर्शी विचार करते रहें। कार्य की महत्ता, उसकी शीघ्र पूर्ति की अपरिहार्य आवश्यकता, कार्य में अपना स्वय का स्थान, कर्तव्य, स्वभाव, और इसी में जीवन-साफल्य है, यह अनुभूति आदि चिंतन-मनन कर अपना विचार स्थिर करें।

मैं कुछ भी आग्रहपूर्वक नहीं कहता, यही और इसी प्रकार करें या अन्य कुछ करें, ऐसा आग्रह भी नहीं करता। आपके हृदयस्थ विशुद्ध प्रेरणा ही आपका सही मार्गदर्शन करेगी।

आप एक वर्ष इस क्षेत्र में रहेंगे। क्षेत्र अच्छा, सघकार्य के अनुकूल है। ग्रामस्थ बधु भी हृदय से अच्छे और उत्साही हैं, ऐसा अनुभव है। कार्यकर्ता बहुत बार नगर या तत्सम स्थान ही अपना कार्यक्षेत्र मानकर समाधान कर लेता है। अत 'ग्रामस्थ लोग' ऐसा हेतुत शब्द-प्रयोग कर नागरी क्षेत्र के कार्य में समाधान मानना उचित नहीं है। सपूर्ण हिंदू-समाज अपना कार्यक्षेत्र है- इसका स्मरण मात्र जागृत करने का मैंने प्रयास किया है। जिले के सब कार्यकर्ताओं में सघकार्य का योग्य दृष्टिकोण निर्माण करना, उनमें उत्साह वृद्धिगत कर इस उत्कृष्ट क्षेत्र में शाखाओं की सख्या, रचना, विचारों की अनुभूति, उपस्थिति, कार्यक्रम, स्वयसेवकों के व्यवहार आदि की दृष्टि से कार्य बढाने हेतु पूर्ण शक्ति लगाकर प्रयास करें। आप जैसे अनुभवी कार्यकर्ता को इससे अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

(मूल मराठी)

२२७ जीवन युद्ध के साधन है

श्री चि विष्णुमोहन   २७ जून, १९५८

यह पत्र लिखने का अवसर प्राप्त होने के कारण आपके हितार्थ कुछ लिखने का प्रयास करता हूँ।

जीवन को एक सघर्ष, याने युद्ध बोला जाता है। सघर्ष में सफल होने के लिए शक्ति अनिवार्य है। शरीर की, मन की, बुद्धि की शक्ति प्राप्त करना आवश्यक है। योग्य नियमित व्यायाम से शरीर की, सब प्रकार के सद्गुणों का चिंतन कर उनको अपने जीवन में लाना तथा इधर-उधर भटकनेवाले मन को जो कार्य जिस समय सामने हो उसमें पूरी प्रकार से लगाने से मन की एव योग्य अध्ययन तथा चिंतन से बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। अच्छा नियम बनाकर प्रतिदिन उसका पालन करना, किसी भी कारण से उसमें बाधा आने नहीं देना बहुत फलदायी होता है। ऐसा करने से स्वस्थ, उत्साहपूर्ण, प्रबल शरीर, एकाग्र मन, कुशाग्र बुद्धि प्राप्त होकर सपूर्ण जीवन सफल और इसी कारण सर्वत्र सम्मान्य होगा। ऐसा आपका हो, इसी इच्छा से श्रेष्ठों के विचार से कुछ उपयोगी अश निकालकर लिखा है।

२२८ स्नेह परस्पर होता ही है

प शिवकुमार द्विवेदी जी, छपरा (बिहार)   २८ जून, १९५८

आपका स्वास्थ्य अब ठीक है, यह पढकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। शरीर के साथ मन का भी स्वास्थ्य आवश्यक है अत आप यह सोचकर चिंता न करें कि आपके सबध में मेरे मन मे किसी प्रकार स्नेह, श्रद्धा आदि मे न्यून आ गया है। जिस आदरयुक्त स्नेह से एक सघ कार्यकर्ता के रूप में मैने प्रथम आपका परिचय प्राप्त किया, वह किसी भी कारण से बदल नहीं सकता और स्नेह परस्पर होता ही है, अत आपके हृदय में हम लोगो के लिए अति प्रेम का स्थान नित्य के लिए बना हुआ है। इसमें कुछ भी सदेह नहीं।

२२६ शाखा-कार्य प्रारंभ करने का तंत्र

श्री शरद गिलाणकर, नासिक २८ जून, १६५८

आपका कार्यक्षेत्र व्यापक हुआ, इसका पता चला। क्षेत्र व्यापक हो जाने के कारण अधिक प्रवास और अधिक परिश्रम करना भी आवश्यक रहेगा। पुराने स्वयंसेवकों की खोज कर, उनका स्वयंसेवकत्व जागृतकर नए व्यक्तियों से मित्रता स्थापित कर उनको स्वयंसेवक के नाते अपने सहकारी बनाने की ओर ध्यान रहे। आपके क्षेत्र में चार तहसीलें हैं। उनमें मध्यवर्ती स्थानों की खोज, वहाँ किसी संबंधित व्यक्ति द्वारा परिचित लोगों की खोज, नए परिचय प्रस्थापित करना, वे धीरे-धीरे संघ के सिद्धांत हृदयंगम करें, इस रीति से उनको समझाने का प्रयास करना, और तत्पश्चात् प्रतिदिन चलनेवाली संघ-शाखा प्रारंभ करना, यह महत्त्वपूर्ण कार्य आपको करना है, इसका नित्य स्मरण रखें। समय-समय पर पत्र से कार्य की जानकारी देते रहें। प्रत्येक मास में कम से कम एक पत्र लिखने का विस्मरण न हो।

(मूल मराठी)

२३० कार्य के प्रति असंदिग्ध श्रद्धा निर्माण करें

श्री विनायकराव आप्टे, संघचालक, पुणे २८ जून, १६५८

सब कार्यकर्तागण एक हृदय होकर प्रयत्नपूर्वक नियमितता, प्रत्येक काम समय पर करने की आदत, अनुशासन आदि आवश्यक सद्गुण वृद्धिगत करेंगे, शारीरिक कार्यक्रमों की हेतुपूर्वक योजना बनाकर विविध कार्यक्रमों के द्वारा उत्साहपूर्ण वायुमंडल प्रस्थापित करेंगे, प्रत्येक स्वयंसेवक से व्यक्तिश:, गटश: या समूहश: विचार-विमर्श कर कार्य के आधारभूत सिद्धांत, रचना, चारों ओर की परिस्थिति, उसमें अपने कार्य की अनिवार्यता आदि अत्यावश्यक विषयों का विवरण करेंगे, इस कार्य में प्रत्येक को स्वकर्तव्य का बोध कराकर अपने निजी प्रयत्नों से कार्य बढ़ाना उसका सहज स्वभाव बने, ऐसा स्वयं अपने जीवन के विचार-व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत कर दिखाएँगे, तो शीघ्र ही कार्य में आमूलाग्र परिवर्तन होगा। प्रत्येक कार्यकर्ता के हृदय में कार्य के प्रति असंदिग्ध श्रद्धा रहने से किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होगा। इस प्रकार चल रहा कार्य देखने का सुअवसर मुझे मिलेगा-- ऐसा विश्वास है।

(मूल मराठी)

२३१ छात्रावास चलाने का मार्गदर्शन

श्री माधवराव जोशी, पुणे (महाराष्ट्र) २ जुलाई, १९५८

मुझे लगता है कि छात्रावास चलाना सरल काम नहीं हैं। कोई पालन करनेवाला और पालन करा लेनेवाला प्रमुख हो। छात्रावास में प्रवेश परखकर दिया जाए एव नियमभग करने पर छात्रावास छोडने का कठोर दड दिया जाए और उसका कडाई से पालन किया जाए। इन सब बातों के साथ ही आचरण करने एव आचरण करवा लेने का माधुर्य हो, तो सब कुछ सहजता से सपन्न हो सकेगा। अपना वातावरण एव उसमें एक परिवार जैसी आत्मीयता की रक्षा कर सके तो बहुत ही उपयोग हो सकेगा।

(मूल मराठी)

२३२ मन स्थिर रखे

श्री पुरुषोत्तम रिसवुड, राहुरी ३ जुलाई, १९५८

मैट्रिक जैसी परीक्षा में असफल होते ही इतनी घबराहट और वैचारिक अस्थिरता अच्छी नहीं है। परीक्षा में तो सफल ही होना चाहिए, परतु यदि दुर्भाग्यवश विपरीत हुआ तो निराश एव गलित-धैर्य न होते हुए अधिक लगन से और सही रीति से अभ्यास कर अगली परीक्षा में यश की प्राप्ति ही योग्य है।

आपके पत्र से लगता है कि आजकल ध्यान देकर सघकार्य करना आपको सभव नहीं होता। यह अनुचित है। यह मन की अस्थिरता का लक्षण माना गया है। मन अस्थिर रहा तो सही रीति से अभ्यास (अध्ययन) भी कैसे सभव होगा?

आपके पत्र से व्यक्त होनेवाला यह निष्कर्ष गलत सिद्ध हुआ, तो मुझे आनद होगा। (मूल मराठी)

२३३ निरपेक्ष मित्रता भाईचारा एकता निर्माण करे

श्री ए रामाराव गारु, राजमहेंद्री (आंध्र) ४ जुलाई, १९५८

'आप जैसे सद्गृहस्थ के द्वारा पुरस्कृत एव आशीष प्राप्त अपना सत्कार्य अच्छी प्रकार चलेगा, इसमें मुझे सदेह नहीं है। मैं अपेक्षा करता हूँ

कि कार्य छोटे ग्रामों तक पहुँचकर लोगों के हृदय में सही विचार, योग्य सकल्पना और सघ के प्रति पूर्ण विश्वास प्रज्ज्वलित करेगा। साथ ही लोगों में सही दिशा में कार्य करने का दृढनिश्चय निर्माण करेगा। में आशा करता हूँ कि निरपेक्ष मित्रता, भाईचारा, अनुशासनयुक्त एकता अपने सभी बधुओं में निर्माण कर एक सशक्त, सुदृढ एव अभेद्य राष्ट्र-जीवन, सपूर्ण देश में, अपने कार्य के द्वारा निर्माण करने में हम सफल सिद्ध होंगे। हम सभी एकत्र होकर, एक हृदय से कार्य करने के दृढ निश्चय से प्रयत्नशील हैं। इसी कारण कार्य निश्चय ही यशस्वी होगा। (मूल अग्रेजी)

२३४ शुद्ध जीवन की उपासना

श्री सत्यपाल जी, ७ जुलाई, १६५८

आपका पत्र मिला। आप जिस समस्या का वर्णन कर रहे हैं, वह सबके सामने आती ही है। आप उसे समझते हैं, इस कारण आपको अधिक कठिनाई नहीं है। नित्य कार्य में रत रहना, पक्षपात विरहित सब स्वयसेवकों से स्नेह रखना, गुणों का मान करना और अपने गुण-दोषों का निष्पक्ष परीक्षण करते हुए मन से भी अनिष्ट चितन न हो, इसकी ओर दत्तचित रहना और सबसे महत्त्व का नियम याने प्रात , साय तथा रात्रि में विश्राम के पूर्व भगवान का स्मरण, चितन करना– इससे बहुत लाभ होगा। साथ ही जब-जब खाली समय रहे, कार्य के लिए उपयोगी साहित्य का, पवित्र ग्रथों का, शुद्ध जीवन चारित्र्य का अध्ययन करने में न चूकना अच्छा रहेगा। मन पर नियत्रण रखने के हेतु यह सब प्रयास तथा भौतिक वासना की तृप्ति से जो सुख का आभास होता है, उसके दोषों की चिरकालिकता एव हानिकारकता के नित्य चितन से उन वासनाओं के प्रति सच्ची घृणा के भाव को हृदय में स्थिर करना आवश्यक होने से, उसका विचार नित्य जागृत रखना अत्यत आवश्यक है। ऐसा करते ही रहना चाहिए। मन अपने नियत्रण में आ गया है, इस प्रकार दुरभिमान लेकर अभ्यास खडित होने देना सकटकर है। मन को निरहकार कर, लीनता से शुद्ध जीवन की प्रार्थना, श्री परमात्मा से तथा जिन महापुरुषों पर श्रद्धा है, उनकी स्मृति जगाकर उनसे चलती रहे, तो सब आपत्तियों से तर कर उत्तम कार्य करने के लिए आवश्यक पवित्र शीलसपन्नता का लाभ होगा। प्रयत्न करके देखें। भगवत्कृपा से सब ठीक हो जाएगा।

शिक्षा वर्ग में आपसे भेंट होगी ही, तब अपनी प्रगति का वृत्त अवश्य सुनाएँ।

२३५ स्थानीय स्वयसेवको पर कार्य का दायित्व सौंपे

श्री राजू भोंसले, कोल्हापुर ६ जुलाई, १६५८

इस वर्ष अपना कार्य सुदृढ एव विस्तृत करने का प्रयत्न अधिक तेजी से करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। स्थानीय स्वयसेवकों के द्वारा स्थायी स्वरूप का कार्य होता रहे, ऐसा प्रयत्न लाभप्रद सिद्ध होगा। विभिन्न स्थानों के कार्यकर्ताओं को अपना क्षेत्र और निकटवर्ती महत्त्वपूर्ण स्थानों का स्मरण रखकर अपनी कार्यनिष्ठा एव कर्तृत्व पर निर्भर रहकर वहाँ नित्य नियमित रूप में चलनेवाली शाखाओं का सचालन करना चाहिए, ऐसी अपने कार्य की वास्तविक रचना है। इन शाखाओं में एव कार्यकर्ताओं में एकसूत्रता रखने हेतु कुछ प्रवास करनेवाले प्रचारक और तत्सम कार्यकर्ता चाहिए, परतु दैनदिन शाखा के सचालन का भार इन प्रवास करनेवाले कार्यकर्ताओं पर रहना अनुचित है, ऐसा अपना विचार है। इसका स्मरण रखकर, शाखा के सचालन की पात्रता और क्षमता होते हुए भी स्थानीय स्वयसेवकों को अधिक कार्यक्षम बनाकर कार्य का दायित्व स्वीकार करने हेतु उनकी सिद्धता करें। (मूल मराठी)

२३६ सवाद के लिए परस्पर विश्वास आवश्यक

श्री केसरसिह जी, रोहतक (हरियाणा) २५ जुलाई १६५८

बातचीत में आपका समाधान मैं कर सकूँगा या नहीं, यह तो परमात्मा ही जाने। किन्तु आपको लाजवाब करने का ढग मैं अपनाऊँगा यह जो मेरे प्रति आपने विश्वास अपने पत्र में प्रकट किया है, उसे ध्यान में रखते हुए मुझे कुछ ऐसा लगता है कि में आपका समाधान नहीं कर सकूँगा। आप भी मेरे प्रति इस भावना को लेकर बातचीत करने आएँगे तो कितनी भी बातचीत हुई, तो भी उसमें से कुछ फल निकलने की आशा दिखती नहीं। आपके प्रति जो स्नेह तथा विश्वास मैं मन में रखता हूँ, वैसा मेरे प्रति आपके मन में न होने के कारण ही यह लिखना पडा है। मैं तो श्री भगवान से प्रार्थना करता रहूँगा कि अपना परस्पर स्नेह, आत्मीयता एव विश्वास रहे तथा वह अटूट रहे।

२३७ व्यक्तिनिरपेक्ष कार्यनिष्ठा का पोषण हो

श्री गोपाल वाकरे, पटना   १६ अगस्त, १९५८

यह वहुत ही हर्ष का विषय है कि आप अपने नए क्षेत्र से परिचित हो चुके हैं एव परिचय प्राप्त कर उससे घुलमिल जाने के मार्ग पर वढ रहे हैं। क्षेत्र वडा है। केवल एक बार ही वहाँ थोडा-वहुत उत्साह उफन आया था। वह इस वर्ष पूर्व के झझावत में ठडा पड गया। वह अभी तक पुन उभरकर नहीं आया। क्षेत्र वहुत अच्छा है। योग्य प्रयत्न चालू रहे, तो दो-तीन वर्षों में अभिनदनीय प्रगति होगी। शीघ्रता करेंगे तो कदाचित् अस्थायी सख्या वृद्धि होने में विलव नहीं लगेगा, परतु वह प्रगति दिखाऊ एव अल्पजीवी होना अधिक सभव है एव यदि पुन फिसलन शुरू हो जाए तो आगे योग्य वृद्धि होने में अधिक वाधाएँ पैदा होंगी। शीघ्र उत्साहित होना एव वाद में उत्साहरहित होकर कृतिहीन होना, यह तो अनेकों का स्वभाव-दोष होता है। इसका ज्ञान रखकर काम करने से योग्य फल-प्राप्ति होगी। पुराने लोगों से स्नेहादरपूर्वक सवध प्रस्थापित कर, नए लोगों को कार्य से सलग्न करते हुए व्यक्तिनिरपेक्ष कार्यनिष्ठा का ही पोषण किया जाएगा, इस ओर ध्यान रहना अत्यत आवश्यक है। उत्तम काम की दृष्टि से यह आवश्यक है कि काम की जमावट में नए आनेवालों का उत्साह किसके आस-पास केंद्रित होता है यह देखना एव स्वय को ही किसी के उत्साह का कारण एव आश्रय-स्थान न वनने देना। आप पुराने एव अनुभवी हैं। इसलिए यह नहीं कि मैं आपको कुछ वताऊँ, परतु लिखने के प्रवाह में जो सूझा वह लिख दिया। (मूल मराठी)

२३८ वृत्तरूप पत्र नहीं, पत्ररूप वृत्त लिखे

श्री रामभाऊ आठवले, सातारा   १८ अगस्त, १९५८

आपका भेजा हुआ वृत्त-रूप पत्र देखा। जिसे अँग्रेजी में 'ऑफीशियल' कहा गया है, ऐसी औपचारिकता व्यक्त करनेवाला पत्र देखकर मनोरजन हुआ। अपने परमपूजनीय डाक्टर जी के कथन का स्मरण हुआ कि पत्र-रूप वृत्त लिखकर भेजने से आत्मीयता– जो सघकाय का स्थायी भाव है– स्वभावत अभिव्यक्त होती है, वढती है। जैसा हम पारिवारिक जीवन में व्यवहार करते हैं, वैसा ही हम देशव्यापी सघस्वरूप परिवार में करें। प्रवास-निमित्त या किसी कारणवश अन्य स्थान में रहना आवश्यक हो

पर हम घरेलु पद्धति से, स्वाभाविक स्नेहमयी भावना से पूर्ण वृत्त निवेदन करने हेतु लिखकर घर भेजते हैं। इसी प्रकार अपने देशव्यापी सघ परिवार में पारस्परिक व्यवहार स्वभावत होने चाहिए। आपसे प्रेषित इस वृत्त-रूप पत्र से यह पुराना स्मरण जागृत होकर मेरे मन को अतीव सुखकर लग रहा है। यह सुख-प्राप्ति आपके ही कारण हुई, इसलिए आपके प्रति अत्यत कृतज्ञता अनुभव कर रहा हूँ।

(मूल मराठी)

२३६ प्रचारक को मार्गदर्शन

१८ अगस्त, १६५८

श्री आर नवनीत कृष्णन, नगरकोईल (तमिलनाडु)

अब तक अपने नये क्षेत्र में समरस होकर प्रचारक के काम का परिचय और अनुभव आप कर रहे होंगे, ऐसा विश्वास है। स्वय सदा कार्यरत रहते हुए स्वयसेवकों को प्रेरणा तथा मार्गदर्शन देने हेतु, अपने कार्य के सिद्धात एव कार्यपद्धति का गहरा अध्ययन तथा हृदय में अपने श्रेष्ठ कार्य के प्रति असदिग्ध निष्ठा आवश्यक है। इसी प्रकार आपने कार्य का प्रारभ किया होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। इसलिए आप प्रचारक के रूप में यशस्वी होकर, नगरकोईल ओर प्रमुख जिलास्थानों पर स्थायी रूप से चलनेवाली सघ शाखाएँ प्रारभ करेंगे, ऐसा विश्वास है।

सब स्वयसेवकों से आपको उत्साहपूर्ण सहयोग मिल रहा है, यह समाचार सतोषजनक है। ऐसा ही होना चाहिए। इसके व्यतिरिक्त स्वयसेवकों से दूसरी कोई अपेक्षा नहीं रहती। ऐसी परिस्थिति में श्री गोपालकृष्ण पिल्लै के दु खद अचानक स्वर्गवास से हमारे काय को जो हानि पहुँची है, उससे मन व्यथित हो रहा हे। उनकी स्मृति हृदयों में धारण करते हुए, कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने कार्य को आगे बढाने में कोई कसर नहीं छोडी, उस कार्य को हमें चलाना है। उनके परिश्रम से अपना कार्य भावी कार्यकताओं के लिए अधिक सरल एव सहज बन गया है।

अपना कार्य उत्साहपूर्वक करें। कार्य करने के उत्साह में अपने शारीरिक स्वास्थ्य एव मन शाति की ओर दुर्लक्ष्य न रहे।

(मूल अग्रेजी)

प सातवलेकर जी, सूरत १६ अगस्त, १६५८

आपसे हम सब लोगों को अत्यधिक उत्साह की प्राप्ति होती है। आपको देख स्वय के अकर्मण्य जीवन की लज्जा उत्पन्न होती है। आवेश का सचार होता है। निरलस कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। वह हमें आपसे बहुत काल तक मिलती रहे, यह विचार स्वार्थी प्रतीत होगा, फिर भी वह योग्य है। अन्य अनेक लोग दीर्घायु हैं, परतु आपका जीवन हमें आदर्शरूप तथा प्रेरक है। इसलिए हमारी ऐसी उत्कट इच्छा है कि आपका जीवन आपके पूर्वकालीन आदर्श के अनुसार पूर्ण बने और पूर्ण रहे। श्रीप्रभु के चरणों में वही हमारी नित्य साग्रह प्रार्थना है।

२४१ सहायता करना अपने कार्य का स्वाभाविक परिणाम

डा काका साहब जोशी, रत्नागिरी १६ अगस्त, १६५८

अतिवृष्टि के कारण रत्नागिरि जिले में जन-जीवन पर हुए आघात का वृत्त आपके पत्र से तथा साथ सलग्न श्री वसतराव केलकर के पत्र से ज्ञात हुआ। प्रवास में पुणे में था तब माननीय काशीनाथपत लिमये से ऑखों देखा वृत्त भी सुनने को मिला।

सब दु खी बाधवों की आपने तथा अपने अन्य सहकारियों ने यथासभव सहायता की, यह तो उचित ही हुआ। ऐसे तात्कालिक कार्य तो करने ही चाहिए। परतु उसकी प्रसिद्धि आवश्यक नहीं है और सच्चा कार्य यही है, ऐसी भ्रमपूर्ण धारणा भी न हो। समाज की एकात्म राष्ट्रीय अस्मिता जागृत कर उसे नित्य जागृतावस्था में रखते हुए उसका सुसगठित, बलसपन्न स्वरूप दुनिया के सम्मुख सदैव विद्यमान रहे, यही अपना स्थायी कार्य है। आपत्काल में स्वभावत सहायता करना अपने इस कार्य का अल्प-सा एक स्वाभाविक परिणाम है। यह महत्त्वपूर्ण तथ्य हृदयगम कर सब स्वयसेवक बधु सहायता-कार्य में जुट गए, यह सुनकर और आपके पत्र में उसका वृत्त पढकर अतीव सतोष हुआ। अब तक वहाँ का जीवन सामान्य बन गया होगा, ऐसा विश्वास है।

(मूल मराठी)

२४२ काग्रेस की सदस्यता सघ-कार्य मे बाधक नहीं

श्री हरिबाबू, कटक — १६ अगस्त, १६५८

आपके काग्रेस में सम्मिलित होने से, एक ज्येष्ट स्वयसेवक इस नाते कटक शाखा को मार्गदर्शन करने में कुछ बाधा निर्माण होगी, ऐसा मैं नहीं मानता। कारण, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का स्वयसेवक और साथ ही काग्रेस का सदस्य रहने में कोई विरोधाभास नहीं है। किसी राजकीय दल का केवल सदस्य बनने से कोई व्यक्ति अपने हिंदुत्व का त्याग नहीं करता। यदि कोई राजकीय दल इस तरह की कपोलकल्पित अपेक्षा करता है, तो किसी भी सज्जन, स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए वह सर्वथा त्याज्य ही रहना चाहिए। मेरी ऐसी धारणा है कि काग्रेसजन इतने अविचारी नहीं हैं कि वे आपसे अपने हिदुत्व तथा हिदू-समाज एव सस्कृति के सेवाकार्य को छोडने की अपेक्षा करेंगे। (मूल अग्रेजी)

२४३ समाज सगठित व शक्ति सपन्न हो

श्री महादेव बुवा वैद्य, — १६.०८.१६५८

अपने धर्म सेवाश्रम कार्य के साथ आप सघकार्य की सहायता करते हैं, यह जानकारी मुझे थी।

श्री भालचद्र सातर्डेकर इस प्रकार कार्य करने में अनुभवी होने पर भी भरसक प्रयत्न तो अवश्य ही करेंगे। उसे आत्मीयता से प्रोत्साहित कर विचार-समृद्धि हेतु और अन्य स्वयसेवकों को सुयोग्य व्यवहार करने हेतु कृपया मार्गदर्शनस्वरूप सहायता करते रहें। इसी से अपनी अपेक्षा के अनुरूप कार्य बढेगा, इसमें सदेह नहीं।

आज के वायुमडल में स्वत्वशून्यता, परिणामस्वरूप अहिदुता यही मानो तथाकथित शिक्षित एव सुज्ञ लोगों के स्वाभिमान का विषय बना है और यही लोग सही समाज-शिक्षा के अभाव में स्वत्व ज्ञान शून्य, परतु भोली-भाली हिदुता के अभिमानी हैं। अलगाव की प्रवृत्ति मानो बचपन से ही उनमें विद्यमान है। यह न्यूनता नष्ट कर अपना समाज स्वाभिमानी, पराक्रमी, आत्मविश्वास सपन्न सुसगठित एव बलशाली बने और इसी से सब प्रकार की वैभव-सपन्नता के साथ आतरिक श्रेष्ट सद्गुणों के कारण दुनिया में वह अग्रगण्य बने, इसी हेतु सघ का यह सब प्रयास है। अवनति

की ओर तेजी से बढनेवाले अपने समाज को रोकने का सामर्थ्य अपने सगठन में अति शीघ्र निर्माण हो, इसलिए अपार प्रयास करते हुए काम में लगन से जुट जाने की आवश्यकता है। इस कार्य में अपना अनमोल हिस्सा अनुभव कर कृपया सब प्रकार से सहायता करें, यही आपसे अनुरोध है।

(मूल मराठी)

२४४ जीवन रचना मे परिवर्तन की असभावना

श्री काशीनाथपत लिमये, सागली (महाराष्ट्र) १६ अगस्त, १६५८

आपके पत्र का दूसरा एव महत्त्वपूर्ण विषय बहुत पुराना है। हम सब प्रयत्न करते हैं परतु एक बार जीवन की रचना हो जाने पर उसमें परिवर्तन करना असभव सा हो जाता है। मामूली उपजीविका-प्रधान गृहस्थ-जीवन होता तो उसे बदल डालने के लिए मुझे तो भी दिक्कत महसूस नहीं होती। परतु सप्रति ऐसा हुआ है कि जिस जीवन का स्वीकार किया है, वह क्या है— आप जानते ही हैं। उसमें बदल करने को मन कदापि हिम्मत नहीं कर सकता है। फिर भी आपके कथनानुसार जहाँ तक बन सके, प्रयत्न किया जाए— ऐसा यहाँ के बडे लोगों का भी कहना है। देखें, परमेश्वर की कृपा से क्या होता है।

(मूल मराठी)

२४५ सुसगठित समाज ही समस्याओ का हल

श्री नानकराम इसरानी, अजमेर २० अगस्त, १६५८

अपने समाज की भावनाओं पर इस प्रकार आघात करने की इच्छा तथा साहस पृथ्वी के अन्य समाजों को क्यों होता है, इसका विचार करेंगे, तो नित्य स्वाभिमानपूर्ण जागृत एव सुसगठित शक्तिशाली जीवन का अपने समाज में अभाव है, यही कारण ध्यान में आ सकेगा। इस अभाव को दूर करना ही प्रथम तथा सर्वप्रमुख कार्य है। समय-समय पर के प्रश्नों को लेकर तात्कालिक आदोलन आदि आवश्यक हो जाते हैं, परतु ऐसे कार्य तभी करने पडते हैं, जब स्वाभिमानी सामर्थ्ययुक्त समाज-जीवन नहीं होता। इसी तथ्य को समझकर सब स्वयसेवक बधु अपने सघकार्य में जुट जाएँ, तो सब चित्र बदलने में समय नहीं लगेगा।

२४६ पू. डाक्टर जी का चरित्रग्रथ

श्री नाना पालकर, मुंबई २१ अगस्त, १६५८

आपने वह पुस्तक (पू डाक्टर जी का चरित्र) यथाशक्ति सर्वांगपूर्ण करने के लिए अब तक जो परिश्रम किए हैं, उसमें और थोडा जोड देने से एक उत्तम चरित्र-ग्रथ के नाते आपका लेखन मान्यता प्राप्त करेगा। वर्तमान स्वरूप में भी ग्रथ की वैसी योग्यता है ही, परतु अपनी दृष्टि से सारे सदर्भ व्यवस्थित होने चाहिए, निष्कर्ष विशुद्ध होने चाहिए। कुछ घटनाओं की कारण-परपरा वर्ण्य विषय के जीवन-सूत्र को पकडकर हो तो ग्रथ में कोई न्यूनता नहीं रह पाएगी। आपने जितनी जानकारी, सस्मरण आदि का सकलन किया है वह पूरी की पूरी सामग्री चरित्र ग्रथ में नहीं आ सकने से एव प्रत्येक पाठक को कुछ विशिष्ट सस्मरण अधिक रोचक होने से, वे ग्रथ में होते तो अच्छा होता, यह लगना मनुष्य स्वभाव है। कोई-कोई लोग न्यूनता दिखा सकेंगे, परतु मुझे लगता है कि आपके परिश्रम सफल हुए हैं। वस्तु-निर्माण करने के पश्चात् उसे पॉलिश देना पडता है, वैसा ही थोडा सफाई का हाथ घुमाया तो समझें कि काम पूरा हुआ। (मूल मराठी)

२४७ अनुकूल समय की प्रतीक्षा आवश्यक

श्री बड्डु जोशी, २८ अगस्त, १६५८

लगन से कार्य करने की आपकी इच्छा सुस्पष्ट है। परतु प्रत्येक काम को काल की अनुकूलता अपेक्षित है। आपकी इच्छा तीव्रतम होकर भी अनुकूलता तो ईश्वरकृपा से ही आती है। अत जल्दबाजी निरुपयोगी है। अनुकूल समय की प्रतीक्षा आवश्यक है। अपना सघकार्य विस्तृत एव विकसित हो रहा है। जीवन के सब पहलुओं का विचार उसमें सकलित रूप में यथासमय प्रकट होगा। इसी बीच अकारण बाधा निर्माण हुई, तो कुछ अधिक समय लग सकता है। जीवन में ऐसा ही होता हैं। परतु इसका विचार करते रहना और निष्क्रिय हो बैठना निरर्थक है। अपनी पद्धति से और योजना से कदम बढाते रहना चाहिए। मेरे सहकारियों को मैं इसी प्रकार कहता हूँ। कभी-कभी साश्चर्य दु ख इसी बात का होता है कि किसी क्षेत्र में सहकार्य करने से लाभ होगा– इस विश्वास से वैसी अपेक्षा की, तो सभी क्षेत्रों से अधिकाधिक बाधाएँ निर्माण करने का प्रयास होता है,

अकारण भ्रमपूर्ण धारणाएँ भी निर्माण होती हैं। परतु इसका भी कारण अनुकूल समय उपस्थित न करने की परमात्मा की योजना होगी, ऐसा लगता है।

अत अनुकूल समय की प्रतीक्षा कर, वह शीघ्र उपस्थित हो, इसलिए शुद्ध हृदय से पारस्परिक सौहार्द जागृत करने का प्रयास करते हुए स्वक्षेत्र में निरलसता से कार्य करते रहना, परिश्रमपूर्वक प्रयत्न कर आगे बढते रहना-- यही युक्त एव लाभदायी सिद्ध होगा। (मूल मराठी)

२४८ बाधाएँ-धैर्य की परीक्षा मात्र

श्री गजानन देसाई, ३१ अगस्त, १९५८

घरेलू बाधाएँ आती हैं, आनी ही चाहिए। कई परिवार सुखी दिखाई देते हैं, परतु उन्हें कितनी ही आपत्तियों से सघर्ष करना पडता है। कार्यकर्ता के सम्मुख अनेक घरेलू बाधाएँ एकत्रित खडी होकर गभीर स्वरूप धारण करती हैं, मानो श्री परमेश्वर अपनी परीक्षा लेता हो। परतु 'परम कृपालु परमात्मा आपत्तियाँ लाकर अपने अल्प-से धैर्य की परीक्षा कर देखता है।' इसलिए उसपर पूर्ण विश्वास रखकर स्वकर्तव्यरत रहनेवाले कार्यकर्ता के मार्ग से सभी बाधाएँ विनायास नष्ट हो जाती हैं। (मूल मराठी)

२४९ सर्वेषा अविरोधेन

श्री चद्रगुप्त जी, रायपुर ३१ अगस्त, १९५८

अपने कार्य का सूत्र 'सर्वेषा अविरोधेन' ऐसा है। आप तो आजकल के शासन को ऐसे शब्दों से सबोधित करते हैं, मानो आप कोई राजनैतिक विरोधी दल के हल्के दर्जे के व्यक्ति हों। यह असद्भाव छोड देना आवश्यक है। सगठन का कार्य शात चित्त से, शुद्ध चरित्र से, लगन से, श्रद्धा से, अविरत परिश्रमपूर्वक एक-एक व्यक्ति को स्नेह, राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, समर्पण भाव आदि के दृढ सूत्रों से बाँधकर एकरस जीवन निर्माण से होता है। अन्य कार्यों के प्रति द्वेष, घृणा, शत्रुता इत्यादि प्रकार की दुष्ट भावनाओं को हृदय में रखने से शुद्ध कार्य कभी निर्माण नहीं हो सकता।

ऐसा सोचकर कार्य करने में जुटें, यही आपसे मेरी नम्र प्रार्थना है।

२५० निंदा-स्तुति से अलिप्त रहे

श्री दिनकर दातार, ३१ अगस्त, १६५८

आप एक अच्छे अनुभवी कार्यकर्ता हैं। अनेकों को प्रभावित कर कार्यार्थ उत्स्फूर्त करनेवाले सद्गुण आप में विद्यमान हैं। वक्तृत्व, अपने ध्येय की अनुभूति, कार्य करने की लगन आदि गुणों के कारण आप जैसे कार्यकर्ता बनने की स्वाभाविक इच्छा अनेक स्वयसेवकों में निर्माण हो, ऐसा आपका व्यक्तित्व है। परतु आपने परिस्थितिवश उद्विग्न होकर मानो चिढकर अपने चारों ओर के व्यक्तियों के विषय में जो लिखा है, उससे मेरा मन कुछ दु खी हुआ है। आदर्श व्यक्तित्व में 'तुल्य निंदा स्तुति' यह गुण अपेक्षित है। इसी आशय के (सुनीतिमान निंदा करें या प्रशसा करें) आदि मराठी श्लोकों में ऐसे ही आदर्श व्यक्तित्व का वर्णन है। हमसे कोई अच्छा व्यवहार करता है या बुरा, हमारा व्यक्तित्व पहचान कर व्यवहार योग्य करता है या नहीं, हमें अनुयायी प्राप्त होकर वे हमारी प्रतिष्ठा की कद्र करते हैं या नहीं, आदि प्रश्न जब मन में निर्माण होते हैं, तब सघ के अच्छे कार्यकर्ता या व्यक्तित्व जिन सद्गुणों के कारण बनता है, उनका स्मरण करें। सद्गुणी कार्यकर्ता कर्मकठोर बनकर अपने ध्येयपथ पर अग्रसर होनेवाला सुख-दु ख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति से सर्वथा अलिप्त रहनेवाला, परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, सानद उत्साही रहनेवाला, उपहास करनेवालों में भी अपने प्रसन्न हृदय व्यवहार से आत्मीयता निर्माण करनेवाला होता है। उसका स्मरण रखकर व्यवहार करना उपयुक्त है।

हम सब सघ के स्वयसेवक हैं। हमारे सम्मुख अपने परमपूजनीय डाक्टर जी का आदर्श नहीं है क्या? अन्यत्र सार्वजनिक क्षेत्र में जिस प्रकार तथाकथित नेता लोग हमें दिखाई देते हैं, वैसे बनने की अभिलाषा मन में निर्माण होती है क्या? कार्य करते समय उपेक्षा हो जाने पर उदास हो जाना, क्रोध करना, रूठना आदि गुण स्वयसेवकों की विशेषता नहीं है और न ही रहनी चाहिए। इन सब बातों को आप जानते हैं, अनेकों को यह आपने कहा भी होगा। इस विषय में सोचने पर आपके पिछले पत्र से कुछ मित्र दु खी क्यों हुए आप स्वय ही स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।

किन्तु मैंने वह पत्र रख दिया। मनुष्य उद्विग्न हो जाने पर जो मन में नहीं है, वह भी कभी-कभी कह देता है, वैसा व्यवहार भी करता है। ऐसा ही आपका हुआ होगा, ऐसा मुझे लगता है। अपने स्वकीय बधुओं के साथ विचार-विनिमय कर फिर से अपने कार्यक्षेत्र में आ जाना उचित रहेगा। इसमें अकारण विलब न हो।

पूज्य विनोबा जी से हुई आपकी बातचीत का पता चला। क्या सभव होगा, इसकी प्रतीक्षा ही करनी पडेगी। मेरा विश्वास है कि अपना कार्य ईश्वरीय इच्छा से एव प्रेरणा से ही चलता है। अत वह जैसी प्रेरणा करेगा, वैसा ही होगा, केवल अनिष्ट बातों के ही सबध में यह नियम है कि अमुक यह न करें। जो सत्त्वगुणसपन्न व हितकारी हो, उसे करने में कार्य की मर्यादा का उल्लघन नहीं है, परतु अत प्रेरणा की प्रतीक्षा आवश्यक है। (मूल मराठी)

२५१ अच्छी जनोपयोगी सस्था खडी करना

श्री श्रीकृष्ण त्रिवेदी, दिल्ली ३१ अगस्त, १९५८

ईश्वर पर सब छोड अपना कार्य चलाते रहने से योग्य समय पर सब प्राप्त होता है, ऐसा अपने कार्य में हम लोगों का अनुभव है। दिन में दोनों समय भरपेट खाना भी नहीं था तो भी किसी से कुछ न मॉगकर कार्य चलाया गया और आज भी कार्य में सब प्रकार का धनाभाव नित्य रहते हुए भी श्रीपरमात्मा कार्य को करा ले रहा है। यही विचार सम्मुख रखकर चलने से ही अच्छी जनोपयोगी सस्था खडी हो सकती है, यही हम लोगों को सिखाया गया है।

यह केवल अनुभव के नाते लिखा है। उपदेश करने का मेरा अधिकार नहीं है और लिखने का यह उद्देश्य भी नहीं है। श्रीपरमात्मा की कृपा से आपके सुयोग्य कार्य में योग्य सफलता मिलें।

२५२ विकार-विचारो का लेखा जोखा ले

श्री वसतराव कुटे, जलगॉव (महाराष्ट्र) ३१ अगस्त, १९५८

अपने स्वास्थ्य की चिता करें। यथासभव दिनचर्या में नियमितता हो। थोडा चितन, आत्मनिरीक्षण करते रहें। प्रतिदिन किए गए काम का

मन में उठनेवाले विकार-विचारों का लेखा जोखा लें। जो अनिष्ट लगे, उसे निकाल डालने का निश्चय कर तदर्थ परमेश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना करें एव दिन-पर-दिन अधिक कार्यक्षम, अधिक कार्यरत होते रहें। यह आपको कहने की आवश्यकता नहीं है कि अच्छे निश्चयी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। (मूल मराठी)

२५३ उत्साह स्थायी रहे

श्री पुसाराम माहेश्वरी, नदुरबार ३ सितबर, १९५८

किसी उत्सव निमित्त निर्माण हुआ उत्साह तात्कालिक रहता है। उत्सव समारोह अच्छा हो जाने पर सतुष्ट बनने की अपनी प्रथा नहीं है। उससे उत्पन्न उत्साह के कारण दैनिक शाखाओं की सख्या, उत्तम कार्यक्रम, नियमबद्धता, अनुशासन, पारस्परिक व्यवहार में शुद्धता एव स्नेह, दैनिक कार्यार्थ आवश्यक उद्यमशीलता, जिन सद्गुणों को धारण कर व्यवहार करने से अपने विचारो का प्रभाव बढेगा, उन सद्गुणों की प्राप्ति का प्रयत्न, इसकी ओर आपका ध्यान रहना आवश्यक है। धीरे-धीरे क्यो न हो, परतु इस प्रकार कार्य की सर्वांगीण प्रगति करने में कुछ भी त्रुटि न रह पाए।

२५४ नियमित व व्यवस्थित शाखा द्वारा कार्ययश

श्री सुरेश केलकर, पुणे (महाराष्ट्र) ७ सितबर, १९५८

नियमितता से एव पद्धति से शाखा चलाते समय, हृदय में सघकार्य का नित्य स्फुरण होता रहेगा, ऐसी शुद्ध भावनाएँ निर्माण होती रहेंगी एव वे चिरजीवी होंगी इस ओर ध्यान रखा तो कार्य मे किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं रहेगी। इससे यह सच है कि शाखाएँ चलेंगी एव बढेंगी, साथ ही केवल सघकार्य करने का ही निश्चय कर सब मोह एव अन्य काम एक ओर रखकर आगे आनेवाले अच्छे जानकार कार्यकर्ता भी प्राप्त होते जाएँगे। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि कार्य का यश इसी मे है।

(मूल मराठी)

२५५ रक्षाबधन के स्नेहसूत्र का बोध

श्री बलभद्रसिह राणा, लिवडी (गुजरात) ६ सितबर, १६५८

पत्र रक्षाबधन के सूत्र के साथ मिला। बहुत प्रसन्नता हुई। यह स्नेहसूत्र अनुशासन तथा राष्ट्रभक्ति से सुदृढ कर अपने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को एक साथ बॉध सके, इतना विस्तृत करना अपना काम हे। अपने सघ की दैनदिन शाखाओं द्वारा, स्वयसेवकों के मिलनसार शुद्ध व्यवहार द्वारा यह काम हो सकेगा। अत शाखा की वृद्धि, उत्तम कार्यक्रमों से उत्साह एव अनुशासन का निर्माण, नित्य विचार-चितन से विशुद्ध राष्ट्र-जीवन का ज्ञान, तदर्थ समर्पण भावना से कार्यरत रहने के लिए आवश्यक भक्ति, श्रद्धा, निष्ठा का हृदय में स्थायी रूप से उदय और स्नेहपूर्ण सेवाव्रत द्वारा सब समाज बधुओं के साथ अत करण का मिलन– इन बातों को ध्यान में रखकर कार्य करने में सर्व शक्ति लगाना आवश्यक है। अपने लिवडी शाखा के सब स्वयसेवक बधु यह सोचकर कार्यरत रहें।

२५६ वास्तविक कारणो की खोज

श्री श्रीधर आचार्य, बोलगीर (उत्कल) ६ सितबर, १६५८

यह सच है कि कार्य का प्रत्यक्ष स्वरूप अपेक्षा के अनुसार खडा नहीं हो रहा हे। यह भी सच है कि कार्य करनेवालों का स्थायी एव वर्षानुवर्ष बढता हुआ समूह जुटाना कठिन है एव वैसा अभी तक नहीं हुआ है। परतु उससे निराश होना, स्वय को अनावश्यक एव अकारण कोसना सर्वथा अयोग्य है। वास्तविकता से कारणों को खोज निकालना चाहिए एव उसमें स्वय की मानसिकता भी विचार में लेनी चाहिए। जो कारण अपने हाथ में हैं, उन्हें दूर करने की योजना हाथ में लेनी चाहिए। इससे लाभ होगा। केवल अपने को दोष देकर, निराश होकर अकर्मण्यता की ओर झुकना किस काम का है?

अनेक वार कार्य करते समय उसका कुछ भी फल दिखाई नहीं देता है। परतु यह कदापि न भूलें कि कार्यकर्ता फल प्राप्त होगा या नहीं, इस विचार से हतबुद्ध न होकर, फल का भार ईश्वर पर डालकर, शुद्ध अत करण से विचारपूर्वक स्वीकृत ध्येय पर एव उसके निमित्त निर्धारित मार्ग पर दृढ रहता है। (मूल मराठी)

२५७ सबको काम मे लगाएँ

श्री वसतराव कुटे, जलगाँव(महाराष्ट्र) १० सितवर, १६५८

सभी प्रत्यक्ष काम करनेवाले स्वयसेवक बधुओं को अपने निष्क्रिय दिखनेवाले बधुओं को शाखा में आने को प्रवृत्त करना आवश्यक है। उसी प्रकार यह ज्ञान रखकर कि नए-पुराने स्वयसेवकों के अतिरिक्त बहुत बडा समाज चारों ओर फैला हुआ है, उसमें हिल-मिलकर शीघ्र अनुकूल हो सकनेवाले व्यक्तियों को खोजकर उन्हें प्रतिदिन चलनेवाले शाखा के कार्य की ओर आकर्षित करते रहना अत्यत आवश्यक है। आप अपनी शाखा के बधुओं को इस प्रकार कार्यप्रवण करेंगे ही।

(मूल मराठी)

२५८ सगठित शक्ति समाज के लिए अनिवार्य

श्री वासुदेव गाडगे, खापा (जि नागपुर) ११ सितवर, १६५८

अपनी खापा की शाखा बहुत पुरानी है। बहुत से स्वयसेवक हैं। इसलिए प्रतिदिन उत्तम शाखा (प्रभात एव साय) चलना कठिन नहीं है। आलस झटकना आवश्यक है। सगठित शक्ति के बिना अपने हिंदू-समाज को चारा नहीं है। चारों ओर सकट छाए हुए हैं। रोज के जीवन में दु ख-दैन्य है ही। समाज के भीतर एव बाहर से शत्रुत्व करनेवालों की सख्या बढ रही है। इन सब सकटों का सामना कर अपना समाज अपने पैरों पर स्वाभिमान से खडा होकर यशस्वी एव सुखी होगा, इसके लिए आलस छोडकर उत्साह से शक्ति सचय करने के लिए मेहनत करना हम सबका कर्तव्य है। अपने सघ की रोज नियम से समय पर चलनेवाली शाखाओं में से परस्पर सहयोग, मेल, प्रेम, एक-दूसरे की नित्य सहायता करते रहने का शुद्ध व्यवहार एव उत्तम अनुशासन पेदा करने का काम होता है। यह काम इसी प्रकार होना चाहिए। इस ओर ध्यान देकर प्रतिदिन अच्छे कार्यक्रम चलाना एव सख्या आदि की दृष्टि से शाखा वजनदार करना सब स्वयसेवकों का कर्तव्य है। इन बातों का सबको स्मरण दिलाकर, समझा-बुझाकर शाखाएँ अच्छी करें।

(मूल मराठी)

२५९ राष्ट्रहितैषी व्यक्ति के सम्मुख कर्तव्य

श्री साधनचद्र सेन ११ सितवर, १९५८

सब दूर की परिस्थिति साधारणत एक जैसी ही रहती है। कुछ निसर्ग के खेल कुछ मात्रा में भिन्न-भिन्न होते हैं। उनके परिणाम सहकर उन्नति-मार्ग प्रशस्त कर सकनेवाली विशुद्ध राष्ट्रभावना, सर्व भेदरहित, एकरस, स्वाभिमानी समाज-जीवन, उसमें स्नेहपूर्ण सुदृढ अनुशासन द्वारा आविष्कृत होनेवाली अमृतमयी, विजयशालिनी सगठित शक्ति शीघ्रताशीघ्र प्रस्थापित करने के अतिरिक्त आज कोई कर्तव्य राष्ट्रहितैपी व्यक्ति के सम्मुख नहीं रह सकता। इसका स्मरण अधिकाधिक जागृत रखकर इस शक्ति-निर्माण के यशस्वी कार्य के लिए अपनी नियमित दैनदिन शाखाओं को विस्तृत करना, शाखाओं का स्थान-स्थान पर निर्माण करना, प्रत्येक शाखा सख्या, शील, आदि सव दृष्टि से प्रभावसपन्न होकर चिरजीवी उत्साह से ओतप्रोत रहेगी, इस हेतु निरतर सचेष्ट रहना।

२६० परस्पर सहकार्य, विश्वास से कार्य करे

श्री रमाकात जी, काकिलपुर, दरभगा १२ सितवर, १९५८

एक बात स्पष्ट मन में रखनी चाहिए कि किसी से भी त्रुटि क्यों न हुई हो, हम लोगों को आपस में मेल रखते हुए परस्पर आरोप-प्रत्यारोप का कीचड उछालना नहीं है, वरन् कार्य की दृष्टि से, एक रहना हे, विश्वास से, सहकार्य से रहना हे। इतनी बात ध्यान में रखकर सव छानवीन होने से स्नेह का सूत्र अटूट ही रहता है।

२६१ कार्यकर्ता के लक्षण

श्री मधु लिमये, गोहाटी १२ सितवर, १९५८

कार्य में अपेक्षानुसार यश नहीं मिलता है, तव कार्यकर्ता के मन में दवे पॉवों से निराशा घुस जाती हे। फिर वह आत्मनिदा तथा आत्म-अवहेलना तक पहुँच जाता है। यह सर्वथा अनुचित है। कार्यकर्ता को परमेश्वर पर श्रद्धा रखनी चाहिए। उसे फल की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे निर्धारित मार्ग से परिश्रमपूर्वक, निष्ठापूर्वक, दृढनिश्चय के साथ चलते

रहना चाहिए। फलप्राप्ति पर न उसे सुखी, न अप्राप्ति पर दु:खी होना चाहिए। वह अविचल हृदय से कार्यरत रहे। उसका धैर्य नित्य बना रहे। असीम उत्साह से तथा प्रसन्न मुद्रा से वह नित्य कार्य करे। हमारे महापुरुषों द्वारा वर्णित श्रेष्ठ कार्यकर्ता के इन गुणों का हमें कभी विस्मरण न होने पाए। (मूल मराठी)

२६२ दोषैक दृष्टि त्यागो

श्री सुधाकर तारकर, रत्नागिरि १२ सितंबर, १९५८

क्षुब्ध न होओ। विवेक से चलो। अपने समाज में त्रुटियाँ होंगी, परंतु वही हमारा परम-प्रेमास्पद है। पुराने स्वयंसेवक भले ही कुछ दूर हो गए हों, वे हमारे प्राणप्रिय हैं। वे हमारे अपने हैं। यह अनुभूति उनके हृदयों में अकृत्रिम रीति से जगानी होगी। अन्य कोई क्या कर रहा है? हाथ पर हाथ धरे बैठा है क्या? इत्यादि दोषैक दृष्टियुक्त विचार, विकार मन में आने न दें। स्नेहसिक्त हृदय से परिश्रम करो। वातावरण अवश्य बदलेगा। निराशा छोडो। (मूल मराठी)

२६३ कार्य-विस्तार की प्रक्रिया

श्री म. भा. जोशी, भिवंडी (महाराष्ट्र) १२ सितंबर, १९५८

यह सच है कि कार्यक्षेत्र विस्तारित हो जाने से प्रत्येक स्थान पर ध्यान देने को समय कम पडता है। इसके लिए प्रत्येक तहसील के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रमुख स्थानों को आँखों के सामने रखकर प्रति मास उन स्थानों पर लगातार चार-पाँच दिन रहकर शाखाओं में सुव्यवस्थितता लाने का प्रयत्न किया, तो उसमें यश प्राप्त होगा। उनके आधार पर नए स्थानों को हाथ में लेना सहज होगा। उसी प्रकार यद्यपि आज किसी भी कार्यक्रम की योजना बनाई गई तो पुरानों के अविश्वास एवं नयों के अज्ञान के कारण वह सफल होगी या नहीं, ऐसा लग रहा हो, तो भी छोटे-छोटे एवं सरल कार्यक्रमों की योजना कर नयों को उनकी मिठास एवं महत्त्व समझाकर, उन कार्यक्रमों के माध्यम से संघ की आत्मीयता एवं निष्ठा बढकर कार्यक्षमता बढती है ऐसा पुन: प्रस्थापित किया तो पुराने भी पुन: विश्वास करने लगेंगे। आज अविश्वास न रहकर आलस एवं अकर्मण्यता ही अधिक

है। इसके लिए कार्य का ज्ञान अधिकाधिक स्पष्टता से व्यक्तिश सघश समझाते जाना फलदायी होगा। इसलिए निराशाग्रस्तों में आवाजाही के कारण निराश न होते हुए अधिक लगन से प्रयत्न कर इन निराशाग्रस्त लोगों को ही प्रोत्साहित करूँगा— ऐसा निश्चय मन में स्थायी करें। आपने लिखा है कि विभिन्न स्थानों के पुराने लोग पुन ध्यान देने लगे हैं, यह बात ऐसा निश्चय पैदा करने के लिए पर्याप्त हो सकेगी। (मूल मराठी)

२६४ चदा व्यक्तिगत समस्या के लिए नहीं

प लेखराज जी शर्मा, जयपुर (राजस्थान) १३ सितबर, १९५८

नाथद्वारा से श्री लक्ष्मीलाल नाम के सज्जन का पत्र आया है। अपनी आर्थिक स्थिति का वर्णन कर स्वयसेवकों से चदा कर सहायता की अपेक्षा की है।

ऐसा चदा सार्वजनिक कार्य के लिए हो सकता है, व्यक्तिगत समस्या के लिए नहीं। अनेक स्वयसेवक तथा गैर-स्वयसेवक बधु ऐसे ही सकट में जीवन चलाते हैं। सबको कहाँ तक सहायता दी जा सकती है। अत स्थानीय बधुओं से परामर्श कर अपने ही साहस से मार्ग निकालना उचित होगा।

२६५ समय की माँग विस्तृत बलसपन्न कार्य

श्री बशीलाल सोनी, सिलीगुडी (बगाल) १३ सितबर, १९५८

सब स्वयसेवक बधु मिलकर, अपने सिद्धातों को समझकर, उन्हें हृदयगम कर श्रद्धा से अविरत परिश्रम से काम में जुटे। समय *की माँग है कि अपना कार्य विस्तृत एव दृढ अनुशासन से बलसपन्न होकर* समाज का आश्रयस्थान बने। इस माँग को पूरा करना अपना कर्तव्य है।

२६६ यह भी एक उपाय है

श्री शकरराव दपतरवार, १६ अक्तूबर, १९५८

शारीरिक व्याधियों की कुछ कालमर्यादा होती है। तब तक तो उन्हें भोगना ही पडता है। आप नानाविध इलाज, उपाय कर रहे हैं। धैर्य रखें।

वैद्यदत्त औषधि या पथ्य में बाधक न होनेवाला एक उपाय सुझाता हूँ। गले में चमेली की माला धारण नित्य करें तथा बिस्तर के आसपास कुछ निशिगंध के फूल रखा करें। (मूल मराठी)

२६७ जीवन की सार्थकता

श्री दत्तोपंत कल्याणकर, पवनी (विदर्भ) १६ अक्तूबर, १९५८

आपने स्वीकार किया हुआ व्रत यथासांग पूर्ण करने की शक्ति जगन्माता की कृपा से आप को प्राप्त हो। व्रतपूर्ति के पश्चात् अनेक लोग आशीर्वाद एवं वर माँगते हैं। श्रद्धा के बल के अनुसार वह प्राप्त होते भी हैं। सचमुच 'ज्ञान वैराग्यसिद्धि' एवं उसके बल पर निरपेक्षता से 'राष्ट्र' को ही परमेश्वर जानकर उसकी यथार्थ सेवा करने की इच्छा, प्रेरणा, बुद्धि एवं शक्ति प्राप्त हो। इस से जीवन सार्थक होगा। (मूल मराठी)

२६८ 'राष्ट्रीय निर्माण अंक' से अपेक्षा

श्री देवेंद्र शर्मा, मुंबई १६ अक्तूबर, १९५८

सद्य काल में राष्ट्र का विशुद्ध स्वरूप अज्ञात सा हो गया है। भ्रांत धारणाओं का प्रचलन है। मातृभूमि, राष्ट्र, समाज, उसका धर्म, परंपरा, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रजीवन के आधारस्तंभ की भाँति राष्ट्र की श्रेष्ठता के प्रतीक, श्रेष्ठ व्यक्ति आदि सब आवश्यक बातों की अज्ञानजन्य श्रद्धाहीनता आज के अपने राष्ट्रीय समाज का सबसे बड़ा भयानक दोष है। श्रद्धा नहीं तो शील, चरित्र, सद्गुणसंपन्नता, निःस्वार्थ निरलस परिश्रम से राष्ट्रोन्नति के लिए यावज्जीव सानंद परिश्रम करने की विशुद्ध भावना नहीं रह सकती। आज अपने समाज की पतनोन्मुख अवस्था इस न्यून की ओर संकेत कर रही है। अपने विशेषांक में इसका विचार होकर शुद्ध भावभरी श्रद्धा व्यक्ति-व्यक्ति के अंतःकरण में अमिट रूप से अंकित हो, ऐसा तेजस्वी साहित्य प्रसिद्ध होगा, यह विश्वास है। उसकी अपेक्षा है। प्रतीक्षा है। आशा है कि परमात्मा की कृपा से आपका 'राष्ट्रीय निर्माण अंक' यह विश्वास तथा अपेक्षा पूर्ण करेगा।

२६९ कार्यक्षेत्र मन के विरुद्ध न हो

श्री बापूराव मोघे, विजयवाडा (आंध्र) २२ अक्तूबर, १९५८

आपकी उस प्रांत में रहने की इच्छा न हो, उस प्रांत में आपके मन को योग्य न लगता हो, तो केवल आग्रह के खातिर रहने का कोई उपयोग नहीं होगा। परंतु यह आपकी मनस्थिति पर निर्भर है। अपने स्थान पर कौन काम सँभालेगा, इस बात के लिए फिर राह देखने से लाभ होने के बजाय आपके मन को पीडा मात्र होना संभव है। इसलिए यदि श्री एकनाथ जी की सम्मति है तो आपकी जब इच्छा हो, तब एक अस्थायी व्यवस्था कर आप प्रांत छोड सकते हैं। मेरी ओर से कोई रुकावट नहीं है।

मेरा मत यह है कि आप को कुछ गलतफहमी हुई है एवं उसमें से आप अपने इर्द-गिर्द के सहयोगियों एवं अन्य कार्यकर्ताओं की ओर देखते रहते हैं, जिससे आपकी अपसमझ को पोषक व्यवहार होता हो, ऐसा आपको हरदम आभास होता है। ऐसा नहीं है कि आप उसमें से स्वयं को मुक्त नहीं कर सकेंगे, परंतु वैसा आपने प्रयत्न नहीं किया है। क्योंकि मन पर का दबाव प्रयत्न करने की इच्छा ही पैदा नहीं होने देता है। इसका आप अवश्य विचार करेंगे ही। (मूल मराठी)

२७० नए कार्यकर्ताओं की खान

श्री राजा नेने, मुंबई ६ नवंबर, १९५८

नए, तरुणाई में प्रवेश करनेवाले स्वयंसेवक शिक्षक के नाते संघस्थान के कार्यक्रम व्यवस्थित एवं अनुशासन से करवा लेने एवं कुल कार्य का विचार आदि का प्रतिपाद्य समझकर कार्य करने को सिद्ध हों, इसलिए वर्ग की योजना की गई है।

वर्ग के सभी बंधुओं को मेरा सस्नेह नमस्कार कहें। संघ का काम केवल मनोरंजन है, खेल-व्यायामादि दृष्टि से शरीरबल संवर्धक है, या किसी मित्रमंडली के स्नेह-सम्मेलन सा है, ऐसा समझने की भूल न कर, इन सभी बातों का अन्तर्भाव करते हुए अखिल राष्ट्र का अनुशासनबद्ध सामर्थ्य, संघ के रूप में खडा करने का जीवनव्यापी व्रत है। उस निमित्त सद्गुणों का पोषण, ज्ञान की वृद्धि करने की आवश्यकता आदि सब आवश्यक स्पष्ट मार्गदर्शन उनका करते रहें, जिससे आगे उत्तम कार्यकर्ताओं की कमी नहीं

पढेंगी, उन्हें यह आपको अनुभव होगा कि कार्यकर्ताओं की खान सुन गई है। (मूल मराठी)

२७१ ऐसी बातो मे रस न ले

श्री मु ना कागलकर, १८ नवबर, १९५८

आप की लिखी बातें मुझे ज्ञात हैं। सबधित अधिकारी योग्य ढग से उस विषय को निपटाएँगे। ऐसी बातों के प्रचार में रस लेना, तथा उन्हें हर किसी के पास कहना, सर्वथा अनुचित है। एक बार किसी बात को योग्य अधिकारी के पास कह देने के बाद, हमें उसमें से मन निकाल लेना चाहिए तथा अपने नित्य कार्य में जुट जाना चाहिए। ऐसे विषय की चर्चा हम पत्रों द्वारा न करें। सगठन के लिए जो अहितकर हो, ऐसा कोई कार्य हम कभी न करें। (मूल मराठी)

२७२ परिवार प्रमुख-सा दायित्व निभाएँ

श्री वासुदेवराव आठल्ये, १४ नवबर, १९५८

आपने नया उत्तरदायित्व उठाया है। आशा है कि आप उसे सहज रूप में निभाएँगे। परिवार-प्रमुख घर के अनेक काम तो करता ही है, साथ-साथ सब सदस्यों में परस्पर स्नेहभाव, मेल, सहकार्य इत्यादि सद्गुण भी निर्माण करता है। परतु कभी वह उपदेशक अथवा व्याख्याता की भूमिका नहीं लेता। वह यह सब अकृत्रिम ढग से बडी कुशलता से करता है। आप को इस में कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होगी। (मूल मराठी)

२७३ शिविर की हेतुपूर्वक योजना

श्री वसतराव केलकर १९ नवबर, १९५८

यह उचित ही है कि कार्य स्थिरता से चलने के लिए स्थानीय स्वयसेवक जानकार हों, इस दृष्टि से दिवाली वर्ग, शिविर आदि योजनाएँ चालू हैं। दैनिक शाखाओं के कार्यक्रम सोत्साह अनुशासन से चलाना, शाखा नियमित एव वर्धिष्णु रहने के लिए आवश्यक व्यवहार जीवन में उतारना, उस निमित्त निश्चित कुछ समय खर्च करते रहना एव सघकार्य की

सैद्धातिक भूमिका जितनी हो सके, उतनी स्पष्टता से अत करण में रोपण करना आवश्यक होने से शिविर, वर्ग आदि सभी विशेष कार्यक्रमों की योजना ऐसी हो कि ये गुण हेतुपूर्वक साध्य होंगे तो बहुत लाभ होगा।

(मूल मराठी)

२७४ आम जनता के परिवर्धित प्रतिनिधि

श्री कामाख्याराम बरुआ, असम २१ नवबर, १९५८

जिस परिस्थिति का आपने वर्णन किया वह सपूर्ण देशव्यापी है। इसके लिए जैसा आपने कहा है, आम जनता ही सचमुच जिम्मेदार है। प नेहरू जनसामान्य की दुर्बल मानसिकता और दोषों का अपनी अतरराष्ट्रीय महत्ता के अनुरूप सभवत परिवर्धित रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं। आश्चर्य इस बात का है कि वे अपनी उदात्त, गौरवमयी एव उज्ज्वल परपरा का भी प्रतिनिधित्व क्यों नहीं करते! जनता के दोषों और प्रभावों को ही प्रकट कर क्यों सतोष मानते हैं। परतु मेरे जैसे छोटे कद के मनुष्य के लिए यह प्रश्न बहुत जटिल है।

(मूल अग्रेजी)

२७५ विश्वविद्यालय का वातावरण कैसा हो

श्री प्रबोध बाबू, वाराणसी ९ दिसबर, १९५८

मैने समाचार-पत्रों में पढा कि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का कार्य आशिक रूप में पुन प्रारभ हुआ है। किन्तु परिचय-पत्रों का बधन अच्छी शिक्षा सस्था के लिए अशोभनीय एव अस्वास्थ्यकर है। इस वातावरण में रहनेवाले विद्यार्थियों को दास्यवृत्ति मे ही रहने के लिए धमकाया जाएगा या वे समाज के लिए पक्के घोर अपराधियो के रूप में आगे आएँगे। जैसा कुछ समय कारागृह में रहने से कैदी कठोर बनकर एक निर्दयी अपराधी बन जाता है, वैसा ही विद्यार्थियों के साथ हो सकता है। हमें आशा है कि परिस्थिति शीघ्र सुधरेगी और सद्विचारो की विजय होगी।

२७६ ध्येयपूर्ति अभी से

श्री प्र पु (भैया) जोशी, पुणे (महाराष्ट्र) १० दिसबर, १६५८

मन प्रसन्न एव श्रद्धा अटूट हो तो ससार की गुत्थियों में से भी कार्य करने का मार्ग निकल आता है। सब बातें सुखरूप होने की प्रतीक्षा करते रहने से यह नहीं होगा कि वैसा अवसर आएगा। कदाचित् उस समय तक शरीर जर्जर भी हो जाएगा। इसलिए अभी से ही ध्येयपूर्ति के लिए समय निकालना एव शक्ति खर्च करना क्रमश करते एव बढ़ाते रहना अततोगत्वा लाभदायी होगा।

श्री परमेश्वर की कृपा से अपनी इच्छानुसार सब सुविधाएँ प्राप्त होकर आपको अपने मन की शुद्ध प्रवृत्ति के अनुसार आचरण करने की अनुकूलता शीघ्र प्राप्त हो। (मूल मराठी)

२७७ डा जॉन की मृत्यु पर सवेदना

श्री वी राजगोपालाचारी, चेन्नै २४ दिसबर, १६५८

अपने प्रवास के समय उज्जैन में मुझे अपने प्रिय मित्र डा जॉन की मृत्यु का आघातजनक समाचार मिला। इस हानि एव दु ख का प्रमाण शब्दातीत है। कुछ महीने पहले ही आपके यहाँ उनसे भेंट हुई थी तथा हमारे कार्य के लिए एक विश्वसनीय आधार देनेवाला सुयोग्य मित्र मिलने से मैंने स्वय को धन्यवाद भी दिया था। किन्तु दैव हमारे लिए अति कठोर बना और नतमस्तक होते हुए हमें यह आघात मन शांति एव धैर्य के साथ सहना होगा। अपने बचपन का साथी आपने खोया, अत मैं आपकी वेदना समझ सकता हूँ। श्रीमती जॉन के प्रति मेरी सवेदना। (मूल अंग्रेजी)

२७८ कार्य मे सानद जुटे रहे

श्री गजानन देसाई, नादेड २४ दिसबर, १६५८

स्वार्थ के लिए देश, धर्म तथा राष्ट्रहित पर अगार रखने की वृत्ति नई नहीं है। इस विष को हमें नष्ट करना है और तदर्थ पूरी शक्ति लगाकर कार्य करना है, यह भावना प्रसृत होनी चाहिए। कार्य करते समय हमें उदासीन वृत्ति के लोग भले ही दिखाई पड़ें, उन्हें देखकर हमारा मन

विचलित न हो। समाज में विद्यमान उदासीनता को हटाकर सगठित कार्यशक्ति खडी करना अपना कार्य है। समाज में जो भले कहलाते हैं, उनमें से कुछ तो हमसे सबधित भी हैं, उन्हें न समाज विषयक प्रेम है, न स्व-कर्तव्य का ज्ञान है। अत उनके पास उद्यमशीलता भी नहीं है। हम सोत्साह तथा सानद कार्य में जुटे रहें। हम कभी ऊबें नहीं। तभी यश की प्राप्ति होगी।

(मूल मराठी)

२७६ उत्साहपूर्ण वातावरण को स्थिर रूप दे

श्री वामनराव ओक, ठाणे — ३१ दिसबर, १६५८

साहित्याचार्य श्री बालशास्त्री हरदास जी के व्याख्यानों का कार्यक्रम उत्तम रहा, प्रभावी रहा, आदि जानकर प्रसन्नता हुई। यह अपेक्षित भी था। सभाव्य तथा विद्यमान शका-कुशकाओं का उन्होंने उन्मूलन किया, यह भी ठीक हुआ। अब हमें चाहिए कि इस उत्साहपूर्ण वातावरण को हम स्थिर रूप दें। अन्यथा उत्साह की बाढ आई और गई, ऐसा होगा। इन बातों की ओर हम यदि त्वरित ध्यान नहीं देते हैं, तो आलस्य तथा औदासीन्य छा जाने का डर रहता है, यह तो आप जानते ही हैं।

(मूल मराठी)

२८० उपनयन के मगल अवसर पर आशीर्वाद

प परशुराम तिवारी, देवरिया (उत्तरप्रदेश) — २३ मार्च, १६५६

चि सच्चिदानद तथा चि हरिश्चद्र के उपनयन के मगल सस्कार की निमत्रण-पत्रिका प्राप्त हुई। बहुत प्रसन्नता हुई।

श्री जगदीश्वर की असीम कृपा से उभय बटुओं का द्विजत्व की श्रेष्ठ पदवी प्रदान करनेवाला यह पवित्र सस्कार सब प्रकार के कुशल का अग्रदूत सिद्ध हो। आगे ब्रह्मचर्य के जीवन में बलिष्ठ शरीर सयमित तथा पवित्र मन, ज्ञानसपन्न कुशाग्र बुद्धि की साधना सफल कर अपने आपको कुल परिवार की कीर्ति वृद्धि करनेवाले, विशुद्ध नि स्वार्थ राष्ट्रसेवक के रूप में परिणत करने में दोनों यशस्वी हों। श्रीपरमात्मा की असीमित कृपा उन्हें प्राप्त होती रहे– यही उसके श्रीचरणों में नम्रतापूर्वक साग्रह प्रार्थना करता हूँ।

२८१ वर्ष बीता, कार्य कितना हुआ?

श्री गो ह मराठे, ग्वालियर — २८ मार्च, १९५६

जन्मदिन के उपलक्ष्य में भेजी शुभेच्छाएँ प्राप्त हुईं कालक्रम चल रहा है। वर्ष के पीछे वर्ष जा रहे हैं, परतु हम लक्ष्य तक अभी नहीं पहुँच पा रहे हैं। यह विचार बहुत बेचैन करता है। एक वर्ष बीत गया। सपूर्ण जीवन से इतना काल चला गया। मृत्यु निकट आ गई है। परतु कार्य कितना हुआ, यह प्रश्न मन में आते ही हृदय में टीस उत्पन्न होती है। असहनीय पीडा निर्माण होती है। परतु हमारा कार्य ईश्वरीय कार्य है। करनेवाला भगवान ही है। हम केवल उपकरण हैं। हमें अपने को उस प्रभु के हाथ में सौंप देना चाहिए। अपने मन को इस प्रकार समझाकर कार्य में लगा रहता हूँ।

आपके वेद-विषयक सशोधन का पूरी तरह से आकलन नहीं कर पाया हूँ। आप पडित सातवलेकर जी का मार्गदर्शन प्राप्त करें। ईश-कृपा से आप यशस्वी बनें तथा वेद-विषयक नए पहलू प्रकट हों। (मूल मराठी)

२८२ अतिम प्रहार अब निकट है

श्री पु न पाळवणकर, — ३० मार्च, १९५६

आज हमारे समाज की अवस्था विचित्र है। उसमें झगडे, टटे, द्वेष आदि के बीज शीघ्र अकुरित होते हैं उसी का उपाय है हमारा कार्य। अविराम प्रहार करते रहें। अतिम प्रहार अब निकट है। आज हमारा समाज फूट तथा आत्मविस्मृति की दीवारों से घिरा है। नि शक मन से दृढता के साथ प्रहार करो। दीवारें अब ढहनेवाली ही हैं। धीरज रखो। व्यक्ति-व्यक्ति को जुटाओ, समझाओ तथा सूत्रबद्ध करो। हमारा यह कार्य सतत प्रगति करता रहे। (मूल मराठी)

२८३ विस्तारक को मार्गदर्शन

श्री त्र्य ग लेले, कणकवली — ३० मार्च, १९५६

आपके एक मास के वहाँ के वास्तव्य में नियमितता तथा अनुशासन निर्माण करने का प्रयास करें। स्वयसेवकों को अपने ध्येय से अवगत

कराएँ। एक-दो अच्छे स्वयसेवक पुणे के वर्ग में आएँ, ऐसा प्रयत्न करें। इसमें आप सफल होते हैं, तो वहाँ की शाखा आगे ठीक से चल सकेगी।

वर्षप्रतिपदा उत्सव में सब स्वयसेवक तथा चुने हुए तत्सम लोग उपस्थित करें। उनके सम्मुख परम पूजनीय डाक्टर जी का चरित्र रखें। कार्यपद्धति का आविष्कार कैसे हुआ आदि बताकर सघकार्य की निर्विवाद श्रेष्ठतमता पर प्रकाश डालें। भाषणों की अपेक्षा सभाषण, घरेलू ढग की बातचीत, कथा-कथन आदि बातें अधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं। घर पर पिताजी को चिट्ठी लिखी ही होगी। उसमें आलस्य न करें। (मूल मराठी)

२८४ शब्द नहीं, भाव ग्रहण करे

श्री सुधाकर जोशी, आबेजोगाई (मराठवाडा) ३० मार्च, १९५९

अनेक लोग, अनेक परिस्थितियों में अनेक कारणों की प्रेरणा से सघकार्य में आते हैं। वह स्थिति जब तक रहती है, तब तक उनका उत्साह टिकता है। सघकार्य की वैचारिक भूमिका, शब्द रूप में ग्रहण कर, शाब्दिक प्रतिपादन में माहिर भी होते हैं। परतु वह विशिष्ट स्थिति टिकती नहीं है, शब्दों के परे उसका भाव ग्रहण नहीं होता एव फिर अकर्मण्यता आती है। सस्कारहीनता दिखाई देती है। इसमें आश्चर्य नहीं है। इसलिए ऐसे उदाहरणों के बारे में दु ख न करते हुए एव उससे निराश न होते हुए सपर्क में आनेवाले स्वयसेवकों में ऐसी कमी न रहे, एतदर्थ सावधान रहकर, उत्तम सघ-सस्कार गहराई तक अकित करने का प्रयत्न, उपदेशक की नहीं तो सहयोगी की, अभिन्न हृदय मित्र की भूमिका ग्रहण कर मन पूर्वक वह भूमिका आत्मसात करते रहें– यही उचित है। इसका विचार करें।(मूल मराठी)

२८५ प्रथम स्वदोष देखे

श्री ठाकुर रजनीकात चन्दूलाल, घाटकोपर, मुबई ३१ मार्च १९५९

अनेक स्वयसेवक बहुत बुद्धिमान होते हुए भी शाखा से दूर जाते हैं। उसके लिए शाखा दोषी है ऐसा आपका विचार है, सो ठीक ही है। अपने को छोडकर अन्यत्र दोषरोपण करना स्वाभाविक है, किन्तु योग्य रीति से सोचनेवाले को प्रथम स्वदोष देखकर उसका परिशोधन करना आवश्यक है। (मूल मराठी)

२८६ एक बुद्धिमान किंतु अनियमित स्वयंसेवक से

श्री बद्रीप्रसाद जी, कोटा (राजस्थान) ३१ मार्च, १९५८

'राष्ट्र के परम वैभव की ओर चल रहा हमारा कार्य' यह आपका उपहास गर्भ वाक्य पढ़कर मैं बड़ी चिंता में पड़ गया हूँ। मैं तो इतने वर्ष इसी श्रद्धा से चल रहा हूँ। परंतु आप जैसे अत्यधिक विचारी पुरुष इस श्रद्धा को उपहास की दृष्टि से जब देखते हैं तो मुझे संदेह होने लगता है कि कहीं मैं गलत रास्ते पर तो नहीं हूँ? कृपया मेरे हृदय की यह संदेहग्रस्त अवस्था को दूर कर मुझे शांति प्रदान करने के लिए योग्य मार्गदर्शन करें।

मेरी आज की श्रद्धा के कारण शाखा में अनुपस्थित रहने के लिए जो अनेकविध कारण आपको सूझ सकते हैं, वे मुझे सूझते नहीं। अत मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि अपनी कुशाग्र बुद्धि एव गहन विचारशीलता से ऐसे कारणों की विस्तृत सूची निर्माण करें, जिनका आधार अनियमित स्वयसेवकों को मिल सके।

२८७ व्यवधान छोड़कर एकाग्रचित्त हो

श्री त्र्यबक कुळे, कधार (महाराष्ट्र) ३१ मार्च, १९५६

कुल परिस्थिति में विषमता है, इसलिए ही अपने कार्य की नितांत आवश्यकता है। बिलकुल निष्ठा से, सौजन्यपूर्वक, व्यक्ति-व्यक्ति को स्नेह से अपना कर, समझाते हुए, अनेकों को अपने सूत्र में गूँथते जाना इस दृष्टि से प्रयत्न हो एव अनेक स्वयसेवकों को ऐसे प्रयत्न करने को सहज उत्स्फूर्त करें। कार्य होगा, यही कार्य आवश्यक है, इसी की प्रतीति सर्वत्र आएगी एव विपरीत वातावरण शुद्ध होकर, सुदृढ, एकरस, एकसघ राष्ट्रनिर्माण के आनद का हम सब उपभोग कर सकेंगे। इसके लिए हम जो सघ स्थिति में काम में जुटे हुए हैं, उन्हें अथक परिश्रम से अविरत, सारे अन्य व्यवधान छोडकर, एकाग्र चित्त से काम में ही समरस होना आवश्यक है। कार्य करनेवाले स्थान-स्थान पर डटे रहें तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि सफलता निकट ही है।

(मूल मराठी)

२८८ अच्छे वायुमडल का परिणाम

श्री कालीशरण दीक्षित जी, ३ अप्रैल, १९५९

दहेज का प्रश्न बहुत पुराना है। लोग भी विवाह को सस्कार न मानते हुए एक 'कॉन्ट्रेक्ट' मानने लगे हैं। योग्य वर-सशोधन का कार्य भी बाजार में अच्छी वस्तु ढूँढने के समान ही करते हैं। फिर मूल्य लगता है, बढता भी है। यह न हो, इसको सब मानते हैं, किन्तु स्वत आचरण करने का समय आने पर सब सिद्धात भूल जाते हैं।

अब इस प्रथा का उन्मूलन करने में हम लोग बहुत थोडा कर सकते हैं। अपने सघ से सबधित लोग थोडे ही हैं। उसके सैकडों गुना समाज सघ के बाहर है। वह समाज बातें मानता है तो प्रथम अधिकारारूढ राजनैतिक नेताओं की, बाद में साधु, सन्यासी आदि धार्मिक जीवन चलानेवाले महापुरुषों की। अब मैं राजनीति से अलिप्त हूँ, अधिकार की क्षमता भी नहीं है और सन्यासी भी नहीं हूँ। अत किस अधिकरण से मैं किसी को आदेश दे सकूँगा?

अब आपके सम्मुख कोई वैयक्तिक समस्या हो तो अपने सघ के प्रमुखों से मिलकर कोई मार्ग निकालने का प्रयत्न करें तो अच्छा होगा और महत्त्व की बात यह है कि सघ के कार्य में अच्छा वायुमडल बनाकर तद् द्वारा लोगों को अच्छा व्यवहार करने का प्रोत्साहन देने की योजना है, आदेश देकर किसी को बाध्य करने की नहीं।

२८९ अपने ही बधुओं के अत्याचार का प्रायश्चित्त

श्री निर्मल चद्र जैन (महाकौशल), ३ अपेल, १९५९

जबलपुर में हुई दुर्घटना के सबध में कुछ उडते समाचार मिले थे, जब कि मैं प्रवास के हेतु गया था। ५ मार्च को नागपुर आने पर काफी कुछ सुना। मन की व्यथा कैसे कहूँ? हिदुओं को अहिदू जैसा व्यवहार करते देखकर हृदय में बडी पीडा हुई। हिदू इस नाते से अपने पर जो आघात हुए हैं, जो षड्यत्र चल रहे हैं, उधर किसी का ध्यान नहीं। समाज विरोधी कार्य करनेवालों के प्रति कोई क्षोभ की भावना नहीं, किन्तु अपने ही घर में एक-दूसरे पर वार कर एक-दूसरे की श्रद्धा की अवहेलना करते समय बडा उद्योग चलाते हैं, यह अतीव दु ख देनेवाली बात है। सहस्र

से अधिक वर्षो के काल में आपसी शत्रुता के कारण सब प्रकार का अध पतन भोगना पडा, इससे कुछ बोध न लेते हुए जो कभी अपने यहाँ होने की कल्पना भी नहीं थी, वह अपने ही पवित्र पथों, पूजा-स्थानों का घर्षण करने तक हीनता में पडकर आपसी सघर्ष के नए-नए निमित्त बनाकर समाज को अत्यधिक छिन्न-विच्छिन्न करने की दुष्ट प्रवृत्ति तथा तदुद्भूत दुष्कार्य में समाज के समझदार कहलानेवाले भी सम्मिलित होते हैं, यह देखकर मेरा अत करण अत्यत व्यथित हो गया है।

अपना सघकार्य ऐसी दुरवस्था उत्पन्न ही न हो सके, ऐसी शिक्षा-दीक्षा देकर व्यक्ति-व्यक्ति के मन को शुद्ध बनाने की इच्छा से चलता है। इसकी गति धीमी न पडे, इस हेतु हम सब लोगों को एकत्रित होकर अविरत प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है।

मदिर के सबध में मैं समझता हूँ कि आप, अपने कपूर साहब, अपने महापौर श्री सवाईमल जी आदि एकत्र आकर नूतन मूर्तियाँ लाकर उनकी शास्त्रविधि से समारभपूर्वक प्रतिष्ठापना कर भग्नमूर्तियों को विधिपूर्वक विसर्जित करें। नगर के समस्त हिंदू बधुओं को इसमें अपना हाथ बँटाने के लिए आह्वान किया जाए और इस अनाचार का प्रायश्चित कर गत अनिष्ट व्यवहार के प्रति पश्चाताप करते हुए मूर्तियों की प्रस्थापना करके पूरा हो।

२६० स्थिर ज्ञान एव भावना उत्पन्न करे

श्री प्रभाकर पाटणकर, भोपाल (मध्यप्रदेश) ४ अप्रैल, १९५९

भोपाल के बारे में समाचार पढने को मिल रहे थे। उनसे आश्चर्य नहीं हुआ। सद्य स्थिति एव चालू राजनीति में यही अपेक्षित है। चिंता का कारण यही है कि अपने माननीय श्री सरदारमल ललवानी जी का मकान इस क्षुब्ध एव क्षोभ-केंद्र के क्षेत्र में ही है। अनेक बधु वहाँ कार्यार्थ आते-जाते रहते हैं, स्वय की उपजीविका के लिए उन्हें आना-जाना पडता है एव ऐसे समय उनके प्राण सकट में पड सकते हैं। आपके पत्र से हम सभी लोग निश्चित हो गए हैं।

अनेक छोटे-बडे बधुओं को समझा कर बताएँ कि ये घटनाएँ कभी-कभार नहीं होती हैं वे एक बडे देशव्यापी उद्रेक का भाग, शक्ति-परीक्षण का प्रयत्न हैं। हाल में मलबार में (केरल राज्य) कालीकत शहर में लुप्तप्राय हुई 'मुस्लिम लीग' का पुनर्जागरण एव बडा अधिवेशन हुआ। उसमें जो

प्रस्ताव पारित हुए एव भाषण आदि हुए उन्हें देखते हुए इस समाज का अतरग स्पष्ट हो रहा है। ये बातें सब को समझाकर बताएँ। झूठी विश्वासघाती घोषणाओं के दास न होते हुए वास्तविक स्थिति ठीक से समझकर कार्य करने की आवश्यकता की अनुकूलता प्राप्त हुई है। इसका उपयोग करें, परतु उसमें प्रतिक्रियात्मक, तात्कालिक भावनाओं का उद्रेक न रखकर स्थिर ज्ञान एव भावना उत्पन्न करें जिससे अपना कार्य बढने में सहायता मिलेगी। आप प्रत्यक्ष वहाँ हैं। जो योग्य एव आवश्यक है, वह आप करेंगे ही। (मूल मराठी)

२६१ जनसेवा कार्यार्थ मगलकामना

डा ब द खाडिलकर, हातनुर, सातारा ४ अप्रैल, १९५६

आप नौकरी छोडकर स्वतत्र रूप से जनसेवा के कार्यार्थ अपने ही भरोसे श्री दत्त आरोग्य केंद्र स्थापित कर रहे हैं। उसमें से सामान्य भरण-पोषण प्राप्तकर अधिकाधिक लोक-कल्याण साध्य कर उसमें से श्री भगवदाराधना सिद्ध कर रहे हैं, यह जानकर बहुत आनद हुआ। आपको पूर्ण यश प्राप्त हो। स्वोत्कर्ष एव जनकल्याण सिद्ध हो एव आपका राष्ट्र के सुयश-प्राप्ति का आह्वान एव जागरण करने का जो श्रेष्ठ कार्य है, उसके लिए अधिक से अधिक समय एव उत्साह आपको मिले एतदर्थ श्रीपरमेश्वर के चरणों में मैं प्रार्थना करता हूँ।

श्री दत्तात्रेय की भक्ति आपके घर में है। यह आशुतोष, परम कल्याणप्रद त्रिमूर्ति भगवान आपकी सर्व शुद्ध कामनाएँ पूर्ण करेंगे।

(मूल मराठी)

२६२ साहस हो तो ही वकालत प्रारभ करे

श्री रघुवीर प्रसाद, आरा (बिहार) ८ अप्रैल, १९५६

यदि लगभग दो वर्ष तक वकालत में प्रत्यक्ष प्राप्ति न हुई तो भी निभ सकता हो, आपके सहयोगी, प्रोत्साहन देनेवाले हृदय से यह भार सँभालने को तत्पर हों तो फिर वकालत का उद्योग प्रारभ करने में कोई प्रत्यवाय नहीं है। सुचारु रूप से अध्ययन कर काम करने से यह उद्योग अभी भी लाभदायक हो सकता है। इस धधे के अभी ऐसे पहलू हैं, जिनमें

बहुत काम मिल सकता है तथा जिसमें अच्छा काम होने से धन तथा प्रतिष्ठा-दोनों का लाभ हो सकता है। यहाँ पर इस उद्योग में मेरे जो मित्र हैं, उनकी यही राय है।

यह तो परिस्थिति का विचार हुआ, परंतु आपको अपना हृदय टटोलकर देखना होगा कि इस धंधे में कितनी भी सफलता प्राप्त हुई तो भी इसमें जीवनभर अनिश्चितता बनी रहती है। नौकरी में जैसे प्रति माह वेतन तथा वार्धक्य में उसका अच्छा अंश निवृत्ति वेतन (Pension) मिलना निश्चित होता है, वैसा किसी भी धंधे में नहीं पाया जाता। इस अनिश्चितता को आनंद से आप सह सकेंगे या नहीं? निश्चित तिथि पर निश्चित वेतन, यह बहुत आकर्षक तथा मन को शांति देनेवाली बात है। यदि अनिश्चितता से आपको भय न हो तो यह नया धंधा स्वीकार कर सकते हैं, अन्यथा जो है, सो ही अच्छा है।

आज के पद पर अधिष्ठित रहकर तथा उसमें यथाक्रम यथासमय उन्नति कर उस क्षेत्र में बहुत लोगों का लाभ करना आपके लिए कठिन नहीं होगा। अनेक बंधु जो श्रमिक कहलाने मात्र से अपने आपको स्वदेश, स्वसंस्कृति से पृथक मानने लग जाते हैं तथा अन्यान्य देशवासियों की चालों का स्वतः को शिकार बनने देते हैं, उन्हें सन्मार्गगामी बनाने में आपके पद का उपयोग हो सकता है। किसी भी दलविशेष से संबंधित न रहकर, पक्षपातविरहित व्यवहार करते हुए यह कार्य करना संभव है और यह भी एक श्रेष्ठ राष्ट्रकार्य है।

इसमें जो प्राप्ति आपकी है, उससे असंतुष्ट होकर आप अन्य मार्ग की खोज में हैं, ऐसा दिखता है। और ससुराल का प्रोत्साहन इस खोज में आपको अनुकूलता देता है। साथ ही कुछ सैद्धांतिक आधार भी प्राप्त कर नवीन उद्योग में उत्कर्ष करने का विचार आपके हृदय में उठकर मुझे आपने परामर्श देने को कहा है। आपके पत्र का यह आशय समझकर ही मैंने उपर्युक्त दोनों पर्याय आपके सम्मुख रखे हैं। उसका योग्य विचार करें और यदि नवीन क्षेत्र में पदार्पण करने का साहस बटोर सकें तो अवश्य ही वकालत का प्रारंभ डाल्टनगंज में करें। कुछ स्वतंत्रता अधिक मिलकर आप अपनी श्रद्धा के अनुकूल कुछ कार्य करने में शासकीय या अन्य बाधाओं से मुक्त तो रहेंगे।

२६३ आप भी सोचे

श्री रमाकात जी झा, लहरियासराय (विहार) ८ अप्रैल, १९५९

आजकल विहार प्रात के प्रमुख प्रचारक के कारण 'जनसघ' के कार्यकर्ताओं से सवध टूट रहे हैं, यह आपका कहना मुझे ठीक नहीं लगता। आप किसी भ्रम में हैं, किसी मिथ्या प्रचार के शिकार हैं या आपका मन ही ऐसी विकृतियाँ निर्माण कर आपको खेल दिखाता है, ऐसा मुझे लगता है। इसको आप भी सोचें। क्योंकि फिर आपके तथा अन्य वधुओं के वीच जो स्नेह-विश्वासशून्यता का भास हो रहा है, उसकी अत्यधिक जिम्मेदारी आपकी मन स्थिति पर तथा तदुद्‌भूत व्यवहार पर ही आ पडती है।

२६४ क्या इतिहास की पुनरावृत्ति होगी?

प सातवलेकरजी, स्वाध्यायमडल, पारडी १९ अप्रैल, १९५९

कोलकाता गया था। वापस आते समय अमरकटक गया था। वहाँ से आते समय भिलाई का फौलाद का कारखाना देख आया। भारत के आधुनिक काल के इतिहास में हम कुछ बातें पढते हैं। विदेश के लोग व्यापार करने के वहाने भारत में आए। यहाँ उन्होंने अपनी दुकानें खोलीं, गोदाम बनाए, कारखाने लगाए। फिर वे इस देश के कारोवार में हस्तक्षेप करने लगे। हमारे लोगों में विशुद्ध देशभक्ति, उत्कट राष्ट्राभिमान आदि सद्‌गुणों का अभाव था। स्वार्थमूलक झगडे हो रहे थे। उनके लिए वे विदेशियों से हाथ मिलाते थे। इस प्रकार की घरभेदी दुष्प्रवृत्ति विद्यमान थी। विदेशियों ने इन सव वातों का लाभ उठाया और वे सपूर्ण देश को निगल गए। यह सब ताजा इतिहास है। उसकी पुनरावृत्ति तो नहीं होगी? ऐसी शका उस कारखाने को देखकर मन में उद्‌भूत हुई। ये कारखाने विदेशी पूँजी से चलाए जाते हैं। उन्हें खडे करनेवाले तथा चलानेवाले जानकार विदेशी हैं।

अत मन में शका उत्पन्न हुई। उस क्षेत्र में आसपास रहनेवालों को मैंने सावधान किया। सुदृढ राष्ट्रीय चारित्र्ययुक्त सगठित शक्ति खडी करने के लिए मैंने उन्हें बताया। जो कारखानों से सम्वधित हैं उन्हें मैंने बताया कि विदेशी नियत्रकों के चगुल से स्वय को बचाओ। देखें, क्या परिणाम निकलता है। परतु मन की चिता दिनोदिन अधिकाधिक दाहक हो रही है। (मूल मराठी)

२६५ प्रत्येक स्वयंसेवक प्रचारक

श्री मनोहर वर्तक, वडूज, सातारा(महाराष्ट्र) २० अप्रैल, १९५६

आप जिस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं उसकी जानकारी सबको है। उस क्षेत्र में आपने अति लगन से प्रयत्न कर विपरीत परिस्थिति पर विजय-सपादन करने की पराकाष्ठा की एव यश भी प्राप्त किया। आपके द्वारा नींव भरने एव अनुकूल वातावरण निर्माण करने का कार्य हुआ है। जिससे वर्तमान शर्मीले या अनेक कारणों से कर्मशून्य बने पुराने सहयोगी पुन आलस झटककर अल्पस्वल्प मात्रा में प्रयत्न करने लगेंगे। यद्यपि आज प्रत्यक्ष भव्य स्वरूप नहीं दिखाई देता हो, तथापि उसके प्रयत्नों का मूल्य कम नहीं होता है। अत आपने जो यह लिखा है कि 'अपयश गाँठ में बाँधकर', वह लिखने तथा निरुत्साही होने की आवश्यकता नहीं है। मेरी दृष्टि से आप असफल सिद्ध नहीं होते।

आपने सूचित किया है कि आप इस वर्ष के सघ शिक्षा वर्ग के पश्चात् प्रत्यक्ष प्रचारक-कार्य से निवृत्त हो रहे हैं। पारिवारिक कर्तव्य सँभालकर, योग्य उद्योग करते हुए, अपने इर्द-गिर्द के क्षेत्र में उत्साह, निश्चय, मन स्थैर्य से काम करते हुए, अपने को एक प्रकार से प्रचारक ही समझ कर काम बढा सकेंगे। वास्तव में एक दृष्टि से प्रत्येक स्वयसेवक स्वय को प्रचारक मानकर, आलस छोडकर, सघ कार्यार्थ प्रयत्नरत रहे, यह अपने सभी माननीय अधिकारियों के अनुसार मुझे भी लगता है। प्रचारक के नाते जो काम कर चुके हैं, उनसे तो यह अपेक्षा अधिक ही होती है। इसमें सदेह नहीं कि वह आप पूर्ण करेंगे। इस दृष्टि से भी, आपने ऊपर जो वाक्य उद्धृत किया है, वह अनावश्यक है। आप घर लौटकर, जीवननिर्वाह का साधन स्वीकार कर, सघकार्य करते ही रहेंगे। इसलिए प्रचारक जीवन स्थगित करने में आप कुछ दोषमय काम कर रहे हैं, ऐसा मानकर खेद करने की आवश्यकता नहीं। (मूल मराठी)

२६६ राष्ट्रीय दु ख के सामने वैयक्तिक कष्ट लघु

श्री बद्रीप्रसाद जी, कोटा (राजस्थान) २१ अप्रैल, १९५१

जीवन में सुख-दु ख के प्रसग आते ही रहते हैं। यह ससार ही ऐसा है। उसमें भी सुख से दु ख का पलडा भारी ही रहता है। सोचें, तो

कहना पडेगा कि व्यक्ति या परिवार के नाते हममें कोई कितना भी सपन्न तथा सुखी क्यों न हो, अपने समाज की सस्कारशून्य, आत्मविस्मृत, विच्छिन्न, परिणामस्वरूप दुर्वल तथा अपमानित स्थिति को देखकर राष्ट्र की अस्मिता में निर्मित ग्लानि को देखकर सद्भावसपन्न व्यक्ति उद्विग्न होकर निरतर दु ख का ही अनुभव करेगा। इस महनीय दु ख के सामने वैयक्तिक या पारिवारिक कष्ट कितने लघु हैं और इस बृहत् दु ख को मिटाने के कार्य में उनके कारण व्यत्यय उत्पन्न होने देना भी ठीक दिखता नहीं, यह कोई भी समझ सकता है। आप तो सद्भावपूर्ण स्वयसेवक होने के नाते इसे उत्कृष्ट रीति से अनुभव कर सकते हैं।

इतना होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति की विशेष अडचनों का विचार अपने कार्य में होता ही है। होना आवश्यक भी है, किंतु ऐसे अपवादभूत कारणों से सामान्य सार्वकालिक नियमों में तो परिवर्तन होना ठीक नहीं। यही विचार मन में रखने से कार्यनिष्ठा के साथ ही पारिवारिक कर्तव्य भी सुचारु रूप से निभाए जा सकते हैं।

आपकी ओर से अधिकाधिक कार्य हो तथा कार्य की योग्य वृद्धि में आपके प्रयत्न बहुमूल्य सिद्ध होते रहें, यह श्रीपरमात्मा की प्रार्थना कर पत्र पूर्ण करता हूँ।

२६७ व्यवसाय का चयन

श्री दत्तोपत पटवर्धन, पुणे — २१ अप्रैल, १९५९

माननीय श्री बावा भिडे आदि अपने आत्मीय व्यक्तियों के विचार से चलना उचित होगा।

निर्दोष तो कुछ भी नहीं। निर्दोष तथा सात्विक भी हो और आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारक हो– ऐसी दोनों बातें सधना कठिन है। आर्थिक लाभ की दृष्टि से धनोत्पादक व्यवसाय स्वीकारना होगा। व्यवसाय में अनेक उल्टी-सीधी बातें करनी पडती हैं, ऐसा सुनता हूँ। आपने भी वैसा ही लिखा है। ऐसी यह दुविधा है। इसमें से यदि मार्ग निकालना हो, तो व्यवसाय तो स्वीकारें, परतु उसका उपयोग अन्याय का प्रतिबध करने के हेतु करें। फलत व्यवसाय भी चलेगा और चारित्र्यरक्षण भी होगा।

नौकरी सघकार्य में बाधा डालती है। हमारी दृष्टि से

नियम दोषपूर्ण हैं तथा राष्ट्र के लिए हानिकार हैं, फिर भी वे बाधक तो हैं ही। परतु व्यवसाय एक चस्का लगानेवाली माया है, उसमें बाधा निर्माण करनेवाला, अपना ही मन प्रमुख है। नौकरी करो तो दूसरों के नियमों का पालन करना पडता है और सघकार्य में बाधा आती है, धधा करो तो पैसा कमाने का चस्का लगता है और स्वय की इच्छा ही बाधारूप सिद्ध हो सकती है। इसका उपाय है, जाज्वल्य निष्ठा, सघकार्य करने की लगन दृढनिश्चय, परिस्थिति के सम्मुख न झुकने की स्वाभिमानपूर्ण वृति इत्यादि सद्गुणों का सवर्धन करना। यह उपाय करने पर कोई भी व्यवसाय हमें समान ही प्रतीत होगा। (मूल मराठी)

२९८ गुणावगुणो का नियमन

श्री अनतराव देवकुळे, २१ अप्रैल, १९५९

कार्य की दृष्टि से प्रचारक-जीवन से निवृत्त होने के विषय में आपने इसके पूर्व ही सूचित किया था, तथापि कार्य करते रहने का आपका जो स्वभाव है, वह आपको चुपचाप बैठने देगा, ऐसा लगता नहीं। ऐसी परिस्थिति में, आसपास के सहयोगियों से हिलमिलकर रहना तथा निर्धारित रीति के अनुसार अपनी शक्तियों को नियमित कर नित्य प्रयत्नशील रहना ही लाभकारी होगा। व्यक्ति के गुणावगुणों का प्रभाव आसपास पडता ही है। अत उन गुणावगुणों को निश्चय के साथ कार्यानुकूल बनाने का उद्योग किया जाना चाहिए ऐसा मैं, परमपूजनीय डाक्टर जी से लेकर अन्य सब प्रमुख कार्यकर्ताओं तक सबके ही मुख से सुनते आया हूँ। यह प्रयास करते समय, भाग्य को कोसते हुए हम जैसे हैं वैसे ही बने रहेंगे, सब को हमारी विशेषताएँ ध्यान में रखकर हमसे तालमेल बिठा लेना चाहिए, ऐसा कहने की छूट कार्यकर्ता के लिए नहीं है। कोई अनजाने कहे तो क्षम्य है। आपके सद्भाग्य से श्री मोरोपत जैसा आपके विषय में आत्मीयता रखनेवाला सहयोगी मार्गदर्शक आपको उपलब्ध है। माननीय श्री बाबा भिडे तो बडी अधिकार वाणी से आपको उचित बात बता सकते हैं। उनका आप पर अत्यधिक प्रेम तथा विश्वास है। अपना सब भला-बुरा आप उनपर सौंप दें। प्रत्येक चरण आप उनके मार्गदर्शन के अनुसार उठाएँ। तब आपकी अपार शक्ति का तथा बहुविध गुणों का उत्तम लाभ होगा। यह लाभ हो, ऐसी मेरी इच्छा है। कोई भी यदि आपके विषय में अपधारणा रखता है, अविश्वास

अथवा अनादर प्रकट करता है, तो मुझे पीडा होती है, इसीलिए यह सब लिखा है। (मूल मराठी)

२६६ कर्तव्य कठोरता जागृत रहे

डा स वा जोशी, नादेड २१ अप्रेल, १६५६

क्षेत्र में धीरे-धीरे, परतु निश्चित रूप से कार्य बढ रहा है और पुराने तथा नए स्वयसेवक बधु अधिकाधिक ध्यान देने में तत्पर हो रहे हैं, यह पढ कर बडा समाधान प्राप्त हुआ। यदि प्रत्येक स्वयसेवक थोडा सा चितन करे, अर्थात् अपने राष्ट्र की लज्जास्पद सद्यस्थिति, आत्मविस्मृत असगठितता, नित्यवर्धिष्णु अत कलह, आसपास में बढते हुए सकट, इस सब स्थिति में अपना स्थिर चिरजीवी सगठित राष्ट्रजीवन शीघ्र खडा कर उसे वैसा ही सदा बनाए रखने के प्रयासरूप सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य, इन बातों का यदि वह स्मरण करे, तब उसे सहज ही अखड उत्साही वृत्ति तथा कर्मशीलता प्राप्त हो सकती है। तब अपनी शाखा की दृष्टि से कर्तव्यकठोर कर्मनिष्ठा जागृत रहेगी और अल्पकाल में ही पूर्ण वातावरण बदलने के लिए आवश्यक कार्यवृद्धि नि सशय होगी। (मूल मराठी)

३०० शतायुष का लाभ हो

श्री बाबा (भालजी) पेंढारकर, कोल्हापुर २६ अप्रैल, १६५६

आपने आयु के साठ वष पूर्ण कर इकसठवें वप में पदापण किया है। उसके उपलक्ष्य में मैं आपका हार्दिक अभिनदन करता हूँ। यह बडी अभिनदनीय बात है कि जीवन में अनेक प्रकार की अनिश्चितता, उसमें से पैदा होनेवाली चिता, ध्येय-निष्ठा के कारण अल्पज्ञ या विकृत व्यक्ति एव व्यक्तिसमूह द्वारा हुआ विरोध एव छल, उसमें भी स्वय के शरीर की दुर्बल एव बीच-बीच में रोगाक्रात अवस्था, इन सब बातों पर मात देकर मन की प्रसन्नता एव सतुलन रखकर आपने इतने काल तक हँसते-हँसते सघर्ष करते हुए काल पर विजय प्राप्त की। अपने शास्त्र के अनुसार अधिकाधिक सुगमता से यह सब विजय प्राप्त कर, अदीन शतायुष जीवन का आपको लाभ हो, इसलिए इस मगल प्रसग पर श्रीपरमेश्वर के निकट याचना करता हूँ। (मूल मराठी)

३०१ सख्यावृद्धि के साथ गुणवृद्धि भी

श्री गजानन जोशी, ३ जुलाई, १९५८

अब गर्मी की छुट्टियाँ समाप्त हुई हैं। शिक्षा-सस्थाओं का कार्य पुन प्रारभ हो गया है। गाँव गए हुए सब बधु लौटे होंगे और अब शाखा का रूप हरा-भरा दिखाई पड रहा होगा। पुराने स्वयसेवकों ने आना प्रारभ कर दिया है, केवल इस बात से सतोष नहीं मानना चाहिए। प्रत्येक स्वयसेवक के कुछ मित्र होंगे। अत हम उन्हें करें कि स्नेहपूर्ण ढग से बातें करते हुए अपने-अपने मित्रों को शाखा में ले आएँ। स्वय भी योग्य रीति से प्रयत्न करें। सख्यावृद्धि के साथ ही, व्यवस्था, नियमितता, अनुशासन, सघ-विषयक ज्ञान तथा सद्भावना, इन अत्यावश्यक बातों की ओर भी तत्परता से ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार सुचारु रूप से प्रयत्नशील रहें। स्वय की पढाई की ओर पूरा ध्यान रहे, थोडा भी दुर्लक्ष न हो। (मूल मराठी)

३०२ कारणमीमासा करना ठीक नहीं

श्री किसन इनामदार, मुबई ४ जुलाई, १९५६

यह ज्ञात हुआ कि आपकी योजना नए क्षेत्र में हुई और आप मुबई आए हैं। आनद हुआ। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में पहुँचने के बाद, स्थानातरण की कारणमीमासा करना तथा उसके सबध में दु ख करते बैठना लाभकर नहीं है। अर्थात् वैसे कुछ कारण यथार्थ रूप में ध्यान में आ गए हों, तो उनकी पुनरावृत्ति न होने पावे, इसकी चिता रखना हितावह होगा। इस रीति से प्रसन्न मन से कार्य कर अपेक्षानुरूप आप सफल हों ऐसी इच्छा है।

यह सत्य है कि हमारे कार्य का स्वरूप गभीर है। परतु अत करण में गाभीर्य सँजोए रखकर भी हँसते-खेलते कार्य करने की शैली हस्तगत करना उचित है। जिनकी लगन तथा प्रतिभा से अपने इस कार्य का उद्गम हुआ है, उनका आदर्श हमारे सम्मुख रहे। तब वह शैली हस्तगत होगी। आप पुराने तथा अनुभव प्राप्त कार्यकर्ता हैं। अत आपको अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

और एक बात है। अपना विशिष्ट प्रकार का स्वभाव रहता है। अपनी कुछ आदतें रहती हैं, अत कभी-कभी आसपास के सहयोगियों से

अपना मेल नहीं बैठ पाता। ऐसे अवसर पर यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने स्वभाव पर कुछ नियत्रण रखें तथा परस्पर सहयोग का वातावरण उत्पन्न करें। इस दृष्टि से भी हमारा आदर्श हमें स्पष्ट मार्गदर्शन कर रहा है। (मूल मराठी)

३०३ शिक्षा-क्षेत्र की विकृतियाँ दूर करे

श्री नामदेव धाडगे, मुवइ ४ जुलाई, १९५९

आजकल ऐसा दिखाई देता है कि कालेज के वायुमडल में, गभीरता से विचार करना, कर्तव्यदक्षता, निरतर सतत समय का परिपालन करना, अनुशासन आदि बातों का अभाव बढ रहा है। जिस परीक्षा में बैठना हो, उसका अभ्यास भी दृढता के साथ करने की प्रवृत्ति नष्ट हो गई है और छोटी-छोटी ज्ञानशून्य कुजियों पर तथा टिप्पणियों पर भरोसा रखकर परीक्षा उत्तीर्ण करने की हानिकारक प्रवृत्ति बढ रही है। बारीकी से देखने-सोचने पर उनमें अनेक सत्प्रवृत्त भी दिखाई देते हैं। कुछ भला हो, ऐसा सामान्यतया सोचनेवाले भी मिलते हैं। बाह्य वातावरण के प्रभाव में उनकी सद्‌भावनाएँ या तो दब जाती हैं या विकृत रूप धारण करती हैं। उन्हें यदि अपनी मूल भावना प्रकट करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए और शुद्ध स्वराष्ट्रभक्ति की मधुरिमा से आकृष्ट किया जाए, तो कुछ अच्छे बुद्धिमान तथा कर्तृत्ववान स्वयसेवक इस कार्य के लिए कटिबद्ध हो सकते हैं। प्रारभ में यश मिले न मिले, आप इस दृष्टि से धीरज के साथ प्रयत्नशील रहें। जब मुवई आऊँगा, तब आपकी इस क्षेत्र में हुई प्रगति दिखाई देगी ही।

(मूल मराठी)

३०४ सद्‌भावनाओ को जागृत करे

श्री श्रीकृष्ण दाडेकर, खडकी (महाराष्ट्र) ४ जुलाई, १९५९

व्यवस्थित रीति से सब शिक्षा-सस्थाओं में सपर्क प्रस्थापित करें। कुछ होनहार, बुद्धिमान, सुस्वभावी, सुशील तरुण जॉचकर उन्हें विशेष प्रयत्नपूर्वक कार्य में रुचि लेने को प्रवृत्त करें। उनकी सद्‌भावनाओं को जागृत कर स्वराष्ट्रभक्ति का विचार उनमें दृढ करने का प्रयत्न करें। स्वय कर्मठता से राष्ट्रोत्थान के लिए सुयोग्य शक्ति-सचय के काम में अगुआ रहूँगा- ऐसा उनमें निश्चय निर्माण करना हितकारी होगा एव लगता है कि

उनके माध्यम से इन सब सस्थाओं में अपने विचारों का प्रभाव स्थायी कर वहाँ के बधुओं में स्वयसेवक खोजना सुलभ होगा। अनेक स्थानों से, स्वयसेवक रह चुके विद्यार्थी भी आए होंगे। उनकी खोज कर उन्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो तो आत्मीयता से वर्ताव कर उन्हें नित्य एव दैनिक शाखा-कार्य में स्थिर करने का जोरदार प्रयास तत्काल करना चाहिए। इससे उन्हें अधिक समय सघ के वातावरण से दूर रहने की हानि भोगनी नहीं पडेगी एव उत्तम आदतें भी स्थायी रहेंगी।

अन्य क्षेत्रों में भी धीमी गति से एव उत्साह से उत्तम बधु इकट्ठा करने के प्रयास चालू रहें। (मूल मराठी)

३०५ कार्यमग्न स्वयसेवक से अपेक्षा

श्री जवाहरलाल जी, बिजनौर (उ प्र) ५ जुलाई, १९५६

आपने अपने को 'तुच्छ स्वयसेवक' कहा है। स्वयसेवक योग्य रीति से कार्य में सलग्न रहने से कभी तुच्छ नहीं माना जाता। यह अकारण नम्रता का प्रदर्शन अच्छा नहीं लगता। नम्रता निरलस कार्य से तथा अपने श्रद्धापूर्ण व्यवहार से स्वभावत प्रकट होती है। वही उपादेय है।

आपको अन्य किस क्षेत्र में भेजा जा रहा है इसका कुछ भी पता, आपके पत्र से लगा नहीं। पत्र से प्रतीत होता है कि इस योजना से आपको दु ख हो रहा है। आप असतुष्ट दिखाई देते हैं। किन्तु कार्य करनेवाला स्वयसेवक जो भी क्षेत्र प्राप्त हो, उसमें सानद, सोत्साह कार्यमग्न होकर सफल कार्य करने के लिए सचेष्ट रहना अपेक्षित है। आशा है कि आप इस अपेक्षा को पूरा करेंगे।

३०६ सफल सघ-कार्य का लक्षण

श्री भालचद्र सातर्डेकर, देवरुख, रत्नागिरि ६ जुलाई, १९५६

एक-एक स्वयसेवक को चुनकर, प्रथम सुयोग्य कार्यशील स्वयसेवकों का एक गुट खडा करें। उनके सहकार्य से छोटे-बडे सब स्वयसेवकों को सुयोग्य बनाएँ। तब वह एक उत्तम शाखा बनेगी। शाखा का समाज से आप ही आप सपर्क निर्माण होगा। फलस्वरूप हमारे विचार, भावनाएँ, राष्ट्रभक्तिमय

समर्पित जीवन का निश्चय, आदि बातें उनके मन में स्थिर होंगी तथा विकसित होंगी। इस प्रकार से प्रयत्न करना ही सफल सघकार्य का लक्षण है, ऐसा हमारे अनुभवी अधिकारी कार्यकर्तागण कहते हैं। आप अपने कार्य क्षेत्र में यह सब प्रत्यक्ष में उतारने के प्रयत्नों में मग्न होकर यश प्राप्त करें।

(मूल मराठी)

३०७ दृढ नींव पर शाखाओ की सख्या बढे

डा स वा जोशी, नादेड (महाराष्ट्र) ६ जुलाई, १६५६

जिले में अच्छी प्रगतिशील, दृढ नींव पर खडी शाखाओं की सख्या बढे, इस दृष्टि से विचार हुआ ही होगा। प्रत्येक स्वयसेवक को सघ का वैचारिक अधिष्ठान उत्तम ज्ञात हो, उसकी शुद्धता एव सत्यता मन पर अकित हो, अपनी कार्यपद्धति का एव व्यवहार का उत्तम बोध होकर वह उसे अपने नित्य आचरण में उतारता हो, सघ का कार्य, जीवनव्यापी, सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है ऐसा ज्ञात हो। एतदर्थ अधिकाधिक राष्ट्रार्पित भक्तिपूर्णता मन पर अकित हो। इस दृष्टि से सभी शाखाओं के सभी स्वयसेवकों की ओर उत्तम ध्यान रखने की आवश्यकता है। कुल काम की रचना भी इन बातों को ध्यान में रखकर ही करना हितकारी है, ऐसा सब प्रकार का विचार बैठक में हुआ होगा। विश्वास है कि उसका फल इस वर्ष उत्तम कार्यवृद्धि में दिखाई देगा। (मूल मराठी)

३०८ स्वास्थ्य सुधार का श्रेय सबको

श्री काशीनाथपत लिमये, सागली २ सितबर, १६५६

प्रकृति ठीक है। उपचारों का परिणाम सतोषजनक हुआ है। सब श्रेय इदौर के सघचालक माननीय पडित रामनारायण शास्त्री जी की औषधियोजना को है तथा साथ ही माननीय श्री राजाभाऊ साठे, उनकी पत्नी सौभाग्यवती मीनाक्षीबाई साठे तथा उनके घर के सब बच्चों को है। वे सब अतिस्नेह से दिनभर कष्ट करते रहे। हर डेढ घटे में मेरे लिए छाछ बनता था। अन्य सब पथ्य आदि का भार उन्होंने उत्तम रीति से उठाया। अत इन सबके अकृत्रिम स्नेह को मेरे स्वास्थ्य-सुधार का श्रेय है। डाक्टर आबाजी थत्ते तो रात-दिन मेरा ध्यान रखते थे। उन्हें जो कष्ट उठाने पडे, उनका वर्णन करना भी कठिन हैं। एक क्षुद्र शरीर के लिए इतने बडे लोगों

को कष्ट देने का दुर्भाग्य मेरे हिस्से में आया, परंतु इसके सबध में अधिक लिखना भी इन सब आत्मीयजनों के बडप्पन का अपमान करने जैसा होगा। अत मैं भावनाओं को प्रकट न कर, यहीं रुकता हूँ। (मूल मराठी)

३०६ दुर्धर सकट घात लगाए बैठे हैं

श्री सखाराम पाटील, ३ सितबर, १६५८

जब शाखा नई है, तब प्रारभ में कुछ बाधाएँ आएँगी ही। कुछ भ्रांत धारणाओं से सामना भी करना पडेगा। हमारे समाज का यह एक दुर्भाग्य है कि आपस में झगडने में ही हमारी सब शक्ति का व्यय होता है। राष्ट्र के सम्मुख जो अनेक समस्याएँ तथा सकट उपस्थित हैं, उनकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। पिछले सहस्राधिक वर्षों में हमें अनेकों आपत्तियाँ झेलनी पडीं तथा दासता स्वीकारनी पडी, इसकी जड में यही वृत्ति है। आगे भी यदि ऐसा ही चलता है, तो समझो कि अधिक भीषण तथा दुर्धर सकट हमारी घात में बैठे हैं। समाज में इस विषय में पूर्ण अज्ञान होने के कारण ही हमें कार्य करना है। योग्य अनुभूति उत्पन्न करना, योग्य श्रद्धा जगाना, स्वराष्ट्र-विषयक यथार्थ ज्ञान एव श्रद्धा के बीज बोकर सगठित एकत्व का अनुशासनबद्ध सामर्थ्य खडाकर सब सकटों पर मातकर अपने राष्ट्र को ऊर्जितावस्था प्रदान करना ही अपना सघकार्य है। यह कुशलता से करना होगा। एदर्थ सब समाज बधुओं के विषय में सच्ची आत्मीयता और लगन रखनी होगी। प्रत्यक्ष व्यवहार भी वैसा ही रखना होगा। उसमें अकृत्रिमता लानी होगी। इन सब बातों का ध्यान रखकर व्यक्ति-व्यक्ति को जोडकर शाखा सबल करने का आपका प्रयास चल ही रहा है। वह अविरत चलता रहे। यश परमेश्वर देगा क्योंकि यह उसी का कार्य है। (मूल मराठी)

३१० ईश्वरीय कार्य के सेवक

श्री सुरेश केतकर, सागली ३ सितबर, १६५८

सर्वत्र कार्य एक ही प्रकार का है। अपने ही सारे लोग हैं। इसलिए सभी के गुण-दोष भी समान हैं थोडी उदासीनता एव फलस्वरूप शिथिलता है। वास्तव में चारों ओर घटनाएँ इतनी स्पष्टता से घटित हो रही हैं कि सभी को अपने कार्य की अनिवार्यता, आवश्यकता जँचनी चाहिए एव

वह शीघ्र पूरा कर हमेशा टिकाए रखने के लिए प्राणपण से चेष्टा करने की आकाक्षा उद्दीपित होनी चाहिए। अपने अथक प्रयत्नों से यह सब होगा। श्रीप्रभुकृपा से यश निश्चित रखा हुआ है, क्योंकि यह कार्य उसी का है। हम सेवक के नाते अपनी ओर कर्तृत्व का अहकार भी न लेते हुए, जी-जान से परिश्रम करने के अधिकारी मात्र हैं। इस सत्य श्रद्धा से कार्यरत रहें, कार्यरत रहने को सब बधुओं को प्रवृत्त करते रहें। (मूल मराठी)

३११ अत्युत्साह को नियत्रित करे

डा प्रबोध बाबू बेनर्जी, वाराणसी 　　　　४ सितबर, १९५९

आशा है कि अपने मित्रगण उत्साहपूर्वक शाखा का कार्य करते होंगे, साथ ही कार्य की आत्मा तथा कार्यपद्धति का भी ध्यान अवश्य रखते होंगे। मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ कि यात्रा में मुझे बडा ही चुभनेवाला अनुभव आया। मिरजापुर स्टेशन पर मा चाचाजी तथा कुछ स्वयसेवक आए थे, सब ठीक ठाक था। किंतु विध्याचल स्टेशन पर स्वयसेवक जय-जयकार कर रहे थे। अति उत्साह में वे अनुशासनहीन हो गए थे, यह बात मुझे बिल्कुल सतोषजनक नहीं लगी। यह सब देखकर श्री गिरिजाशकर बडे दु खी दिखाई दिए। वे अपना दु ख सभवत रोक नहीं सके। लोगों के प्रेम तथा उत्साह को हमें ठीक ढग से व्यक्त करना चाहिए। केवल सत्रस्त या दु खी होने से कोई लाभ नहीं। सबधित कार्यकर्ताओं को सूचित करें।

(मूल अग्रेजी)

३१२ हमे विद्यमान स्थिति को बदलना है

श्री मधु लिमये, नौगाँव (असम) 　　　　४ सितबर, १९५९

जिस स्थिति का आप वर्णन करते हैं, वह तो ऊपर से चली आ रही है। जो गाँवों-कस्बों में रहते हैं, साधारण जीविका कमाते हैं, परिवार-पालन में मग्न हैं, उनकी उदासीनता आश्चर्यकारक तो है, पर उतनी नहीं। जो स्वय को राजनीतिनिपुण मानते हैं, शासन कार्य का भार सँभालते हैं, उसे सँभालने की पात्रता अन्य किसी में नहीं है, ऐसा दावा करते हैं, वे भी कहाँ जागृत दिखाई पडते हैं? जिन्हें श्रेष्ठ या वरिष्ठ माना जाता है, वे महानुभाव सर्वत्र निद्राधीन ही पाए जाते हैं। इन लोगों के विषय में आश्चर्य करते बैठने का हमारे पास समय नहीं है। हमें विद्यमान

को बदलाना है। एतदर्थ हमें हरेक के कानों पर संघकार्य-विषयक बातें डालनी हैं। जब तक वे जागृत नहीं होते, नहीं सुनते, समझकर कृतिनिष्ठ नहीं होते, तब तक हमें कहते रहना है। इस हेतु हमें अपने-अपने क्षेत्र में कमर कसकर प्रयास करने होंगे। आज हमें जो छोटे-बडे सहयोगी प्राप्त हैं, उनमें भी यह प्रेरणा बढाने का यत्न हो। श्रीप्रभुकृपा से यश निश्चित ही प्राप्त होगा, क्योंकि यह उसी का कार्य है।

वैसे तो आपके क्षेत्र में उत्साह है ही। मुझे विश्वास है कि वह बढता ही रहेगा। (मूल मराठी)

३१३ आत्मविश्वास से कार्य करें

श्री शरद कुसरे, गौहाटी (असम) ४ सितबर, १९५९

घर पर भी नित्य नियम से प्रति मास कम से कम एक बार पत्र लिखकर, क्षेमकुशल बताते रहें। इसमें भूल न हो।

शरीर को धीरे-धीरे नए वातावरण का अभ्यास कराना होगा। थोडा-बहुत व्यायाम अवश्य करें, जिससे स्वास्थ्य एव सुदृढता बनी रहेगी। अध्ययन भी करना चाहिए। स्थानीय भाषा उत्तम रीति से लिखने-बोलने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। अपनी ही भाषा है, अत सीखने में कठिनाई नहीं होगी।

शाखाओं का तथा कार्यकर्ताओं का परिचय प्राप्त हुआ ही होगा। सबसे हिलमिलकर रहना चाहिए, परतु उपहास का विषय नहीं बनना चाहिए। हँसी-खेल का वातावरण तो रहे, परतु कार्य में एकात्मता लाने का ध्यान न छूटे। स्वयसेवकों को ऐसी प्रेरणा दें, जिससे उनमें स्वय होकर कार्य करने का उत्साह आए। उनपर कुछ उत्तरदायित्व सौंपें और उनसे वह पूरा करा लें। यही रीति लाभदायक सिद्ध होती है। चर्चा, बैठकें, प्रश्नोत्तर आदि चलते समय वातावरण सुप्रसन्न रखें। इससे स्वयसेवक गभीर विषय का भी आकलन करने लगेंगे और उनमें समझदारी आएगी। इस ढग से अपने सभाषण आदि की रीति-नीति बनाए रखें। घबराएँ नहीं, डरें नहीं। आत्मविश्वास से, परतु नम्रता तथा सुशीलता के साथ रहें।

धैर्य और दृढता के साथ दीर्घ काल तक कार्यमग्न रहने का यदि हम निश्चय करते हैं, तब मन वहाँ रमेगा और प्रयत्न अधिक

यशदायक होंगे। (मूल मराठी)

३१४ प्रयत्न से बुद्धिमान शीलवान युवक पाए जाएँगे

डा स वा जोशी, नादेड (महाराष्ट्र) ४ सितबर, १९५६

कॉलेज के विद्यार्थियों के विषय में आपने जो लिखा है, वह आम बात है। यौवन-सुलभ उच्छृखलता, स्वैरता एव सुखलोलुपता रहती ही है। उनमें ही धीरे-धीरे प्रयत्न किया तो अच्छे एव जीवन में ध्येय की खोज करनेवाले, परतु अभी तक निश्चित मार्ग नहीं मिलने के कारण हतबुद्ध होकर इधर-उधर भटकनेवाले पाए जाकर अपना कार्य जीवन का उच्चतम ध्येय के नाते मन में अंकित होते ही, सब स्वैरता छोडकर एकातिक निष्ठा से कार्य के प्रति समर्पित हो सकनेवाले बुद्धिमान, शीलवान युवक पाए जाएँगे इसमें कोइ सदेह नहीं है। लगन से सबके प्रति सहानुभूति एव प्रेम रखकर प्रयत्न मात्र होना आवश्यक है। (मूल मराठी)

३१५ उत्साह प्रासगिक न रहे

श्री नारायणराव टिकारे, धारवाड, कर्नाटक ५ सितबर, १९५६

मेरे वहाँ जाने के उपलक्ष्य में प्रासगिक उत्साह न रहे, अपितु अपने कार्य का स्वरूप तथा चारों ओर की परिस्थिति का आकलन कर सघकार्य की अनिवार्य आवश्यकता की अनुभूति के फलस्वरूप उत्साह का सचार हो। मैं सतत परिश्रम करूँगा, व्यक्ति-व्यक्ति को जुटाऊँगा, प्रबल प्रभावी सगठित शक्ति अल्पकाल में खडी करूँगा, उसे स्थायी रूप दूँगा, ऐसी उज्ज्वल आकाक्षा के परिणामस्वरूप निरतर उत्साह रग-रग में बना रहे। इसका बोध सब छोटे-बडे स्वयसेवकों को कराते रहें। (मूल मराठी)

३१६ अनावश्यक जल्दबाजी न हो

श्री भालचद्र विष्णुपत कुलकर्णी, जव्हार ५ सितबर, १९५६

आप इस क्षेत्र में नए हैं और परिचय आदि प्राप्त कर उत्साह से कार्य में जुटे हैं, ऐसा ज्ञात हुआ। बडी प्रसन्नता हुई। अच्छी शाखाओं का निर्माण हो। अनावश्यक जल्दबाजी न करें। बिना पूर्ण विचार किए

आज की शक्ति की मर्यादाएँ ध्यान में न लेकर यदि हम अनेक स्थानों पर शाखाएँ खोलते हैं और नित्य देखभाल के अभाव में वे वद हो जाती हैं, तो यह हानिकर सिद्ध होता है। अत शाखा का निर्माण, शक्ति की वृद्धि, फिर नव शाखाओं का निर्माण– ऐसी योजना वनाने पर कार्य ठीक ढग से खड़ा होगा। प्रारम्भ से ही कुछ बातों की ओर विशेष ध्यान दें। कार्यक्रम सुव्यवस्थित हों। अनुशासन तथा नियमितता का पालन हो। आपस का व्यवहार शुद्ध, स्नेहपूर्ण, आनदमय रहे। सब हिलमिलकर व्यवहार करें। सपर्क में आनेवाले अथवा पूर्वसपर्कित प्रत्येक स्वयसेवक को योग्य बोध हो, ऐसा प्रयत्न करें। परिणामत स्थान-स्थान पर स्वय के बल पर योग्य रीति से शाखा-कार्य सँभालनेवाले कार्यकर्ता प्राप्त होंगे और कार्यवृद्धि में सुगमता होगी। (मूल मराठी)

३१७ तार पर चलने जैसा कठिन काम

श्री बालासाहब साठ्ये, पुणे (महाराष्ट्र) ५ सितबर, १९५६

गभीरता से सब विचार हो इसलिए आप कार्य करते रहें। अपने आसपास उत्तम तरुण इकट्ठा कर उन्हें ठीक प्रकार से समझाते रहें। ऐसा करते समय भी यह सावधानी बरतें कि किसी के विषय में अनास्था या अनादर उत्पन्न नहीं होगा। यह तार पर चलने जैसा बडा कठिन काम है। कार्यकर्ता, उसमें भी प्रचारक होना एक कडी कसौटी है। उसमें हम आप ओछे न पडें, क्योंकि अपनी पीठपर अनेकों की परस्पर विरोधी, सनकी, जिद्दी, सज्जन, विक्षिप्त ऐसे अनेकविध 'बहुतों के मन को सँभालनेवाले प पू डाक्टर जी की सपूर्ण पुण्याई खडी है। इस विश्वास से आप कार्य में शुद्धता लाकर अपेक्षा के अनुसार प्रगति भी ला सकेंगे । यह स्पष्ट ही है कि समाज के जानकार कहलानेवाले कितने उदासीन हैं। इसलिए अपने को महद्‌भाग्य से प्राप्त हुई जागृत दृष्टि सब बधुओं को देने का सघ का कठिन व्रत अपने को प्राणपण से आचरण में लाना है। निद्रित एव निद्रा का बहाना करनेवाले दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों को सच्ची जागृति प्राप्त करा देना है। जागृति का स्वाग लेकर कामचोर बननेवालों का बनावटी बुरका हल्के हाथ से उतारकर उन्हें कर्तव्य हेतु प्रेरित करना है। सघ की अनिवार्य आवश्यकता समाज की आज की किकर्तव्यविमूढ, अकर्मण्य, उदासीन अवस्था के कारण निरपवादिता से अपने मन में अकित हो, ऐसी

स्थिति है। (मूल मराठी)

३१८ स्नेहादरयुक्त आचरण रोम-रोम मे भर ले

श्री कृष्णा मानेकर, बारामती (जि पुणे) ५ सितबर, १९५६

आपके पत्र से व्यक्त हुई आपकी मानसिकता को ध्यान में लेकर ऐसा लगता है कि आपका तात्कालिक घरेलू कारणों से त्रस्त होकर लौट आना एव घर के बडे-बूढों के प्रति मन में अनादर एव चिढ पालना ठीक नहीं है। विरक्ति पैदा करनेवाले प्रसग आते हैं। त्रस्त होने से घर-परिवार के जीवन से घृणा होकर श्रेष्ठ मार्ग की ओर बहुत से मुडते हैं। उनमें से अनेक मार्ग में अविचल रहते हुए प्रगति भी करते हैं, तो कुछ को पश्चाताप होता है। परतु एक बार उत्तम मार्ग स्वीकार करने पर वयोवृद्ध ज्येष्ठ मडली के प्रति स्नेह एव आदर भावना का पालन-पोषण करना चाहिए। विशेषत सपूर्ण समाज को स्नेहसूत्र में गूँथकर अनुशासनबद्ध सगठन करने के लिए प्रयत्नशील राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के स्वयसेवकों को, उनमें भी कार्यकर्ताओं को, इतना विशुद्ध स्नेहादरयुक्त आचरण अपने रोम-रोम में भर लेना चाहिए कि जिससे घर का आशीर्वाद भी प्राप्त हो सके। आप अवश्य ऐसा प्रयत्न करें। आपके क्षेत्र में इन गुणों से आपको उत्कृष्ट यश प्राप्त हो सकेगा।

इस क्षेत्र के अपने कार्य की प्रगति सूचित करते रहें। स्वय भी कुछ पवित्र-ग्रथों का पठन-मनन, कार्योपयोगी आवश्यक पठन, व्यायामद्वारा शरीर स्वास्थ्य-रक्षण एव सवर्धन एव ईश-चिंतन से मन एव बुद्धि कार्य में निश्चल रहेगी ऐसा सब प्रयत्न प्रतिदिन, अल्पकाल ही क्यों न हो, अवश्य करते रहें। (मूल मराठी)

३१९ हमारी दुर्बलता से आततायियो को प्रोत्साहन

श्री बशीलालजी सोनी, सिलीगुडी ६ सितबर, १९५६

पूरा समाचार प्राप्त हुआ। इस प्रकार की दुर्घटनाओं का कारण अपने समाज की आत्मविस्मृति, असगठित, अतर्दुर्बल अवस्था ही है। इसी कारण अन्य समाज को उद्दड होकर आक्रमण करने की, हिंदू-समाज का सब प्रकार अपमान करने की इच्छा होती है, साहस होता है। इसी कारण

शासन चलानेवाले हिंदू, कितने ही बडे या विद्वान क्यों न हो, आक्रमणकारियों से दबते हैं तथा उन्हें प्रसन्न करने-रखने के हेतु अपने ही हिंदू समाज को कोसते हैं, अन्याय्य प्रतिबंध डालते हैं, दड भी देते हैं। अर्थात् इस नीति से आक्रमणकारी प्रसन्न क्या होते होंगे, वे तो और बलिष्ठ बनकर कभी शासन को भी उत्तर देने का प्रयास कर सकेंगे। किन्तु कुछ स्वार्थ तथा भय के कारण बडे कहलानेवाले इस सकट की ओर आँखे मूँदकर आत्मविनाश के मार्ग पर ही चल रहे हैं।

यह सब सोचकर अपने समाज का स्वाभिमान जगाना, एकता जगाना, अनुशासित शक्ति के रूप में अपने श्रेष्ठ राष्ट्रीयत्व के साक्षात्कार से समाज को खडा करना यही एकमात्र मार्ग है। अपना यही कार्य है। व्यक्ति-व्यक्ति के पास विशुद्ध स्नेह से पहुँचकर उसे समझा-बुझाकर अपने साथ एक सूत्र में लाकर उसे खडा करते हुए समाज को प्रभावित एव प्रोत्साहित कर सकें, ऐसी विशाल शाखाओं का निमार्ण दिन-प्रतिदिन नियमपूर्वक सर्व समाज के सम्मुख समाज की अपनी ही जागृत शक्ति, पूर्ण चेतना का दर्शन कराना, इसपर पूरी शक्ति केंद्रित कर प्रत्येक स्वयसेवक को कार्यरत रहना आवश्यक है।

३२० *शिविर मे शारीरिक कार्यक्रम आवश्यक*

श्री गिरिराज शर्मा, जयपुर २२ सितबर, १९६५

शिविर में शिविर के लिए योग्य उत्तम अनुशासनयुक्त तथा अनुशासन का सस्कार दृढ करनेवाले कार्यक्रमों का होना बहुत आवश्यक प्रतीत होता है। किन्तु उसमें कमी करने का सुझाव आपने रखा था, तब मैंने सोचा कि यदि बैठकें, विचार-विनिमय तथा विचार-प्रदर्शन ही करना हो, तो शिविर का कार्यक्रम न रखकर एक दिन का वास्तव्य रखा जाए और उसमें विचार-विनिमयादि किया जाए तो पर्याप्त होगा। परतु आपकी शिविर की ही पूरी योजना है, यह तो बहुत प्रसन्नता का सवाद है। शिविर में दो दिन रहना मेरे लिए प्रिय ही है। किन्तु शारीरिक आदि कार्यक्रमों का आवश्यक अश छोडकर शिविर चले तो उसमें रुचि होती नहीं। अत उत्तम अनुशासनपूर्ण कार्यक्रमों की शिक्षा तथा अभ्यास का प्रबध पूरा रहे, यही ठीक होगा। मुझे कुछ बडी लबी-चौडी बातें भी तो करनी नहीं हैं कि अनिवार्य शारीरिक आदि कार्यक्रमों को छुट्टी देकर मैं बैठकों में बोलता-बुलवाता रहूँ। कहना

थोडा ही है। प्रत्यक्ष कार्य की रचना दृढ करना, उसका अभ्यास करना यही इस समय अतीव महत्त्व का अग है। इसी दृष्टि से कार्यक्रमों की महत्ता का विशेष आग्रह आप कर सकें, इस हेतु से ही मैंने पत्र लिखा था।

३२१ प्रभु-मदिर मे शाति प्राप्त हो

श्री काशीनाथराव लिमये, सागली (महाराष्ट्र) २३ सितबर, १६५६

यह ज्ञात हुआ है कि सागली एव कोल्हापुर में आपने कुछ कार्यक्रमों की योजना बनाई है। मदिर में पूजा के समय बिना कारण व्यर्थ गडबड, हडबडी या धूमधाम न हो। मन को शाति प्राप्त हो। अपने देव का विज्ञापन होना, होने देना मन को अच्छा नहीं लगता है। इसलिए उस समय शाति रखने की आपने सूचना दी है। फिर भी स्थानीय लोगों का उत्साह मर्यादा के बाहर उफनने की सभावना ध्यान में रखकर अधिक आग्रह से शाति रखने की व्यवस्था करनी पडेगी। अर्थात् मदिर में दर्शनार्थ या पूजा के लिए आनेवाले अन्य भाविक लोगों को रोकना या अन्य किसी प्रकार की उनकी असुविधा, विलब आदि होना या होने देना बिल्कुल ही अशोभनीय है। इसलिए वैसा कुछ अत्यधिक उत्साह में न होने की दक्षता लेनी पडेगी। ऐसे लोगों की आवाज चालू रहकर भी अपना पूजा का कार्यक्रम यथाविधि हो सकेगा, परतु अपने ही लोगों द्वारा भीड, गडबड एव दूसरों को अडचन एव तकलीफ न हो।

३२२ नवीन स्वयसेवक कार्य हेतु आगे आएँ

श्री जगदीश अग्रोल, २५ सितबर, १६५६

गत वर्ष की अपेक्षा अपने पुराने विभाग के क्षेत्र में सब प्रकार की कार्य वृद्धि हुई है, यह जानकर सतोष हुआ। कार्य में स्थैर्य, उत्साह, तत्त्वनिष्ठा, व्यवहार-शुद्धता तथा चातुर्य वृद्धिगत हो– इधर बहुत सतर्कता से ध्यान देना आवश्यक है। पुराने कार्यकर्ता अन्यान्य क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार जाने पर उनका स्थान ग्रहण करने तथा नूतन कार्यवृद्धि करने एव सँभालने के लिए नवीन अच्छे पक्के स्वयसेवक कार्य के हेतु आगे आकर सघ ही एकमात्र साध्य-साधना बनाकर तदनुरूप अपने जीवन की दिशा निश्चित करें, इसकी नितात आवश्यकता है, अन्यथा कार्य बढने पर भी उसका सूत्र

सजीव तथा दृढ बनाकर रखने में बहुत कठिनाई होती है। इधर आप सबका ध्यान होगा ही।

३२३ शिवप्रभु का सच्चा स्मरण-पूजन

श्री रवींद्र वामन रामदास, मुंबई   १२ अक्तूबर, १९५९

आपके द्वारा भेजी पुस्तक कल प्राप्त हुई। कार्यक्रम के पश्चात् कल ही मध्य रात में पढ ली। बहुत संतोष हुआ। श्री शिव छत्रपति का जीवन अर्थात् अविरत कर्मरत, धर्मरत, संपूर्णत: राष्ट्रसमर्पित जीवन, अदम्य आकांक्षाओं से युक्त विजिगीषु जीवन, धीरोदात्त दृढ जीवन है। उसका स्मरण, चिंतन अपने को प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है। उनकी कर्मशीलता, दृढव्रतीपन अपना स्वभाव बने। केवल भोले स्तुतिपाठक न रहते हुए प्रत्यक्ष राष्ट्रकार्य के प्रति अति सहजता से जीवन में व्यक्त करनेवाले, अविश्राम परिश्रमी कर्मी ऐसा अपना जीवन बने। श्री शिवप्रभु का सच्चा स्मरण-पूजन इसी में है। (मूल मराठी)

३२४ व्यक्ति नहीं, संगठन

श्री भाऊसाहब करदीकर, मंगलवेढे   २ नवंबर, १९५९

मंगलवेढे को भेंट देना न देना मेरे हाथ में नहीं है। यह बात प्रांत के अधिकारीगण निश्चित करते हैं। उसके अनुसार प्रवास करना मेरा कर्तव्य है।

मंगलवेढे देहात है, इसलिए उपेक्षित नहीं है, तो मेरे निरंतर प्रवास में रहने के कारण, प्रत्येक स्थान पर जाना आवश्यक होने से तथा अल्पावधि में अधिक स्थानों से संपर्क लाने की दृष्टि से स्थानों का चुनाव करना पडता है। फलस्वरूप कुछ स्थानों पर अधिक बार जाना पडता है और कुछ स्थान हमेशा के लिए छूट जाते हैं। परंतु इसके लिए कोई उपाय नहीं है। तहसील में मेरे नाम से प्रचार कर, संघ का विचार प्रसृत करने की कल्पना उत्तम है, परंतु केवल संघ के नाम से गाँव-गाँव में परिश्रमपूर्वक प्रचार कर जनजागृति के फलस्वरूप शाखाओं का निर्माण यही वास्तव में होना चाहिए। किसी व्यक्ति के नाम से पैदा हुआ उत्साह अत्यंत अल्पजीवी रहता है। उसके मंद पड जाने पर प्रदीर्घ काल तक एक ऐसी शिथिलता छा

जाती है कि कार्य-निर्माण के प्रयास निष्फल सिद्ध होकर निरुत्साह और निराशा कार्यकर्ताओं के मन में उत्पन्न होती है। आप इस दृष्टि से भी अवश्य विचार करें। (मूल मराठी)

३२५ उत्क्राति क्रमश

श्री सुधाकर देशपाडे, धुवडी (असम) ६ दिसबर, १९५६

आपके पत्र का आशय ध्यान में आया। कार्य करते रहते हुए ऐसा होता ही है। मनुष्य-स्वभाव के अनुरूप अनेक दुर्वलताएँ रहती हैं एव उनका त्रास होता है। यह भी लगता है कि आदर्श वहुत ऊँचा होने से अनाकलनीय है। परतु कार्य का निश्चय हो एव एक ही छलॉग में आदर्श तक पहुँचने की अव्यवहार्य इच्छा न रखते हुए क्रमश उत्क्रात हो सकते हैं, यह ध्यान में रखकर उस दृष्टि से प्रयत्न चालू रखने का निश्चय दृढ हो, तो असभव-सा लगनेवाला भी समव होता है, परतु वीच में ही निराश होकर निश्चय छोड देने से कुछ भी हाथ नहीं लगता है स्वकर्तव्य में मग्न रहकर, यशापयश श्रीपरमेश्वर पर सौंप कर, आलस छोडकर प्रयत्नरत रहें।

(मूल मराठी)

३२६ माता पवित्र जगज्जननी का ही स्वरूप

श्री राधिकामोहन गोस्वामी, नौगॉव (असम) २६ दिसबर, १९५६

आपकी वृद्ध माता का आशीर्वाद प्राप्त कर मुझे वहुत आनद हुआ। मुझे विशेष आनद इसलिए भी हुआ कि नागपुर में मेरी ८० वर्ष की वृद्ध माता मुझे तथा सहयोगियों को आशीर्वाद देने के लिए विद्यमान है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ मेरी माता आपकी माता के रूप में विद्यमान है। वे अखिल मातृत्व का एव महन्मगल जगज्जननी का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके चरणों में मेरे प्रणाम।

यहॉ कुशल है। हमारे सब कार्यकर्ता प्रशसनीय निश्चय के साथ अधिक गति से अपने कार्य को आगे वढाना चाहते हैं। इस प्रकार का दृश्यफल हमें असम में भी देखने को मिलेगा, यह विश्वास है।

(मूल अग्रेजी)

३२७ कार्य हेतु इष्ट-अनिष्ट विवेचन

श्री माधवराव मुळे, दिल्ली — १४ दिसबर, १९६०

जम्मू में एक प्रकार की शोभायात्रा, जम्मू जाते समय मार्ग में कुछ स्थानों पर स्वागत-भाषण आदि सार्वजनिक राजनैतिक नेताओं का शोभा देनेवाले कार्यक्रमों की आपने योजना बनाई है या वैसा करना अनिवार्य है, ऐसा आपको लगता है। ऐसा सचमुच हो, तो इस प्रकार के 'स्वागत' बिना मेरा वहाँ जाना सभव होने तक आपको प्रतीक्षा करना श्रेयस्कर होगा। यह मैंने केवल मेरे स्वभाव-वैचित्र्य के अनुसार या रुचि-अरुचि का विचार कर नहीं लिखा है, बल्कि कुल कार्य के हित की दृष्टि से ऐसा दृश्य एव धूमधाम अपने को भाएगा नहीं, ऐसा मुझे लगता है, इसलिए लिखा है। मेरी रुचि-अरुचि का हुडदंग न मचाते हुए सब कार्यकर्ताओं एव अधिकारियों की इच्छा, अर्थात् आज्ञा मान कर कितने ही नापसद रहनेवाले कार्यक्रम मैंने होने दिए एव मेरी ओर से कोई भी बाधा उपस्थित नहीं होने दी, यह आपको विदित है ही। इस बार ऐसा न करें, इसलिए लिखना पड रहा है क्योंकि यह बिल्कुल अनिष्ट, कार्य की दृष्टि से अत्यत हानिकारक होगा, ऐसा मुझे निश्चित लगता है।

मेरा जम्मू जाना बिल्कुल सहज, नित्यक्रम के अनुसार हो रहा है, ऐसा वातावरण बन रहा होगा एव आपके द्वारा निर्देशित मडली में सार्वजनिक स्वरूप का उत्साह पैदा न होते हुए अपनी कार्यपद्धति के अनुसार सर्व योजना हो सकती हो, तो ही जम्मू जाने का विचार किया जा सकेगा, अन्यथा वह कार्यक्रम रद्द हुआ– ऐसा समझकर शेष जो भी निश्चित किया हो वह सूचित करें। (मूल मराठी)

३२८ लाभ के स्थान पर हानि होने की सभावना

श्री कुशाभाऊ ठाकरे, भोपाल (म प्र) — २४ मार्च, १९६०

आपने श्री बाबूराम गुप्ता से भेंट करवाकर, उन्होंने लिखी एक पुस्तक 'साम्यवाद का सच्चा स्वरूप' मुझे दी। पुस्तक के नाम से जो अपेक्षाएँ निर्माण होती हैं, वे बिल्कुल पूर्ण होती नहीं। साम्यवाद के स्वरूप का विवरण बिल्कुल नहीं है, केवल प्रचार के लिए टीका मात्र है जो युक्तियुक्त एव सप्रमाण नहीं। ऐसी पुस्तकों से साम्यवाद के सबध में योग्य

धारणा पैदा होकर वह त्याज्य है, ऐसा ज्ञान होने के स्थान पर उसपर टीका करनेवाले के पास प्रमाणों का अभाव होने की धारणा पैदा होकर लाभ होने के स्थान पर हानि होना ही अधिक सभव लगता है। आप स्वय ध्यानपूर्वक पुस्तक पढ़ें, जिससे यह आपको भी जँचेगा।

भाषा भी परिमार्जित नहीं है। श्री गुप्ताजी को लिखने का शौक हो, तो आप मार्गदर्शन करें सुव्यवस्थित विचार सुश्लिष्ट एव सरल भाषा में लिखने की कुशलता उन्हें प्राप्त हो, ऐसा प्रयत्न करें। वैसी साधना करने को उन्हें प्रोत्साहन दें।

३२९ कार्यमग्नता प्रमुख

श्री बाल पालवणकर, भिवडी २९ मार्च, १९६०

अपने कार्यक्षेत्र की जलवायु के आप अभ्यस्त हो गए हैं तथा वह अब आपको स्वास्थ्यकर प्रतीत होती है, यह पढकर बडा सतोष हुआ। जब हम अपना ध्यान कार्य में लगाते हैं, तब वातावरण को पचाने की शक्ति अपने आप ही आ जाती है, ऐसा अनेकों का अनुभव है। आपको भी वह अनुभव प्राप्त हुआ, यह सतोष की बात है। (मूल मराठी)

३३० सुसगठित जीवन पद्धति का परिणाम

श्री टी आर राजगोपालन, सिरपुर (आध्र) १३ अप्रैल, १९६०

आपके द्वारा भेजा गया स्नेहभरा पत्र एव उसमें अभिव्यक्त भाव-भावनाओं के लिए मैं बहुत आभारी हूँ। सर्वसामान्य जनता को सुशिक्षित करने में हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी थोडी बहुत क्षमता के अनुरूप प्रयास करें। लोगों को सुसगठित जीवन पद्धति स्वीकार करने में प्रवृत्त करें। अपनी मातृभूमि एव धर्मप्राण अपने राष्ट्र के प्रति शुद्ध स्नेह-भावना उनके हृदयपर अकित करें। निर्मल शील-चारित्र्य एव स्वार्थगधहीन स्वभाव से जनता की सेवा करने का दृढ निश्चय करें। ऐसा करने से ही क्षुद्र स्वार्थ से निर्मित दूषित बादल छट जाएँगे और भारत की गौरव-गरिमा तेजस्वी प्रकाशपुज के रूप में प्रस्फुटित होकर ससार को हमेशा के लिए आलोकित करेगी।

यदि हममें से प्रत्येक अपने सपर्क में आनेवाले दस-पद्रह लोगों को भी कार्य से सलग्न करने का निश्चय करे तो उसके सुफल शीघ्र ही प्रकट होंगे। (मूल अंग्रेजी)

३३१ कुशलता से कर्तव्य का बोध पैदा करें

श्री अनत गोखले, दिल्ली — १५ अप्रैल, १९६०

सप्रति दिल्ली में आपकी ओर जो कार्य है, उसका विवरण देनेवाला आपका पत्र यथासमय प्राप्त हुआ। आजकल का वातावरण कर्तव्यविस्मृति एव उच्छृखल वैषयिकता का होने से अपने कार्य की ओर आने की अप्रवृत्ति तरुणों में विशेष रूप से दिखाई देती है, ऐसा मुझे बतलाया गया है। इसलिए इस रीति से कार्य करना है कि कुशलता से, उन्हें भयभीत न करते हुए क्रम से कर्तव्य का बोध एव रुचि पैदा करते हुए, सयमशील, पौरुषसपन्न जीवन राष्ट्रशक्ति को विशुद्ध अग के नाते खडा करने में ही जीवन सार्थक होकर सच्चा आनद देता है, इसकी अनुभूति प्राप्त होगी। आपने अनेकविध परिस्थितियों में कार्य किया हुआ है, इसलिए यह विश्वास होता है कि आप वह सफलता से कर सकेंगे।

(मूल मराठी)

३३२ गॉंव की जागृति स्थायी रखें

श्री वासुदेवराव गाडगे, खापा (नागपुर) — १६ अप्रैल, १९६०

शाखा-कार्य के एक हिस्से के रूप में गॉंव के छोटे-बडे लोगों से स्नेह-सौहार्द के सबध रखकर 'देश में अपने समाज पर विभिन्न आकर्षक नामों के बहाने कितने सकट आ रहे हैं, अपने समाज के ही कुछ बधु स्वराष्ट्र का ज्ञान एव श्रद्धा कम पडने से कैसी हानिकारक हरकत करते हुए दिखाई देते हैं एव उसमें से समाज स्वाभिमान से युक्त हो, इसके लिए सगठन करना कितना आवश्यक है' आदि बातें बार-बार समझाकर पूरे गॉंव मे जागृति स्थायी रखने का काम करते रहें। इर्दगिर्द के गॉंवों की ओर भी शाखा चलाने की दृष्टि से ध्यान दें।

(मूल मराठी)

३३३ जननी जन्मभूमि

श्री बालासाहेब साठे, पुणे ५ जून, १९६०

आपकी पुण्यपावन माताश्री को देवाज्ञा प्राप्त हुई। अल्पकालिक अस्वास्थ्य का कारण बताया है। कारण कुछ भी क्यों न हो, मातृवियोग का प्रबल आघात आप पर हुआ है। श्री प्रभुकृपा से आपको मन सतुलन प्राप्त हो। माता के सदृश अन्य कुछ भी प्रिय और पूजनीय नहीं है। अत असीम और असहनीय शोक का होना स्वाभाविक ही है। परतु विवेक रखना आवश्यक है। सबकी जन्मदात्री तथा लालन-पालन पोषणकर्त्री जननी जन्मभूमि सदासर्वदा प्रेमदुलार से आपकी सात्वना के लिए सिद्ध है। मातृसेवा का कर्तव्य पूर्ण करने के लिए, जिसकी पुकार सुनते ही, हमें काया-वाचा-मनसा, सर्वस्व देकर सिद्ध रहना चाहिए तथा जिसकी सेवा और पूजा करते हुए अन्य सब कुछ भूल जाना चाहिए, वह मातृभूमि आपकी ओर आशा से निहार रही है। हमारा राष्ट्र उसी की सतान हैं अत अपने राष्ट्रकार्य में निरतर मग्न रहने पर विवेक उत्पन्न होगा और मन शात रहेगा। आप जैसे कार्यकर्ता को मेरा यह लिखना एक धृष्टता ही है। श्रीप्रभु की कृपा होने पर अपना मन शात, सतुलित तथा प्रसन्न रहता है। परिणामस्वरूप अपना कर्तृत्व बढता है।(मूल मराठी)

३३४ मृत स्वयसेवक की स्मृति अच्छी सघ शाखा

श्री जनार्दन मोहलकर, सालई २५ जून, १९६०

स्वर्गीय श्री गुलाबराव मिरचे की स्मृति सब गाँववाले रखते हैं, यह तो उत्तम ही है, क्योंकि वे उसी योग्य थे। बहुत अच्छे थे। हम सब के दुर्भाग्य से वे चले गए। गाँव के सब बधुओं को चाहिए कि उनकी स्मृति सँजोए रखने की दृष्टि से ही उन्हें जो सघकार्य अत्यधिक प्रिय था, उसकी ओर आत्मीयता से देखें। स्वय वह कार्य करें, शाखा अच्छी चलेगी तथा बढेगी इस दृष्टि से प्रयत्न करें। उसके लिए स्वयसेवकों को शिक्षा वर्ग में जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बाधाएँ नहीं खडी करनी चाहिए। स्वर्गीय गुलाबराव की शिक्षा वर्ग में मृत्यु हो गई, परतु उन्हें छोडकर सब तो जीवित हैं ही। अपने गॉव में भी बीच-बीच में किसी न किसी की मृत्यु होती ही रहती है। उस कारण से ग्रामवासी गॉव छोडकर

चले नहीं जाते। ऐसा सबको सोचना चाहिए और मन के ऊपर छाये हुए अनिष्ट परिणामों को मिटाकर शाखा के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। वायुमडल दृढ बनाने की दृष्टि से आप सब बधु प्रयत्न करें। (मूल मराठी)

३३५ व्यक्तिगत दु ख भूल कर राष्ट्र-आराधना करे

श्री आर गोपाल, चेन्नै २८ जून, १९६०

आपके पूज्य पिताजी की मृत्यु का समाचार पढकर अत्यत दुख हुआ। अपने मन को स्थिर एव सतुलित रखते हुए अपने परिवार का सम्मान बढाने के लिए कर्तव्यपूर्ति में जुट जाना चाहिए। अपने पूर्वजों का हम पर ऋण है। आप तो बडे भाग्यशाली हैं कि आप धर्म, समाज तथा राष्ट्र के प्रति श्रद्धा रखते हुए ध्येयपूर्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। राष्ट्रोत्थान के कार्य में जुट जाने से परिवार का ही नहीं, अपितु समाज का भी सम्मान बढेगा, क्योंकि परिवार समाज का ही एक लघु भाग है। यह विचार आपके मन को शाति प्रदान करेगा तथा जिन्हें सात्वना की विशेष आवश्यकता है, उनके लिए उसकी पूर्ति भी करेगा। (मूल अग्रेजी)

३३६ सघ शिक्षा वर्ग की अनुवर्ती योजना

श्री राम साठे, प्रचारक, हैदराबाद (आध्र) २६ जून, १९६०

भाग्यनगर का वर्ग होने से अनेक बधुओं को एक महत्त्व का कार्यक्रम हाथों में लेकर, हम वह पूरा कर सकते हैं, ऐसा आत्मविश्वास लगने लगा होगा। उसमें से ही भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के लोगों में हिल-मिलकर उन्हें सघकार्य के उपयोगी बनाने की क्षमता भी थोडी-बहुत मात्रा में बनी होगी। इन गुणों एव उत्साह का उपयोग प्रत्यक्ष दैनिक उपस्थिति, नियमितता, कार्यक्रमों का साफ-सुथरापन, कार्य के विषय में अधिक स्पष्ट ज्ञान एव अधिक उत्कट श्रद्धा आदि सब दृष्टि से होकर भाग्यनगर की शाखा प्रौढ, तरुण, बाल आदि स्वयसेवकों से खचाखच भरी हो, ऐसी अपेक्षा है। इस ओर ध्यान देकर कार्यकर्ता चुनकर उन्हें कार्य में लगाने का उपक्रम आपने किया ही होगा। यह अपेक्षा रखता हूँ कि उसका सुफल शीघ्र ही देखने को मिलेगा। (मूल मराठी)

३३७ समन्वय

श्री ग पा वागुल, ३० जून, १९६०

सघ का वायुमडल और स्वय के जीवन का वायुमडल– दोनों का मन्दतर आपको खलता है और यह बात आपको असहनीय लगती है, यह अच्छा लक्षण है। परतु इस असह्य परिस्थिति से घबराकर यदि हम सघ के वायुमडल से दूर रहेंगे तो बात कैसी बनेगी? घर का वायुमडल भी आपके अनुकूल हो जाए ऐसा प्रयास करें। सब छोटे-बडे काम सघानुकूल और सघमय बनाने का यदि हम यत्न करें तो क्या वह हितावह नहीं होगा? प्रयत्न करें, यह प्रार्थना है।

वस्तुत पारिवारिक दायित्व और सघकार्य का मेल बिठाने में अधिकतर तो अडचन नहीं होनी चाहिए। इसका भी विचार करें तथा अपने मन को सतुलित एव दृढ बनाएँ। (मूल मराठी)

३३८ हमारे कार्य से ही परिवर्तन सभव

श्री मधुकर लिमये, नौगाँव (असम) ९ अगस्त, १९६०

अपने कार्य की आवश्यकता को ध्यान में लें। जिनके मन दु ख में डूब गए हैं, वे स्वय इस ढग से सोचें- हम आपस में लडते-झगडते रहे और विदेशियों को बाहुओं में भरते रहे। परिणामत गत सहस्र वर्ष उत्तरोत्तर हमारा अध पतन तथा सर्वनाश होता रहा। फिर भी उसी आपसी कलह में आज भी हम मग्न हैं। आज भी हम शत्रु को प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रीति से सहाय्यभूत हो रहे हैं। इस ढग से आत्मघात करते रहना निंद्य है। इस दुष्ट मनोवृत्ति का हमें सर्वथैव त्याग करना होगा तथा समाज, स्वसस्कृति एव स्वराष्ट्र का सम्यक् ज्ञान धारण करना होगा। किसी भी प्रकार के विपरीत प्रचार अथवा प्रलोभन का शिकार न बनने की दृढता हमें धारण करनी होगी। हमारे गत जीवन का लुप्त सुखवैभव हम पुनरपि प्राप्त करेंगे, सब प्रकार के शत्रुओं के सब हथकडे विफल करेंगे, ऐसा सुविचार अत करण में स्थिररूप से अकित कर जीवन का पूरा ढाँचा ही बदलना श्रेयस्कर है। और यह अति इष्ट तथा विशुद्ध राष्ट्रजीवनपोषक एव तारणहार परिवर्तन हमारे कार्य से ही हो सकेगा। अत छोटे-बडे प्रत्येक स्वयसेवक को चाहिए कि वह अब पुराना दु खडा रोने में समय न गँवाए और कार्य के हेतु कमर कसकर

आगे बढें। स्वय आपने परिस्थिति का आकलन अति सतुलित ढग से परन्तु अति सहृदयता के साथ किया है। और वहाँ उपस्थित हैं प्रत्यक्ष साक्षी हैं। अत स्वयसेवकों को अधिकाधिक कार्यप्रवण बनाने तथा जन-साधारण में सद्विचार बोने के लिए सर्वथा पात्र होने के कारण आपका दायित्व आज भी बढा है। कार्य शीघ्रता से बढना चाहिए। साथ ही उसमें चिरकालिक दृढता भी आनी चाहिए। तब फिर से ऐसी दुदशा निर्माण होगी ही नहीं ऐसी शक्ति निर्माण कर जनमानस पर हम चिर प्रभाव प्रस्थापित करेंगे, यह यही धुन सब बधुओं को लगा दें।

जिन स्वयसेवक बधुओं की हानि हुई है, उन्हें पूर्ण नहीं तो आशिक रूप में आपने कुछ न कुछ सहाय्य दिया ही होगा और दे ही रहे होंगे। (मूल मराठी)

३३६ सघ-कार्य की दुदुभि

डाक्टर भा वा मुले, सोलापुर ६ अगस्त, १९६०

हमारे राष्ट्र की परिस्थिति चितनीय एव अधिकाधिक दयनीय हो रही है। मातृभूमि को और एक बार खडित करने की योजना 'नागा राज्य' के रूप में साकार हो रही है। आपको स्मरण होगा कि इस विषय की चेतावनी मैंने बहुत पूर्व दी थी। विरोधी गुटों द्वारा निर्मित आसामी-बगाली सघर्षोद्भव भीषण ताडव हमारे सम्मुख चल ही रहा है। हिंदू समाज की एकत्व विस्मृति का लाभ उठाकर इस देश के शत्रु दाना फेंककर मुर्गे लडा रहे हैं। वे दिखाते हैं कि उनका कुछ सबध ही नहीं है, परतु प्रत्यक्ष में वे हत्या, लूटपाट, मारकाट आदि में लगे रहते हैं। छोटे-बडे हिंदू उनकी चालाकी के शिकार बनते हैं और अपने ही समाज का नाश होने देते हैं। इस वायुमडल में, विशुद्ध एकात्मता का तथा एक राष्ट्रीयता का स्वर गुँजानेवाले सघकार्य की दुदुभि हमें बजानी है। उसके द्वारा हमें हिंदू-समाज को जागृत करना है। उसे सूत्रबद्ध, शक्तिसपन्न तथा समर्थ बनाना है। इस हेतु अत्यधिक परिश्रम करना आवश्यक है, क्योंकि ऐसी सब दुर्घटनाओं को सदा के लिए रोकने की क्षमता केवल हमारी विचारधारा में और हमारे आचरणों में है। इसकी अनुभूति हृदय में उत्कटता से धारण कर हर स्वयसेवक निज क्षेत्र में निर्भयता से कार्य करें। अपना कार्य शक्तिसचय का विशुद्ध राष्ट्रभाव की प्रस्थापना का तथा चारित्र्ययुक्त राष्ट्र-सेवाव्रत का है।

इसे तेजी से बढाने की आवश्यकता है। इस शक्ति-निर्माण से अन्य क्षेत्र आप ही आप प्रभावित हो जाते हैं। तब कहने की आवश्यकता नहीं कि इससे काय अधिक बढाने की नइ प्रेरणा प्राप्त होती है। (मूल मराठी)

३४० संघकार्य को सर्वोच्च स्थान

श्री रमणलाल श्रॉफ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) ६ अगस्त, १९६०

आपको चमत्कारिक लगना स्वाभाविक है, परतु सघ का कार्य प्रचारक के नाते ही किया जा सकता है– ऐसा नहीं है। यह सच है कि प्रचारक की भूमिका में अनिर्वंधता से सब समय एव सब कायिक, मानसिक शक्ति काम में लग सकती है। घर लौटकर पारिवारिक जिम्मेवारियाँ सँभालने पर उनके लिए समय देना आवश्यक होता है एव उसके कारण प्रचारक की तुलना में कम समय एव स्वतत्रता मिलती है। परतु प्रत्येक स्वयसेवक प्रचारक नहीं हो सकता, होना भी नहीं चाहिए। प्रत्येक स्वयसेवक को अपने गृहस्थ जीवन में भी सघकार्य को सर्वोच्च स्थान देकर कायरत रहना चाहिए, यह अपनी अपेक्षा और योजना है। इस दृष्टि से आप प्रचारक न होने का अकारण दु ख न करते हुए स्वय के जीवन की रचना करें एव अपने पूर्वानुभव से अधिक योग्यता से कार्य करने को आगे आएँ। आपके पत्र से आप इस तरह की रचना कर रहे हैं– यह ध्यान में आकर बहुत आनद हुआ। आपको उत्तम यश प्राप्त हो, यही इच्छा है।

३४१ रुग्णावस्था मे देशस्थिति से व्यथित

श्री भाऊसाहेब खोना, मुबई १० अगस्त, १९६०

चारों ओर अधिक द्रुतगति से कार्य करने की आवश्यकता स्पष्ट है। दिन-प्रतिदिन समाज की दारुण असगठितता का परिचय मिलता जाता है। अलग नागाराज्य, याने प्रच्छन्नरूप से मातृभूमि का फिर से अति दु खद खडन, भाषाविवाद के कारण निर्मित असम प्रात का भीषण काड, पजाब, चेन्नै सर्व दूर वही व्यथा देनेवाली अवस्था। इस सबपर अपना विशुद्ध राष्ट्रभाव जागृति का, चारित्र्य निर्माण का, सतर्क जागृत सुसगठित शक्ति का कार्य यही एक मात्र उपाय है, और मैं इस हेतु उद्यमशील न रहकर अचेतन-सा पडा हूँ यह कल्पना अति तीक्ष्ण वेदना दे रही है। सब मित्रों

के आग्रह के कारण इस अकर्मण्य स्थिति में (नासिक में आपरेशन, पश्चात् नागपुर में मा बाबासाहब घटाटे के बगले पर विश्राम इत्यादि) पड़ा हूँ पर मन की बात कौन जानता है। मैं स्वय किसी से कहना नहीं चाहता, तो भी हृदय की ऐसी स्थिति व्यक्त हो ही जाती है।

३४२ कार्यकर्ताओ का समूह निर्माण करे

श्री राजा भातराडे, सावतवाडी — १७ अगस्त, १९६०

मेरे पिछले प्रवास में मैं अनेक स्थानों पर गया वहाँ पर अनेकों से परिचय, मिलना-जुलना, वार्तालाप इत्यादि हुआ। अनेक लोगों को आपने विशेष कार्यक्रमों में निमन्त्रित किया था। इस प्रकार बहुत बडी सख्या में विविध सज्जनों से सपर्क प्रस्थापित किया गया। इतने सब व्यक्तियों से सबध बनाए रखना एक व्यक्ति के लिए असभव है। आपने शक्ति के अभाव के बारे में जो लिखा है, वह एक दृष्टि से सत्य है। कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, उसकी वह स्थिति रहेगी, परतु जो अकेले से नहीं बन पाता है, वह अनेकों के सत्कार्य से तथा सूत्रबद्ध और सुव्यवस्थित प्रयत्नों द्वारा बन सकता है। आपकी तहसील में, विशेषत सावतवाडी में इस प्रकार का एक समूह निर्माण करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। परिणामस्वरूप कुछ काल के पश्चात् आपकी अडचन दूर होगी और अनेकों के सबधों को आप दृढ रूप दे सकेंगे। फिर कुछ स्वयसेवक बनेंगे। उन्हीं में से अन्त प्रेरणा से सोत्साह काम करनेवाले परिश्रमी कार्यकर्ता उत्पन्न होंगे।

(मूल मराठी)

३४३ आपस के सघर्ष मे शत्रुओ को बल मिलता है

श्री प्रदीप घोष, सिलीगुडी (बगाल) — १८ अगस्त, १९६०

असम बगाल में जो दुर्भाग्यपूर्ण (असम-बग सघर्ष की) अज्ञानपूर्ण दुष्ट घटनाएँ हुई हैं, जो अनिष्टकारक वायुमडल बना है, वह अपनी विशुद्ध सास्कृतिक राष्ट्रीय एकता के साक्षात्कार के अभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है। समाज की शक्ति आपस के सघर्ष में क्षीण होकर शत्रुओं को बल मिलता है, उन्हीं का लाभ होता है। राष्ट्र पर सकटों का भार बढता है। यह सब हम स्वयसेवक बधु सुयोग्य विचार तथा भावनाओं में पले हुए होने के कारण समझते हैं, इस स्थिति से दु खित एव चिंतित होते हैं। अत अपने ऊपर अपना कार्य बढाकर इस अनिष्ट विपाक्त वायुमडल को बदलने का

तथा विशुद्ध एकात्म, राष्ट्रभाव, तदनुसार स्नेहपूर्ण व्यवहार प्रस्थापित करने का विशेष दायित्व है। इसको सोचकर सब स्वयसेवक बधु हृदय से शाखावृद्धि में जुट जाएँ यही आवश्यक है।

३४४ 'नील सिंधुजल धौतचरणतल'

श्री कालीदास बसु, कोलकाता — १८ अगस्त, १९६०

इस वर्ष प्रगति करने की मर्यादा निर्धारित कर निश्चय से प्रयत्न करने की आवश्यकता है। अपने निकट असम-बग सघर्ष, एक समाज, एक सस्कृति, एक राष्ट्र, एक ही यह 'भव्य दिव्य नील सिधुजल धौतचरणतल' अपनी मातृभूमि के अज्ञान का परिपाक है। एक-दूसरे को दोष देते रहने से काम नहीं चलेगा। कुछ दल तो ऐसे आपसी अतर्गत सघर्ष निर्माण करने में तथा सघर्षों को बनाए रखने में सचेष्ट रहते हैं। आकस्मिक सघर्ष से उत्पन्न घाव भरकर हृदय पुन निर्मल होना इन लोगों को इष्ट नहीं लगता। अत प्रचार, आदोलन आदि से घाव बनाए रखना, उसे सडाते-बढाते जाना– यही उनका जघन्य कर्म रहता है। ये सब अपने प्रिय बगदेश में भी सजग हो उठे हैं। इस अवस्था में जनसाधारण को क्षुद्र भावोद्रेक से बचाकर, विशुद्ध राष्ट्रभक्ति उनमें फिर आविर्भूत कर, सुदृढ शक्तिसपन्न जागृत राष्ट्र के रूप में पूर्ण समाज खडा करने के हेतु अतीव परिश्रम करने की आवश्यकता है। अपने सघकार्य की वृद्धि तथा दृढता ही इस आवश्यकता को पूर्ण कर सकती है। आप एक कार्यतत्पर स्वयसेवक होने से इस सबध में आपको कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

३४५ शाखा-सस्कार केंद्र

श्री शरद गिलाणकर, अमलनेर — १९ अगस्त १९६०

जिन्हें अपने स्थान में प्रतिष्ठा प्राप्त है, ऐसे अनेक पुराने स्वयसेवक आपकी तहसील में हैं। उनके सहयोग से अपने कार्य के लिए अनुकूलता निर्माण की जा सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। बालकों का तथा युवकों का समूह खडा करें। उसी प्रकार उद्योग-व्यवसाय करनेवाले बधुओं में भी प्रवेश करें। ऐसा प्रयत्न करें कि शाखा में विविधता में एकता, बधुभावना, अनुशासन, शील, ध्येयनिष्ठा आदि हमारे आधारभूत तत्त्वों का

प्रत्यक्ष दर्शन लोग पा सकें। सब लोगों को मिलकर ऐसा प्रयत्न करना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। अनेक बार हम ऐसा पाते हैं कि विचारवान, सत्प्रवृत्त लोगों के हृदयों में, आप ही आप संघ का ध्येय और विचार विद्यमान रहता है। ऐसे सज्जनों को ढूँढ निकालना सब स्वयसेवकों का कर्तव्य है। ऐसे लोगों को निकट लाने से कार्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह द्रुत गति से आगे बढ़ता है। अपना कार्य विशुद्ध विचारों पर आधारित है, सब प्रकार के तर्कों के सामने वह खरा उतरा है, ऐसा दृढ़ आत्मविश्वास हृदय में रखकर हमारे कार्यकर्ता यदि मन पूर्वक काम में जुट जाते हैं, तब यश की प्राप्ति निश्चित है। अपने क्षेत्र के स्वयसेवक बधुओं में ऐसी सद्भावनाएँ जागृत करना उनके सद्विचारों को दृढ करना, उनका व्यवहार उचित बनाना, यह कार्य आपको करना है। हमारा उत्तम शुद्ध कार्य वर्धिष्णु बने, यह आपको देखना है। श्रीप्रभु की कृपा से आप अवश्य यशस्वी होंगे। (मूल मराठी)

३४६ हमारे उत्सव प्रभावी हो

श्री खडेराव दीवान, कापशी १६ अगस्त, १६६०

थोडा अधिक प्रयत्न करें। अच्छे सुस्वभावी, शीलसपन्न, परस्पर में स्नेह रखनेवाले, सघकार्य में मन लगानेवाले स्वयमेवक के नाते शाखा में नियमित आनेवाले और धीरे-धीरे अन्य बधुओं को जुटानेवाले ऐसे आठ-दस युवकों को जुटाने का प्रयास करें। हमने सबको राखी बाँधी– बस, इतना समाधान पर्याप्त नहीं है। उन्हें स्नेहसूत्र में बाँधना चाहिए। उन्हें सघ के स्वयसेवक बनाना चाहिए। वे हृदय से एक हों, अनुशासन से आबद्ध हों, नियमित रूप से शाखा में आने लगें, ऐसा प्रयास होना चाहिए। शाखा-कार्य हृदयस्थ विचारों का द्योतक तथा प्रेरक है। एतदर्थ उत्साह का सचार हो। हर उत्सव का यही साध्य रहता है। शाखा के लिए अधिकाधिक अनुकूलता उत्पन्न हो तथा प्रत्यक्ष उपस्थिति और प्रभाव की दृष्टि से वृद्धि हो, यही हमारी उत्सव विषयक अपेक्षा है। (मूल मराठी)

३४७ सघ का विचार तर्कशुद्ध

श्री गुरुनाथ जावरकर मुबई २० अगस्त १६६०

सघ का विचार इतना तर्कशुद्ध शास्त्रीय और सत्यस्वरूप है कि

किसी भी सत्प्रवृत्त, विचारवान, पूर्वाग्रहविमुक्त सज्जन के मुख से वह सहज रूप में प्रकट होता है। जिनके हृदय में विपरीत धारणाओं ने स्थान जमा लिया हो, जिन्हें अन्य किसी का डर हो, जिन्हें सघ के विरोध में बोलने से कुछ स्वार्थसिद्धि की आशा हो, ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों को यदि छोड दिया जाए, तो हरेक के अत करण में हमारे ही विचार स्वाभाविक रूप से पाए जाते हैं।(मूल मराठी)

३४८ अजेय हिंदू राष्ट्र की निर्मिति हो

श्री हीरेन बाबू, कोलकाता २० अगस्त, १९६०

आपकी पुस्तिका प्राप्त हुई। मैं उसे पढ रहा हूँ। आप कहते हैं कि अनुयायियों को आपस में झगडना नहीं चाहिए। परतु आज हमारे देश का वर्तमान चित्र इतना दु खदायी है कि पिछले बारह शतकों में एक-दूसरे को समाप्त करने के लिए आपस में झगडे चल रहे हैं। वस्तुत सबका एक धर्म, एक आदर्श और एक ही सस्कृति है। परतु आपस में आत्मघाती झगडे करते रहे और साथ ही अपना ताना बाना जीर्ण-शीर्ण करनेवाले शत्रुओं की मदद तथा खुशामद हो रही है। फलत हम सब कुछ खो रहे हैं। शत्रु धीरे-धीरे अति कुशलता से निश्चय ही हमारे आपसी सघर्ष का लाभ उठाते हुए हमारे राष्ट्र पर स्वामित्व प्रस्थापित कर रहा है। ईर्ष्या-द्वेष-मत्सरमय जीवन व्यतीत करने में ही मग्न रहना हमारा आत्मघात ही है। शत्रुओं की दुष्ट हलचलें देखने-सुननेपर भी अनसुनी, अनदेखी करनेवाले हमारे लोग उनका दुष्ट खेल न समझते हुए या समझने से इनकार करते हुए उनके चगुल में फँसे जा रहे हैं। ये अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए उनको प्रसन्न करने में व्यस्त हैं।

इस प्रबल विघटनकारी भावनाओं की आँधी में राष्ट्र की मूलभूत एकता में श्रद्धा रखनेवाला राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ ही दृढ एव अविचल श्रद्धा के साथ खडा है। इस कार्य का हम विस्तार करें, उसे दृढ करें, तो हम निकट भविष्य में एकात्म, प्रबल एव अभेद्य हिंदू-राष्ट्र को सारी दुनिया में सर्वोच्च विराजमान देखेंगे।

कोई भी निष्पक्ष विचारशील व्यक्ति हमारे आदर्शो का स्वागत कर, हमारे कार्य के प्रति हृदयपूर्वक सहानुभूति रखे बिना नहीं रह सकता। ऐसे भावी स्वयसेवकों को ढूँढकर, उन्हें अपने साथ मिलाकर, सगठन का विस्तार करना होगा। (मूल अंग्रेजी)

३४६ निष्पक्ष विद्वान संघ-विचार प्रकट करते हैं

श्री बाबासाहेब खासबारदार, कोल्हापुर २१ अगस्त, १९६०

नागपुर में श्रीगुरुदक्षिणा उत्सव संपन्न हुआ। उसका अध्यक्ष स्थान नागपुर विश्वविद्यालय के राज्यशास्त्र विभाग के प्रमुख डाक्टर देशपांडे ने विभूषित किया था। उनका पूर्व परिचय नहीं था। न किसी राजनीतिक दल से वे संबंधित हैं। स्वतंत्र रीति से विचार करनेवाले अभ्यासशील ऐसा उनका जीवन है। उत्सव में जाने के पूर्व उन्होंने मुझे पूछा, 'यदि मैं संघ के विचारों से असंगत या भिन्न बोलूँ तो?' मैंने अपनी नित्य की पद्धति के अनुसार उन्हें बताया– यह बोलो, वह मत बोलो, इस प्रकार के बंधन लगाना अशिष्टता का द्योतक है। संघ व्यासपीठ से बोलनेवाले पर इस प्रकार का कोई बंधन हम डालते नहीं। पूर्णतः विरोधी विचार सुनना भी लाभदायक है। अपनी गलतियाँ या दोष स्वयं के ध्यान में नहीं आ पाते। निष्पक्ष सज्जनों के विरोधी भाषणों से हमें उनका पता लगता है। हम अपने आपको सुधार सकते हैं। उनके मूल्यवान विचार आत्मनिरीक्षण के लिए सहाय्यभूत सिद्ध होते हैं। अतः आप खुलकर बोलें, निर्भय होकर बोलें, जो भी आपको योग्य प्रतीत हो, बोलें।' यही हमारी रीति है। वे दिल खोलकर बोले, आपने भाषण में जब संघ के ध्येय का, तथा रीति-नीति का समर्थन किया, तब श्रोतागण आश्चर्यचकित भी हुए और आनंदित भी हुए। आपके यहाँ, अर्थात् मुंबई में भी मान्यवर श्री आनंदमूर्ति डिगंबधु के बारे में आपको इसी प्रकार का अनुभव प्राप्त हुआ। क्योंकि संघ के विचार तथा कार्य पूर्णतः शुद्ध एवं सत्य है, जो भी सत्प्रवृत्त तथा पूर्वाग्रहदोष-विहीन होगा उसके स्वराष्ट्र-प्रेममय अंतःकरण में अन्य किसी भी प्रकार के विचार निर्माण नहीं हो सकते हैं और न पनप सकते हैं। यह जो हमारा विश्वास है, वह ऐसे प्रसंगों से अधिकाधिक दृढ बनता है। आज तक जो हमें अज्ञात रहे हैं, परंतु इस प्रकार के विचारवान हैं, ऐसे महानुभावों को खोजकर हमें उनका सहयोग प्राप्त करना चाहिए और उस आधार पर कार्य बढाना चाहिए तथा ध्येयसिद्धि के अनुरूप प्रबल बनाना चाहिए। इस प्रकार के प्रयास अविरत करते रहने का निश्चय प्रत्येक स्वयंसेवक के हृदय में दृढता के साथ बना रहना चाहिए।

(मूल मराठी)

३५० परीक्षा किस प्रकार दे

श्री रगनाथ, तुमकूर, मैसूर २१ अगस्त, १९६०

आपकी परीक्षा निकट आ रही है। अत आप अभ्यास में मग्न होंगे। अच्छी तरह पढाई करो। बिना किसी हडबडाहट उत्तम रीति से उत्तर लिखो। उस समय अपना मन शात एव सतुलित रखते हुए भयातुरता तथा हीनताग्रथि को दूर भगा दो। अपने उत्तर अचूक, सुसूत्र और सक्षिप्त लिखो। फिर आपको अपयश मिलने का कोई कारण ही नहीं। परीक्षा में पूर्ण यशप्राप्ति हो, यही कामना।

परीक्षा के बाद सघकार्य में जुट जाने का आपने निश्चय किया है, यह जानकर सतोष हुआ।

३५१ जी-जान से योग्य दिशा मे परिश्रम करना होगा

श्री श्रीपादराव लाटकर, आजरा (महाराष्ट्र) २२ अगस्त, १९६०

यह सच है कि सद्य परिस्थिति चिताजनक है। इस परिस्थिति पर मात देकर, सम्मान से एव वैभव से, राष्ट्र के रूप में जीवित रहना हो तो अपने राष्ट्र-शरीर में से असगठितता, अनुशासनहीनता, चारित्र्यहीनता, राष्ट्रभक्तिशून्यता रूपी जो व्याधियाँ अनेक शताब्दियों से घेरे हुए हैं, उन्हें नष्ट कर सत्सस्कारयुक्त, सगठित शक्ति से राष्ट्र के चैतन्यपूर्ण होने के लिए जी-जान से परिश्रम करना होगा। यह परिश्रम भी योग्य दिशा में होना चाहिए। श्री परमेश्वर-कृपा से यह योग्य दिशा सघ की दैनिक, नियमित, अनुशासनबद्ध शाखाओं के रूप में हमें बतलाई गई है। यह सब समझ-बूझकर शाखा की वृद्धि के लिए परिश्रम करने में सब शक्ति-बुद्धि लगाएँ, यही उचित एव आवश्यक है।(मूल मराठी)

३५२ अहकार छोड आत्मनिरीक्षण उपयोगी

श्री राजाभाऊ डेग्वेकर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) २२ अगस्त, १९६०

उत्तम पुराने स्वयसेवकों की भी ऐसी स्थिति हो सकती है, यह ध्यान में लेकर प्रत्येक स्वयसेवक को अपने विषय में कोई भी अहकार न रखते हुए नित्य आत्मनिरीक्षण कर विचार, भावना उक्ति एव कृति में कोई

भी त्रुटि शेष न हो, इसका ध्यान रखना, जिस ध्यान रखना पर आवश्यक है, ऐसा समझकर ही आचरण करना उचित है। यह सब व्यवहार में आप करेंगे, तो भी घटित घटना दुष्परिणामी होने पर भी-स यह सही है कि वह उपायक सिद्ध होगी।

विभाग कार्यवाह के नाते आप का कार्य उत्साह से चल रहा होगा। (मूल मराठी)

३५३ मेलजोल-सहयोग का वातावरण रहे

श्री दादासाहब प्राणी, मिरज (महाराष्ट्र) २३ अगस्त, १९६०

आपका पत्र, जिसमें मिरज की शाखा के बारे में आशा एव आत्मविश्वास से युक्त समाचार कहा प्राप्त हुआ है, पढकर बहुत आनद हुआ। प्रचारक के श्रम बचाकर श्री केतकर को अन्यत्र काम करने को आप अधिक स्वतत्रता दे सकते हैं। यह सतोष की बात है, परतु प्रचारक की बला एव उसके नित्य तकाजे से पिंड छूटे, यह बला टले तो अच्छा है–इस प्रकार की भावना किसी के मन में भूलकर आई हो या झाँक रही हो तो उसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। अपने कार्य में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग का अभिनदनपूर्वक स्वागत ऐसी भावनाएँ योग्य मानी जा सकती हैं। उसकी जगह यदि ईर्ष्या आदि दुर्भावनाएँ हों तो आत्मनिरीक्षण कर प्रयत्नपूर्वक उन्हें निकाल डालना चाहिए। आप सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण कर कुछ अनिष्ट दिखाई दे तो हल्के-हल्के उन्हें दूर करने को ज्येष्ठता के अनुभव एव अधिकार के नाते प्रयत्नशील रहें, यह प्रार्थना करना चाहूँगा। मुझे लगता है कि सर्वत्र वातावरण मेलजोल का, सहयोग का, परस्पर अकृत्रिम स्नेह का एव कार्यनिष्ठा का ही रहेगा एव आपकी आज्ञा एव अपेक्षा के अनुसार शाखाएँ प्रगति करेंगी। (मूल मराठी)

३५४ स्वकर्तव्य-पालन

श्री भोलाबाबू, पटना २४ अगस्त, १९६०

आपने कुछ समय पटना में जाकर अपने सहकारी बधुओं के साथ बिताने का सोचा था, ऐसा भी मैंने सुना है। यह बहुत ही अच्छा विचार है। अपने इष्ट तथा प्रिय जीवनकार्य के प्रसन्न एव कर्तव्योन्मुख, कर्तृत्व-प्रेरक

वायुमडल में रहने से हृदय की व्यथा कम हो सकती है। घाव भरने में सहायता मिल सकती है। किंकर्तव्यविमूढ स्थिति से छुटकारा मिल सकता है। निष्काम, नि स्वार्थ, निरहकार स्वकर्तव्याचरण, शोक-मोह-विनाश के लिए बताया गया है ही। उसके साथ ज्ञानपूर्वक श्रीभगवद्भक्ति में रममाण होने से सब दु खों से छुटकारा मिलता है-- ऐसा भी जानकारों का कहना है। अत मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका श्रीभगवान की भक्ति की ओर अधिकाधिक झुका हुआ हृदय स्वकर्तव्य क्षेत्र में आने से अधिक अल्पावधि में शोक पर विजय पाने की पूर्ण क्षमता पाकर सुदृढ सतुलित होकर अनेक भ्रांतचित्त मोह-व्याकुल जनों को सत्पथप्रदर्शक बनने में समर्थ होगा। आपकी इस सामर्थ्ययुक्त प्रेरकता की अपने कार्य के लिए आवश्यकता भी है।

३५५ विभेद-विष मिटाने की एकमात्र औषधि सघकार्य

श्री ललितचद्र बरदले, डिब्रुगढ २५ अगस्त, १६६०

आपके हृदय की व्यथा स्वाभाविक है। एक स्वयसेवक के हृदय में हिंदू-समाज का परस्पर सघर्ष तथा विद्वेष देखकर जो तीव्र वेदना होना अपरिहार्य है, वह आपके शब्द-शब्द से व्यक्त हो रही है। किंतु मन के क्षोभ को सयमित करना, इस भीषण सघर्ष में जिस-जिस व्यक्ति या व्यक्ति-समूह ने आपस में ही अनाचार-अत्याचार का व्यवहार किया है, हिंदू-समाज के हित शत्रुओं के हाथों में जो खिलौने हुए थे ओर अभी भी हैं, वे सब मानसिक रोग से ग्रस्त हैं, उनके रोग को हटाने की पूर्ण चेष्टा करना अपना धर्म है, यह स्पष्टरूपेण जानना यही स्वयसेवक के नाते अपना कर्तव्य है। आज सपूर्ण देश में भाषा-विषयक, सप्रदाय-विषयक, प्रांतीयता आदि अन्यान्य भेद-विषयक जो विष भरा हुआ है, फैल रहा है, स्वार्थी राजनैतिक दलों द्वारा फैलाया जा रहा है, उस विष को उतारकर समाज का राष्ट्र-शरीर स्वस्थ तथा सुदृढ बनाने के लिए अपने सघकार्य के अतिरिक्त और कोई ओषधि नहीं है। सब विषों को निर्वीर्य करनेवाला यही साक्षात् अमृत है। इस अटल श्रद्धा तथा विश्वास से अपने स्थान पर अडिग रहकर प्रेम से, स्नेह से, अपने बधुओं के अत करण में सुप्त आत्मीयत्व को जागृत करने का कार्य अपने को करना है। किसी भी हिंदू व्यक्ति या समूह के प्रति मन में दुर्भावना न रखकर, किसी पर दोषारोपण न करते हुए, कुशलता तथा अकृत्रिम प्रेम का व्यवहार करना आवश्यक है। सारे देश में एक

भी विकृति पैदा न हो, इसका ध्यान रखना, नित्य ध्यान रखना अति आवश्यक है, ऐसा समझकर ही आचरण करना उचित है। यह बोध स्वयसेवक ग्रहण करेंगे, तो ही घटित घटना दु खदायी होने पर भी– यह कह सकते हैं कि वह उपकारक सिद्ध होगी।

विभाग कार्यवाह के नाते आप का कार्य उत्साह से चल रहा होगा। (मूल मराठी)

३५३ मेलजोल-सहयोग का वातावरण रहे

श्री दादासाहब प्राणी, मिरज (महाराष्ट्र) २३ अगस्त, १९६०

आपका पत्र जिसमें मिरज की शाखा के बारे में आशा एव आत्मविश्वास से युक्त समाचार कल प्राप्त हुआ है, पढकर बहुत आनद हुआ। प्रचारक के श्रम बचाकर श्री केतकर को अन्यत्र काम करने को आप अधिक स्वतन्त्रता दे सकते हैं। यह सतोष की बात है, परतु प्रचारक की बला एव उसके नित्य तकाजे से पिड छूटे, यह बला टले तो अच्छा है– इस प्रकार की भावना किसी के मन में भूलकर आई हो या झाँक रही हो तो उसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। अपने कार्य में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग का अभिनदनपूर्वक स्वागत ऐसी भावनाएँ योग्य मानी जा सकती हैं। उसकी जगह यदि ईर्ष्या आदि दुर्भावनाएँ हों तो आत्मनिरीक्षण कर प्रयत्नपूर्वक उन्हें निकाल डालना चाहिए। आप सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण कर कुछ अनिष्ट दिखाई दे तो हल्के-हल्के उन्हें दूर करने को ज्येष्ठता के अनुभव एव अधिकार के नाते प्रयत्नशील रहें, यह प्रार्थना करना चाहूँगा। मुझे लगता है कि सर्वत्र वातावरण मेलजोल का, सहयोग का, परस्पर अकृत्रिम स्नेह का एव कार्यनिष्ठा का ही रहेगा एव आपकी आज्ञा एव अपेक्षा के अनुसार शाखाएँ प्रगति करेंगी। (मूल मराठी)

३५४ स्वकर्तव्य-पालन

श्री भोलाबाबू, पटना २४ अगस्त, १९६०

आपने कुछ समय पटना में जाकर अपने सहकारी बधुओं के साथ बिताने का सोचा था, ऐसा भी मैंने सुना है। यह बहुत ही अच्छा विचार है। अपने इष्ट तथा प्रिय जीवनकार्य के प्रसन्न एव कर्तव्योन्मुख, कर्तृत्व-प्रेरक

वायुमडल में रहने से हृदय की व्यथा कम हो सकती है। घाव भरने में सहायता मिल सकती है। किंकर्तव्यविमूढ स्थिति से छुटकारा मिल सकता है। निष्काम, नि स्वार्थ, निरहकार स्वकर्तव्याचरण, शोक-मोह-विनाश के लिए वताया गया है ही। उसके साथ ज्ञानपूर्वक श्रीभगवद्भक्ति में रममाण होने से सब दु खों से छुटकारा मिलता है– ऐसा भी जानकारों का कहना है। अत मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका श्रीभगवान की भक्ति की ओर अधिकाधिक झुका हुआ हृदय स्वकर्तव्य क्षेत्र में आने से अधिक अल्पावधि में शोक पर विजय पाने की पूर्ण क्षमता पाकर सुदृढ सतुलित होकर अनेक भ्रातचित्त मोह-व्याकुल जनों को सत्पथप्रदर्शक वनने में समर्थ होगा। आपकी इस सामर्थ्ययुक्त प्रेरकता की अपने कार्य के लिए आवश्यकता भी है।

३५५ विभेद-विष मिटाने की एकमात्र औषधि सघकार्य

श्री ललितचद्र वरदले, डिब्रुगढ २५ अगस्त, १६६०

आपके हृदय की व्यथा स्वाभाविक है। एक स्वयसेवक के हृदय में हिंदू-समाज का परस्पर सघर्ष तथा विद्वेष देखकर जो तीव्र वेदना होना अपरिहार्य है, वह आपके शब्द-शब्द से व्यक्त हो रही है। किंतु मन के क्षोभ को सयमित करना, इस भीषण सघर्ष में जिस-जिस व्यक्ति या व्यक्ति-समूह ने आपस में ही अनाचार-अत्याचार का व्यवहार किया है, हिंदू-समाज के हित शत्रुओं के हाथों में जो खिलौने हुए थे और अभी भी हैं, वे सब मानसिक रोग से ग्रस्त हैं, उनके रोग को हटाने की पूर्ण चेष्टा करना अपना धर्म है, यह स्पष्टरूपेण जानना यही स्वयसेवक के नाते अपना कर्तव्य है। आज सपूर्ण देश में भाषा-विषयक, सप्रदाय-विषयक, प्रातीयता आदि अन्यान्य भेद-विषयक जो विष भरा हुआ है, फैल रहा है, स्वार्थी राजनैतिक दलों द्वारा फैलाया जा रहा है, उस विष को उतारकर समाज का राष्ट्र-शरीर स्वस्थ तथा सुदृढ वनाने के लिए अपने सघकार्य के अतिरिक्त और कोई औषधि नहीं है। सब विषों को निर्वीर्य करनेवाला यही साक्षात् अमृत है। इस अटल श्रद्धा तथा विश्वास से अपने स्थान पर अडिग रहकर प्रेम से, स्नेह से, अपने वधुओं के अत करण में सुप्त आत्मीयत्व को जागृत करने का कार्य अपने को करना है। किसी भी हिंदू व्यक्ति या समूह के प्रति मन में दुर्भावना न रखकर, किसी पर दोषारोपण न करते हुए, कुशलता तथा अकृत्रिम प्रेम का व्यवहार करना आवश्यक है। सारे देश में एक

विपाक्त वायु प्रवाहित हुई है, उससे प्रभावित लोग दुष्टता करते हैं सो मन से नहीं, अपितु प्रवाहपतित के नाते, ऐसा समझकर इस विषभरे वायुमडल को दूर करने का साहसपूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

आप इस प्रकार शुद्ध अत करण से प्रयत्न कर सकते हैं। आप पुराने अनुभवप्राप्त स्वयसेवक तथा अच्छे कार्यकर्ता हैं। आपसे सतुलित हृदय से व्यवहार की अपेक्षा है, जो आप पूर्ण करेंगे ही। इसी से शाखा चलेगी, लोग सन्निकट आएँगे, अपनी भूल समझेंगे। वे आगे के लिए अपने व्यवहार को शुद्ध रखने का प्रयत्न करेंगे और हितशत्रुओं के, स्वार्थी दलों के प्रलोभन की माया में नहीं फसेंगे, ऐसा निश्चय करेंगे कि शाखा के द्वारा ही अपने प्रात में लगा हुआ घाव भरकर स्वास्थ्य-लाभ होगा।

३५६ लोकसग्रही दृष्टि

श्री गोपाल वाकरे, पटना (बिहार) २५ अगस्त, १९६०

नासिक में रामगढ के राजासाहब से भेंट हुई उन्हें सघ की विशेष जानकारी है, ऐसा नहीं दिखा। अधिक जानने की उत्सुकता भी नहीं देखी। उनके मन में चुनावों के विचार भरे हुए हैं। लगता है कि उस दृष्टि से वह सघ की ओर देखकर उसका कुछ उपयोग होगा क्या– ऐसा उनका विचार रह सकता है। फिर भी कुल मिलाकर सज्जन अच्छे लगे। अत्यधिक एव अतिरिक्त राजनैतिक विचारों से उन्हें थोडा बहुत छुटकारा मिल सके, तो अपने कार्य को बहुत उपयोगी हो सकेंगे। तो भी इस दृष्टि से यह देखें कि क्या प्रयत्न किए जा सकते हैं एव मकर सक्रमण महोत्सव में अध्यक्ष के नाते निश्चित आ सकते हैं या नहीं, यह भी देखें। अनिश्चितता नहीं चाहिए। नागपुर के उत्सव में वे आनेवाले हों तो मैं उत्सव में उपस्थित रहूँगा। (मूल मराठी)

३५७ सच्ची सात्वना

श्री वासुदेव मारावार, घाटजी ३० अगस्त, १९६०

आप पुत्रशोकसतप्त अवस्था में उत्तर-क्रिया के लिए नासिक गए थे। नियति द्वारा आप पर किए हुए आघात की जानकारी मुझे कुछ देर से ही प्राप्त हुई।

पत्र से कितने प्रमाण में सात्वना दी जा सकती है, यह प्रश्न मुझे नित्य सताता है। स्वय विवेक कर, मन को सयमित कर, स्वकर्तव्य में मग्न रहने से ही वास्तविक सात्वन प्राप्त हो सकता है। परमपिता परमेश्वर की कृपा भी आवश्यक रहा करती है। स्वकर्तव्य यदि स्वार्थरहित और जनकल्याणरूप है, तो इसमें परमेश्वरी कृपा बनी ही रहती है। उसकी प्राप्ति के हेतु कर्तव्य छोडकर अन्य मार्गो से प्रयत्न नहीं करना पडता है। कर्तव्य में यदि मन नहीं लगता हो तब तो कठिन अवस्था उत्पन्न होती है। फिर मन शोकविचारों में स्वय भ्रमण करता है और अपनी अस्वस्थता के कारण शरीर को भी इतस्तत भटकाता है। घूमने-फिरने में मनुष्य को शोक-विषयक विचार करने के लिए अवकाश नहीं मिलता, तब उसे लगता है कि में दु ख भूल गया हूँ, परतु वह वास्तविक मन शाति नहीं रहती है। उस अवस्था में अत करण की व्यथा दूर नहीं होती। अत योग्य विचार करें, विवेक का आधार लें और परमेश्वर पर पूर्णत विश्वास रखकर प्राप्त कर्तव्य में मग्न हो जाएँ, यही उचित है। इसी से आप फिर से प्रसन्न चित्त से अपने परिवार का पालन करते हुए जीवन के श्रेष्ठ कर्तव्य की परिपूर्ति कर पाऍगे।

आप स्वय सब कुछ सोच सकते हैं। विचारों की जो दिशा मुझे सूझी, मैंने आपको दिग्दर्शित की। आप विचार करें और अस्वस्थ चित्त से भ्रमण न करें। आप अपने कर्तव्य-क्षेत्र में त्वरित लौट आवें तथा अपना स्वाभाविक दायित्व सँभालें– यही सर्वथा उचित और आवश्यक है। अत इसी प्रकार से मन को सुनिश्चित करते हुए, आप आचरण करें, ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

परमेश्वर की आप पर कृपा हो। आपका मन सतुलन ठीक हो जाए, घर के सब लोगों को आप धीरज बँधाऍं तथा अपने पुनीत कार्य में निरलस वृत्ति से जुट जाऍं। इस हेतु परमेश्वर आपको शक्ति, धृति तथा बुद्धि प्रदान करे। (मूल मराठी)

३५८ काया-वाचा-मनसा

श्री सत्यनारायण बसु, कोलकाता ३० अगस्त, १९६०

राखी पूर्णिमा उत्सव का वृत्त प्राप्त हुआ। उत्सव के कारण जो उत्साह आता है, वह अल्पकाल में ही नष्ट न होकर, उसका स्थायी परिणाम प्रत्येक स्वयसेवक के हृदय में होने से कार्यवृद्धि होती है। कार्यवृद्धि

की आवश्यकता स्पष्ट है। चारो दिशाओं मे विच्छेद का अनिष्ट वायुमडल फैल रहा है। स्वार्थी लोग तथा सस्थाएँ उस विप को प्रसृत करने का जघन्य काम कर रहे हैं। राष्ट्र के जीवन को इससे वडा भय उत्पन्न हुआ है। इस विप को नप्ट कर राष्ट्र-जीवन में एकात्मता का अमृत भरना अतीव आवश्यक है। यही अपना कार्य है। मन-वाक्-काय से इस पुनीत कार्य को शीघ्र पूर्ण करने में प्रत्येक स्वयसेवक को सलग्न रहना चाहिए।

३५६ असम की स्थिति का शासन को ज्ञान नहीं

श्री विपुलचद्र मुखोपाध्याय, असम   २ सितवर, १६६०

असम प्रात की स्थिति का पता लगा है। अभी तक उसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर उचित उपाय-योजना करने की वुद्धि शासनकर्ताओं मे उत्पन्न नहीं हुई, यह दुर्भाग्य कहकर रोने से काम नहीं वनता। अत करणपूर्वक प्रयास करना आवश्यक है। अपने कार्य के द्वारा जो एकात्मबोध तथा स्नेहसपन्न व्यवहार निर्माण करने का प्रयास चल रहा है, वही इस दुरवस्था को दूर करने का उपाय है। अत व्यक्ति-व्यक्ति को समझाकर अपने कार्य में लाना, अपने सद्व्यवहार की, नि स्वार्थ राष्ट्रभाव की, अखिल भारत के एकत्व की शिक्षा देना, अनुशासन के पवित्र सूत्र में सव को आवद्ध करन तथा इस हेतु अपार परिश्रम करते रहना आवश्यक है। अब वायुमडल कुछ शात हुआ है, इसमे विशेप उद्योग से अधिक शाति तथा सद्भाव प्रस्थापित कर कार्य के लिए अनुकूलता निर्माण करने का निरतर प्रयास हो।

३६० सहयोगियो के प्रति सद्भाव रहे

श्री विष्णुपत मुठाल, काटोल   २ सितवर, १६६०

जिले के सवध मे मुझे सदा ही चिता लगी रहती है। वहाँ घूमने-फिरनेवाले कम होने के कारण अपेक्षाकृत उत्साह नहीं रहता है। शाखाएँ प्रारभ भी हो जाएँ, तो भी उनके चलते रहने की निश्चिति नहीं रहती है। यह सव मुझे विदित हे। परतु इस कारण से किसी भी व्यक्ति की सचाई के विपय मे शका उपस्थित करना उचित होगा, ऐसा तो मुझे

प्रतीत नहीं होता। अपने सहयोगियों के विषय में हमारा मन सदैव निर्मल रहे, अन्यथा स्वय अपने ऊपर भी उसका परिणाम होगा और अपनी कार्य-विषयक लगन तथा परिश्रमशीलता कम होने की सभावना उत्पन्न होगी। 'फलाना बल्ब फ्यूज हो गया' ऐसा जो कहते हैं, वे बहुधा ऐसी ही भावनाओं का विचार तथा उच्चार करते रहते हैं, और फिर वैसी ही दु खदायी अवस्था को प्राप्त होते हैं। हमारे आसपास ऐसे अनेक उदाहरण हैं। उन उदाहरणों से हमें कुछ बोध लेना चाहिए। हमें अपने सब सहयोगियों के विषय में सच्ची सद्भावना रखनी होगी। उनके कार्योद्योग में आज दिखाई देनेवाली त्रुटियों के कारण दु खी होना, घबराना अथवा चिढना योग्य नहीं है। (मूल मराठी)

३६१ अधिक उद्यमशीलता प्रोत्साहित करे

श्री सुधाकर देशपाडे, धुबडी (असम) — २ सितबर, १९६०

धुबडी की चिंताजनक घटनाओं की जानकारी प्राप्त हुई। अग्रेजों के समय जो नीति थी, वही उनके उत्तराधिकारी विरासत में प्राप्त अधिकार से चला रहे है। यह स्पष्ट दिखता है कि हिंदू-समाज पर अहिंदुओं द्वारा, विशेषत मुसलमानों द्वारा घातक हमले किए जाएँ एव हिंदू-समाज के अच्छे-अच्छे व्यक्तियों को पकडकर उन्हें सजा देने का काम वर्तमान शासन कर रहा है। इस नीति के सामने न्यायदेवता क्या कर सकता है? इसलिए जब तक यह वातावरण बदलकर सपूर्ण देश-भर में शुद्ध दृष्टि से राष्ट्र एव उसके सब प्रश्नों की ओर देखने का गुण पैदा नहीं होता है, तब तक यही अपेक्षित मानकर, अपने कार्य का अनन्यसाधारण महत्त्व लोगों के ध्यान में ला देने का, उसमें से कार्य की व्याप्ति एव दृढता बढाने, फलस्वरूप वातावरण में परिवर्तन लाने का जी-जान से प्रयत्न करना, अपने सहयोगी स्वयसेवकों को अधिक उद्यमशीलता से प्रयत्न करने को प्रोत्साहन देना— यही अनिवार्य है। यह समझकर काम में नित्य नया जोश निर्माण करने के लिए परिश्रम करें। अपने कार्य की सफलता के बिना देश का विग्रह रूपी विष नष्ट कर सुदृढ सुसगठित एकात्मता रूपी अमृत राष्ट्र-जीवन मे ढालने का पुण्य कार्य अन्य किसी बात से नहीं हो सकेगा, होगा भी नहीं। इस सत्य, वस्तुस्थितिनिष्ठ विश्वास से प्रयत्न किए जाएँ। (मूल मराठी)

३६२ सत्ताधारी सत्ताभिलाषी तथा पक्षांध

श्री भाराजी पेंढारकर, कोल्हापुर   ३ दिसंबर, १९६०

पिछले कुछ दिनों से आप बीमार थे अब आपका स्वास्थ्य वैसे ठीक है, परंतु आप पूर्णत स्वस्थ हो गए हैं, ऐसा विदित नहीं हुआ है। अत मन में चिंता बनी है।

हमें अभी बहुत कार्य करना है। देश की परिस्थिति स्पष्ट दिखाई दे रही है। पुराने दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास की पुनरावृत्ति आज हमारी आँखों के सामने हो रही है। हमारे समाज में पंथ-संप्रदाय, जाति, भाषा प्रांत इत्यादि विषयक स्वार्थमूलक दुरभिमान अत्यधिक बढ गया है। उस कारण आपसी कलह दिन-प्रतिदिन उग्र और उग्रतर रूप धारण कर रहा है। परिणामस्वरूप समाज खोखला हो रहा है। स्वभावत इसका लाभ विदेशी विधर्मी शत्रु उठा रहे हैं। जिनके ऊपर शासन का भार है, उन्होंने इस मामले में आँखें मूँद ली हैं और अत करण के कपाट भी बंद कर लिए हैं। दिखाई देता है कि राष्ट्र की छिन्न-विच्छिन्न अवस्था का उन्हें आकलन ही नहीं हो रहा है। प्रतीत होता है कि सत्ताभिलाषा और पक्ष-स्वार्थ ने उन्हें अंधा और कुंठितमति कर दिया है। इस अवस्था में से राष्ट्र को ऊपर उठाना होगा। तदर्थ राष्ट्र-शरीर में भीतर तक पहुँचे हुए अंतर्विग्रह का विष उतारने के लिए प्रभावी योजना बनानी होगी। यही अपना कार्य है। संगठित एकात्मतारूप अमृत से ही उस विष के परिणामों को हटाया जा सकता है। दिन-प्रतिदिन बिगडती हुई परिस्थिति पर रोक लगाकर राष्ट्र-जीवन को योग्य दिशा में मोडने का अपना कार्य हमें अत्यधिक परिश्रम से करते हुए पूर्ण करना चाहिए। इसकी नितांत आवश्यकता स्पष्टत सामने आती है तथा सिद्ध होती है। अत इस दृष्टि से हम सब लोगों को चाहिए कि हम व्यक्ति-व्यक्ति को समझाकर उन्हें अपने कार्य में लाने के लिए भरसक उद्योग करें। हमारे इन प्रयत्नों में आप जैसे प्रभावी, विशुद्ध भावप्रधान श्रेष्ठ व्यक्ति का स्थान अनन्यसाधारण है, यह मुझे आपसे कहना चाहिए ऐसी बात नहीं है। तथापि सहज रूप में जो अंत प्रवाह था वह प्रकट हो गया है।

(मूल मराठी)

३६३ कृतिशीलता मे मन शाति

श्री धनुसु, (तमिलनाडु में प्रचारक) ३ सितबर, १९६०

पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें मन को विषण्ण करनेवाला आपके पिताजी के देहात का समाचार था। जिस व्यथा के कारण वे वीमार थे, उन अति दु खद कष्टों से वे मुक्त हुए, परतु उनके चले जाने के कारण हुई क्षति कम नहीं होती। अत मै उस सर्वशक्तिमान परमात्मा, जो कि दया एव शाति का शाश्वत और चिरस्रोत है, के श्रीचरणों मे विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे आपको मन शाति और इस अपूरणीय क्षति को सहने का धैर्य प्रदान करे।

व्यक्तिश आप तो इसलिए वहुत वडभागी हैं, क्योंकि आपका जीवन एक श्रेष्ठ ईश्वरीय कार्य में पूर्ण समर्पित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दिवगत आत्मा के प्रति आवश्यक सव धामिक विधि से मुक्त होने के पश्चात् आप उसी कार्य मे हृदयपूर्वक जुट जाएँगे। इससे महान कार्य की कृतिशीलता में व्यस्त रहने से आपका दु ख हल्का होगा और आपका मन पूर्ण सतुलित होकर आप अपूर्व शाति का अनुभव करेंगे। जिस जगज्जननी माँ के ही कार्य को हमने जीवनव्रत के नाते स्वीकार किया है, वह सदैव आपके सान्निध्य में रहकर आपको समाधान-वृत्ति प्रदान करे और कर्तव्यपरायणता का आपका निश्चय सुदृढ करे।

इस असीम दु ख मे हृदयपूवक सहभागी

(मूल अग्रेजी)

३६४ शाखा का वृत्त भेजना लाभकारी

श्री जयदेव जी, नवद्वीप *४ सितवर, १९६०*

आपके क्षेत्र में यद्यपि कार्य का स्वरूप वहुत बडा या उत्साहवर्धक न दिखाई दे, तथापि उसका वृत्त समय-समय पर भेजने मे आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वृत्त लिखने से उसका वास्तविक रूप अधिक स्पष्ट ध्यान में आता है। यह भी वडा लाभ हे। अपने साथियों से विचार-विमर्श करके पत्र लिखा तो अपने प्रयत्नों में जो न्यून है वह उनके भी ध्यान मे आकर अधिक लगन से, योग्य रीति से वे कार्य करने में प्रवृत्त हो सकेंगे।

३६५ पू. डाक्टर जी के चरित्र का पारायण हितकारी

डा भागवत, अमरावती (विदर्भ) ४ सितबर, १९६०

परम पूजनीय डाक्टर जी का चरित्र आपने सपूर्ण पढा एव अपनी तहसील में इस श्रेष्ठ चरित्र की आवश्यक घटनाएँ एव जानकारी बतलाने की आप योजना कर रहे हैं, यह पढकर अत्यत आनद हुआ। प्रत्येक स्वयसेवक को प्रयत्नपूर्वक यह चरित्र ग्रथ अपने सग्रह में रखना चाहिए, उसे बीच-बीच में पढना चाहिए, उसमें से बोध ग्रहण कर अपने जीवन में अधिकाधिक परिवर्तन लाना चाहिए। कर्तव्यरत होने की दृष्टि से अतुलनीय महत्व का यह ग्रथ है। सुना हुआ विस्मृत हो सकता है। वह स्थायी रखने के लिए बार-बार पारायण करना हितकारी होता है। इस दृष्टि से ग्रथ असीम उपकारक है।

(मूल मराठी)

३६६ निरतर प्रयत्नो का महत्त्व

श्री प्रभाकर गाडगीळ, नासिक ५ सितबर, १९६०

किसी दृष्टि से क्यों न हो, परतु कार्य की प्रगति क्यों नहीं हुई, इसकी खोज करना तथा जिन कारणों से यह न हुई होगी, उन्हें हटाकर कार्य की प्रगति होती रहे— ऐसा प्रयास करना आवश्यक है। वास्तव में मेरे पिछले प्रवास को निमित्त बनाकर कार्य विस्तार के कुछ प्रयत्न हुए थे। बाद में ग्रीष्मकाल के पश्चात् माननीय श्री बाबा भिडे आदि का दौरा हुआ और वे लोग सबसे मिले थे। अत उत्साहपूर्ण वातावरण का निर्माण अपेक्षित था। कुछ स्वयसेवकों के हृदय में कार्य की इच्छा तीव्रतर होकर अधिक तन्मयता से अधिक समय देकर अधिक निर्दोष ढग से कार्य करने का निश्चय उनके मन में दृढ होना अपेक्षित था। परतु वैसा हुआ नहीं, इसी कारण से कार्य में प्रगति नहीं दिखाई देती होगी, ऐसा एक अनुमान कोई लगा सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि सर्वत्र उत्साह बढाने की दृष्टि से जो कार्यक्रम हमने किए थे, वे बाद के प्रयत्नों के अभाव में व्यर्थ सिद्ध हुए। इन सब बातों पर विचार करें। प्रयत्न करने का तथा कराने का दायित्व आप पर विशेष रूप से है, यह तो आपके ध्यान में होगा ही।

(मूल मराठी)

३६७ पूर्ण जीवन 'शतायुर्वै पुरुष' प्राप्त हो।

श्री चिरंजीलाल बडजाते, मध्यभारत ६ सितंबर, १९६०

बड़े हर्ष की बात है कि परमदयालु श्रीपरमात्मा की कृपा से आपने अपने उपयुक्त, राष्ट्रभक्तिपूर्ण, निःस्वार्थ जीवन के ६५ वर्ष पूर्ण कर ६६वें वर्ष में पदार्पण करने का सौभाग्यपूर्ण अवसर पाया है। अधिकाधिक परिपक्व बुद्धि तथा आज तक की राष्ट्रसेवा के अनुभव से तरुण पीढियों का मार्गदर्शन करते रहने के लिए श्रीभगवान की कृपा से आपको उत्तम स्वास्थ्य, सर्व अनुकूलतायुक्त पूर्ण जीवन 'शतायुर्वै पुरुष' इस वचन के अनुसार प्राप्त हो। एतदर्थ मैं उस दयाघन के चरणकमलों में हृदय से प्रार्थना करता हूँ।

३६८ असम की घटनाओं का अन्वयार्थ

श्री मधु लिमये, नौगाँव (असम) ७ सितंबर, १९६०

पिछले दिनों में हुई दुर्घटनाओं के फलस्वरूप हमारे अनेक हिंदू बंधु आहत हुए और अनेक क्षुब्ध हुए। उन्हें सांत्वना देकर उनका मन संतुलित करना होगा। हमारे समाज में यथार्थ राष्ट्र-दृष्टि का अभाव होने के कारण हम किस प्रकार आपस में झगडते रहते हैं, और उसका लाभ विधर्मी शत्रु-समाज को किस प्रकार से होता है, यहाँ तक कि हम सबके उनके भक्ष्य बनने की दुरवस्था कैसी निर्माण होती है, यह सब गतेतिहास के उदाहरणों से तथा सद्यकालीन घटनाओं का योग्य अन्वयार्थ लगाकर उन्हें समझाना होगा। यह उन्हें कहना होगा और उनके हृदयों पर अंकित करना होगा। इसके आगे हम कभी भी ऐसी दुष्ट प्रवृत्तिवाले लोगों के बहकावे में नहीं आएँगे, ऐसा निश्चय उनके मन में हमें प्रस्थापित करना होगा। यह आवश्यक है। हमारे पवित्र कार्य के प्रसार से ही राष्ट्रभावना शुद्धिकरण का आवश्यक कार्य हो पाएगा। छोटे-बडे स्वयंसेवक बंधुओं को हमें इस ढंग से समझाना होगा कि वे अंतःप्रेरणा से कार्य करने लगें तथा उनमें स्थिरता रहेगी और तीव्रता निर्माण होगी– ऐसे प्रयत्न भी हमें अवश्यमेव करने होंगे।

(मूल मराठी)

३६९ शाखा कार्य मे चर्चा तथा बैठको का महत्त्व

डा वसतराव कुटे, जलगाँव ८ सितबर, १९६०

महाविद्यालय के अच्छे तरुण स्वयसेवकों का गट साय शाखा के लिए तथा प्रभात आदि शाखाओं के लिए उत्साही व्यावसायिक बधुओं का गट तैयार हो जाना चाहिए। भिन्न-भिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में भी अपना गट निर्माण होना चाहिए। इस हेतु एक-एक व्यक्ति को चुनकर उसे समझाना लाभकारी होगा। शाखा में विद्यमान परिस्थिति, इतिहास, हमारी परपरा आदि विषय लेकर चर्चा होनी चाहिए। शाखा छूटने के बाद भी अनौपचारिक ढग से चर्चा करनी चाहिए। अन्य समय में भी सभाषण द्वारा स्वयसेवकों को जानकारी देनी चाहिए। प्रत्येक बैठक के अत में सघ की अतुलनीय भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए तथा इस कार्य की अनिवार्य आवश्यकता का प्रतिपादन करना चाहिए। इसका बड़ा उपयोग होगा। इससे आत्मविश्वास जगेगा तथा कार्यकर्ता के सबध में आत्मीयता बढ़ेगी। साथ ही साथ एक बात और होगी। अपना स्वयसेवक साथ के अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा शारीरिक गुण, चारित्र्य, ज्ञान, व्यवहार आदि हर बात में श्रेष्ठ सिद्ध होगा। ऐसा उपक्रम नित्य चलता रहे। कार्य की प्रतिष्ठा तथा तद्विषयक आकर्षण सामान्य जनों में बढ़ने की दृष्टि से यह उपयुक्त रहता है। (मूल मराठी)

३७० एकात्मता का मलहम कारगर

श्री राजकुमार भट्टाचार्य, शिलाग ८ सितबर, १९६०

गत कई दिनों में मन में आपका स्मरण होता रहा, किंतु कारण ज्ञात नहीं था। अब लगता है कि उसके पीछे आपके पत्र की प्रतीक्षा ही थी। पूरा विवरण हृदय-विदारक है।

असम में उन्मत्तता का जो नग्ननृत्य चल रहा है, उसके आप एक दुर्दैवी दु खभोगी हैं। आपकी तथा आपके दु खाक्रात परिवार की सात्वना कैसे करूँ, यह समझ में नहीं आता। आपकी भावनाओं को सौम्य करना तथा दु ख-शमन करना केवल काल एव जगज्जननी के हाथों में है। हम अब उस जगदबा की प्रार्थना करें कि वह हमें शुद्ध तथा नि स्वार्थ ज्ञान प्रदान करें। वह हमारे हृदयों में उदात्त एव सर्वसमावेशक वृत्ति ऐसे भर दे कि हम सब प्रकार की क्षुद्रता तथा सकुचितता से मुक्त हो जाएँ। अज्ञान

और तज्जन्य सकुचित दृष्टि ही इस सत्यानाश का कारण है। इस बारे में पूर्णत निर्दोष कौन है, यह कोई भी नहीं जानता। उनका मनोमालिन्य दूर करने के लिए हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। क्षतिग्रस्त लोगो का पुनर्वसन करना उनके हृदयो के पुनर्वसन की तुलना में बहुत छोटी समस्या है। हृदयों का शुद्धीकरण ही सब समस्याओं का निराकरण कर देगा।

हम सब ईश्वर से ज्ञान-प्रकाश एव मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें तथा कधे से कधा, हृदय से हृदय मिलाकर प्रात एव राष्ट्र के क्षतिग्रस्त उध्वस्त लोगो को अपनी मूलभूत एकता का मलहम लगाएँ। इस दु खमय अवस्था में सर्व प्रकार की शक्ति शाति एव शुद्धता के मूल स्रोत ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको धैर्य दे और सब बातो का समुचित मूल्यमापन कर अपने नित्य व्यावहारिक कर्तव्य आप सतोषयुक्त तत्परता से पूर्ण कर सकें। (मूल अग्रेजी)

३७१ शाखा आकर्षण-केंद्र बने

श्री लक्ष्मणराव इनामदार, अहमदाबाद ८ सितबर, १९६०

कार्य गतिमान हुआ है शिक्षक, गटनायक आदि को इस गति को स्थायी रूप देना चाहिए। शाखा का वायुमडल अनुशासनयुक्त तथा उत्साह से परिपूर्ण रखना चाहिए। नियमितता बढनी चाहिए। चारो ओर के लोगों के लिए शाखा एक आकर्षण-केद्र बने, ऐसा प्रयत्न हमे करना चाहिए। अपनी शाखा मे आनेवाला प्रत्येक स्वयसेवक अपने समवर्ती अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा चारित्र्य, स्वभाव, व्यवहार-ज्ञान, राष्ट्र की परिस्थिति का सम्यक् ज्ञान, निरलस, निर्लोभ, निस्वा र्थ तथा निरहकारी वृत्ति, सबके साथ हिलमिलकर रहना, कार्यमग्न रहना। सब बातो में इतना श्रेष्ठ रहना चाहिए कि तत्काल ध्यान मे आवे। इस दृष्टि से प्रयत्न करना बहुत लाभदायक सिद्ध होगा। ऐसा बोध सब शिक्षक आदि को साग्रह देते रहने की योजना बनाइए। तब इष्ट कार्य की निष्पत्ति में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आएगी।

(मूल मराठी)

३७२ आत्मग्लानि हटा दे

श्री सतपाल तिवारी, अमृतसर (पजाव) २७ सितवर, १६६०

आपके पत्र से प्रतीत होता है कि आप अपने स्वत के सबध मे विचार तो वहुत करते है, परतु विचारों की दिशा ठीक नहीं है। अत अपने स्वत का सर्व प्रकार का अवमान करना छोडकर जो कुछ थोडी-वहुत शक्ति, बुद्धि आदि अपने पास हो, उसे सत्कार्य में लगाने के लिए प्रयास करें। अमृतसर में अपनी शाखाएँ चलती हैं, उनमें से किसी शाखा में बधुओं से मिलकर शाखा के अपने वरावरी के स्वयसेवकों के साथ हँसते-खेलते मित्रता के सबध उत्पन्न कर अपने हृदय की ग्लानि हटा दे।

श्रीपरमात्मा की कृपा से आपका आत्मविश्वास जागृत होकर आपका सर्वप्रकार भला हो।

३७३ विदेशो मे भारत का मान बढाएँ

श्री वेदप्रकाश नदा, दिल्ली २८ सितवर, १६६०

आपका विदेश जाने का विचार अव प्रत्यक्ष में आ रहा है।

आपका प्रवास निरापद हो तथा अपना अभ्यासक्रम सफलता से पूर्ण कर आप सकुशल लौट आएँ, इस हेतु श्रीपरमात्मा से प्रार्थना कर रहा हूँ, करता रहूँगा।

आप वहाँ का जीवन समझ ही लेंगे। अपने भारतीय जीवन के सिद्धातो को आपने अनेक वार सुना हे। वडों के सुलझे हुए विचारो के आप अभ्यासक रहे है। अत आपको कठिनाई का अनुभव आने का कारण नहीं है।

नवीन युग में श्रीमत् स्वामी विवेकानद जी ने जिस नगर में भारत का विश्व-विजयी धर्मध्वज सर्वप्रथम फहराया और जगत् को नतमस्तक किया उसी पुण्य नगरी मे आप जा रहे है। श्री स्वामी जी का अखड सामर्थ्य-स्रोत आपके साथ है, इस पर विश्वास रखें ओर सव प्रकार से यशस्वी होकर आएँ। भारत का मान बढाने में आपका भी कुछ अश अवश्य रहेगा– इसी विश्वास से चले। श्रीपरमेश्वर आपको सफल करेगा।

३७४ विच्छेद प्रवृत्ति रोकने का सामर्थ्य

श्री कृष्णलाल जी, जालधर (पजाव) २८ सितवर, १९६०

प्रात में विपरीत वायुमडल है तथा बडे कहलानेवाले नेता अनेक प्रकार की उलझनें मात्र उत्पन्न कर रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। कार्य इसी दृष्टि से अधिक वेग से करना आवश्यक है। सप्रदाय के नाम पर समाज में विच्छेद उत्पन्न होने से रोकने की प्रवृत्ति, इच्छा तथा सैद्धातिक सामर्थ्य केवल अपने कार्य में ही है। इसको सोचकर विश्वास से कार्य में जुट जाना आवश्यक है।

३७५ सस्कार व अनुशासित जीवन का निर्माण

श्री लक्ष्मण जोशी, सवलपुर (उत्कल) ३ अक्तूबर, १९६०

आपके हाथ में एक अच्छा क्षेत्र है। अनेकों का तर्क है कि यद्यपि लोगों में प्रतिकूलता नहीं है, तथापि उद्यमशीलता कम ही है। प्रयत्नपूर्वक कर्मशीलता एव उसमें दैनिक नियमित सस्कार ग्रहण करने की सिद्धता से अनुशासनवद्ध जीवन स्वीकार करने की सिद्धता निर्माण करना यही प्रमुख काम है। क्रमानुसार इसमें आपको यश मिलेगा। यह विश्वास होता है कि सबलपुर की शाखा के सहारे जिले में कार्य का प्रसार होगा। मजबूत नींव पर कार्य खडा किए बिना कार्य में स्थिरता नहीं आएगी अब इधर ही ध्यान दूँगा– यह विश्वास आपको यश देने में सहायक होगा। (मूल मराठी)

३७६ यशप्राप्ति का रहस्य

श्री शरद कुसरे, नालवारी, (असम) ४ अक्तूबर, १९६०

आपके मन की अवस्था ऐसी हो जाना स्वाभाविक ही है। किसी भी क्षेत्र में पहुँचे नहीं कि सतोषजनक यश मिला, ऐसा तो नहीं हुआ करता है। कभी-कभी बहुत काल तक निरतर प्रयत्न करना पडता है। समाज की अकर्मण्यता, परिस्थिति-विषयक अज्ञान, किकर्तव्यविमूढता, निराशा आदि दोष दूर करने के लिए कुछ कालावधि तो लगेगी ही। इसके साथ लोग उत्तरदायित्वहीन और उच्छृखल वन गए हैं। अत इन सव वातों को हटाने के लिए बहुत प्रयास करने आवश्यक होंगे। ऐसे समय यदि हम उतावले होते हैं और समाज की निदा करने में प्रवृत्त होते हैं, तो उससे कोई भी

३७८ प्रतिशोध से समाधान नहीं

श्री गजाननराव कोल्हटकर, कर्‌हाड २२ अक्तूबर, १९६०

सब प्रकार की कठिनाइयों मे सबसे बडी कठिनाई है, कार्यकताओं का अभाव अथवा अल्पसख्या। परमेश्वर की कृपा से अच्छे चारित्र्यसपन्न, सुस्वभावी, कर्तृत्ववान कार्यकर्ता कहीं-कहीं जब प्राप्त होते हैं, तब कार्य-विषयक विश्वास बढता है। इस परिस्थिति मे जब ऐसे आवश्यक कार्यकर्ता को काल हमसे छीन लेता है, तब मन बहुत खिन्न हो जाता है। फिर यह तो अपघात से मृत्यु है। वह भी हमारे ही समाज-बधुओं की विपरीत वृत्ति के कारण उनके हाथो हत्या हुई है। ऐसा श्रेष्ठ कायकर्ता जब हम खोते है, तब मन की अवस्था बडी विचित्र हो जाती है। असहनीय दु ख से मन छटपटाने लगता है। न्याय-विभाग बडी तत्परता से कार्यक्षम भी हुआ और अपराधियो को सजा भी दी गई तो भी, जो हानि हो गई हैं, उसकी परिपूर्ति तो नहीं हो सकती। कहते है कि न्याय की देवी खुली आँखो से व्यवहार नहीं करती। फिर पक्षोपपक्षो के खिचाव-लगाव रहने के फलस्वरूप वह और भी विपरीत वर्तन करती है, ऐसा अनेक जानकारों का ख्याल है। यह विश्वास सच है या झूठ, इसकी परख प्रस्तुत प्रकरण मे होगी ही। इस न्याय देवी ने यदि ठीक कार्य किया भी, तो क्या होगा? अधिक से अधिक यही होगा कि सामान्य मनुष्य की प्रतिशोध की भावना की परिपूर्ति होगी। परतु इस प्रकार की प्रतिशोध की भावना ओर उसकी परिपूति दोनों बाते मेरे मन को ठीक नहीं लगती। वस्तुत समाज-बधुओं की सद्‌विचार-शक्ति जागृत होनी चाहिए। उनके भीतर व्यापक राष्ट्रीय वृत्ति निर्माण होनी चाहिए। उस आधार पर उन्होंने स्व-पर विवेक करना चाहिए। यह, सबके मन का, स्थायीभाव बनना चाहिए। इसी से मेरे मन की शोकग्रस्त अवस्था नष्ट होगी, और मेरा मन शात होगा। यही तो अपना कार्य है। हमें सब व्यक्तियों को स्नेह-रज्जु से गूँथना है। यह अधिक व्यापक हो। लोगों के हृदयों में उचित परिवर्तन लाने मे सफल हो सके इतना व्यापक और प्रभावी हो। इसी से मन को समाधान मिलेगा और शाति प्राप्त होगी।

(मूल मराठी)

काम नहीं बनेगा। हमें धीरज रखना होगा। समाज की विचित्रता को सानद सहना होगा। यथाक्रम परिवर्तन करके ही रहेंगे-- ऐसा निश्चय करना होगा। सब प्रकार के अवगुणों को देखने के उपरात भी यह तो कुछ भी विपरीत नहीं है, ऐसी भावना रखनी होगी। सब के साथ अकृत्रिम स्नेहादरपूर्ण व्यवहार करना होगा। धीरे-धीरे एक-एक व्यक्ति खोजना होगा। उसके विचारों में, भावनाओं में तथा व्यवहार में परिश्रमपूर्वक परिवर्तन लाना होगा। कदाचित् यह वर्ष इस प्रकार की पूर्व-सिद्धता में ही व्यतीत होगा और करने योग्य कुछ भी कार्य खड़ा नहीं होने पाएगा, यह मानकर ही मन को धीरज बँधाना चाहिए। मन की ऐसी सिद्धता करके ही हम कार्य करते रहें, तब तो यश की प्राप्ति अवश्य होगी।

आपके मन की इस समय जो अवस्था है, उसमें घर की परिस्थिति का शीघ्र परिणाम होना तथा मन का द्विधाग्रस्त होना स्वाभाविक ही है। ऐसी अवस्था में ही निश्चय द्वारा मन पर काबू पाने तथा सासारिक मोह से उसे परावृत्त करने की आवश्यकता रहा करती है। ऐसे दृढ अत करण के व्यक्ति का आदर्श हमें अपने सघकार्य में प्राप्त है। उसका स्मरण करते रहें। यश की प्राप्ति निस्सदेह होगी।

(मूल मराठी)

३७७ आदर व्यक्त करने का सही मार्ग

श्री बाळासाहब भागरे, वकील, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

४ अक्तूबर, १९६०

अपने माननीय नानासाहब सप्तर्षि दशहरे के पवित्र दिवस पर देवलोक सिधार गए अत्यत निष्ठावान हिदुत्व को, अर्थात विशुद्ध भारतीय राष्ट्रीयत्व को अत करण में अविचल स्थान देकर उसके लिए प्रामाणिकता से कार्य करनेवाले के नाते उनका जो जीवत आदर्श हम सब लोगों के सामने था, उसे काल ने छीन लिया है। अब उनके जीवन की स्मृतियों में ही स्फूर्ति एव मार्गदर्शन प्राप्तकर हम सबको जो उनके पीछे रह गए हैं, कार्यरत होना, उनके प्रति आदर व्यक्त करने का सही मार्ग एव यही सच्ची श्रद्धाजलि मानकर, अपने जीवन में अखड कर्तव्यनिष्ठा एव राष्ट्रार्पित भावना सफल करना आवश्यक है।

(मूल मराठी)

३७८ प्रतिशोध से समाधान नहीं

श्री गजाननराव कोल्हटकर, कराड   २२ अक्तूबर, १९६०

सब प्रकार की कठिनाइयों में सबसे बडी कठिनाई है, कार्यकर्ताओं का अभाव अथवा अल्पसख्या। परमेश्वर की कृपा से अच्छे चारित्र्यसपन्न, सुस्वभावी, कर्तृत्ववान कार्यकर्ता कहीं-कहीं जब प्राप्त होते है तब कार्य-विषयक विश्वास बढता है। इस परिस्थिति में जब ऐसे आवश्यक कार्यकर्ता को काल हमसे छीन लेता है, तब मन बहुत खिन्न हो जाता है। फिर यह तो अपघात से मृत्यु है। यह भी हमारे ही समाज-बधुओ की विपरीत वृत्ति के कारण उनके हाथो हत्या हुई है। ऐसा श्रेष्ठ कार्यकर्ता जब हम खोते हैं, तब मन की अवस्था बडी विचित्र हो जाती है। असहनीय दु ख से मन छटपटाने लगता है। न्याय-विभाग बडी तत्परता से कार्यक्षम भी हुआ और अपराधियो को सजा भी दी गई तो भी, जो हानि हो गई है, उसकी परिपूर्ति तो नहीं हो सकती। कहते है कि न्याय की देवी खुली आँखों से व्यवहार नहीं करती। फिर पक्षोपपक्षों के खिचाव-लगाव रहने के फलस्वरूप वह और भी विपरीत वर्तन करती है, ऐसा अनेक जानकारों का ख्याल है। यह विश्वास सच है या झूठ इसकी परख प्रस्तुत प्रकरण में होगी ही। इस न्याय देवी ने यदि ठीक कार्य किया भी, तो क्या होगा? अधिक से अधिक यही होगा कि सामान्य मनुष्य की प्रतिशोध की भावना की परिपूर्ति होगी। परतु इस प्रकार की प्रतिशोध की भावना और उसकी परिपूर्ति, दोनो बातें मेरे मन को ठीक नहीं लगती। वस्तुत समाज-बधुओ की सद्‌विचार-शक्ति जागृत होनी चाहिए। उनके भीतर व्यापक राष्ट्रीय वृत्ति निर्माण होनी चाहिए। उस आधार पर उन्होंने स्व-पर विवेक करना चाहिए। यह, सबके मन का, स्थायीभाव बनना चाहिए। इसी से मेरे मन की शोकग्रस्त अवस्था नष्ट होगी, और मेरा मन शात होगा। यही तो अपना कार्य है। हमें सब व्यक्तियों को स्नेह-रज्जु से गूँथना है। यह अधिक व्यापक हो। लोगों के हृदयो में उचित परिवर्तन लाने मे सफल हो सके, इतना व्यापक और प्रभावी हो। इसी से मन को समाधान मिलेगा और शाति प्राप्त होगी।

(मूल मराठी)

होगी। इसलिए आप अपना कार्य चालू रखें। कुछ भी हो तो भी जैसा मन का गठन होगा, वैसा काम मनुष्य करेगा। उस गठन में बदलाव लाना प्रत्येक के वस की बात नहीं है।

अतएव आप स्वीकृत प्रयत्नों में मग्न रहें। बीच-बीच में जब समय मिले तब समाचार देते रहें। (मूल मराठी)

३८४ व्यक्ति की नहीं, ध्येय की उपासना

श्री भगवान वझे, येड्डूर — २२ मार्च, १९६१

येड्डूर में शाखाकार्य प्रारंभ होने का वृत्त पढकर आनंद हुआ। शाखा को स्थैर्य प्राप्त करने में कुछ अवधि लगेगी। प्रारंभिक उत्साह की लहरें यदि स्थायी उत्साह में परिणत हो जाती हैं, तो मेरे वहाँ जाने न जाने की प्रतीक्षा करते बैठने की न इच्छा होगी और न आवश्यकता प्रतीत होगी। ऐसी अपेक्षा स्वयंसेवकों में जगाइए। अभी-अभी जब वे नए हैं, उनके हृदय में ध्येय की उपासना प्रस्थापित करनी चाहिए। उन्हें किसी व्यक्ति के स्वागत की धुन लगी रहना उचित नहीं है। यह आपके ध्यान में है, ऐसा मैं समझता हूँ। (मूल मराठी)

३८५ स्थायी विशुद्ध संगठनात्मक कार्य

श्री श्रीकांत जोशी, नांदेड — २२ मार्च, १९६१

आपके क्षेत्र का कार्य प्रगति कर रहा है, यह आपके पत्र से ज्ञात होकर बहुत संतोष हुआ। नांदेड में अहिंदू समाज की ओर से, विशेषत: मुसलमान कहलानेवाले समाज की ओर से जो अनुभव आया, उसके बारे में आश्चर्य करने योग्य कुछ भी नहीं है। आश्चर्य इसी एक बात का है कि इतने वर्षों तक कटुतम अनुभव लेकर भी शासन चलानेवाली संस्था के अपने बंधु कुछ योग्य बोध न लेते हुए पुरानी ही अंततोगत्वा अति घातक सिद्ध होनेवाली नीति का ही अनुसरण कर हिंदू-समाज को दबाने का तथा मुसलमान समाज का अनुनय करने का लोकविलक्षण उद्योग कर रहे हैं। कदाचित् आगामी चुनाव में उनके मत प्राप्त हों, इसीलिए यह अनुनय चल रहा हो, परंतु एक या अधिक चुनाव में यश प्राप्त करने के लालच में जिस प्रकार पहले भारत के टुकडे होकर पराजय, अपमान और अनेक दु:ख

भोगने पडे, उसी प्रकार की पुनरावृत्ति होने की परिस्थिति ही वे निर्माण कर रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसका उपचार, किसी की आलोचना करना, अगार उगलना आदि नहीं है। अपना विशुद्ध सगठनात्मक कार्य शातिपूर्वक व्यक्ति-व्यक्ति को समझाकर, उन्हें प्रत्यक्ष सघकार्य में समाविष्ट कर अपना हिंदू-समाज सपूर्ण देशभर सुदृढ, आत्मविश्वास-पूर्ण सगठित सामर्थ्य से उत्स्फूर्त खडा करना एकमात्र उपाय हे। इस दृष्टि से अपना कार्य प्रगति कर रहा है, यह पढकर आनद हुआ। अधिक गति से प्रगति हो, ऐसी प्रेरणा सब स्वयसेवक वधुओं में उत्पन्न हो, यह अपेक्षा हे। (मूल मराठी)

३८६ प्रचारक के पिताजी का सन्यास और मृत्यु

श्री राजाभाऊ सावरगॉवकर, फैजाबाद (उ प्र) २३ मार्च, १९६१

आपके कनिष्ठ बधु श्री नारायण राव का पत्र देखा। उस पर से ज्ञात हुआ कि पूज्यपाद श्रीमत् कृष्णानद स्वामी (आपके पिताश्री) ने शरीर त्याग किया, जीवन के चारों ही आश्रमों का पालन कर विद्याप्राप्ति एव आत्मप्राप्ति में ही रममाण होकर उन्होंने शरीर त्याग किया, यह उनका श्रेष्ठ सौभाग्य एव जीवन की सफलता है। उनके शरीर की दुर्बल अवस्था में आपने उनकी बहुत ही सेवा की एव पुत्रधर्म का पूर्ण पालन कर पितृऋण से मुक्त हुए। इसके लिए आपका जितना अभिनदन किया जाए, उतना कम ही है। परतु यह होते हुए भी जब यह सुना कि आप शोक से अभिभूत हो गए हैं, तब आश्चर्य हुआ। निसर्ग क्रम को कौन टाल सकता हे? एक पवित्र एव श्रेष्ठतम ध्येय की पूर्ति के लिए नि स्वार्थ भाव से परिश्रमपूर्वक कायरत रहनेवाले को ऐसे तात्कालिक सुख-दु ख का विचार करने की कहॉ फुरसत है? फिर भी आपको दु ख हुआ एव उसका आपके मन पर बहुत परिणाम हुआ– यह सुनकर अच्छा नहीं लगा। प्रकृतिधर्म के अनुसार पिता-पुत्र सबध के परिणामस्वरूप उनका वियोग दु खकारक होना स्वाभाविक है, परतु उसका मन पर परिणाम नहीं होना चाहिए। आप विवेक से सपूर्ण ध्यान कार्य पर केंद्रित कर रहे हैं, इसलिए अपेक्षा है कि अब तक आपके मन पर से शोक का बोझ दूर हो गया होगा। यही श्रीपरमेश्वर के चरणों में मेरी साग्रह प्रार्थना है।

(मूल मराठी)

३८७ सदैव सावधान रहे

श्री अच्युत कोल्टटकर, सतारा (महाराष्ट्र) २२ मार्च, १९६१

इस प्रकार की घटनाएँ देशभर में होने का सिलसिला शुरू हो रहा है। पीछे २०-२५ वर्ष पूर्व ऐसा ही हुआ था। उस समय के चुनाव में मुसलमानों ने काग्रेस वधुओं में अपना भाव बढा लिया था, ऐसा उस समय की परिस्थिति पर गौर करने से दिखाई देगा। इस समय भी चुनाव आ रहे हैं। इस समय चुनाव के तात्कालिक स्वार्थ की ओर ध्यान रखकर अपने नेता क्या करेंगे, यह भी दिखाई देने लगा है। उसपर से पिछले अनुभवों से समझदार न बनते हुए आगे देश को घातक सिद्ध होनेवाली उक्ति एव कृति करने में ये रममाण हो रहे हैं, यह दृश्य सामने खडा हुआ है। यह एक दुर्भाग्य है। परतु ऐसा कहकर अकर्मण्य न होते हुए हमको अपने सगठित सामर्थ्य की वृद्धि, सभी आपत्तियों का निवारण करने को योग्य जागृत शक्तिसपन्न अवस्था निर्माण करने की जी-जान से कोशिश करनी पडेगी। जो घटनाएँ हो चुकी हैं, जो हो रही हैं एव जिनके होने की सभावना है, उनसे यही बोध ग्रहण करना है। उसमें भी केवल तात्कालिक उत्साह की उत्तेजनाजन्य प्रतिक्रियात्मक भावनाओं से विकारवश होकर अस्थायी उत्साह की सुरसुरी का अपने पर परिणाम न होने देते हुए विवेकपूर्ण, सयमपूर्ण चिरतन राष्ट्रशक्ति जागृत स्वरूप में शीघ्र खडी करना एव उसे सदैव जागृत रूप में खडी रखना— यही विचार मन में दृढ रखकर, तदनुसार कार्य करने में मग्न होना ही लाभदायक एव आवश्यक है। इस रीति से अपने सब जिलों में कार्यवृद्धि होने की ओर सब का ध्यान रहे। (मूल मराठी)

३८८ कारीगर श्री हकीमभाई की चिता

श्री उत्सवलाल गुप्त, जोधपुर (राजस्थान) २५ मार्च, १९६१

नागपुर में परमपूजनीय डाक्टर साहब के स्मृतिमदिर का काम करने के लिए श्री हकीमभाई यहाँ हैं। उन्होंने बडे परिश्रम, लगन तथा कुशलत से काम चलाया है।

उनके निवास-स्थान में उनकी कुछ भूमि पर नगरपालिका अधिकार करने की चेष्टा में है तथा नागौर जिला प्रमुख (*Collector*) के पास वैसा सुझाव दिया गया है। इस भूमि का नगर पालिका ने ले लेना, श्री हकीमभाई

के पूरे परिवार के लिए बहुत हानिकारक होने की सभावना है। अत किसी योग्य व्यक्ति के द्वारा कलेक्टर साहब को समझाकर भूमि बचाई जाए, यह उचित होगा। आप कृपया इस विषय में ध्यान देकर यह करा लें तो बहुत अच्छा होगा।

श्री हकीमभाई यहाँ काम में लगे हैं। उनके घर पर उनके वृद्ध पिताजी ही हैं। वे बहुत चिंतित हैं। अत आपके ऊपर यह काम सौंपना ही मुझे आवश्यक प्रतीत होता है।

३८६ मन का कष्टदायी अनुमान

श्रीमत् शिवस्वरूपानद स्वामी, वाराणसी २७ मार्च, १६६१

४० रु के लिए आपको जो बेचैनी हो रही है वह ध्यान में आई एव शीघ्र ही आपका धन आपको मिलेगा– ऐसी व्यवस्था कर रहा हूँ।

एक-दो बातें नम्रतापूर्वक सूचित कर रहा हूँ। मै एक साधारण ससारी मनुष्य हूँ। इसलिए मैं किसी का गुरु नहीं हो सकता एव मेरी वैसी योग्यता न होने का ज्ञान सौभाग्य से मुझे है। मैं किसी को भी अपना शिष्य आदि नहीं मानता हूँ। ये सब मेरी बराबरी के मेरे सम्माननीय सहयोगी हैं, दूसरी बात यह है कि आपने राजाभाऊ सावरगाँवकर को 'सन्यासी को दगा देनेवाला' कहा है। इसमें उनके बारे में आपकी समझ बहुत ही विचित्र दिखती है। हेतु का आरोप करना कितना उचित रहेगा, इसका विचार करें।

४० रुपये अभी तक चुकता नहीं किए गए, इसलिए क्रोधित होकर, चिढकर आपने उपर्युक्त आरोप किया हो– ऐसा कहने से यह अनुमान निकलता है कि आप जैसा सन्यासी भी धन के लिए छटपटाता है, उसके अभाव से व्याकुल होता है, चिढता है। यह अनुमान निकालना मेरे मन को कष्टदायी होता है।

श्री राजाभाऊ (प्रचारक) स्वय सन्यासी नहीं हैं, परतु केवल राष्ट्रकार्य के लिए काम-धधा, धन, दारा, सुत आदि बातों का मोह छोडकर वे कार्य में सलग्न हैं। इसलिए उनके पास धन रहना कठिन है। इसी कारण से आपका धन लौटाने में अधिक देर हुई होगी। मैं कहीं से पैसा इकट्ठा कर आपको भेज दूँगा। आप निश्चित रहें। धन की चिता से मन व्याकुल न होने दें, यही आपके चरणों में नम्र प्रार्थना है। (मूल मराठी)

३६० एक युवा संपादक महोदय को मार्गदर्शन

श्री कृष्णस्वरूप सक्सेना, उज्जैन (म प्र) २६ मार्च, १६६१

आपने अनेक भार सँभालते हुए बी ए की उपाधि प्राप्त कर ली है, यह नि सशय अभिनदनीय है। वैसे भी आप अध्ययन करते ही रहते हैं। अपने समाज को उपकारक ऐसा ज्ञानसचय करने से समाज की सेवा करने में सुभीता होती है इसका आपको अनुभव है ही। अत आपकी योग्यता सदैव बढती रहेगी ऐसा मुझे विश्वास है। इसके साथ ही व्यवहार की सुचारुता, कुशलता एव विनम्रभाव जो बढते ज्ञान के साथ व्यक्त होते जाता है, आपमें प्रस्फुटित होकर आपकी ओर से बहुत उत्तम कार्य हो– यह मेरी इच्छा है। परमकृपालु परमात्मा से प्रार्थना है।

३६१ ध्येय साधना मे लगो

श्री कन्हैयालाल जी, मडी १ अप्रैल, १६६१

आशा है आप शरीर एव मन से स्वास्थ्य का अनुभव करते होंगे। अपने सामने राष्ट्र का सगठन, चारित्र्य-गठन, उत्कट मातृभूमिभक्ति का जागरण इत्यादि अति पवित्र श्रेष्ठ जीवन-कार्य है। अपने पुनीत ध्येय की साधना में लगे रहने पर मन कभी विचलित नहीं होता। साधारण सुख-दु ख लाभ-हानि जो जगत् में चलती ही रहती है, उसकी ऐसे कार्यरत व्यक्ति को बाधा नहीं होती। ऐसा ही सोचकर तथा जो-जो अनुभव आए वह श्री भगवान का आशीर्वाद ही है– इस विश्वास पर अटल रहकर चलने से असीम सुख होता है। सर्वशक्ति कर्तृत्व में परिणत होती है।

३६२ बडो के आशीष

श्री अप्पाजी जोशी, पुणे २ अप्रैल १६६१

३० तथा ३१ मार्च, १६६१ ये दिन नागपुर मे अशात वातावरण लिए हुए थे। समाचार-पत्रों के द्वारा आपको यह ज्ञात हुआ ही होगा। प्रतीत होता है कि आजकल जनजागृति का यही लक्षण बन गया है। पिछले ४० वर्षो में इस देश में क्रमश जिस अव्यवस्था का बीजारोपण किया गया, उसी का यह फल है, ऐसा यदि हमने कहा, तो वह गलत होगा ऐसा नहीं

लगता। परतु इस प्रकार की आदोलनशील वृत्ति अततोगत्वा घातक सिद्ध होगी। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। जो लोग इस घातक परिणाम को चाहते हैं, वे इस प्रकार के आदोलन प्रारभ करने का एक भी अवसर हाथ से नहीं जाने देते। नए-नए कारण या उनका आभास खोजने में, वे बहुत तत्पर दिखाई पडते हैं। परतु जो लोग इस प्रकार के परिणामों को नहीं चाहते हैं, वे भी आदोलन के उस वातावरण में बहने लगते हैं और अनिष्ट प्रवृत्तियों का ही पोषण करते हैं, ऐसा दिखाई देता है। उधर, जो शासन चलाते हैं, उनकी विचित्र अकड है। इस प्रकार के घातक तथा अत्याचारी आदोलन जब तक उग्र रूप नहीं लेते, तब तक वे किसी भी प्रश्न का कभी विचार तक नहीं करते हैं। अथात् उनकी यह नीति विनाशक वातावरण का पोषण ही करती है। मानो सब लोगों ने देश तथा राष्ट्र को आपत्तिग्रस्त बनाने का बीडा ही उठाया है। सम्मुख दृश्य तो ऐसा है, जैसी पक्षोपपक्षों में विघातक कार्यों की स्पर्धा लगी हो। देखें, क्या होता है। हमें तो अपनी सब शक्ति लगाकर कार्य में जुट जाना चाहिए। हमारा सयमपूर्ण विशुद्ध राष्ट्रीय सामर्थ्य अधिकाधिक गति से हमें बढाना चाहिए। इन विनाशकारी प्रवृत्तियों को तथा कृतियों को रोकने के लिए उपयुक्त तथा समर्थ, वही एकमात्र उपाय है। मेरे मन में जो भी विचार जैसा आया, मैंने आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है। इसमें कोई गलती हो रही हो, तो बताइए, जिससे सब विचारों की दिशा ठीक की जा सके।

परमपूजनीय श्री डाक्टर जी जिनका नित्य गुरुवर्य कहकर उल्लेख करते थे, जिन्होंने अपने प्रेममय आशीर्वाद का वरद्हस्त नित्य मेरे सिर पर रखा था, उनका (पूजनीय श्री बाबाजी कोलते का) तिरोहित होना, आयु की दृष्टि से अस्वाभाविक न होने पर भी, अतीव मनोव्यथा देनेवाला है। जिन बडे-बूढों के कृपाप्रसाद से हम अपने कार्य में नित्य उत्साह पाते रहे, उनमें से एक अति ज्येष्ठ पुरुष को काल ने उठा लिया। धामणगॉव के शिविर में उनका दर्शन हुआ था। वह अतिम सिद्ध हुआ। फिर भी एक बात का हम समाधान मान सकते हैं। अकोला तथा धामणगॉव में लगे विदर्भ प्रात के शिविरों में प्रातीय कार्य का स्पष्ट वर्धिष्णु स्वरूप वे देख सके। अपने छोटे-बडे स्वयसेवकों के मन में भी यह समाधान बना रहेगा कि हमने अपने प्रात-सघचालक को प्रसन्न किया, उनकी उमर अस्सी से ऊपर है, शरीर में दुर्बलता है, फिर भी शिविर के सब कार्यक्रमों में उत्साह के साथ उपस्थित हैं। ऐसे हमारे प्रात सघचालक के सम्मुख उन्हें प्रसन्नता

देनेवाला कार्य हम खडा कर सके और उन्हें दिखा सके। अव इसके आगे भी हमें कार्य की गति वर्धमान रखनी होगी। वढे हुए कार्य को हमें दृढता एव स्थिरता प्रदान करनी होगी। वहुत सतर्कता के साथ प्रयत्नशील रहना होगा। जिन्हें 'गुरुणामपि गुरु ' कहेंगे उनके वारे में हमारे हृदय में जो श्रद्धा है, उसे व्यक्त करने का यही एक मार्ग मुझे सूझता है।

मन अस्वस्थ है। विचार विशृखल हैं। जैसे भी मन में उठे आपके सम्मुख रख दिए हैं-- इस दृष्टि से कि इससे मन का वोझ कुछ हल्का हो जाए, क्योंकि आप भी हमारे लिए मन शाति हेतु सात्वनात्मक आशीर्वाद देने का अधिकार रखनेवाले ज्येष्ठ श्रेष्ठ पुरुप हैं। (मूल मराठी)

३६३ आदोलन की शिक्षा के सस्कार

श्री वावूराव कान्हे, चेन्नै ३ अप्रैल, १६६१

दिनाक ३० एव ३१ को आदोलन का वातावरण था। आदोलन का नित्य परिचय का स्वरूप था-- थोडी आगजनी, पत्थर आदि की वर्पा। मार्ग पर वडे-वडे पत्थर, विजली के खभे, पानी की नालियों के वडे नल आडे डालकर यातायात वद करना, रास्ते के बिजली के दीपक फोडना, सिपाहियों पर पत्थरों-ईटों की वर्पा करना, मोका मिला तो लूटपाट करना। देशभक्त समाज की ओर से ऐसा हमला ओर पुलिस की ओर से अश्रुधूम एव कभी गोलीचालन-- ऐसा हमेशा का ही स्वरूप था।

कुल मिलकर समाज की मनोरचना वदली हे, वदल रही हे। विगत ४० वर्षो के आदोलनों की शिक्षा के ये सस्कार हैं। शासन चलानेवाले भी इसी प्रकार के सस्कारों में पले हैं एव उस प्रकार के सस्कारों को जन्म देनेवाले आदोलनों के प्रणेता, नेता, अगुआ एव वेसे ही शासक भी आदोलनों के सामने सिर झुकाकर सामने के प्रश्नों का विचार करनेवाले हैं। इससे सुव्यवस्था टूट कर शत्रुओं को अवसर मिलेगा ऐसी परिस्थिति वनती हुई दिखती है। शत्रुओं को अदर लेने को उत्सुक रहनेवाले अपने इर्द-गिर्द वहुत हैं, प्रतिष्ठा से घूम-फिर रहे हैं एव ऐसी अव्यवस्था निर्माण करने की एक भी सधि व्यर्थ नहीं जाने देते हैं, उल्टे ऐसे अवसर पैदा करने का उद्योग कर रहे हैं। इससे राष्ट्रजीवन सकटग्रस्त होता जा रहा है। मुझे लगता है कि इस तूफान में विशुद्ध, सयमित सुदृढ, राष्ट्रशक्ति शीघ्र खडी कर, सव सभाव्य सकटों को मूल में ही नष्ट करने की स्थिति पैदा करने का अपना कार्य अधिक तेज गति से वढना चाहिए। (मूल मराठी)

३६४ यह व्याधि उपचारों का परिणाम

श्री बालासाहब गोखले, ६ जून, १९६१

आपका पत्र बार-बार पढकर, आपको सचमुच क्या हुआ है– इसका विचार करता रहा। आपके मन में खिन्नता, उदासीनता क्यों आई, यह प्रश्न सामने आया। कुछ मानसिक कारण हों, तो सद्ग्रथ पठन, मनन, सत्सग, कुछ उपासना से सब ठीक हो सकेगा। परतु इसका ऊहापोह पत्र द्वारा करना कठिन है। कभी भेंट होने का सयोग हो तो विचार कर कुछ पक्का तय किया जा सकेगा।

परतु आपका पत्र अनेक बार ध्यानपूर्वक पढने के बाद मेरा यह मत हुआ है कि यह शारीरिक व्याधि के उपचारों का परिणाम है। आपने 'स्ट्रेप्टोमायसिन' के समान 'एटी-बायोटिक' के बहुत अधिक इजेक्शन लिए हैं। इन एटी-बायोटिक्स का मन पर ऐसा विचित्र परिणाम हो सकता है– यह मैंने अनेक रोगियों के सबध में देखा है। सघ के कारण मुझे अत्यत निकट के कुछ अधिकारी ऐसी अवस्था तक केवल इन औषधियों के कारण पहुँचे हैं एव औषधि बद कर, अच्छा सात्विक एव पुष्टिकर आहार तथा कुछ 'विटामिन्स' का दीर्घकाल तक सेवनकर उस अवस्था में से छुटकारा पाकर अच्छे हुए हैं, यह मैंने देखा है। आपके विषय में भी मुझे आज तो भी यही लगता है। इसलिए अन्य कोई चिता न करते हुए सहज हजम होनेवाला सात्विक एव शक्तिवर्धक आहार एव किसी भी अच्छी कपनी के मल्टी-विटामिन्स प्रतिदिन एक कैपसूल तीन-चार मास लगातार सेवन करें। आहार में ताजे फल, विशेषत रसीले फल थोडे-बहुत सेवन करें तो मन की यह अकस्मात पैदा हुई स्थिति दूर हो जाएगी। आपका उत्साह एव जीवन की ओर देखने का आशापूर्ण दृष्टिकोण आपको पुनरपि प्राप्त होगा। प्रयोग कर के देखें। अन्य विचार बाद में भेंट का सयोग आने पर किया जाएगा। तब तक प्रसन्नचित्त रहें। (मूल मराठी)

३६५ अकेलेपन का अनुभव क्यों?

श्री रामप्रकाश जी, दिल्ली १ जुलाई, १९६१

जिसकी सत्ता से अखिल ब्रह्माड चलता है, उसका स्मरण कर हम लोगों ने 'त्वदीयाय कार्याय' कहकर उसी का धर्मसस्थापना का पवित्र कार्य सफलता से पूर्ण करने का दृढ निश्चय किया है। वह परमकृपालु

सर्वशक्तिमान श्रीपरमेश्वर नित्य अपने साथ अतर्बाह्य रहते हैं। अत आप अपने आपको अकेला होने का अनुभव क्यों करते हैं?

३६६ पिताश्री की मन पूर्वक सेवा ही कर्तव्य

श्री शरद गिलाणकर ४ जुलाई, १६६१

वातावरण का परिणाम न हो, इतना कार्य का आकलन सबको नहीं हो पाता है। इसके लिए विशेप ध्यान देकर स्वयसेवक बधुओं के विचार शुद्ध एव स्थिर करना आवश्यक है। आप यह प्रयत्न कर ही रहे हैं। आपके प्रयत्नों को यश मिलेगा ही ।

परतु इस महत्त्व के समय आपके पिताश्री रुग्ण हो गए हैं। यह केवल आपके पारिवारिक दृष्टि से ही नहीं, तो अपने कार्यक्षेत्र में आपकी अनुपस्थिति से कार्य की दृष्टि से भी चिता की बात है। फिर भी पिताश्री की मन पूर्वक सेवा करना यही इस समय अपना कर्तव्य मानकर, मन अस्वस्थ न होने दें। उन्हें रोगमुक्त करने के लिए जो आवश्यक है, वह सब करें। यह पूर्ण विश्वास रखें कि ईशकृपा से सब बातें कल्याणकारक ही होंगी। (मूल मराठी)

३६७ पीड़ा भी दो और आदर भी दिखाओ

श्री रमेश खेरडे, खडकी ४ जुलाई १६६१

आपके सामने उपस्थित हुआ प्रश्न तथा उसका उत्तर दोनों आपको विदित होने से मैं और अधिक क्या कह सकूँगा? सब में स्वार्थ होता है। व्यक्तिगत स्वार्थ राष्ट्रहित में समाया हुआ है। राष्ट्रहितार्थ परिश्रम नहीं किए, तो आज जो लगता है कि थोडी मात्रा में व्यक्तिगत स्वार्थ पूरा होने का सुख मिल रहा है, वह भी स्थायी न रहकर राष्ट्र की दुर्दशा के साथ समाप्त हो जाएगा। केवल स्वार्थ-दृष्टि से भी राष्ट्र की उन्नति के लिए अविरत परिश्रम करना आवश्यक है ऐसा श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के मुख से मैंने सुना है। श्रेष्ठ पुरुषों का यह विचार मुझ जैसे साधारण मनुष्य को प्रेरणादायी है इसीलिए उसे यहाँ लिखा है। आपको यह विचार समझता है– ऐसा मुझे लगता है। अतएव अधिक कुछ लिखना धृष्टता होगी।

उचित प्रतीत नहीं होता। आपने हम लोगों को कहा है कि उन्हें प्रचारक के काम से हम लोग हटा दें। यदि वे नालायक हों, दुर्गुणी हों, पापी हों, तो ही ऐसा करने के लिए कारण मिल सकता है। मुझे विश्वास है कि आप अपने सुपुत्र को अयोग्य, पापी, दुराचारी नहीं मानते, न मानेंगे। इस स्थिति में उन्हें काम से हटाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

आपसे मेरा अनुरोध है कि आप उन्हें घर लौट आने के लिए मना लें तो उन्होंने प्रचारक के नाते कार्य करना वदकर घर जाने की इच्छा व्यक्त करते ही, उसी क्षण उन्हें आनद से विदा कर दिया जाएगा।

४०० क्षेत्र-विशेष

श्री शिवराम जोगळेकर, सेलम ६ जुलाई, १९६१

आपके प्रयत्न एव परिश्रम में कुछ त्रुटि तो नहीं है। फिर भी कुछ क्षेत्र ऐसे रहते हैं कि उनपर इन सब प्रयत्नों का असर नहीं होता, ठडे ही रहते हैं। ऐसा कुछ प्रातों का अनुभव है। ऐसा होने पर भी ऐसे क्षेत्र में कभी निराश न होनेवाले, सतत लगन से समाज के अनुत्साह, उदासीनता एव अकर्मण्यता पर, स्वय के निष्ठापूर्ण प्रयत्नों के प्रहार करनेवाले कार्यकर्ता प्राप्त हुए, तो कार्य खडा होने लगता है एव क्रमश दृढ होता है, ऐसा भी अनुभव आता है। लगता है कि आपके क्षेत्र में इस वर्ष यह अनुभव आने लगेगा (मूल मराठी)

४०१ व्याख्यान उत्तम व सूत्रबद्ध

श्री अप्पा पेंडसे, पुणे ८ जुलाई, १९६१

आपके कार्य की जानकारी प्राप्त हुई। आपके द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के व्याख्यानों के विषयों पर मान्यवर डा सहस्रबुद्धे जी के लेख मैंने पढे हैं। बहुत ही उत्तम एव सूत्रबद्ध विचार विशुद्ध राष्ट्रभावना से प्रतिपादित पढकर मन को अतीव सतोष हुआ था। ऐसे विचार निर्भीकता एव प्रमाणबद्ध सतुलन से प्रतिपादित करनेवालों का अभाव ध्यान में लेते हुए उन लेखों ने मुझे अत्यत समाधान प्राप्त कर दिया। यह इच्छा स्वाभाविक है कि उनके विचारों का समाज पर क्रमश परिणाम होकर उसे योग्य दिशा मिले। (मूल मराठी)

४०२ सयम एव सतुलन बनाए रखे

श्री गजाभाऊ कोल्हटकर, कर्‍हाड(महाराष्ट्र) ९ अगस्त, १९६१

स्व श्री अण्णा भोई की हत्या के मामले की सुनवाई पूरी होकर दिया गया निर्णय, जो आपने सूचित किया, वह ज्ञात हुआ। बहुत लोगों को सजा हुई, परतु उससे स्व अण्णा वापस तो नहीं आनेवाले हैं। इसलिए मुझे सतोष नहीं है। केवल बदले की भावना से व्यवहार करनेवालों को थोडा समाधान एव कदाचित् उनकी अपेक्षा के अनुसार पर्याप्त सजा न होने का असतोष हो सकता है, परतु ऐसी विचित्र बुद्धि श्री परमेश्वर की कृपा से मुझे प्राप्त नहीं है। अपने कार्य में भी ऐसी विकृति नहीं बैठती है। इसलिए आप अपना सतुलन सदैव सभालकर, सजा प्राप्त एव उनके रिश्तेदार आदि सबके विषय में सहानुभूति एव स्नेह रखना एव ऐसी अनिष्ट बातों की कभी भी पुनरावृत्ति नहीं होगी एव गॉव में उत्कृष्ट एकता रहेगी– ऐसा वातावरण निर्माण कर वह टिकाऊ रखने के लिए परिश्रम करना आवश्यक है। थोडे-बहुत मतभेद होते ही हैं, परतु उसके कारण लडने के लिए उतारू होने का कारण नहीं है। स्वार्थ के कारण सपत्ति के सबध में झगडे भी हो सकते हैं, परतु उसके लिए न्यायालय का रास्ता है। आपसी समझौता भी है। यह छोडकर मारपीट करने को उतारू होना कुल राष्ट्र के स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। ऐसा स्नेह का वातावरण प्रभावी बनाते जाना यही अपने कार्य के ध्येय व पद्धति के अनुसार है। आप सयम एव सतुलन बनाए रखकर उचित भावना एव कृति का रक्षण करने के लिए प्रयत्नशील हैं ही। मुझे विश्वास है कि सभी छोटे-बडे स्वयसेवक बधु कोलें, कर्‍हाड एव सपूर्ण जिले के बधु– यह सयम एव गाभीर्य प्रत्यक्ष कृति में उतार सकेंगे।

(मूल मराठी)

४०३ तहसील मे कार्य विस्तार

श्री माधवराव परमानद, धमतरी १७ अगस्त, १९६१

रायपुर का सारा वृत्त ज्ञात हुआ। पढकर अत्यत सतोष हुआ। उस उत्साह के अनुरूप कार्यवृद्धि आपके तहसील में हो, ऐसी अपेक्षा है। इस दृष्टि से जो प्रयास करना है, उसका पहला महत्त्व का हिस्सा यह है कि सपूर्ण तहसील के प्रत्येक गाँव में, एक-एक स्वयसेवक जाकर, पूर्ण जानकारी प्राप्त करे। उसके पश्चात् उस जानकारी के आधार पर इस वर्ष नई

शाखाओं की स्थापना के लिए स्थान निश्चित कर वहाँ नियमित शाखा शुरू होगी, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। स्थानों का चुनाव करते समय उनका उपयोग आगामी कार्य विस्तार के लिए मध्यवर्ती शाखा के रूप में हो सकेगा, यह दृष्टि रखें। इस प्रकार कार्यवृद्धि का समाचार यथावकाश भेजने की व्यवस्था आप करेंगे ही। (मूल मराठी)

४०४ कार्यकर्ता घर के लोगो को सतुष्ट रखे

श्री जगदवाप्रसाद शुक्ल, दार्जिलिग　　　　　　　　१८ अगस्त, १९६१

स्व-कार्य करते समय अपने घर के श्रेष्ठों को भी समझा- बुझाकर सतुष्ट रखना लाभदायक होता है। आपके पिताजी के पत्र से ज्ञात होता है कि घर में आपकी धर्मपत्नी भी है। उसके मन में भी सतोष हो कि आपका उसकी भलाई की ओर ध्यान है और इस समय का वियोग किसी श्रेष्ठ कार्य की साधना के हेतु होने के कारण उसे इसमें प्रसन्नता तथा गौरव का अनुभव हो— इस प्रकार सबको समझाने का प्रयास करना उचित होगा। आपका मुझे जो पत्र आता है, उससे मेरा अनुमान है कि आपने अपने घर के सभी लोगों के साथ रूखेपन का व्यवहार किया है। अपना कार्य करना चाहिए, उससे घर के लोग रुष्ट हों, तो उन्हें समझाना चाहिए। थोडा-बहुत रोष रह जाता है, उसे सानद सह लेना चाहिए और इस स्थिति में भी अपना व्यवहार नम्रता का, स्नेहमयता का होना चाहिए ऐसा कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है, यह बात मैंने सघ के ज्येष्ठ श्रेष्ठ अनुभवी कार्यकर्ताओं से सुनी, सीखी है। उन्हीं का आदर्श सामने रखकर आपसे भी मेरी प्रार्थना है कि आप इसी स्निग्ध व्यवहार को जीवन में उतारकर सफलता से निष्ठा से कार्य करते, आगे बढते रहें।

४०५ चुनावी ज्वर और इलाज

श्री बाबा कटककर, देवलाली (महाराष्ट्र)　　　　　　१९ अगस्त, १९६१

भगूर में सब अच्छा है, परतु अनेक अच्छे बधुओं में चुनाव आदि की ओर थोडा अधिक रुझान है, ऐसा मुझे लगता है। उसके कारण पूरे गाँव में कार्य के सबध में साधारण अनुकूलता होने पर भी व्यक्ति-व्यक्ति परस्पर से स्पर्धा करने में जुटे हुए हैं, जिससे लगता है कि वे एक-दूसरे से

दूर-दूर रहते हैं एव प्रत्यक्ष स्नेहपूर्ण सगठित जीवन की अनुभूति नहीं हो पाती है। इसपर उत्तम उपाय वे वधु ही कर सकते हैं। कोई बाहर से जाकर सूचना करे तो उसका उपयोग नहीं दिखता। यह आपके ध्यान में भी होगा ही एव इसका विचार कर आप काम कर रहे होंगे– यह विश्वास है।

(मूल मराठी)

४०६ आशा की किरण

श्री राधिकामोहन गोस्वामी, नौगॉव (असम) २० अगस्त, १९६१

परिस्थिति नि सशय कठिन एव अधकारमय है, परतु आशा की किरणें भी दिखाई दे रही हैं। हमारे कार्य के प्रति अधिकाधिक लोग आकर्षित होते हुए दिखाई देते हैं। यदि हम प्रर्याप्त परिश्रम कर हिदुओं को सगठित करें, हिदू-समाज और हिदू-राष्ट्र विषयक दृढ प्रेम जागृत करें, किसी अमुक-तमुक के प्रति प्रतिक्रियात्मक तात्कालिक क्षुब्धता छोडें, तो हम कठिन परिस्थिति को पारकर एक सुसगठित वैभवशाली राष्ट्र के रूप में उभर आएँगे। अपने महान पवित्र कार्य को आगे बढाने हेतु, आपको नौगॉव में एक तरुण तथा सशक्त कार्यकर्ता के रूप में श्री शशिकात चौथाईवाले की सहायता मिलेगी। हतोत्साहित न होते हुए निराशा को दूर भगा दें तथा अपना पुरुषार्थ प्रकट कर यह कार्य का दायित्व अपने कधों पर लें। ईश्वर का आशीर्वाद हमारे साथ है। दुष्ट शक्तियों का नाश होकर अतिम विजय हमारी ही होगी।

४०७ स्थायी हिदुत्वप्रेम निर्माण करे

श्री शशिकात चौथाईवाले, नौगॉव २० अगस्त, १९६१

आपके भोजन की व्यवस्था श्री गोस्वामी के यहॉ हुई है, यह ज्ञात हुआ। उनके परिवार के लोगों का अति स्नेहपूर्ण व्यवहार होने से, परिवार के एक पुत्र जैसा बिल्कुल घरेलू वायुमडल आपको अनुभव होगा तथा काम करने में भी आनद आएगा। नोगॉव में अनुकूल वायुमडल है। सभवत उस जिले में अहिदू वस्ती कुछ भागों में अधिक होने से तथा उनका बढता हुआ उपद्रव अनुभव होने से केवल तात्कालिक प्रतिक्रिया के कारण यह अनुकूलता दिखाई देती हो। इस स्थिति का लाभ उठाकर स्थायी हिदू प्रेम, विशुद्ध राष्ट्रीयत्व, चिरजीवी सगठित जीवन की मिठास उत्पन्न कर, दृढ नींव पर

शाखाओं का निमाण किया जा सकेगा। आपको सघ का ध्येय, धारणा, व्यवहार आदि सब बातें उत्तम ज्ञात होने से वहाँ कोई कठिनाई अनुभव नहीं होगी। (मूल मराठी)

४०८ तात्कालिक उत्साह को स्थायी बनाएँ

श्री धीरेंद्रनाथ देव, ढेकिया जुली, जिला दराँग, २१ अगस्त, १९६१

आपकी योजना दरॉग जिले में हुई है, यह जानकर बहुत आनद हुआ। श्री लक्ष्मीप्रपन्न जी भी सभवत उसी जिले में हैं। आपके क्षेत्र में आप कार्यवृद्धि का जो प्रयत्न कर रहे हैं, वह अवश्य सफल होगा। ग्रामों में तथा चाय बागानों में अपना कार्य नियमित रूप से अनुशासनपूर्ण रीति से चलाने के लिए ध्यानपूर्वक चेष्टा करना आवश्यक है। तात्कालिक उत्साह प्रारभ में दिखता है, उसे स्थायी बनाना चाहिए। इस दृष्टि से आवश्यक परिश्रम करना, सपर्क में आए हुए स्वयसेवक बधुओं को सघकार्य का चिरकालिक स्वरूप समझाकर उनकी श्रद्धा, निष्ठा दृढ कर उनमें नियमितता, अनुशासन, सद्व्यवहार आदि बढाना, अपने पवित्र धर्म, सस्कृति, राष्ट्र के लिए नि स्वार्थ नि सीम भक्ति उद्दीपित करना आवश्यक है। इस ओर सतर्कता से ध्यान रहे।

४०९ सगठन कार्य प्रतिदिन करते रहना

श्री मारोतीराव घनाते, शहाबाद गुलबर्गा २६ अगस्त, १९६१

अपने समाज का, देश का गत दस-बारह शताब्दियों का जीवन दु ख से, अपमान से, पराभव से भरा हुआ अपने मन को व्यथित करता है। इस दयनीय दशा का कारण अपने राष्ट्र की एकता का विस्मरण और उससे उत्पन्न फूट तथा असगठितता है। आधुनिक काल में भी अहिंदु समाजों ने आक्रमण कर देश-विच्छेद का बडा अपमान किया और आगे भी करने की सिद्धता में लगे हुए हैं। हिंदू समाज असगठित, आत्मविस्मृत परिणामस्वरूप दुर्बल है यही सोचकर वे आक्रमण करने का साहस करते हैं। अभी तक उन्हें जो सफलता मिली, वह हिंदू समाज की दुर्बलता का प्रमाण मानकर उनका साहस बढता जा रहा है। यह यदि आप नित्य

स्मरण में रखेंगे तो अपना सगठन-कार्य प्रतिदिन करते रहना, बढाते रहना, उसे सतर्क रखना यह आपको सभवत समझ सकेगा और शाखा का काम निरतर अच्छी प्रकार चलाते रखने में आप सब दत्तचित्त रहेंगे।

४१० किसी के बारे मे अपना-पराया भाव नहीं

श्री माणिकराव तुराणकर, लोहारी सावगा (नागपुर) ३० अगस्त, १६६१

कुछ गॉवों में एकाध मनुष्य अच्छा होकर उसका वजन रहता है। वह जिस पक्ष या कार्य से जुडा रहता है, उस ओर बाकी के लोग झुकते हैं, यह स्वाभाविक हे। श्री भाऊराव मुठाल यद्यपि काग्रेस के हैं, तथापि अपने भी हैं, क्योंकि हम सब एक ही हिदू-समाज के अवयव हैं। अपने सघकार्य का किसी भी राजनेतिक पक्ष से विरोध नहीं है, किसी के बारे में अपना-पराया भाव नहीं है। हिदू के नाते प्रत्येक व्यक्ति को एक सूत्र में गूँथकर हिदू-समाज में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, स्वाभाविक सहयोग प्रबल करना एव प्रत्येक को एक-दूसरे का सहारा मिले, ऐसी स्थिति निर्माण करना अपना एक प्रमुख काम है एव यह काम श्री भाऊराव मुठाळजी को पसद होगा। इस दृष्टि से मन शुद्ध रखकर काम करते रहे, तो यश मिलेगा। (मूल मराठी)

४११ असफलता का दोष दूसरो के माथे न मढे

श्री डा ग स लेले, सावतवाडी, ३१ अगस्त, १६६१

जिले के कार्य का वृत्त पढकर उसका स्पष्ट चित्र सामने आया, परतु पुराने स्वयसेवक निरुत्साही और निष्क्रिय रहे, तो जो थोडे-से स्वयसेवक आज काम में हैं, वे अपनी पूरी शक्ति काम में लगा रहे हैं, क्या? अन्य दलों का प्रभाव तथा उनका सघ के सबध में द्वेष आदि रहा तो भी हमें द्वेष-ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिए। अपना प्रभाव योग्य रीति से निर्माण होगा, इसके लिए कितना प्रयास होता है, इसका विचार करें, तो ऐसा दिखाई देगा कि हम पर्याप्त उद्यम न करते हुए अपनी असफलता का दोष अन्य दलों और अन्यों के माथे मढकर स्वय मुक्त रहने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह तो स्वय को धोखा देना है। आज कार्य में थोडा-बहुत ध्यान देनेवाले बधु भी, तरुणों-बालों (इनमें तरुण भी बालतुल्य ही रहते हैं) पर

और प्रचारक हो तो उसपर कार्य का संपूर्ण दायित्व डालकर निश्चित रहते हैं तथा बीच-बीच में कार्य की सतोषजनक वृद्धि नहीं है, इसके लिए खेद प्रकट करते हैं। इस स्थिति में परिवर्तन होना चाहिए। आप स्वय और विभाग के अन्य ज्येष्ठ स्वयसेवक इस विषय में ध्यान देने लगे तो कुछ भी दुष्कर नहीं है। (मूल मराठी)

४१२ मनुष्य गुण-दोषो से युक्त है

श्री त्र्यवक जुमडे, १ सितबर, १९६१

नागपुर शाखा का रक्षाबधन तथा श्रीगुरुदक्षिणा महोत्सव अत्यत उत्साह से सपन्न हुआ। आपके क्षेत्र में भी ऐसा ही उत्साह होगा, ऐसी आशा है। परतु इस विषय में लिखते समय आपने स्वय की शक्ति बुद्धि तथा योग्यता की कमी को सामने रखा है, इससे मुझे इस विषय में कुछ लिखना कठिन हो गया है। हम सबमें अनेक त्रुटियाँ हैं। उनका विचार न करते हुए, खेद न करते हुए इस ईश्वरीय कार्य में हमने अपना सारा कुछ समर्पित किया है, अतएव त्रुटियों को पूरा करने का दायित्व श्रीपरमेश्वर पर है और वह पूर्ण करेगा ही, और कर भी रहा है, इस श्रद्धा से, विश्वास से हमें कार्य करना है। इसलिए स्वय की कमियों का विचार न करते हुए व्यक्ति-व्यक्ति को उसके सारे गुणों सहित कार्यार्थ जुटाकर कार्य बढाने का पूरी शक्ति से प्रयत्न करते रहें, ऐसा मुझे लगता है। (मूल मराठी)

४१३ आपकी तुलना मे हम निष्क्रिय

प श्री दा सातवलेकर, पारडी, सूरत १ सितबर १९६१

घूमना-फिरना, विशेषत प्रवास छोडकर आपका स्वास्थ्य अच्छा है, यह पढकर बहुत सतोष हुआ दिनचर्या देखकर लगता है कि उसकी तुलना में हम निष्क्रिय ही हैं। मैं प्रवास करता हूँ। उसकी आपने जो सराहना की है, उससे मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ। सब दृष्टि से ज्येष्ठ-श्रेष्ठ महानुभावों द्वारा सराहना हो, ऐसी किसकी इच्छा नहीं होगी? आज जो मैं प्रवास करता हूँ, वैसा और ४० वर्ष बाद कर सका तो मेरे प्रवासी जीवन का आदर्श के नाते उल्लेख किया जाना सभवनीय है। आज ही आदर्श मानना कहाँ तक उचित होगा? (मूल मराठी)

४१४ थोड़ा-सा उत्साह शाखा का स्वरूप नहीं

श्री पुसाराम माहेश्वरी, नदुरबार (महाराष्ट्र) ३ सितबर, १९६१

शाखा में स्थायी रूप से नियमितता एव अपने कार्य का विचार व्यवहार-पद्धति के विषय में पूर्ण विश्वास में से पैदा होनेवाला, कर्तव्यबुद्धि को नित्य प्रेरणा देनेवाला निश्चय का भाव उत्तमता से जागृत होने के लिए विचारपूर्वक प्रयत्न करना आवश्यक है। कभी-कभी किसी अवसर पर एकाध सम्मेलन के रूप में या किसी तरह लोगों के आग्रह के लिए एक बोझस्वरूप कर्तव्य पूरा कर छुटकारा मिल जाए, इस प्रकार एकाध उत्सव सपन्न करने में जो थोडा-सा 'उत्साह' दिखता है, वह अपनी शाखा का स्वरूप नहीं है। आप समझदार हैं, योग्य प्रयत्न करेंगे ही। (मूल मराठी)

४१५ उत्सव निर्मित उत्साह दैनिक शाखा के लिए

श्री भीमण्णा तुकाराम, अमरगड (कर्नाटक) ३ सितबर, १९६१

उत्सव के कारण जो उत्साह निर्माण होता है तथा अपने अन्य बधुओं से अपने समाज के सज्जनों से आत्मीयता का सबध आता है, उसका उपयोग दैनदिन शाखा की वृद्धि होने के लिए करना आवश्यक है। स्वस्थ बैठकर विश्राम लेने से वातावरण की अनुकूलता का लाभ मिलता नहीं। शाखा के प्रतिदिन चलनेवाले कार्य में नियमितता, कार्यक्रमों की सुव्यवस्था, अनुशासन, उत्तम स्नेहपूर्ण व्यवहार, कार्य के सिद्धातों का सुचारु ज्ञान तथा उसपर विश्वास उत्पन्न हो, इधर ध्यान देते रहना लाभदायक होता है।

४१६ सफल रक्षाबधन

श्री य द सप्रे, म्हालुगे (जि कोल्हापुर) ४ सितबर, १९६१

राखिया प्राप्त हुई बाकी लोगों को राखी दी है। सबको आनद हुआ एव अपना स्नेहसूत्र नित्य, अखडित अनुभव में ला देनेवाला अपना शाखारूप सघकार्य आप उत्साह से चलाएँ एव अपना 'म्हालुगे मडल' एकात्मता, अनुशासनपूर्णता, विशुद्ध राष्ट्रीयत्व के विचार से भरा रहे– ऐसी सभी ने हार्दिक इच्छा व्यक्त की है।

आपका उत्सव एव बाद में मठरा में राखी बाँधने का उपक्रम इस दृष्टि से लाभदायक सिद्ध होगा ही। उत्सव सरीखे कार्यक्रम होने के बाद उससे जो अनुकूलता निर्माण होती है, उसका तुरत उपयोग कर वातावरण को स्थायी स्वरूप देना आवश्यक रहता है। (मूल मराठी)

४१७ सघकार्य का विस्तार

श्री दशरथ हरि पवार, गगनबावडा (कोल्हापुर) ४ सितबर, १९६१

अपने कार्य का आधार, सब समाज बधुओं के प्रति नि स्वार्थ प्रेम, विशुद्ध राष्ट्रभक्ति एव राष्ट्रोन्नति के लिए समाज अनुशासनबद्ध शक्ति के स्वरूप में सदा खडा रहे, यह स्पष्ट ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान नित्य जागृत रखकर व्यवहार किया तो अनेक ऊपर-ऊपर दिखाई देनेवाले विरोध पिघलकर, उसकी जगह विशुद्ध आत्मीयता का ही अनुभव होता है। ऐसा व्यवहार करते हुए समाज के सब बाधवों से हिल-मिलकर बर्ताव कर, अपने समाज की विघटन के कारण हुई असहाय दुर्बल स्थिति, इस स्थिति का लाभ उठाकर समाज का नाश करने की ताक में बैठे हुए देश-विदेश के विरोधकों की प्रवृत्ति एव कार्यवाहियाँ समझाकर बतलाना एव इसपर उपाय एक ही है– प्रेम का, एकात्मता का एव अनुशासन का सस्कार रोज ग्रहण करते हुए शक्ति रूप से खडा रहना, अर्थात् उत्तम दैनिक शाखा चालू रखना एव उसमें समाविष्ट होना। यह समझा-बुझाकर मनवाने का आप प्रयत्न करते रहें तो सब विरोध, कठिनाइयाँ, क्रमश दूर होकर उत्तम शाखा खडी हो सकेगी। आप यह सब विचारकर, प्रयत्न करते होंगे ही।

(मूल मराठी)

४१८ प्रगति का प्रशस्त मार्ग

श्री कवींद्र पुरकायस्थ, सिलचर, असम ४ सितबर, १९६१

सब बधुओं को अपने चारों ओर की विषम परिस्थिति का यथार्थ ज्ञान कराना, अपने समाज की असगठितता, परस्पर अविश्वास, द्वेष, कलह, सघर्ष आदि अवगुणों के कारण समाज विरोधी शक्तियों का कैसा लाभ होता है, उनके आघातों से समाज अधिकाधिक जर्जर कैसे होता जा रहा है– यह समझाना, तात्कालिक उपाय योजना, राजनैतिक दलबदी के अस्थायी उपाय उपयोगी नहीं होंगे। स्थायी, चिरकालिक नि स्वार्थ आत्मीयत्व,

विशुद्ध राष्ट्रीयत्व के प्रबल आधार पर खडी सगठित शक्ति सपूर्ण समाज शरीर में सचारित करने से ही सब समस्याओं से मुक्त होकर स्वाभाविक मुक्त प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा, अन्य कोई मार्ग इसके लिए नहीं है, यह सत्य प्रत्येक बधु के हृदय पर अकित करना अत्यावश्यक है। इस प्रकार सम्यक् समझाने से अपनी शाखा का कार्य ही यह स्थायी शक्ति निर्माण कर सकता है—यह विश्वास उत्पन्न होगा और कार्य विस्तार सुगमता से होकर शाखाओं में दृढता भी आएगी। यह सब आपके ध्यान में है ही। मैंने केवल अपने निज के सतोष के लिए स्मृति जागरण के रूप में लिखा है।

४१६ वापस आकर देश की कीर्ति बढाओ

श्री श्रीपाद कुलकर्णी, मुबई — ६ सितबर, १६६१

सफलतापूर्वक शिक्षाक्रम पूरा कर आप स्वदेश लौट आएँ एव अपने गुणों से अपने राष्ट्र की कीर्ति में चार चॉद लगाएँ यही मेरी इच्छा है तथा उसकी पूर्ति के लिए सर्व शक्तिमयी जगज्जननी के चरणों में मैं प्रार्थना करता हूँ। आपकी यात्रा, उस देश का निवास, सर्व दृष्टि से सुखप्रद हो एव सफल हो। (मूल मराठी)

४२० सघ का काम कैसा किया जाए

श्री शिवाजी रामशेट्टी कुलाल, भालकी, कर्नाटक — ६ सितबर, १६६१

शाखा में नियमितता एव अनुशासन उत्तम रखें। सब स्वयसेवक परस्पर स्नेह से व्यवहार करें। घर की ज्येष्ठ मडली से विनम्रता से आचरण करें। समाज के सब बधुओं से आत्मीयता का व्यवहार करें। प्रत्येक स्वयसेवक नए-नए मित्र जोडे। उनसे सघ के विषय में वाद-विवाद न करते हुए प्रेम से समझाने की दृष्टि से बात करें। इस रीति से शाखा बढेगी एव सब गाँवों में शाखा के काम के बारे में आत्मीयता एव आदर बढेगा।

(मूल मराठी)

४२१ अनिष्ट मार्ग त्वरित त्याग दे

श्री जगदीश अब्रोल, अमृतसर — ७ सितबर, १६६१

प्रात की परिस्थिति विचित्र दिखाई दे रही है। अपनी भूमिका शुद्ध एकात्मता की है। अत सभी अनशनकारियों के स्वास्थ्य की चिता से ε

व्याकुल हुआ है। इससे प्रश्नों का अच्छा हल नहीं निकल सकेगा, यह बात अपने ये श्रेष्ठ पुरुष सोचें और यह भी सोचें कि प्रश्न इस अनशन से अधिकाधिक जटिल हो रहा है। आपस के वैमनस्य सदा के लिए बने हुए स्वरूप में इस कारण निर्माण होकर समाज की, राष्ट्र की, एकता तथा सुरक्षा पर कुठाराघात हो रहा है और झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम में न पडते हुए अनशन का अनिष्ट मार्ग त्वरित त्याग दें, यही मेरी इच्छा है। आगे भगवान का जो विधान होगा, वैसा ही होकर रहेगा। उसके लिए हम सब समाज के बधुओं को सिद्ध रखकर कुछ भी हानिकर कृति या उक्ति होने न पाए, इस दृष्टि से सतर्क रहना आवश्यक है।

४२२ सघ-समर्थक के निधन पर उनके भाई को

श्री निर्मलेश्वर शर्मा, ७ सितबर, १९६१

अपने गौहाटी (असम) के एक कार्यकर्ता के द्वारा लिखा गया पत्र आज दोपहर में प्राप्त हुआ। उसमें लिखे समाचार कि इसी दिनाक ४ को हमारे आदरणीय परमप्रिय दुर्गेश्वर शर्मा जी का देहात हुआ, के आघात से हुआ मन क्षोभ शब्दों में व्यक्त करना सभव नहीं है। उनकी जैसी प्रगाढ विद्वत्ता, असीम स्नेह, विशुद्ध चारित्र्य एव जीवन का बहुआयामी उच्च स्तर, और जिस उदात्त महानता को पानेवाला श्रेष्ठ पुरुष, स्वय अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने में प्रयत्नशील मनुष्य को भी दुष्कर है, मिलना कठिन है। आपको तो आपके श्रेष्ठ भाई का वियोग हुआ है, परतु हम सभी ने सघ का एक निष्ठावान समर्थक समादरणीय अग्रज खोया है, जिनके आशीर्वाद के फलस्वरूप हम विश्वासपूर्वक कार्य करते थे। आपके दु ख में सहभागी होने का विचार मै कैसे प्रकट करूँ और इस महान वियोग से हुई व्यथा में आपकी सात्वना किन शब्दों में व्यक्त करूँ मेरी समझ में नहीं आता। सामान्य मर्त्य के नाते, सर्वदयामयी जगज्जननी माँ के श्रीचरणों मे मैं यही विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको इस दु ख को सहने की शक्ति एव धृति दे, और उनके नाम ओर गौरव की गरिमा बढाने के प्रयास में हमें प्रयत्नशील करने की कृपा करे।

(मूल अग्रेजी)

४२३ ग्रामीण क्षेत्र मे काम

श्री प्रभाकर वोरडकर, पाढरकवाडा (विदर्भ) ७ सितवर, १९६१

आसपास के स्थान आपका कार्यक्षेत्र होने से उसका निरीक्षण कर आप योग्य रीति से काम करने का प्रयत्न कर रहे हैं, यह ध्यान में आया एव सतोष हुआ। समाज के लोगों में डरपोक, स्वार्थी, दवेल एव कुछ विशेष न जाननेवाले लोग हैं। उसी प्रकार सरल अत करण के सत्प्रवृत्त भी हैं। जिन्हें लोग बिल्कुल अनपढ कहते हैं, उनमें भी सुसस्कृत एव श्रेष्ठ हृदय के कितने ही हैं। उन्हें क्रमश स्वदेश, स्वसमाज, स्वराष्ट्र की जानकारी कर दी तो उनमें भी चारों ओर की परिस्थिति का ठीक से आकलन कर कार्य करनेवाले निश्चयी सहयोगी प्राप्त होंगे एव उनकी ओर देखकर सुशिक्षित कहलानेवाले भी आने लगेंगे। सुशिक्षितों को भी बीच के कालखड में शाखा एव सवधित कार्य की आदत डाली नहीं गई थी। वह धीरे-धीरे निर्माण करते रहने से ये सवधित पुराने भी पुन थोडी-वहुत हलचल करने लगेंगे, इसमें सदेह नहीं।

(मूल मराठी)

४२४ कर्तव्य बोध जागृत रखे

श्री डा दामोदरपत करवेलकर, पट्टणकुडी ७ सितबर, १९६१

लगन से जो प्रयत्न हुए, वे अव फलीभूत हो रहे हैं। निरतर कार्यवृद्धि होती रहेगी, ऐसे सुलक्षण दिखाई दे रहे हैं। ऐसे समय केवल उत्साह की लहरों पर तैरने में सुख न मानते हुए कर्तव्यबोध जागृत रखकर कार्यवृद्धि दृढ करना आवश्यक है। इसके लिए दैनिक शाखा की नियमित उपस्थिति, कार्यक्रमों की सुव्यवस्था, अनुशासन निर्माण होने योग्य वायुमडल, परस्पर अकृत्रिम स्नेहपूर्ण व्यवहार, सब समाज के साथ नि स्वार्थ भाव से आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, विचारों-भावों का परस्पर नित्य आदान-प्रदान कर उनका शुद्धिकरण और दृढीकरण हो। नित्य वर्धिष्णु उत्साह से, समर्पण-भाव से कार्यार्थ परिश्रम करने का निश्चय जागृत होगा, ऐसी शाखा की रचना आदि सभी बातों की ओर सूक्ष्मता से ध्यान देकर कार्य करना आवश्यक है। अपने सभी कार्यकर्ता इस दृष्टि से ध्यान देते ही होंगे। आप उनको मार्गदर्शन कर ही रहे हैं। (मूल मराठी)

४२५ घनिष्ठ परिचय एव अकृत्रिम व्यवहार

श्री मधुकर पटवर्धन, मुबई ८ सितबर, १९६१

शाखाओं में आजकल जो स्वरूप दिखता है उसमें आवश्यक सुधार करने के लिए घनिष्ठ परिचय होना आवश्यक है। इस परिचय के बल पर व्यक्ति-व्यक्ति से वार्तालाप करना, उनके आलस्य एव निष्क्रियता के कारण न चिढते हुए, वाद-विवाद के पीछे न पडकर, हाँ-हाँ कहकर न करने की अनेकों की प्रवृत्ति रहती है, उसे देखकर मन दु खी न होने देते हुए लगन से बातचीत चालू रखनी पडती है। अनेक प्रसग, अनेक समाचार, अनेक भली-बुरी घटनाओं को आधार बनाकर अपने कार्य के तर्कशुद्ध प्रतिपादन द्वारा निरतर समझाकर बतलाना पडता है। अपने सहज स्नेहपूर्ण व्यवहार से प्रत्येक के अत करण में स्थान प्राप्त करना पडता है। इस व्यवहार में कृत्रिमता न हो। झूठी नम्रता, झूठा अभिमान— ऐसे कार्य-विघातक दुर्गुणों को कभी भी आश्रय न दें एव सहज हिल-मिलकर सब को आत्मसात करते जाएँ। यह कार्यकर्ता के व्यवहार का महत्त्व का सूत्र आचरण में लाना पडता है। इस प्रकार जो आवश्यक है, उसे करके शाखाओं में सख्या, नियमितता, उत्तम कार्यक्रम, स्नेहपूर्ण व्यवहार, अनुशासन, विचार एव ध्येय के सबध में उत्कट श्रद्धा, कार्य के प्रतिपादन पर एव पद्धति पर पूर्ण विश्वास आदि दृष्टि से वृद्धि होगी एव सब क्षेत्रों में अच्छे स्थान निश्चित कर, निरीक्षण कर, चुनाव कर वहाँ शाखा प्रस्थापित कर पूरा कार्यक्षेत्र अपने पवित्र विचारों से प्रभावित होगा, अपने कार्य की ओर आत्मीयता से खींचा जाएगा—ऐसा प्रयत्न चालू रखें। (मूल मराठी)

४२६ पिता-पितामह के सबध

श्री आर श्रीनिवासन, ऊरगाँव मैसूर ८ सितबर, १९६३

बगलौर के पास अगले नवबर में कर्नाटक प्रात (जिसे आज मैसूर रियासत कहा जाता है) का एक शिविर जैसा कार्यक्रम आयोजित है, इसका आपको पता चल गया होगा। मैं आशा करता हूँ कि इस जिले के कार्यकर्ता उसमें अपेक्षित सख्या में उपस्थित रहेंगे। क्या आपके लिए यह सभव है कि आप वहाँ पधारकर कार्यक्रम में उपस्थित रहें? और क्या यह भी सभव है कि बच्चों सहित चि सौ ललिता भी आकर वहाँ कुछ समय रहे? बहुत

समय वीत गया, मैंने उन्हें देखा नहीं है, और इसी कारण मैं स्वाभाविक रूप से चाहता हूँ कि वह कार्यक्रम में आ सके और उनको अपने वच्चों से लाड-प्यार करते हुए देखने का आनद मुझे प्राप्त हो सके। जगज्जननी माँ की कृपा उनपर बनी रहे। (मूल अंग्रेजी)

४२७ नए कार्य-क्षेत्र का दायित्व कैसे निभाएँ

श्री अनत देशमुख, देगलूर, महाराष्ट्र ८ सितबर, १९६१

आप अपने नए कार्यक्षेत्र में गए हैं। कार्यक्षेत्र अनुकूल है। विरोध न भी हो, तो भी थोडी-बहुत पीडा सभी स्थानों पर होती है। पढाई, ट्यूशन आदि का उल्लेख किया है। वह तो सर्वत्र है। काम करते समय केवल विद्यार्थियों, तरुणों और बालों पर ही ध्यान न रखें और उनके अभिभावकों से उन्हें शाखा में भेजने के बारे में याचना न करें अपितु यह समझकर कि ये अभिभावक और उनके बराबरी के सज्जन भी स्वयसेवक बनें– इस दृष्टि से उनसे सपर्क प्रस्थापित करना तथा उनका झुकाव दैनिक नियमित शाखा-कार्य की ओर होगा, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है।

प्रारभ में नए स्थानों पर कौतुहलवश बहुत से व्यक्ति आते हैं। कुछ दिनों में नएपन का रुझान समाप्त हो जाता है तथा बाद में वे आना बद कर देते हैं। यह स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में हमें प्रारभ में थोडे ही बधुओं से सपर्क रखकर यह प्रयत्न करना चाहिए कि उनकी ही शाखा चले। पश्चात् क्रमश धीरे-धीरे नए व्यक्तियों को समाविष्ट करते जाना लाभदायी होता है। प्रारभ में आए हुए स्वयसेवकों को समझाना तथा शाखा के दैनिक काम का प्रशिक्षण देना चाहिए। इनमें से ऐसे कार्यकर्ता मिलेंगे, जो बढनेवाली सख्या को सँभाल सकेंगे। कार्यकर्ताओं की आज जो कमी दिखाई देती है, वह नहीं रहेगी। प्रारभ में कौतूहलवश जो लोग थोडे दिनों तक आ चुके थे, उन सबको फिर से अपनी शाखा की रचना में खडा करने का आपने निश्चय किया है। सहज स्नेह से व्यवहार कर, न आनेवालों को उनके केवल दोष-दर्शन न कराते धीरे-धीरे कार्य की अनिवार्यता, महत्ता, तर्कशुद्ध पवित्र भावनाओं पर आधारित विशुद्ध राष्ट्रीय स्वरूप समझाकर, अपनी दैनिक कार्य-पद्धति ही एकमात्र रचना है, जो वर्तमान विपरीत परिस्थिति को बदलकर उन्नति की ओर ले जाने में सफल सिद्ध होगी, ऐसा उनके मन में विश्वास पैदा किया जाए। यह काम उपदेशात्मक न हो।

हँसते-हँसते सहज मित्रभाव से वार्तालाप द्वारा ये सारी बातें मन पर अंकित कर उन्हें आत्मसात कराएँ। सफलता अवश्य मिलेगी। (मूल मराठी)

४२८ अपने ग्रामीण बंधु उदार-हृदयी हैं

श्री दिगंबर जनार्दन कुलकर्णी, जातेगाँव, मराठवाडा ८ सितंबर, १९६९

आप जातेगाँव तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र में उत्तम प्रयत्न कर रहे हैं तथा ये प्रयत्न सफल होने के सुलक्षण दिखाई दे रहे हैं। रक्षाबंधन के निमित्त अनेक गाँवों में जाकर राखी बाँधने का उपक्रम कर अपना सुप्त एकात्म्य जागृत करने का जो प्रयत्न किया गया, उसके कारण अनेक अच्छे अनुभव आए होंगे। अपने गाँव-गाँव के समाजबंधु हृदय से अच्छे हैं, सज्जन तथा सुसंस्कृत हैं, यह अनुभव आपको हुआ ही होगा। उनकी शिक्षा बहुत अधिक नहीं हुई है, तथापि वे अंतःकरण से उदार हैं। यह बात अभिनंदनीय और आदरणीय है। हम सबका यह कर्तव्य है कि हम ऐसे उत्तम अंतःकरणों में मातृभूमि, समाज-धर्म, संस्कृति, राष्ट्र आदि पवित्र बातों का यथार्थ ज्ञान तथा भक्ति का जागरण, दृढ़ीकरण तथा पोषण करें। निरलसता तथा लगन से यह कर्तव्य पूरा करने पर अत्यंत श्रेष्ठ कार्य खड़ा होगा। इस दृष्टि से ऐसे प्रयत्न हो रहे हैं, इसलिए अपेक्षित फल शीघ्र ही दिखाई देने लगेगा।

विजयादशमी के पश्चात् आपके पूरे प्रांत का एक शिविर जैसा कार्यक्रम मुंबई के निकट होनेवाला है, यह आपको विदित हुआ होगा। उस कार्यक्रम में अपेक्षित सभी उपस्थित रहेंगे— ऐसा प्रयास और व्यवस्था अभी से करना ठीक होगा। (मूल मराठी)

४२९ पंजाब की परिस्थिति के संबंध में

श्री महीपालसिंह जी, मुंबई ३० सितंबर, १९६९

पंजाब की तथा तत्सम समस्याएँ, जो समाज को विघटित करनेवाली हैं, सुलझाने का प्रयास अभी सर्वश्रेष्ठ लोग राजनैतिक लेन-देन के स्तर पर कर रहे हैं। इसमें मेरी रुचि नहीं है। सामाजिक एकात्मता की रक्षा के स्तर पर इस गुत्थी को सुलझाने के लिए जब समस्या निर्माण करनेवाले उत्सुक होंगे, तभी भला होगा— ऐसा समझ कर इस वायुमंडल को बनाने में अपने

सहकारी लोग सलग्न हैं। कार्य का अपना-अपना ढग होता है। सघकार्य में हृदय सर्वस्व से क्रियाशील होकर जो लगे हुए हैं, उन्हें कोई सभ्रम नहीं होता। तथापि सद्य परिस्थिति में से उचित मार्गदर्शन श्रीपरमात्मा की कृपा से ही हो सकता है-- इसी विश्वास को मैं धारण किए हूँ। इस पत्र-व्यवहार से एक बडा लाभ हुआ। मेरी दुर्बलता को देखकर क्यों न हो आपको परमपूजनीय डाक्टर जी का स्मरण हुआ। इसके लिए मैं निमित्त बन सका, यह मेरा परम सौभाग्य है।

४३० विशाल सास्कृतिक एकात्मता

श्री दत्ताजी डिडोलकर, चेन्नै   १६ अक्तूबर, १९६१

श्री रामचद्र चेट्टियार का नाम आपने सुझाया है। वह योग्य ही है। अपना धर्म, उसके दर्शन (विभिन्न प्रकार के पहलुओं सहित तत्त्वज्ञान) उनका सर्वसग्राहकत्व, सनातन धर्म की विश्वव्यापी स्वरूप की एक शाखा, याने बौद्ध मत, उसकी शुचिता, श्रेष्ठता आदि विषय एव भारत एव ब्रह्मदेश के मूलभूत एकत्व, राजनैतिक पृथकत्व रहकर भी अधिक श्रेष्ठ एव रक्षणीय ऐसा विविध प्रकार प्रतिपादन करना एव अपना जो कार्य वहाँ हैं, उसे पोषक होगा-- ऐसी बातचीत करना। उसमें विशाल सास्कृतिक एकात्म्य पर विशेष जोर देना आवश्यक है। यह सब श्री रामचद्र चेट्टियार कर सकेंगे, क्योंकि मुझे भी लगता है कि वे विद्वान तो हैं ही परतु उनका हृदय शुद्ध हिंदू रहने से व्यापक है। आप उनसे मिलकर दिसबर के अतिम सप्ताह में इस दृष्टि से जाने की एव वैसी सिद्धता करने की उनकी ओर से अनुकूलता प्राप्त कर वैसा तुरत दिल्ली को सूचित करें। (मूल मराठी)

४३१ कुष्ठ निवारण केंद्र के कार्यकर्ता को

श्री सदाशिवराव कात्रे, अमरावती, विदर्भ   १६ अक्तूबर, १९६१

आपने जो सुझाया था, उसके अनुसार एकाध मडल रजिस्टर कर लेने के विषय में भी बातचीत हुई थी। ऐसा लगता है कि यह शीघ्र ही होगा।

तपोवन के प्रमुख मेरे पुराने परिचित हैं। उनके मन में हिंदू समाज के प्रति स्वाभाविक प्रेम है। मिशनरी कुष्ठ-निवारण के नाम पर जो करते

हैं उसकी रोकथाम करना आवश्यक है। परतु वह केवल हो-हल्ला कर या मिशनरियों को दोष देकर नहीं होगा। वैसी प्रवृत्ति अनिष्ट है। इसलिए स्वय सेवाव्रत धारण कर कुष्ठ-निवारण आदि अनेक आवश्यकताओं के कर्तव्य में अनेकों को स्वय को समर्पित कर देना अत्यावश्यक है—ऐसा उनका मत था, जो मैं जानता था। अब आजकल उसमें कुछ परिवर्तन हुआ हो, तो वह मुझे ज्ञात नहीं है, परतु मुझे ऐसा अनिष्ट परिवर्तन उनमें सभव नहीं लगता। उनके एव आपके इस विषय पर विचार समान ही हैं, केवल इतना ही है कि प्रतिपादन का जोर थोडा अलग-अलग स्थान पर है।

(मूल मराठी)

४३२ कुष्ठ-निवारण सस्था खोलने के बारे मे

श्री यादवराव काळकर, प्रात प्रचारक — १६ अक्तूबर, १९६३

सदाशिवराव कात्रे की सूचना है कि 'भारत कुष्ठ-निवारण सघ' नाम से सस्था स्थापित की जाए। मुझे लगता है कि यह मध्यप्रदेश के कतिपय सत्प्रवृत्त, उद्यमशील लोगों की सस्था हो। सस्था का पजीयन करा लिया जाए। प्रारभ में थोडी निधि ये लोग सग्रह करें। रसीद बुक छपवा ली तो निधि-सग्रह करने में सुगमता होगी। अपने परिचित के यहाँ रहकर श्री कात्रे जी आवश्यक प्रवास आदि उद्योग कर सकेंगे। उसके लिए वे तैयार हैं एव वैसी उनकी इच्छा भी है। भूमि आदि प्राप्त करने का आपका प्रयत्न चालू है ही। वह भूमि इस सस्था के नाम से ली जा सकेगी। उसी काम के लिए भूमि का उपयोग किया जाता है, यह तो आपने निश्चित किया ही है। सस्था शीघ्र स्थापित हुई तो वह इस सस्था को सौंपकर उसकी आय नियोजित कार्य में लगाने के लिए मिलेगी। फिर भी आप इस ओर ध्यान देकर माननीय जमुनाप्रसाद वर्मा जी आदि के परामर्श के अनुसार सस्था ऊपर सुझाए नाम से या आपकी सब मित्रमडली को अन्य योग्य नाम सूझा, तो उस नाम से कतिपय योग्य व्यक्ति प्राथमिक सस्थापक सदस्य बनाकर एक सस्था रजिस्टर कर लेने के प्रयत्न प्रारभ कर दें एव ऐसी सस्था रजिस्टर होने पर श्री कात्रे को सूचित करें। उनसे मिलकर उन्हें क्या कैसे, कहाँ एव कितना काम करना होगा यह तय करके उन्हें उचित काम सौंप दें। इस सबध में क्या होता है, वह मुझे फुरसत से सूचित करें।

(मूल मराठी)

४३३ उत्तरप्रदेश की परिस्थिति के विषय मे

श्री लक्ष्मणराव इनामदार, अहमदाबाद   १६ अक्तूबर, १९६१

उत्तरप्रदेश के कार्यक्रम अच्छे हुए। प्रात की गडबडी के कारण मुरादाबाद का कार्यक्रम थोडा छोटा कर हरिद्वार में हुआ। अन्य त्रास नहीं हुआ। अब इस प्रकरण से सघ का जबरन सबध जोडने का प्रयास उस प्रात के काग्रेस एव कम्युनिस्ट (कैसी युति है!) सस्था के नेता कर रहे हैं। वास्तव में सत्य यह है कि प्रारभ में ही जिन्होंने झगडा शुरू किया एव जिनके अपराधी होने के सबध में जिलाधिकारियों से लेकर केंद्रीय मत्रियों तक सभी ने पर्याप्त स्पष्ट उल्लेख किया। उनपर योग्य कार्यवाही की जाती तो सबको न्याय प्राप्त होने का सतोष होकर कोई भी गडबड नहीं होतीं, परतु वह नहीं हुआ, जिससे सब दूर विपाद पेदा हुआ एव विद्यार्थियों का ही विशेष सबध होने से उन्होंने मोर्चा निकालकर न्याय की मॉग की। ये मोर्चे शातिपूर्ण थे, परतु उन्हें रोककर चिढाया गया एव प्रत्यक्ष अत्याचार करनेवालों के जात भाइयों ने मोर्चे पर पथराव एव गोलाबारी कर क्षोभ निर्माण किया। लगता है कि पथराव आदि करनेवालों को समय पर ही रोका गया होता, तो इतना क्षोभ पेदा नहीं होता। परतु वैसा नहीं हुआ। अनेक स्थानों पर परस्पर से असबद्ध स्वयस्फूर्त एव योजनाविहीन क्षोभ के विस्फोट हुए। उसमें पक्ष-स्वार्थ में सने हुए लोगों को यह सत्य बतलाना एव उनसे तदनुसार व्यवहार करवाना असभव है। जिस प्रकार स्वार्थी आदमी शव के तालू का मक्खन भी खाता है, उसी प्रकार झूठे प्रचार के लिए अनेकों की मृत्यु एव हानि का उपयोग कर, जो अपने पक्ष के नहीं, उनके विरुद्ध वातावरण पेदा करने का यह क्षुद्र प्रयत्न है— ऐसा मुझे दिखा। परतु इस समय इन नेताओं की राजनैतिक दृष्टि से भूल हो रही है एव यह नीति उनपर ही बीतने की सभावना है, ऐसा कुल प्रात का चित्र देखकर लगता है। परतु यह उन्हीं को देखना है।   (मूल मराठी)

४३४ भगवान महावीर जी का जीवन सन्देश

श्री रतनलाल जैन, मत्री, राजस्थान जेन सभा   २० अक्तूबर, १९६१

भगवान की कृपा से आयोजित समारोह उत्तम रीति से सपन्न हो तथा आपने जो उद्देश्य सम्मुख रखा है, उसमें आपको बढती हुई सफलता प्राप्त हो।

भगवान महावीर जी के शुद्ध सात्विक जीवन का सदेश आज तम प्रधान रजोगुणयुक्त अतएव स्वार्थी मानव-जीवन में इष्ट परिवर्तन लाने के लिए अत्यावश्यक है। अत वैसा पवित्र जीवन व्यतीत करनेवालों का समुदाय खडा होकर उसके द्वारा उनका सदेश-प्रसार करने में सलग्न होना लाभदायक होने के कारण आपका यह कार्य अतीव अभिनदनीय है।

४३५ मन प्रसन्न रखें– कार्य करने का अवसर है ही

श्री दुर्गानद नाडकर्णी, प्रचारक, मुबई — ६ नवबर, १९६९

आपका स्वास्थ्य सबधी समाचार पढकर बहुत दु ख हो रहा है। कल्पना नहीं थी कि आपको कोई व्याधि होगी। डाक्टरों ने परीक्षण कर रोग का निदान किया है, इसलिए उनपर विश्वास रखकर, उनकी सलाह के अनुसार औषधोपचार करवा लेना आवश्यक है। समय रहते उपचार शुरू हो गया है, तब इसमें सदेह नहीं कि शीघ्र ही स्वास्थ्य पूर्णत ठीक हो जाएगा। यह मास-डेढ मास का काल आप पूर्ण विश्राम करें। मन प्रसन्न रखें, क्योंकि उसके बाद पुन पूर्ण विश्वास एव उत्साह से आपको अपना पवित्र कार्य करने का अवसर है ही। उसके लिए शरीर बलवान एव निरोगी चाहिए। वह इस विश्राम-काल में हो सकेगा एव फिर कोई बाधा नहीं रहेगी। (मूल मराठी)

४३६ सात्वना

श्री तात्या बापट, नासिक — ६ नवबर, १९६९

आप पर पितृ-वियोग का आघात हुआ। सभी परिवारवालों एव रिश्तेदारों को अत्यत दु ख होना स्वाभाविक है, परतु आप दोनों बधु एकातिक निष्ठा से श्रेष्ठ ध्येय के लिए कार्यरत हैं। स्वय के सुख-दु ख में पडे रहने को अपने को कहाँ फुरसत है? आप्त स्वकीयों का सात्वन करने का प्रयत्न कर विवेक से मन का निग्रह कर स्वीकृत कार्यक्षेत्र में उपस्थित होना एव कार्य में निमग्न होना यही अपना काम है। बाकी का सारा भार श्रीपरमेश्वर पर है ही। उसकी असीम कृपा से आप सबका दु ख भार हल्का हो एव शोक पर काबू पाकर मन शात एव कर्तव्यरत रहने के लिए शक्ति एव उत्साह आपको प्राप्त हो– इसके लिए उसके चरणों में प्रार्थना कर रहा हूँ, करता रहूँगा। और अधिक क्या लिखूँ? (मूल मराठी)

४३७ 'गुजरात समाचार' मे आलोचना पढ़कर

श्री लक्ष्मणराव इनामदार, अहमदाबाद ८ नवबर, १९६१

सभी राजनीतिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के विचार को सत्ता के प्रति लालसा मोड देती रहती है, इसका यह समाचार एक नमूना है। अपने समाज के हित एव उत्थान की ओर प्रतिकूल दृष्टि से देखकर उनका निषेध करनेवाले पुरुष केवल हिंदू-समाज के हिस्से में आए हैं, अन्यथा कोई लिखता या बोलता नहीं। ईश्वरेच्छा। (मूल मराठी)

४३८ सबसे बड़ा शोक, मातृप्रेम का छत्र हटना

श्री वसतराव भट, ग्वालियर २८ नवबर, १९६१

आज रात को ही नागपुर पहुँचा। आपका पत्र पढा। बहुत दु ख हुआ। अतीत में जब मेरे पिताजी की मृत्यु हुई थी, तब मैं प्रवास में ही था। उनका अत्यदर्शन मैं नहीं कर सका। इसका स्मरण होकर मुझे बहुत ही दु ख हुआ। परतु उपाय नहीं है। जो परमेश्वर की इच्छा होती है, वही होता है। अन्य लोगों ने उसी के आशीर्वाद से, उसी के धर्म-कार्य का व्रत लिया है, इसलिए इस विषय में शोक करते बैठने को अवकाश भी नहीं है। होनेवाला दु ख मन में ही दबाकर स्व-कर्तव्यपूर्ति हेतु परिश्रम करते रहना, यही अपना विधि-लिखित है।

इसलिए मैं आपका सात्वन आदि औपचारिकता में नहीं पडता। मातृप्रेम का छत्र हट जाने के समान कोई शोक नहीं है। सभी शोक सतुलित मन से सहनकर धीरता-गभीरता से कर्तव्यपूर्ति में आगे बढते रहें तथा उसमें आपको अधिकाधिक सफलता प्राप्त हो, यही मैं श्रीपरमेश्वर चरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

४३९ कृतज्ञता-ज्ञापन

प प्रियनाथ मिश्र जी, लहरियासराय २९ नवबर, १९६१

मेरे अभियोग की कार्यवाही अब पूर्ण होकर उच्च-न्यायालय ने ठीक निर्णय देकर न्याय की रक्षा की है। आपने प्रारभ में ही कार्य की रचना सुव्यवस्थित करके रखी थी। उसी का यह सुफल है। ९८

दोनों न्यायालयों को योग्य दृष्टिकोण ध्यान में नहीं आया, यह दुर्भाग्य है। आपने तो कोई न्यून नहीं रख छोड़ा था। आपने जो श्रम किए हैं, उसके लिए मैं सदैव अनुगृहीत रहूँगा।

४४० जो भूल हुई, वह पुन न हो

श्री माधवराव मुल्ये, दिल्ली ३० नवबर, १९६१

अबाला से रवाना होने के बाद से मन बहुत अस्वस्थ है। वहाँ के अतिम कार्यक्रम का स्वरूप सार्वजनिक कार्यक्रम का क्यों एव कैसे हुआ यह प्रश्न है। यह तय हुआ था कि केवल स्वयसेवकों के लिए ही कार्यक्रम होगा। आपके पहले के पत्र में एव बाद में प्रत्यक्ष भेंट में भी आसपास की शाखाओं के स्वयसेवक अतिम बौद्धिक वर्ग के समय उपस्थित रहेंगे, ऐसा ही सूचित किया गया था। ऐसी स्थिति में यह सार्वजनिक कार्यक्रम अचानक, मुझे मानो पूर्व सूचना न मिले, इस प्रकार चुपचाप कैसे तय हुआ, यह समझ में नहीं आया। यह होना कहाँ तक उचित है, यह आप ही सोचे। यह होना, याने अपने विश्वासी कार्यकर्ताओं के शब्दों पर भी विश्वास न रखा जाए– ऐसी स्थिति पैदा करना होगा, ऐसा आपको भी लगता हो, ऐसा मुझे लगता है। मुझे न बताते हुए स्थानीय कार्यकर्ताओं एव प्रचारकों के उत्साह का यह परिणाम होकर सुव्यवस्थित, अनुशासित सगठन के नाते अपना अस्तित्व समाप्त होते आया है, ऐसा ही कहना पडेगा। इस विचार से मन अत्यत अस्वस्थ हो रहा है, वह थोडा-बहुत खुला हो, इसलिए यह पत्र लिखकर अत करण में सचित रहे विचार-भावनाओं को राह कर दी है। अब आगे उधर जाने के विचार को धक्का पहुँचा है। कोई कार्यक्रम तय हुआ तो भी अनपेक्षित रूप से प्रत्यक्ष क्या होगा, इसका अदाज लगाना असभव हो गया है। सघ के इतने वर्षो के अनुभव में इतनी अनिश्चितता का भय क्वचित् ही हुआ होगा। इससे अधिक लिखता नहीं। हृदय की खलबली अदर ही अदर दबा डालना इष्ट लगता है इसलिए इस विषय के बारे में अधिक नहीं लिखता हूँ । (मूल मराठी)

४४१ सपर्क-सभाषण का महत्त्व

श्री दत्तोपत म्हसकर, सातारा २४ दिसबर, १९६१

हमेशा दौरा कर सकनेवाले प्रतिष्ठित कार्यकर्ता हों, तो सब कठिनाइयाँ क्रमश दूर होती हैं एव कार्य अबाधित रूप से बढता है ऐसा

सव स्थानों का अनुभव है। सपर्क में आए एव पहले से सपर्क में रहे व्यक्तियों से, स्वयसेवकों से अपने कार्य के आधारभूत सिद्धातों के विषय में नित्य की बातों, सभाषणों में से वातें करते रहकर उनके अत करण में उनकी पक्की छाप अकित होगी एव यही कार्य अपने को यावज्जीव करणीय है— ऐसी निष्ठा पैदा होकर वह दृढ रहेगी, इस ओर सबको ध्यान देने को सूचित करते रहें। इससे कार्य की वृद्धि के प्रत्येक चरण में स्थिरता आ सकेगी ऐसा लगता है। शेष आप अपने अनेक वर्षो के अनुभव से जानते ही हैं। ऐसा नहीं कि मैं कुछ लिखूँ। केवल सहज जो सूझा, वह स्मरणार्थ लिख दिया है। (मूल मराठी)

४४२ सद्ग्रथ, विशेषत डाक्टर जी का चरित्र पढे

श्री दुर्गानद नाडकर्णी, ३ फरवरी, १९६२

आपके प्रश्न बहुत गहन हैं। उनके उत्तर अनेक ज्ञाताओं ने दिए हैं, परतु लिखकर ऐसे या इसी प्रकार के प्रश्नों की चर्चा करने के लिए आवश्यक लेखन-कुशलता हम दोनों में ही नहीं है। इसलिए आगे हम जब मिलेंगे, तब अवश्य पूछें। यथाशक्ति मैं उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

सप्रति आपके सामने मुख्य बात है स्वय का स्वास्थ्य-सपादन करना। इस समय परमपूजनीय डाक्टर जी का चरित्र, श्री दासबोध, श्रीमद्भगवद्गीता, गीतारहस्य आदि ग्रथों का, विशेषत चरित्र का ध्यानपूर्वक पठन करें। स्वकर्तव्य करते समय मनोजय कैसे होता है, यह ध्यान में आएगा तथा सारी शकाएँ दूर होने लगेंगी। (मूल मराठी)

४४३ चुनाव जीता-जागता स्टट पिक्चर

बै नरेंद्रजीतसिह जी, कानपुर ५ फरवरी, १९६२

चारों ओर चुनाव की धूम चल रही है। उसमें पूर्णतया अलिप्त रहकर सब दलों के ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्धा, आत्मश्लाघा आदि साक्षी के रूप में देख रहा हूँ। सिनेमा में स्टट पिक्चर में सामान्यों की जो रुचि होती है, उससे उन्हें प्रसन्नता होती है। यह जीता जागता स्टट पिक्चर होते हुए भी उसमें अपने विशुद्ध समाज के अच्छे-अच्छे लोगों को एक-दूसरे पर छींटाकशी करते-बढते देखकर हीन, अनीतिपूर्ण मार्गों का असत्य का,

अपप्रचार का अवलबन करते देखकर हृदय दु ख, विपाद एव चिंता व्याप्त है। आशा यही है कि इस मासभर में यह सब हो जाएगा और सम शात सतुलित होकर स्वत की वास्तविक स्थिति और भविष्य के सबध विचार करने की अनुकूलता उत्पन्न हो सकेगी। अपने स्थायी, परिस्थितिनिरपे विशुद्ध राष्ट्रभावपरिपूर्ण विचारों को, सद्भावों को प्रस्तुत कर समाज अपनी कार्यपद्धति की ओर खींचकर लाने के लिए उपयुक्त अवसर मिले इस अवसर में अपने सब कार्यकर्ताओं को दृढनिश्चय से स्वत विचारशुद्धि, भावशुद्धि को ठीक जाँच-पडताल से परखकर सुयोग्य पद्ध से कार्यवृद्धि तथा दृढीकरण में सलग्न होना अति हितकारक होगा। मु विश्वास है कि अपने सब प्रमुख, दायित्व उठानेवाले बधु सतर्कता व्यवहार कर प्रचलित वायुमडल के दोष से अपने स्वयसेवक बधुओं को मु रखने का, करने का प्रयास करते रहे होंगे और अगले मास से कार्य सब मैदान स्वच्छ कर वृद्धि, दृढीकरण तथा विचार, आचार, भाव-भावना की शुद्धि आदि परमावश्यक बातों पर अपने प्रयत्नों को केंद्रित करेंगे।

४४४ चुनाव का वातावरण और दैनदिन सघकार्य

श्री जगदीश अग्रोल, अमृतसर   ११ फरवरी, १९६

कार्य का विवरण आपने लिखा है, वह मन को सतोष देनेवाला है यह जो चुनाव का वातावरण है उसमें बहुत मात्रा में एक-दूसरे के ऊप छींटाकशी होकर परस्पर सबधों में कटुता उत्पन्न करनेवाली बातें हो रह हैं। कोई यह सोचता नहीं कि सब एक ही देश के सेवक हैं और सबक मिलकर ही राष्ट्र की रक्षा एव अभ्युदय के लिए नि स्वार्थ तथा निरलस भा से प्रयत्न करना है, अत यह परस्पर कटुता उत्पन्न करना सर्वथा अनुचि है। और कुछ दिनों में चुनाव समाप्त होंगे, परतु यह आपस का दुराव बहु काल बना रहेगा। अभी अपने बडे-बडे लोगों में भी मन सतुलन तथ हार-जीत में प्रसन्नता रहने का खिलाडी-भाव नहीं है। यह चिंता की बा है और हम सब लोगों को सतर्क रहकर अपने सगठनात्मक कार्य को इस क्षुद्र स्पर्धा ईर्ष्यादि दोषों से पूर्णतया अलिप्त रखने के लिए दत्त चित्त होकर प्रयत्न करते रहना आवश्यक है। चुनाव के पश्चात् समाज को सतुलित करने का, रखने का दायित्व निभा सकने योग्य कार्य होना चाहिए।

४४५ व्यावहारिक विवेचन से योग्य योजना बनाएँ

श्री कृष्णराव देशपाडे, वाशिम, विदर्भ   १५ फरवरी, १९६२

अब सब सकलित जानकारी का विश्लेषण कर आगामी एक-दो मास में अर्थात् सघ शिक्षा वर्ग प्रारभ होने के पूर्व किन-किन गॉवों में शाखा स्थापित करना योग्य एव सुगम होगा इसका विचार करके कार्यकर्ताओं पर एक-एक गॉव का दायित्व देकर प्रत्यक्ष कार्य की दृष्टि से उद्योग प्रारभ करना आवश्यक है। अन्य गॉवों में भी पुन -पुन जाने की कुछ योजना हो।

सप्रति होने जा रहे चुनाव की धूमधाम में कार्य प्रारभ करने के लिए अनुकूल वातावरण नहीं– ऐसा लगना अस्वाभाविक नहीं हे, परतु मार्च के प्रारभ से वातावरण स्वच्छ एव शात हो जाएगा एव स्थायी कार्य की दृष्टि से विचार करने की ओर ध्यान जाना सरल होगा। मार्च एव अप्रेल– दो मास काम के लिए मिलेंगे। उनका अधिक से अधिक उपयोग हो। धूपकाल में भी कतिपय स्वयसेवकों की योजना कर प्रारभ किए काम वद नहीं होंगे– ऐसी व्यवस्था की जा सकेगी।

दिखता है कि चुनाव के वातावरण की ऑच सभी क्षेत्रों में पहुॅच रही है। हाल ही में प नेहरू नागपुर आकर गए। उसके पश्चात् कुछ स्थानों में, उदाहरणार्थ उमरेड में प्रत्यक्ष यशवतराव चव्हाण के आगमन के समय सभा में इतना हुल्लड हुआ कि उन्हें भाषण देना असभव हो गया। अव स्कूल के लडके– प्राथमिक शालाओं के भी– यही विषय आपस में स्वय की बुद्धि-स्मृति के अनुसार वोलते रहते हैं जो मैंने अपने कानों से स्वय सुना है। ऐसे वातावरण में अपने कार्य का सतुलन, ध्येयदृष्टि स्वच्छ एव अटल रखना आवश्यक है। आप सबका ध्यान इस ओर गया ही होगा।

(मूल मराठी)

४४६ परिस्थिति जितनी कठिन, उतने अधिक प्रयत्न

श्री काशीनाथ मिस्किन, गुलवर्गा, कर्नाटक   १७ फरवरी, १९६२

आपके जिले का वृत्त ध्यान में आया। प्रत्येक स्थान पर शाखा का स्वरूप छोटा है, यह सब जानते हैं। कहीं-कहीं की परिस्थिति ऐसी विचित्र रहती है कि बहुत परिश्रम करने पर भी परिणाम दिखाई नहीं देता। यह देखकर कोई दुर्वल मन का व्यक्ति निराश हो सकता है। परतु हम लोग अपने सघ के स्वयसेवक हैं। हमें निराशा क्या कर सकती है।

परिस्थिति कठिन उतने अपने प्रयत्न भी अधिक, अपनी दृढता-निश्चय अधिक और कार्य सफल करेंगे ही, यह विश्वास भी अटल। अत शीघ्र ही वायुमडल बदल कर आप सबके अविरत परिश्रमों के सुफल दिखाई देंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

४४७ सावधानी से मार्गदर्शन की आवश्यकता

डा पी के बनर्जी, वाराणसी   १६ फरवरी, १६६२

मैं आशा करता हूँ कि उनका (भाऊराव देवरस का) शारीरिक स्वास्थ्य पूर्ववत ठीक होकर अब वे उत्साहपूर्वक अपने प्रात के कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं। विशेष रूप से चुनाव से प्रभावित आज का वातावरण अपने राष्ट्रजनों की मूलभूत दृढता और एकता को ही कुरेद रहा है। आपसी अलगाव की भावना को प्रोत्साहित कर विभेद निर्माण करने का प्रयास हो रहा है। अनेक भेद प्रवृत्तियों को उभाडकर आपस में अविश्वास एव शत्रुत्व-भावना निर्माण की जा रही है। इस प्रकार दुष्प्रवृत्ति से भरे वातावरण में अपने कार्यकर्तागण इस विषाक्त वायुमडल से प्रभावित न हों, इसकी विशेष चिता करनी होगी। अपने कार्य की व्याप्ति एव दृढता बढे, जिसके परिणामस्वरूप लोगों को सुशिक्षित-सुसस्कारित कर अपनी सही राष्ट्रीयता और राष्ट्रभावना की दृढता वे हृदयगम करने में समर्थ बनें। इस अत्यावश्यक और पवित्रकार्य के लिए श्री भाऊराव, अन्य प्रचारक, अपने अधिकारी एव जिम्मेदार कार्यकर्ताओं के द्वारा सातत्यपूर्वक नित्य जागरूक सावधानी से मार्गदर्शन की अनिवार्य आवश्यकता है। इस हेतु उनके शारीरिक स्वास्थ्य एव उत्साहपूर्ण कार्यक्षमता के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ। पालक के नाते आप स्वय रहने के कारण मुझे विश्वास हे कि उनका स्वास्थ्य अब ठीक है। (मूल अग्रेजी)

४४८ चुनाव और होली मे हुई अभद्रता की उपेक्षा करे

श्री हृषीकेश शेंडे, बिलासपुर   १६ फरवरी, १६६२

मित्रवर्य श्री छेदीलाल गुप्ता के नाम से प्रकाशित (अग्रेजी ओर हिंदी की एक-एक प्रति) पत्रक प्राप्त हुए। पढकर बहुत मनोरजन हुआ। इस विषय में आपने सुझाव दिया है कि न्यायालयीन अभियोग चलाया

जाए। वहाँ जानकार लोग हैं। उनसे परामर्श करें। मुझे लगता है कि बिना कारण वाद-विवाद न किया जाए। होली के समय तथा चुनाव के वातावरण में लोगों का मन और वाणी पर सयम नहीं रहता है। ऐसे समय जो अभद्र बोला-लिखा जाता है, वह हम क्षम्य मानते हैं। होली में शरीर पर कीचड उछालने पर हम उसके कारण कोर्ट में किसी पर अभियोग नहीं चलाते हैं। चुनाव के समय होनेवाला अभद्र-असत्य शब्दों का प्रयोग वैसा ही समझा जाए, जिस स्थिति में मन का सतुलन बिगड जाता है, उसे पागलपन या अग्रेजी में insanity कह सकेंगे। 'इडियन पिनल कोड' के अनुसार, ऐसी स्थिति में कोई व्यक्ति पाप करता है, तो कानून कहता है, कि उसे जिम्मेवार नहीं माना जाए। सिविल लॉ में भी माना गया है कि ऐसी मानसिक अवस्था में किया गया व्यवहार बधनकारक नहीं है। चुनाव के सन्निपात ज्वर में से निर्माण हुई मानसिक असतुलित अवस्था के कारण सबधित व्यक्तियों द्वारा हमें पीडा देनेवाली बातें कही गई हैं। अत वह उन लोगों का एक प्रकार से पागलपन ही है। इसलिए उनकी इस मानसिक रुग्णता के बारे में हम उनपर करुणा करें तथा मेरी दृष्टि से यही उचित होगा कि उनके अभद्र शब्दों की उपेक्षा करें।

कुछ ही दिनों में यह वातावरण समाप्त होनेवाला ही है। उसके बाद ये सारे अपने ही बधु होने से अपने पास ही आनेवाले हैं, यह सूत्र दृढता से ध्यान में रखकर जो योग्य और उचित लगेगा, वैसा करें।

(मूल मराठी)

४४६ मातृवियोग के दु ख पर सात्वना

श्री काशीनाथ बागवडे, २० फरवरी, १९६२

आपकी माताश्री के देहावसान का दु खद समाचार ज्ञात हुआ। उसके लिए आप वाई गए थे एव अब वापस लौट कर आए होंगे। तीर्थस्वरूप माताश्री को क्या हुआ था, इसका बोध नहीं हुआ, परतु वह ज्ञात होकर भी क्या लाभ? आप पर मातृवियोग की दुर्धर आपत्ति आई, माताश्री को क्या हुआ था, यह जानकर उस दु ख से सतोष थोडे ही मिलनेवाला है।

सुख-दु ख सब श्रीपरमेश्वर की कृपा ही है। इस अनुभव की अग्निपरीक्षा में से पार होने के कारण सत्कार्य करनेवाले का तेज बढ़ता

कर्तव्यनिष्ठा एव कार्य की योग्यता बढती है। आप एक श्रेष्ठ ध्येय की, एक पुनीत राष्ट्र-कार्य की उपासना करनेवाले हैं। अपने श्रेष्ठ मार्गदर्शक बताते हैं कि ऐसे प्रसगों को सहकर उसमें से हृदय अधिक दृढ निश्चयी होने का अनुभव हम प्राप्त करते हैं, यह ध्यान में रख कर, मातृवियोग के शोक पर विजय प्राप्तकर उत्साह से कार्यमग्न रहने में ही भूषण है। आप यह श्रेष्ठ जीवन सहजता से व्यवहार में ला रहे होंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

(मूल मराठी)

४५० सपर्क मे आए बधुओ को कार्यप्रवण करे

श्री हरि लोकगारीवार, ब्रह्मपुर, जि गजाम, उत्कल   २० फरवरी, १९६२

मेरे ब्रह्मपुर के कार्यक्रम के समय जिन अनेक बधुओं से सपर्क हुआ, उन्हें धीरे-धीरे कार्यप्रवण कर ऐसा प्रयास करें कि शाखा को विस्तृत और दृढ स्वरूप प्राप्त हो। शाखा में प्राय सभी नए हैं। उन्हें विचारों व व्यवहारों की ठीक जानकारी नहीं है। अनुशासन, सद्भाव, परस्पर विषयक यथार्थ आत्मीयता, अत करण में कार्य की स्फूर्ति आदि आवश्यक गुणों का पर्याप्त परिचय नहीं हे। इसलिए योग्य वातावरण निर्माण करना है। कार्य की आज जो स्थिति है, उसे बदलकर अपने को अपेक्षित स्थिति निर्माण करने के लिए विचारपूर्वक, सयम से, उतावले न होते हुए प्रयत्न करना आवश्यक है। (मूल मराठी)

४५१ नए क्षेत्र मे कार्य करने की विधि

श्री शरद कटककर, कर्जत   २२ फरवरी, १९६२

यह सच है कि आपके विस्तृत कार्यक्षेत्र में सघ का केवल नाम से ही परिचय है। इससे लगता है कि काम करना कठिन न होकर सुगम हो। शुद्ध चारित्र्य स्नेहपूर्ण व्यवहार, मधुर वाणी, समाज के व्यक्तियों को अपने परिवार का अग मानकर उनके सुख-दु ख से समरस होकर, उसमें से जो कर्तव्य निर्माण होते हैं, उन्हें सोत्साह करने की तत्काल आवश्यकता आदि बातें धीरे-धीरे कुछ उत्तम मित्र एकत्र कर उन्हें समझाएँ। इसके लिए इतिहास के प्रमाण सुलभ भाषा में रखने चाहिए। इससे उनमें अपने कार्य का ज्ञान होगा, कार्य के प्रति आत्मीयता निर्माण होगी। शाखा भी शुरू होगी। एक साथ अनेक स्थानों को न लिया जाए। प्रथम एक प्रमुख स्थान

सामने रखकर वहाँ कार्य का साधारण प्रारभ होने पर क्रम से अन्य स्थान शाखायुक्त करें। (मूल मराठी)

४५२ चिंताजनक स्वत्व-विस्मृति व विशृखलता

डा स बा जोशी, नादेड २३ फरवरी, १९६२

विगत सपूर्ण मास देश में चुनाव रहने से गडबड ही है। उसमें अनिष्ट बात यह है कि विभिन्न पक्ष इसका भान न रखकर एक-दूसरे पर आरोप कर रहे हैं, गाली-गलौच कर रहे हैं, पथराव कर रहे हैं कि यह आपसी मिली-जुली स्पर्धा है, कोई भी चुना गया तो भी वह अपना ही है। कुछ स्थानों पर लाठियाँ छुरे एव बदूक की गोलियों का प्रयोग कर रहे हैं। मानो यह शत्रु-शत्रु के बीच की लडाई है इस प्रकार की दुर्भावनाओं का जोर चढ रहा है। अब थोडे ही दिनों में यह थम जाएगा। परतु इसमें से निर्माण हुई शत्रुता तुरत दूर होगी, ऐसा नहीं दिखता है। पहले ही समाज स्वत्व विस्मृति के कारण पगु बना हुआ है, विशृखल हो चुका है इसलिए चिंता करने लायक अवस्था पैदा हो रही है। इसपर उपाय अपना कार्य ही है, यह प्रत्येक समझता है। इस समझदारी को अधिक जागृत करने के लिए आबालवृद्ध स्वयसेवक बधुओं को परिश्रम करना चाहिए। (मूल मराठी)

४५३ स्थायी एकता का पालन-पोषण केवल सघ द्वारा

श्री भाऊसाहेब आवटी, २३ फरवरी, १९६२

वर्तमान वातावरण में सपूर्ण समाज जिसका चुनाव के निमित्त मथन हो रहा है, अनेक प्रकार की अनिष्ट भावनाओं का शिकार हो रहा है। शत्रुत्व बढाया जा रहा है। ऐसे वातावरण में समाज की सही एव स्थायी एकता का लगन से पालन-पोषण करने के लिए प्रयत्न करनेवाला केवल सघ ही है, इसका ज्ञान सबको अवश्य होगा, ऐसा लगता है। यह ज्ञान मन में ही हो तो अस्पष्ट रहता है, ध्यान में नहीं आता है। अपनी अचूक शक्ति से अकृत्रिम आत्मीयता के सबध चारों ओर सब समाज बाधवों में प्रस्थापित कर, यह ज्ञान सुस्पष्टता से व्यक्त होगा एव उसके अनुसार सुसगठित जीवन के अनुरूप स्नेहपूर्ण व्यवहार व्यक्ति का स्थायी स्वभाव बनेगा, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है। लगता है कि अपने स्वयसेवक बधु इस काम में आगे आएँगे। (मूल मराठी)

८५४ ग्राम सपर्क योजना और आगे का उपक्रम

श्री बाल पावणकर, भिवंडी, महाराष्ट्र   २४ फरवरी १९६२

थोड़े ही समय में चुनाव की धूल नीचे बैठ जायेगी एव शात चित्त से समाज के स्थायी प्रश्नों का विचार करने की योग्यता एव अनुकूलता लोगों में आने लगेगी। इसी उत्तम काल में आप ग्राम-सपर्क योजना नियोजित कर रहे हैं। संगठित जीवन की अनिवार्यता, विशुद्ध राष्ट्रभाव का ज्ञान, शील सपन्न होकर क्षुद्र विचारों, विकारों का सर्वथा त्याग, सपूर्ण शक्ति समर्पित करने का निश्चय– इन गुणों से प्रत्येक व्यक्ति अभिभूत हो– ऐसे लोगों का सूत्रबद्ध सगठन अनिवार्य है। उस पर ही राष्ट्र का सरक्षण एव संवर्धन निर्भर है, यह हृदय पर अकित कर व्यक्ति सघकार्य में आकृष्ट होंगे, ऐसा अपना प्रयत्न है। उसकी पूर्व तैयारी इस सपर्क-योजना में से होकर आगे अधिक शाखाएँ स्थापित करने का उपक्रम हाथ में लिया जा सकेगा। आपके सम्मुख ऐसी योजना होगी ही। (मूल मराठी)

८५५ फल कुछ भी हो, राष्ट्र की सेवा करनी है

श्री नदकिशोर आचार्य, उज्जैन   २५ फरवरी, १९६२

आपके क्षेत्र में मतदान होने के पूर्व किसी प्रकार मैं आपको अपनी शुभ कामनाएँ समर्पित कर नहीं सका था। अब मतदान पूर्ण होकर फल प्रकट होने की प्रतीक्षा है। फल कुछ भी निकले, अपने को राष्ट्र की सेवा करनी है। लोकसभा, विधानसभा में जो कार्य करना सभव है, उससे कहीं अधिक कार्य दैनदिन जीवन में समाज में, कहीं अधिक घुल-मिलकर चारों ओर के बधुओं की समस्याओं को समझकर, हृदय में उनकी व्यथा जागृत रखकर, उन समस्याओं को सुलझाने के लिए पूर्ण शक्ति से प्रयत्न करने से कहीं अधिक हो सकता है। मुख्य कार्य तो समाज को जागृत करना, स्वाधिकार का ज्ञान देना, स्व-कर्तव्य की प्रेरणा जगाना, स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में ससार में गौरव से जीवन चलने की उत्कट अभिलाषा और तत्पूर्त्यर्थ सुदृढ, सचेत, सगठित शक्ति के रूप में समाज को नित्य उपस्थित रखना है। उसमें आपके परिश्रम लगते ही रहेंगे।

४५६ चुनावी होली की शब्दावली

श्री गिरिराज शर्मा, जयपुर २६ फरवरी, १९६२

वृत्त-पत्र का अश भी प्राप्त हुआ। उसमें यह लेख, जिसका आपने उल्लेख किया है, पढा। कुछ नवीन नहीं है। मुझे ऐसी बातें सुनने-पढने का अभ्यास है। इसलिए मेरे मनपर उसका कुछ भी परिणाम नहीं हुआ। यह फाल्गुन मास है। बालक कई प्रकार की भद्दी घोषणाएँ करते हैं। बडे समझदार कहलानेवाले भी पीछे नहीं रहते। उनकी वैसी अपमानकारक शब्दावली को सुनकर भी हम यह नहीं देखते कि कोई भद्र पुरुष उनके विरुद्ध न्यायालय में अभियोग चलाता है। दुर्भाग्य से चुनाव के अच्छे प्रसग को होली के त्यौहार के समान ही लोगों ने अभद्र शब्द-प्रयोग करके कालिख पोतना मानो अपना धर्म मान लिया है। होली के अपशब्दों को जिस शाति से हम लोग सहते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं, उसी शात भाव से चुनाव-काल नामक होली के अवसर पर व्यक्त की गई शब्दावलियों को भी सहने से क्या हानि होगी? आप सब बधु इस विषय में गभीरता से सोचें। आगे जो उचित दिखे, करें।

४५७ सपर्क योजना – उसका प्रतिसाद

श्री जनुभाऊ रानडे, बारामती २६ फरवरी, १९६२

आपकी ओर जो क्षेत्र है, उसमे आगामी मार्च मे तो सपर्क-योजना का कार्यक्रम होनेवाला है, वह उत्तम रीति से पूर्ण हो, इस दृष्टि से प्रयत्न करना आवश्यक है। स्वयसेवक अकारण दबेल न रहें। जिन-जिन प्रातों में विगत दो-तीन मास में यह कार्यक्रम हुआ, उनमें उत्तम अनुभव आया। वहाँ भी प्रारभ में ऐसा ही आशका का भाव था, परतु जैसे-जैसे सपर्क बढने लगा, वैसे-वैसे देखने में आया कि अपनी भावना केवल आभास ही थी। वास्तव में समाज में एकरूप होना अपने को कठिन नहीं।

४५८ जीवन का औचित्य

श्री आर श्रीनिवास, चेन्नै २६ फरवरी, १९६२

आप कहते हैं कि आप नहीं जानते कि आपके जीवन का आतरिक औचित्य और उद्देश्य क्या है। ससार में प्राय हम सबकी यही

स्थिति होने के कारण आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं। सौभाग्य से आपके सामने एक ऐसा लक्ष्य है, जिसकी पूर्ति के लिए आप आजीवन परिश्रम कर सकते हैं, जीवन समर्पित कर सकते हैं। आप उसपर सोचेंगे तो आपका जीवन शून्य एवं उद्देश्यहीन है, यह भावना समाप्त हो जाएगी और आपमें विश्वास पैदा होगा कि आपका जीना निरर्थक नीरस नहीं है। (मूल अंग्रेजी)

४५९ धर्मसंकट और क्षमा याचना

वै. नरेंद्रजीतसिंह जी, कानपुर २६ फरवरी, १९६२

वास्तविक स्थिति अभी ऐसी है कि मैं पूज्य माताजी की दृष्टि के सामने ही रहूँ। इससे उसे मानसिक समाधान रहने की आशा है। किंतु अपने प्रांत के कार्यकर्ता, श्री वीरेंद्र गुप्त तथा उनके पिताजी के रुष्ट होने का भय है। माननीय श्री बालाप्रसाद तुलस्यान जी के भतीजे का भी उसी दिन (८ मार्च) को कानपुर में ही विवाह संपन्न होनेवाला है और उन सबकी स्वाभाविक इच्छा है कि मैं उपस्थित रहूँ। मैंने 'हाँ' भी कहा था। उस समय ऐसी अवस्था उत्पन्न नहीं हुई थी। अब न जाने से उनके भी रुष्ट होने की आशंका है। यह सब सोचकर मन की द्विधा स्थिति होते हुए भी कानपुर जाने का कार्यक्रम बनाया है। आगे श्रीप्रभु की इच्छा। जैसा थोड़ा सुधार पूज्य माताजी के स्वास्थ्य में अभी डाक्टर बताते हैं, वैसा आगे भी हो जाएगा और रुग्णालय से घर लौट आने के लिए अनुकूल स्थिति उत्पन्न हुई तो मैं यहाँ से चल सकूँगा। डाक्टर लोग कुछ भी कहें, मुझे अभी उतना सुधार होने के लक्षण नहीं दिखते। यदि परिस्थितिवश मैं न आ सका तो आप श्री वीरेंद्रगुप्त तथा माननीय श्री बालाबाबू के सब आत्मीयों को समझाकर उनका मेरे ऊपर रोष न हो, ऐसा करें। यही आपसे प्रार्थना करने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ।

यदि न आ सका तो उस समय कानपुर में एकत्रित होनेवाले अपने कार्यकर्ताओं से इसी पत्र द्वारा क्षमायाचना करता हूँ।

४६० स्वयंसेवकों को आकृष्ट करें

श्री बाबा कुसरे, मालिगाँव पड्डु (असम) २८ फरवरी, १९६२

आपके प्रत्येक पत्र में प्रमुखता से यही रहता है कि वहाँ के बंधुओं

को आप आकृष्ट नहीं कर सके। इसका कारण आपको ही ढूँढना होगा। नए व्यक्तियों से व्यवहार स्नेहपूर्ण रहे। वह सहजता से हो, उसमें कृत्रिमता न हो। उन नए व्यक्तियों से इतना आग्रह न करें कि उन्हें आपके बोल-चाल का दवाव अनुभव हो। प्रारंभ में वे शाखा में केवल आते रहें, तो भी चलेगा। कार्यक्रमों में उनका मन नहीं लगा, तो भी स्वय हतोत्साहित न हों, क्रोध न करें। धीरे-धीरे कार्य के सिद्धात तथा पद्धति का महत्त्व अंकित करते हुए, उपदेशक की भूमिका को न अपनाते हुए हँसते-हँसते सबध दृढ करते रहे तो क्रमश उनके व्यवहार में सुधार होगा। आपकी अपेक्षा से इसमें अधिक समय लगा, तो भी आप अपना अत करण इतना विशाल रखें कि उनके विषय में मन में तुच्छता आदि विपरीत भाव बिल्कुल नहीं आएँगे। इससे तुरत सफलता भले ही न मिले, फिर भी कुछ समय के बाद अवश्य मिलेगी। स्वय को बडा कार्यकर्ता तथा दूसरों को अपनी तुलना में कम समझकर व्यवहार करने की आदत रही तो वह घातक है। किसी को भी अपनी ऐसी उपेक्षा और अवहेलना पसद नहीं आएगी। उसमें से मानसिक प्रतिकूलता पैदा होकर, अपनी ओर देखने की दृष्टि दूषित होती है। यह व्यक्ति अपने ही घमड में चूर रहता है, ऐसी भावना होकर अपने प्रत्येक व्यवहार में न्यून देखने की तथा उपहास करने की प्रवृत्ति पैदा होती है। इससे कार्य की बहुत बडी हानि होती है। आप आत्मनिरीक्षणपूर्वक विचार करें।

(मूल मराठी)

४६१ सफल ग्राम-सपर्क का अनुवर्ती प्रयास

श्री तिलकराज जी, गया, बिहार　　　　　　　　　　१० मार्च, १९६२

ग्रामसपर्क के कार्यक्रम का वृत्त अच्छा ही रहा। इससे अपने *स्वयसेवक बधुओं की दैनिक शाखाएँ सख्या, नियमितता आदि तथा* सिद्धात एव कार्यपद्धति पर श्रद्धा-निष्ठा, परिणामस्वरूप कर्मण्यता आदि का महत्त्व समझ में आया और अधिक उद्योग कर शाखा वृद्धि की ओर उनका ध्यान केंद्रित होने लगा, तो पर्याप्त लाभ हुआ, ऐसा कहना उचित होगा। सपर्क में आए हुए स्थानों में से कुछ को चुनकर नवीन शाखाओं की स्थापना की दृष्टि से विचार करना चाहिए। वहाँ से आगामी सघ शिक्षा वर्ग में शिक्षाग्रहण कर अपने-अपने स्थान पर शाखा चलाने की पात्रता अपने में लानेवाले बधु शिक्षार्थ जाएँ ऐसा प्रयत्न भी आवश्यक है।

४६२ ग्राम-सपर्क योजना की सफलता

श्री शिवराय तेलग, मुवई   १० माच, १६६२

ग्राम-सपर्क योजना में मुवई के स्वयसेवकों को अपनी शाखा की प्रतिष्ठा के अनुरूप काम करना आवश्यक है। इस काम में ऐसा दिखाई देता है कि अभी तक उत्साह नहीं आया है। यह किस वात का परिणाम है? चुनाव की हवा में किसी का अभिनिवेश परिणाम से अधिक पैदा होकर उसमें विफलता आने से यह हो रहा है क्या? सघकार्य की दृष्टि से हमें कोई भी अभिनिवेश– चुनाव के राजनैतिक पक्षोपपक्षों के सवध में– त्याज्य है। व्यक्तिश नागरिक के नाते किसी का झुकाव किसी विशेष व्यक्ति या सस्था की ओर रह सकता है। उसे कौन रोक सकता है? वैसा करना ठीक भी नहीं होगा, यह सच है। फिर भी यह झुकाव इतना प्रबल न हो तथा बाद के यशापयश के कारण अपने सघकार्य पर ध्यान कम देने का अवगुण पैदा न हो। सफलता से फूले न समाना तथा असफलता से निराश होना, इससे तो उचित होगा कि इस धकापेल के वातावरण से सर्वथा अलिप्त रहना। कुछ भी हो, परतु अपनी सपर्क-योजना में किंचित्मात्र भी कमी न रहे। (मूल मराठी)

४६३ शिविर का आयोजन निष्ठावृद्धि के लिए

श्री मधु लिमये, नौगॉव, असम   १० मार्च, १६६२

आपकी शाखाओं में शिविर के कारण कुछ अव्यवस्था फैलना साधारण रीति के अनुसार ही हैं। परतु अब दो महीने बीत चुके हैं। शिविर के फलस्वरूप केवल शिथिलता और अव्यवस्था ही निर्माण होनेवाली हो, उसमें से कार्यवृद्धि होकर स्थायित्व, निष्ठा-श्रद्धा-वृद्धि आदि निर्माण न होनेवाला हो तो मानना होगा कि शिविर के कार्यक्रम सर्वथा त्याज्य हैं। शिविर के आयोजन से सतोष या लोगों के सामने प्रदर्शन करने का सतोष– यह अपना लक्ष्य नहीं है। लोग प्रशसा करें, ऐसी इसमें अहकारयुक्त अभिलाषा भी नहीं है। कार्यवृद्धि तथा स्वयसेवकों की स्वय-प्रेरणा से काम करने के गुण में वृद्धि हो– यही अपेक्षित है। इस दृष्टि से वहाँ क्या परिणाम हुआ तथा हो रहा है, यह देखना लाभदायी होगा। आप वर्षप्रतिपदा के लिए आनेवाले ही हैं, तब और पश्चात् सघ शिक्षा वर्ग के समय यह प्रत्यक्ष दिखाई देगा ही। (मूल मराठी)

४६४ सब भार श्रीभगवान पर ही

माननीय नरेंद्रजीतसिंह, कानपुर १५ मार्च, १९६२

श्री भाऊराव देवरस का स्वास्थ्य कभी-कभी उन्हें कष्ट देता है, ऐसा मुझे लगा। किन्तु कार्यकर्ता जब कार्य में सलग्न रहता है तो शरीर का उसे ध्यान नहीं रहता। उसको यही अनुभव होता है कि शरीर का न्यूनाधिक चलता ही रहता है, यह प्राकृतिक है, उसकी विशेष चिंता करना व्यर्थ है, और वह निरतर परिश्रम करते ही जाता है। यही श्री भाऊरावजी की स्थिति है। और इस स्थिति के कारण उनके शरीर को कार्यक्षम रखने का भार स्वय श्रीभगवान पर ही है।

४६५ सब परिस्थितियो मे अपने पथ पर दृढ रहे

श्री स्वदेशकुमार प्रभाकर, जमशेदपुर १७ मार्च, १९६२

श्री देव जी का पत्र मिला। आपके बधु श्री मनोहर जी को स्कूटर से गिरने के कारण काफी चोट आई, घुटने में टोपी का टूटना तथा पीठ की हड्डी में आघात पहुँचा, यह वृत्त पढकर मन अस्वस्थ हुआ है। भगवान की कृपा से शीघ्र ही वे ठीक होकर अपना सब काम पूर्ववत कर सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

इस दुर्घटना से आपके हृदय पर बहुत चोट पहुँची है, ऐसा समाचार मिला है। जीवन में कई बार अनपेक्षित अप्रिय बातें होती रहती हैं। धैर्य से उन्हें सहकर अपने कर्तव्यों में सलग्न रहना, यही अपना काम है। भगवान पर पूर्ण विश्वास रखकर मन को चिंता न करने देना ठीक रहता है। अन्यथा होनेवाली बातें तो होती ही रहती हैं, रुकती नहीं, और बिना कारण अपना मन खराब होकर उसमें शोक तथा निराशा की छाया छा जाती है। होनहार टलता नहीं, अत अपना चिंताग्रस्त रहना व्यर्थ है। सर्व परिस्थितियों में अपने पथ पर दृढ रहने में ही अपना पौरुष व्यक्त होता है– ऐसा सोचकर विवेक से मन सतुलित शात रखना चाहिए।

४६६ स्मृतिमदिर उद्घाटन मे वैदिक मत्र

श्री माधवराव देशमुख, वाराणसी १७ मार्च, १९६२

इच्छा है कि वर्षप्रतिपदा तथा स्मृति-मदिर कि उद्घाटन कार्यक्रम में कुछ वेदमत्रों का घोष हो– 'आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्'

आदि। उसी प्रकार ऋग्वेद की अतिम ऋचा 'समानी व आकृति' आदि जिसमे है, उस तथा प्रसगोचित एव अपने सिद्धातों को पोषक तथा अनुरूप मत्र कहे जाएँ, ऐसा विचार है। जानकारों से पूछकर ५ से १० मिनट में पूर्ण होनेवाले ऋक्-यजु आदि सहिता के चुने हुए मत्र निश्चित करे। वे उत्तम स्वरयुक्त गाए जाएँ। अपने विश्वनाथ देव स्वयसेवक बधु है तथा उत्तम वेदपाठी भी हैं। वे आ सकेंगे क्या? सभव हो तो वे आपके द्वारा चुने हुए मत्र, आप तय करेंगे उस क्रम से एकत्र करने की सिद्धता करके आएँ और ध्वनि-क्षेपक से मत्रोद्घोष नियत समय में करे। मत्रों का चयन करने में श्रद्धेय प राजेश्वरशास्त्री द्रविड आदि प्रकाड पडितों का परामर्श उपयोगी होगा। इस विषय में जो निश्चित होगा, वह शीघ्र सूचित करे।

(मूल मराठी)

४६७ व्यक्ति-व्यक्ति से सपर्क हमारा कर्तव्य

श्री माधव नरहर कुलकर्णी, मोडनिंब, सोलापुर २० मार्च, १९६२

अनेक स्थानो मे पुराने स्वयसेवक बिखरे हुए हैं। अनेकों के मन मे इच्छा रहकर भी पर्याप्त अत प्रेरणा न होने से वे कार्य न करते हुए बिल्कुल चुपचाप बैठे दिखाई देते हैं। फिर से उत्साह का वातावरण दिखलाई दिया, तो उनके मन की भावनाएँ और श्रद्धा जागृत होकर वे धीरे-धीरे काम करने लगेगे। कुछ लोगो ने सघ का नाम तक नहीं सुना है, इसमें आश्चर्य मानने का कारण नहीं। इससे भी आश्चर्यकारक तथा मनोरजक अनुभव आए हैं। अपनी भी त्रुटियाँ है, क्योंकि व्यक्ति-व्यक्ति के निकट पहुँचने का अपना काम होने पर भी उसे हम अभी तक पूर्ण नहीं कर सके हैं। अब इन सारे अनुभवों की पूँजी के बल पर नए-नए स्थानों में शीघ्र शाखा स्थापित करने के लिए अनुकूल तथा जहाँ निकटवर्ती कुछ गाँवों में कार्य का सदेश पहुँचाना सुगम होगा, ऐसे स्थान चुनकर वहाँ प्राथमिक प्रयास प्रारभ करना तथा आगामी सघ शिक्षा वर्ग में वहाँ से कोई उत्तम, होनहार तरुण शिक्षा ग्रहण करने के लिए आएगा ऐसा प्रयास करना आवश्यक है। वर्ग के बाद सबधित स्थानों की शाखाएँ उत्तम चलती रहेंगी, यह ध्यान में रखकर, प्रयत्न करें।

(मूल मराठी)

४६८ मैं केवल साक्षीभूत हूँ

श्री नाना ढोवले, जलगाँव २६ मार्च, १९६२

५ अप्रैल के स्मृति-मदिर उद्घाटन कार्यक्रम की पूरी तैयारी हो रही है। सभी कार्यकर्ता उसमें जुट गए हैं। केवल साक्षीभूत, परतु निरुपयोगी रहने का मुझे इस समय जितनी स्पष्टता मे बोध हो रहा है, उतना इससे पूर्व नहीं हुआ। धुँधला-सा बोध कभी-कभी थोडा स्पष्ट होता था। अब स्पष्टता प्रखर है तथा इस होनेवाले कार्यक्रम मे बहुत बडा लाभ हो रहा है। (मूल मराठी)

४६९ सघकार्य ही डाक्टर जी का सही स्मारक

श्री गुज्जरमल जी पुरी, अमृतसर १४ अप्रैल १९६२

वर्ष प्रतिपदा का कार्यक्रम अच्छा हुआ। जो बधु नहीं आ सके, उन्हें दु ख होना स्वाभाविक है, किन्तु अनेक कठिनाइयों को दूर करना किसी-किसी को सभव नहीं होता। ईश्वरेच्छा मानकर चलना उचित होता है। वैसे, अपने दैनदिन शाखा-रूप में चलनेवाला सघकार्य ही सच्चा स्मारक है। उसमें लगन से जुटें तो परमश्रेष्ठ चिरजीवी स्मृति-मदिर बनकर राष्ट्र का मस्तक ऊँचा उठ जाएगा।

४७० ईश्वर सदैव साथ है

प गौरीनदन उपाध्याय, वाराणसी १४ अप्रैल, १९६२

आपका कृपापत्र तथा भगवान श्रीविश्वनाथ जी का प्रसादरूप भस्म एव चदन प्राप्त हुआ। यह आपकी बडी कृपा है कि मेरे पास इस पवित्र, सर्वपापहारक प्रसाद का कभी अभाव नहीं रहता। श्रीभगवान की कृपा से सब कार्य (स्मृति-मदिर उद्घाटन) निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। निर्विघ्न कहने का कारण यह कि कार्यक्रम के प्रारभ के कुछ पूर्व बहुत तीव्र गति से बहनेवाली आँधी-सी उठी थी, वर्षा होने का भय भी दीख रहा था किन्तु कार्यक्रम के समय वायु की गति शात हो चुकी थी। कार्यक्रम समाप्त होने तक वायुमडल प्रसन्न रहा। पश्चात् कुछ बूँदें वर्षा की पडीं, परतु योग्य नहीं थीं। ईश्वरीय कार्य है। उसी को सब सुचारु रूप से

कभी साथ छोडता नहीं। मेरे इस दृढ विश्वास का यह एक और प्रमाण प्राप्त हुआ।

४७१ राष्ट्रीय एकात्मता का साक्षात्कार

श्री अण्णासाहेब भावेरे, जि नासिक — १६ अप्रेल, १९६२

माननीय राजाभाऊ साठे भी पूर्ण विश्राम करने को डाक्टरी आदेश प्राप्त होने से नहीं आ सके। अनेक अपेक्षित अधिकारी मडली ऐसे कुछ अपरिहार्य कारणों से नहीं आ सकी। अन्यथा प्रातों-प्रातों से, देश के कोने-कोने से आए स्वयसेवक बधुओं को उत्साह, श्रद्धा एव कार्य के सबध में विश्वास से एकत्रित आए हुए देखकर अपनी राष्ट्रीय एकात्मता का साक्षात्कार दृढ होकर अपने कार्य की विशेषता पर एव यशस्विता पर विश्वास अधिक दृढ होने का उन्हें अनुभव हुआ होता। भविष्य में किसी समय उत्तम ऋतु में आकर स्मृति-मदिर अवश्य देखें— ऐसी मेरी आग्रहपूर्वक प्रार्थना है। (मूल मराठी)

४७२ परस्पर दोष-दर्शन विघातक

श्री मनोहर जोशी, ठाणे — १६ अप्रैल, १९६२

५ ४ ६२ को वर्षप्रतिपदोत्सव तथा उसके साथ ही परमपूजनीय डा हेडगेवार जी के स्मृति-मदिर का उद्घाटन समारोह कार्यक्रम हुआ, जो अत करण की पकड लेनेवाला, पुनीत भावना उद्वेलित करनेवाला था। और उसी मगल दिन पर ही आपका दिनाक ३ ४ ६२ का पत्र भी प्राप्त हुआ।

आपके लिखने का आवेश ध्यान में आया। वहाँ के कार्य का प्रत्यक्ष अवलोकन करने के बाद ही उसके बारे में सोचा-समझा जा सकता है।

परस्पर के दोषदर्शन की प्रवृत्ति स्वभावसुलभ है, परतु कार्य-पोषक नहीं। जो विषय मुझे सूचित किया गया है, वह योग्य दायित्व के साथ सबधित काम करनेवाले कार्यकर्ताओं के सामने, खुले मन से यदि इस ढग से रखा जाता, जिससे कटुता वैमनस्य आदि निर्माण न हो, तो ठीक होता। सबधित कार्यकर्ताओं को जानबूझकर टालकर व्यवहार करने की प्रवृत्ति भी स्वाभाविक हो, तो भी कार्य-विघातक हो सकती है, यह नित्य ध्यान रखें।
(मूल मराठी)

४७३ स्मृति-मदिर प्रेरणास्थान

श्री नानासाहेब बुधकर, वकील, कर्‍हाड — १७ अप्रैल, १९६२

आपके द्वारा व्यक्त की गई इच्छा और अपेक्षा के अनुसार एक बडा प्रेरणा-स्थान खडा हुआ है। शुद्ध चारित्र्य तथा राष्ट्रार्पित जीवन जीने की प्रेरणा अखड देने की शक्ति यहाँ साक्षात् अवतरित हुई है, ऐसा प्रत्येक सत्प्रवृत्त व्यक्ति का अनुभव है। (मूल मराठी)

४७४ जीवन मे कार्य को अग्रस्थान

श्री मुकुदराव करदीकर, नौपाडा, ठाणे — १८ अप्रैल, १९६२

आपके पुत्र के उपनयन सस्कार समारोह में मैं उपस्थित रहूँ यह जैसी आपकी इच्छा है, वैसी मेरी भी है। परतु अपनी ऐसी इच्छाएँ यदि कार्य के कुल आवश्यक कामों के साथ मेल न खाती हों तो उन्हें पूर्ण कराना असभव होता है। जीवन में कार्य को अग्रस्थान देने पर व्यक्तिगत, पारिवारिक सभी काम गौण हैं। आपके यहाँ के मगल-कार्य के समय मैं सुदूर दक्षिण में रेलगाडी में रहूँगा। इसमें परिवर्तन करना वर्ग-विषयक कर्तव्य की उपेक्षा करना होगा। इसलिए आपकी और मेरी उत्कट इच्छा रहकर भी इस अवसर पर मैं उपस्थित नहीं रह सकता। क्षमाप्रार्थी हूँ।

मा श्री अप्पाजी जोशी के दो नातियों का भी उपनयन सस्कार इसी दिन है। उन्होंने भी बहुत आग्रह किया। परमपूजनीय डाक्टर जी के वे निकटतम विश्वसनीय सहयोगियों में से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ कार्यकर्ता हैं। उनका अनुरोध अस्वीकार करना अत्यत कठिन था, परतु उनसे भी क्षमा-याचना कर मुझे उन्हें कहना पडा कि मैं उपस्थित नहीं रह सकता। (मूल मराठी)

४७५ तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि

प सातवलेकर, पारडी — २१ अप्रैल, १९६२

स्मृतिमदिर के उद्‍घाटन के प्रसग पर आप नहीं आ सके, इसका खेद है। फिर भी आपका शरीर-स्वास्थ्य ध्यान में लेते हुए इसका उपाय नहीं था यही कहना पडेगा। कभी नागपुर में आना हुआ तो स्मृति-मदिर देखकर यह स्फूर्तिस्थान प्रकर्षता से अखड राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा सपूर्ण

समाज को देता रहेगा-- ऐसा आशीर्वाद दें, यह प्रार्थना कर रहा हूँ। पवित्र स्थानों की पवित्रता श्रेष्ठ पुरुषों के निरतर सपर्क से टिकती एव बढती है- भक्ति सूत्र में नारद जी ने 'तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि'' के नाते इस सत्य का स्पष्ट ज्ञान सब को करा दिया है। इस का अनुसरण कर ही मैं आग्रहपूर्वक प्रार्थना करता हूँ।

४७६ निमत्रण

श्री यादवराव मुदिलयार, शेगॉव, महाराष्ट्र २१ अप्रैल, १६६२

आप कभी नागपुर आएँ तो स्मृति-मदिर देखने की अवश्य कृपा करें। सत्प्रवृत्त महानुभावों द्वारा भेंट दिए जाने से उस स्थान की स्फूर्ति देने की शक्ति प्रकर्ष से एव अखडता से सबके अनुभव में आएगी, ऐसा विश्वास है।

४७७ जीता-जागता स्मारक दैनिक शाखा

डा दा तु करवेलकर, पट्टनकुडी २१ अप्रैल, १६६२

स्मृति मदिर एक स्फूर्ति-स्थान होगा, ऐसा सब ने विश्वास व्यक्त किया है। वह अनुभव में आने के लिए उनका जीता-जागता स्मारक, याने अपनी दैनिक शाखा। उन्हें बढाने एव मजबूत करने पर सब का ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। (मूल मराठी)

४७८ शुभेच्छु से मिले

श्री हो वे शेषाद्रि, २२ अप्रैल, १६६२

मेरी ओर से किया जाना आवश्यक ऐसे एक छोटे से कार्य के सबध में इस पत्र को लिख रहा हूँ। कार्य में आप बहुत व्यस्त हैं, मैं जानता हूँ। परतु एक आवश्यक काम जो मेरे लिए असभव प्रतीत हो रहा है, आपके द्वारा पूर्ण होगा और इससे होनेवाले कष्ट के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे इस आशा से मैं आप पर सौंप रहा हूँ।

कर्नाटक प्रात से अनेक तार-संदेश प्राप्त हुए हैं। ५ ४ १६६२ को सफलतापूर्वक सपन्न हुए अपने कार्यक्रम के अवसर पर अनेक सज्जनों के द्वारा लिखे गए अभिनदन एव शुभेच्छा-पत्र प्राप्त हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि

आभार प्रकट करने हेतु उन सभी को पत्र लिखूँ। बगलौर का अपना नया कार्यालय बनानेवाले वास्तुविद्या विशारद श्री पातुरकरजी, धानोअर के श्री म्हापसेकर, सिंडिकेट बैंक, कुमठा के श्री श्रीकात कामत, हरिहर के श्री बसवराज, सागर के श्री अनत कृष्णमूर्ति, गदग शाखा के स्वयसेवक, विशेष रूप से डा गोडबोले, जिन्होंने अभिनदन एव शुभेच्छा प्रकट करने हेतु तार संदेश भेजा था। पवित्र आजनेय स्वामी मदिर का प्रसाद शिमोगा के श्री नरसिह मूर्ति ने भेजा था। इन सभी सज्जनों से कृपया मिलकर मेरी ओर से और यहाँ के तथा भारत के अपने सभी सहकारी बधुओं की ओर से कृतज्ञतापूर्वक आभार अभिव्यक्त करें। (मूल अग्रेजी)

४७६ शब्दरूप मे प्रकट अनुभूति

श्री जगदीश जी, २४ अप्रैल, १९६२

परमपूजनीय डाक्टर जी के स्मृति-मदिर के उद्घाटन के उपलक्ष्य में आए पत्रों को शात चित्त से पढकर यथासभव उत्तर भेज रहा हूँ।

आपके पत्र से आपका अत करण ही मानो स्पष्ट रूप से सामने खुला हुआ सा प्रतीत हुआ। जिन मधुर स्मृतियों की, सद्भावों की आपके हृदय में अनुभूति वर्षों से जमी हुई है, वह इस अवसर पर शब्द रूप धारणकर प्रकट न होती तो ही महदाश्चर्य होता। आपके पत्र ने मुझे बहुत सुख दिया है और इस पत्र की स्मृति मेरे लिए नित्य ही सुख का कारण बनी रहेगी।

४८० अत प्रेरणा का मार्ग

श्री राजाराम पतकी २७ अप्रैल, १९६२

आप 'शक्ति ब्रह्माश्रम केंद्र' में पहुँचे, यह ध्यान में आया। मन में सद्भाव, सतृश्रद्धा रखकर जिस मार्ग से आप जीवन सफल एव उपयोगी कर सकेंगे, ऐसा आपको निश्चय से लगता है, उस मार्ग से पूर्ण मन लगाकर मनुष्य का आगे जाने में उसका एव उसके सपर्क में आनेवाले समाज का हित रहता है। आपने अत प्रेरणा से एव पूर्ण विचार कर यह मार्ग स्वीकार किया है। उसमें ईश-कृपा से आपको योग्य बुद्धि स्फुरित होकर आपका सकल्प पूर्ण हो।

इससे अधिक मुझ जैसा सामान्य जन-व्यवहार में लिप्त क्या कह सकेगा? (मूल मराठी)

४८१ होइ है सोई, जो राम रचि राखा

श्री पी नारायणन्, ५ जुलाई, १९६२

आपके घर की कठिनाइयों का वृत्त पढकर बहुत दु ख हुआ। मैं सोच रहा हूँ कि आप इन कठिनाइयों से कैसे मुक्त हो सकेंगे।

आपकी चिंता स्वाभाविक है। आपका नौकरी करनेवाला भाई आय की कमी के कारण घर की जिम्मेवारी योग्य प्रकार से उठाने में असमर्थ है। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि विधिलिखित को सहना ही पडता है। यह टाला नहीं जा सकता। सभवत आप भी नौकरी करके घर की सहायता करने का विचार कर रहे होंगे, तो आपको भी भाई के समान ही समस्या का सामना करना पड सकता है। यह बात आपको उचित निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होगी। आपने जो कार्य हाथ में लिया है, वह हमारा श्रेष्ठ एव पवित्र कर्तव्य है, वह करते रहना चाहिए।

आपके घर की कठिनाइयाँ दूर करने व आपके पूज्य पिताजी को कुछ राहत दिलाने का उपाय शीघ्र ही ढूँढ लिया जाएगा।

४८२ अयोग्य पुरुषो नास्ति

श्री मधुकर देव, बिहार ६ जुलाई, १९६२

आपके सघ शिक्षा वर्ग के कार्यक्रम, गीत आदि सब बातों से माननीय श्री एकनाथ जी रानडे अप्रसन्न हुए, इस में कोई आश्चर्य नहीं। उनके अष्टपहलू व्यक्तित्व, सब क्षेत्रों का कर्तृत्व ध्यान में लेते हुए उनका अप्रसन्न होना स्वाभाविक है। उनके सामने सब कार्यकर्ता बिल्कुल बौने लगना स्वाभाविक है। परतु जो भी कार्यकर्ता हैं भले ही वे अयोग्य हों, उनके साथ स्वय की अपात्रता होते हुए यह महत्कार्य करना है। उसमें मन का धैर्य एव विश्वास अचल रखें। पीठ पीछे रक्षण करनेवाला सर्व समर्थ परमेश्वर है। (मूल मराठी)

४८३ कर्तृत्व प्रकट करने की ओर ध्यान

श्री सुरेशराव केतकर, प्रचारक, सोलापुर   १६ जुलाई, १६६२

सपूर्ण देश का विचार करते हुए यह सच है कि कुल परिस्थिति चिताजनक है। परतु उसके कारण कार्य के लिए अधिक निश्चयपूर्वक जी-जान से प्रयत्न करने की आवश्यकता है। इस प्रकार काम करते समय कार्यकर्ताओं को आशा-निराशा के परे जाकर केवल कर्तृत्वपूर्ण शक्ति के साथ नि स्वार्थ बुद्धि से अत करणपूर्वक कर्तृत्व प्रकट करने की ओर ही ध्यान देना उचित एव आवश्यक है। आपके क्षेत्र में किसी भी बाहरी कारण से कुछ शिथिलता आई हो तो उसे दूर करें। (मूल मराठी)

४८४ सर्वदा प्रसन्नता से मिल-जुलकर काम करे

श्री रघु राराविकर, प्रचारक, जव्हार   १६ जुलाई, १६६२

आपने अपने कार्यक्षेत्र का सपूर्ण परिचय प्राप्त कर लिया है। धीरे-धीरे समझाकर नियमित शाखाओं का अनिवार्य महत्त्व मनवा कर शाखा चालू करने का प्रयत्न करना है। उतावले न होकर एव अन्य बधुओं की उपेक्षावृत्ति या उदासीनता देखकर उनके सबध में चिढ या तुच्छता की भावना कभी भी मन में आने देना ठीक नहीं होगा। कार्यकर्ता को मन के ऐसे विकारों से अलिप्त रहना चाहिए। सर्वदा प्रसन्नता, मिलजुलकर प्रेम से रहने की वृत्ति, सबके प्रति आदरयुक्त आत्मीय भाव रखें तो यश मिलेगा एव उसमें स्थायित्व पैदा होगा, यह आपने अनुभव लिया है। नित्य के अनुभव में वृद्धि हो रही है, उसमें ये विचार मन में रखकर चलने से बहुत उपयोग होगा, ऐसा विश्वास है।

कल गुरुपौर्णिमा है। चार-पॉच दिनों से लगातार वर्षा हो रही है। सघस्थान पर भरपूर कीचड हो गया है। फिर भी कल सध्या को श्रीभगवद्ध्वज पूजन का कार्यक्रम जैसा तय हुआ है, वैसा ही होगा। ऐसी छोटी-मोटी अडचनों की परवाह न करते हुए, निश्चित किया कार्यक्रम सपन्न करने की आदत लगी तो बडे-बडे सकटों में भी अनुशासन के बाहर अणुमात्र भी न जाने का, प्राप्त एव स्वीकृत कर्तव्य से च्युत न होने का असाधारण धैर्य आत्मसात करना एव 'अच्युत' स्थिति प्राप्त होना, इससे बढकर ऐहिक जीवन में अधिक श्रेष्ठ अवस्था नहीं है। (मूल मराठी)

४८५ अपनी संघ-शिक्षा कसौटी पर कसे

श्री भालचद्र महाजनी, कोल्हापुर   १६ जुलाई, १९६२

आप तृतीय वर्ष शिक्षित स्वयसेवक हैं। अतएव आपको कुछ वतलाना आवश्यक नहीं है। आपने जो शिक्षा ग्रहण की है, जो विचार श्रवण किए हैं, उनको प्रत्यक्ष कार्य-क्षेत्र में कसौटी पर कसना चाहिए तथा कार्य करते रहने का निश्चय दृढ, दृढतर होना चाहिए। कभी कहीं थोडी-बहुत प्रतिकूलता, बहुत से स्थानों पर उदासीनता-अकर्मण्यता दिखाई देगी। उससे मन विचलित नहीं होना चाहिए। किसी पर क्रोध न करते हुए, न चिढते हुए, स्नेह-आदर से आत्मीयता की परिधि में एक-एक को समाविष्ट कर अपने सिद्धात तथा नित्य शाखा-पद्धति का महत्त्व समझाकर कार्य दृढ नींव पर खडा करने में सफलता प्राप्त करें।

छोटी-छोटी बाधाओं को तुच्छ मानने के अभ्यास से बडी-बडी आपत्तियों में भी अडिग रहकर प्राप्त और स्वीकृत कार्य अनुशासन से करने का श्रेष्ठ गुण आत्मसात होता है। अपने राष्ट्र-जीवन की वर्तमान सकटग्रस्त अवस्था की ओर ध्यान देने पर ऐसा धैर्यशाली, अनुशासनवद्ध जीवन सपूर्ण समाज में निर्माण होने की अनिवार्य आवश्यकता स्पष्टत प्रतीत होती है। अपने नित्य तथा नैमित्तिक कार्य में से सहजता से यह सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता पूर्ण करने की सफल योजना हो रही है, यह देखकर अपने विचार सिद्धात तथा कार्यपद्धति पर अपना विश्वास सैंकडों गुना बढना चाहिए।

(मूल मराठी)

४८६ परिस्थिति निरपेक्ष प्रयत्न

श्री बाबूराव साठे,   १८ जुलाई, १९६२

चारों ओर परिस्थिति का परिणाम न होने देते हुए कार्य का उत्साह बढता हुआ रखने का गुण अभी तक अपने सब कार्यकर्ताओं में न आने से कार्य में उतार-चढाव दिखता है। यह कमी दूर करने का भरसक प्रयत्न होना चाहिए। (मूल मराठी)

४८७ संघ शिक्षा वर्ग के समय शाखाएँ अच्छी चले

श्री गजानन बापट,   २० जुलाई १९६२

ग्रीष्म के परिणामस्वरूप कुछ स्थानों की शाखाएँ वद पड जाती हैं,

ऐसा अनुभव पुराना ही है। परतु इसका विशेष विचार किसी ने नहीं किया है। यह स्वाभिविकतया होता है, ऐसा मानकर उसकी उपेक्षा की गई है। प्रतिदिन समय पर कुछ प्रयास करने का सोचा जाए तो आगामी सघ शिक्षा वर्ग की ओर ध्यान लगा रहता है और उसके कारण प्रयत्न नहीं हो पाता। इसलिए अभी से ही ध्यान रखकर ग्रीष्मकाल में ही नहीं, तो निरतर शाखाओं का दायित्व सँभाल सकनेवाले स्वयसेवक बधु स्थान-स्थान पर रहेंगे, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक प्रतीत होता है।

(मूल मराठी)

४८८ रिक्त समय व्यर्थ न गँवाएँ

श्री मधुकर मालशे, अमलनेर — २० जुलाई, १९६२

वहाँ के अनेक स्वयसेवकों में अन्य अनेक गुण रहने पर भी राष्ट्रभक्ति की उमग दिखाई नहीं देती तथा निरतर काम करते रहना, कभी भी जी न ऊबना, इन गुणों का तो अपने समाज में मानो अभाव ही हो गया है। अन्यथा अमलनेर तथा निकटवर्ती सपूर्ण समाज को अपने आलिगन में सदा के लिए बद्ध कर सकनेवाली शाखाएँ खडी होना और सदा खडी रहना सहज-साध्य था। इस परिस्थिति में आपको अनेक बधु खोजकर, उनके हृदयों में प्रखर भाव जागृत कर क्षणिक उमगें निर्माण नहीं होंगी– ऐसा प्रयास कर, स्थायी कार्य-प्रेरणा, कर्मशीलता, अपने कार्य की रचना की सुदृढ कमठता पैदा करने के लिए प्रयास करना आवश्यक है। फिर कार्य सुगमता से अबाधित चलेगा और बढेगा।

काम करते समय स्वय नियमितता से व्यायामादि से शरीर उत्तम, स्वस्थ और सुदृढ रखें। इसमें ढिलाई न दिखाएँ। रिक्त समय व्यर्थ न गँवाएँ। रिक्त समय में पठन, सत्प्रवृत्ति निर्माण करनेवाले श्रेष्ठ ग्रथों का अनुशीलन करें। कुछ उत्तम बातें कठस्थ करें। अपने सपर्क में सभी स्वयसेवक आएँगे। उनमें से बाल-तरुण स्वयसेवकों को भी यही अभ्यास लगाना चाहिए। श्रेष्ठ राष्ट्र-पुरुषों, धर्म-सस्थापकों के चरित्रों का अभ्यास कर उनकी पवित्रता, एकाग्रता से स्वीकृत जीवन सफल करने की दृढता आदि श्रेष्ठ गुणों का चितन कर उन्हें आत्मसात करने का निश्चय जागृत करें। (मूल मराठी)

४८९ प्रचारक-जीवन का प्रारंभ

श्री विलास चाफेकर, २१ जुलाई, १९६२

प्रचारक-जीवन नया लगता होगा। उससे समरस होकर स्वय का स्वास्थ्य उत्तम रखना, पठन-मनन आदि से ज्ञान सतेज रखना, सघकार्य तथा राष्ट्रपुरुषों के चरित्र के चिंतन से कार्य-विषयक निष्ठा, कुशलता तथा विशुद्ध आचार-विचार-व्यवहार आत्मसात करना अत्यंत लाभदायी होगा।

अत्यधिक प्रवास और कहीं पर ध्यान केंद्रित न करने से विशेष लाभ नहीं होगा। आपका क्रमश अनेकों से परिचय होगा, अनेक भले-बुरे, चित्र-विचित्र अनुभव आएँगे। उनका उपयोग कार्यदृष्टि से तत्परता से करें। (मूल मराठी)

४९० ईश कृपा से दृढनिष्ठा का पाठ

श्री वसतराव केलकर, रत्नागिरि २३ जुलाई, १९६२

नागपुर का श्रीगुरुपौर्णिमा महोत्सव १७ जुलाई को उत्तम रीति से सपन्न हुआ। उत्सव के चार-पाँच दिन पूर्व जोरदार वर्षा की झडी लगी रही। कार्यक्रम प्रारंभ होने के कुछ समय पूर्व वर्षा थमी। आकाश निरभ्र हुआ। इससे वातावरण में प्रसन्नता छा गई। सघस्थान पर कीचड हो जाने से सपूर्ण समय सभी स्वयसेवक बधुओं को खडे रहना पडा। छोटी-छोटी कठिनाइयाँ आती ही रहती हैं। उनकी ही नहीं, तो बडी-बडी आपत्तियों की चिंता न कर निश्चय लगन तथा अनुशासन से स्वीकृत काय करने की निष्ठा आत्मसात होने के लिए ईश-कृपा से ऐसे छोटे-छोटे प्रसगों से पाठ मिलता है। उनका उपयोग करते हुए ईश-कृपा पर कृतज्ञतापूर्वक निष्ठा दृढतर करना तथा उसकी कृपा से अपना श्रम सफल होकर अभीप्सित राष्ट्र-वैभव प्राप्त होगा इस अटल विश्वास से कार्यरत होना, यही उचित है। (मूल मराठी)

४९१ रुग्ण कार्यकर्ता को मार्गदर्शन

श्री बाबूराव डोंगरे, चिखली-विदर्भ २३ जुलाई, १९६२

स्वास्थ्य की दुर्बल अवस्था में निष्क्रियता आना अपरिहार्य है। उसका खेद करते रहना लाभदायी नहीं। निश्चित मन से योग्य उपचार

आहार-विहारादि पर ध्यान देकर शरीर अच्छा करना, यही इस अवस्था में एकमेव कार्य है। मास भर में अच्छा होने का आपको विश्वास होने से अब पुन कार्य में लगने हेतु अवधि भी बहुत बची नहीं है। इसलिए अब समय है कि मन को उल्लसित रखें।

कार्य करने में जी खट्टा न करें, उसमें अवांछित विकार पैदा न हो एव व्यवहार में विचित्रता न आए, इसकी ओर विशेष चिता करनी पडती है। आप विचारवान एव अनुभवी हैं, इसलिए ऐसी चिता करने की बारी आप पर नहीं आएगी। शरीर-स्वास्थ्य प्राप्त कर, कार्य का स्वरूप, क्षेत्र आदि के सबध में विचार कर निर्णय ले सकेंगे, ऐसी अवस्था शीघ्र आएगी। इस ओर आप पूरा ध्यान रखें। (मूल मराठी)

४६२ वस्तुस्थिति-निवेदन

श्री के श्रीराममूर्ति, सघचालक   २३ जुलाई, १९६२

दिनाक १७ ७ १९६२ को सपन्न हुआ श्री गुरुपौर्णिमा उत्सव डेढ घटे से अधिक समय चलता रहा। (उत्सव के पूर्व हुई वर्षा के कारण) पूर्ण कार्यक्रम में स्वयसेवकों को खडा ही रहना पडा। ऐसी छोटी-मोटी कठिनाइयाँ, लक्ष्यप्राप्ति में दृढ निश्चय, अनुशासन एव स्वेच्छा से स्वीकृत अपने कर्तव्य को तत्परता से करते रहने का सस्कार प्रदान करनेवाली सिद्ध होती हैं। हमारी ग्रहण-क्षमता के अनुरूप इस प्रकार की शिक्षा देने की कृपा दयाघन परमात्मा करता रहता है।

मेरी श्रद्धेय वृद्ध माता बहुत दुर्बल हुई हैं। विशेष कोई व्याधि तो नहीं, किन्तु शक्तिक्षय द्रुतगति से हो रहा है। भगवान की इच्छा! सब ठीक होगा, ऐसी ही आशा हम सभी करें और जो भी पूर्व-सचितों का परिणाम भाग्य में होगा उसका स्वागत करने के लिए सिद्ध रहें। आप जैसे सत्प्रवृत्त सभी मित्रों की सदिच्छा के कारण उन्हें कष्ट में भी आराम एव मन स्वास्थ्य अवश्य प्राप्त होगा, इसमें मुझे सदेह नहीं हैं। (मूल अग्रेजी)

४६३ आशकित मन के स्पष्ट स्वर

श्री गजाननराव जोशी, प्रचारक, पटना   २४ जुलाई, १९६२

आवासीय विद्यालयों का विशेष लाभ होता है। यह अभिनदनीय है

कि आपने इस विद्यालय (पाटलिपुत्र शिक्षा मदिर) को आदर्श सस्था बनाने का सकल्प किया है। परतु विगत कुछ वर्षो में स्वय का सामर्थ्य न देखते हुए आपने अनेक काम शुरू करने का उपक्रम किया था। उसमें यश तो मिला ही नहीं, अपितु वहुत वडी योजनाओं के लिए साधन जुटाने के उद्देश्य से आप कुछ लोगों के कर्जदार वन गए हैं एव अव ऋण चुकता करने के लिए आपके पास कोई अनुकूलता न होने से वे सव उस मात्रा में डूवने के लक्षण दिखते हैं। यह दु खद एव अनुचित वस्तुस्थिति ध्यान में लेकर आप वहाँ क्या सकल्प करनेवाले हैं एव उसमें कौन फँसकर आपके प्रति भविष्य में मन में अविश्वास एव मनमुटाव रखनेवाला है, इस विपय में कोई अनुमान लगाना सभव नहीं है। यदि ऐसा कुछ हुआ तो विद्यालय को भारी नुकसान होगा। आपको मारा-मारा फिरना पडेगा, दूसरा उपक्रम ढूँढना पडेगा। आपकी एव आपके पुराने काल से चले आ रहे सबधों के कारण कुल कार्य पर भी आँच आ सकती है। इस आशका से मन ग्रस्त हो रहा है। मुझे लगता है कि आप उत्तेजित न होकर शात चित्त से इसका विचार कर योग्य निर्णय लें। आपके प्रति जो आत्मीयता मेरे हृदय में है, उससे प्रेरित होकर ही यह सब इतना स्पष्ट लिखा हे। इतना स्पष्ट और अधिक लिखने में कटुता व्यक्त होने की सभावना रहती है। अत आपको इस बार यश प्राप्त होकर पुराने सब प्रसग शीघ्र समाप्त कर डालने की अनुकूलता प्राप्त होने के लिए मैं श्री प्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

४६४ शाखा के नित्य कार्यक्रम

श्री मधुकर थोरात, वडगॉव, कादली २५ जुलाई, १९६२

आपने वडगॉव में शाखा फिर से प्रारम्भ की, यह पढकर बहुत आनद हुआ। नियमित रूप से शाखा चलाएँ। खेल आदि कार्यक्रम भी, गडवडी न होते हुए सुव्यवस्थितता से अनुशासन की ओर ध्यान रखकर लिए जाएँ। आपस में सच्चा वधुभाव रहे। सदेव परस्पर मिलना-जुलना, घर पर आना-जाना, प्रौढों से नम्र तथा मधुर व्यवहार हर अवसर पर एक-दूसरे की सहायता करने की सिद्धता ये वातें सहज रूप से हों।

अपनी मातृभूमि का विस्तार, पवित्रता, इतिहास आदि के विषय में नित्य विचार किया जाए तथा परस्पर को वताया जाए। श्री शिव छत्रपति और उनकी प्रेरणा से तैयार हुए श्रेष्ठ राष्ट्रभक्तों के पुनीत चरित्रों का

अध्ययन-चिंतन करें, उनका वह गुण, जिससे उन्होंने प्राणपण से राष्ट्रधर्म का उत्थान किया, हममें भी पैदा हो, ऐसी सीख मन को देते रहें।

(मूल मराठी)

४६५ 'प्रयाग विधि पत्रिका' नित्य प्रगति करे

श्री जगदीशस्वरूप जी, प्रयाग　　　　　　　　　　　　३१ जुलाई, १९६२

प्रयाग में आपने 'विधि पत्रिका' के दो अंक दिए थे। यह ऐसा प्रयास है कि जिसका आग्रहपूर्वक प्रचार करना आवश्यक है। विधि-संबंधी संज्ञाएँ इस पत्रिका द्वारा सुगमता से सब संबंधित लोग सीखकर अंग्रेजी प्रयोगों की दासता से मुक्त हो सकेंगे। आजकल अंग्रेजी की पुनः प्रतिष्ठापना करने की परानुकरणशील दासवृत्ति बढ रही है और हिंदी की अवगणना करने की चेष्टाएँ बल पकड रही हैं। इस दूषित वायुमंडल को शुद्ध करने के लिए प्रबल प्रयत्न करने की आवश्यकता है। जीवन के सब क्षेत्रों में यह होना चाहिए। और एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में आपने यह 'पत्रिका' चलाकर अतीव उपयुक्त पग उठाया है। यह 'प्रयाग विधि पत्रिका' दिन-प्रतिदिन प्रगति करे, यही श्रीभगवान से प्रार्थना है।

४६६ व्यवसायी स्वयंसेवकों में कार्य बढाएँ

श्री शिवराय तेलंग, मुंबई　　　　　　　　　　　　३ अगस्त, १९६२

अनेक पुराने-नए व्यवसायी बंधुओं को निकट संपर्क द्वारा कार्योन्मुख करने का आपका विचार बिल्कुल योग्य है। बीच में श्री गोवर्धन जी का एक पत्र आया था। उस समय मैंने उन्हें प्रोत्साहन नहीं दिया था, क्योंकि मेरी धारणा यह हुई कि नियमित संघकार्य करना संभव नहीं हैं, अतएव उसके अतिरिक्त अन्य उपक्रम करने का विचार उनके मन में आया होगा। वैसा मैंने उनको थोडा-सा कहा भी था। उस कहने का उन्हें थोडा क्रोध भी हुआ होगा। अर्थात् वे पुराने निष्ठावान स्वयंसेवक हैं, अतएव वह क्रोध थोडे समय ही रहा होगा, क्योंकि उनके आचरण पर तथा अन्य व्यवहार पर कोई विपरीत परिणाम नहीं हुआ। होना संभव भी नहीं है। उनकी कल्पना के बारे में मेरे मन में पैदा हुई आशंका निकाल दी जाए तो वह उत्तम है। संघकार्य का प्रत्यक्ष संपर्क दृढ करने का लक्ष्य रहा तो उनकी कल्पना उपयोगी सिद्ध होनेवाली है। वे स्वयं काम करने को सिद्ध हैं, ऐसा उन्होंने

आश्वासनपूर्वक लिया था। वे और उनके समान अन्य बंधु आपकी योजनानुसार काम करने को आगे आए तो आपकी कल्पना शीघ्र साकार होगी और मुंबई के वायुमंडल में अपने विचार अधिक विस्तृत क्षेत्र में अधिक गहराई तक जड़ें जमा पाएँगे।

संप्रति अनेक विचार मन में हैं। प्रांत-प्रचारकों की बैठक में विभिन्न प्रांतों में दीर्घ कालावधि के लिए प्रचारक का काम करनेवाले उत्तम, कर्तृत्ववान, कुशल, निष्ठावान, धैर्यशाली, क्षणिक यशापयश से विचलित न होनेवाले क्षमावान कार्यकर्ता चाहिए और आपकी शाखा में से ऐसे कार्यकर्ता सामने आएँ, यह अपेक्षा व्यक्त की गई है। (मूल मराठी)

४६७ अत्यल्प क्षमता का खेद न करें

श्री दत्तोपंत हर्षे, सातारा ४ अगस्त, १९६२

विचारपूर्वक आपने स्वयं की धारणा उत्तम की है। केवल स्वयं की क्षमता अत्यल्प है ऐसे विचारों से ग्रस्त न हों। जानकार लोग कहते हैं कि हम ही कर्तृत्ववान हैं, यह अहंकार का विचार जिस प्रकार त्याज्य है, उसी प्रकार स्वयं की शक्ति की अवहेलना करना भी त्याज्य ही है। जो कर्तृत्व हो, वह जितना हो, उतना पूर्णतः काम में लगाना प्रमुख बात है। ऐसा हुआ तो कम-अधिक का भार श्री परमेश्वर पर। उसके बारे में हमें खेद करने की आवश्यकता नहीं है।

यह सच है कि समाज के विचारों-भावों में अल्प परिवर्तन हुआ है। मुझे विश्वास है कि जीवटता से, स्नेह से, आत्मीयता से प्रयत्न करते रहे, तो यह स्थिति बदलेगी तथा योग्य धारणाओं से युक्त समाज खड़ा होगा। समाज की इस अवस्था का आविष्कार हुआ, तो सारे संकट दूर हो जाएँगे तथा इसमें संदेह नहीं कि श्रेष्ठ सुखपूर्ण जीवन प्रस्थापित करने की अनुकूलता अनुभव होगी। (मूल मराठी)

४६८ राष्ट्र की मृत्युंजय अवस्था का प्रतीक शाखा

श्री वी शेषगिरि, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु ४ अगस्त, १९६२

आशा करता हूँ कि अपनी तिरुनेलवेली शाखा प्रगति पथ पर है। हम लोग यह ध्यान रखें कि वर्तमान परिस्थिति में जब बाकी सभी लोग

समाज विघटन करने के कार्य में आसुरी आनद मानते हैं, अपना देश अतर्बाह्य सकटों से घिरा हुआ है, इस तरफ दुर्लक्ष्य करते हुए एक-दूसरे के साथ कृत्रिम प्रश्नों पर सघर्ष कर रहे हैं, जिसके कारण हमारे अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हुआ है, उस परिस्थिति में हमारा ही कार्य ऐसा है, जो अपनी स्वाभाविक एकात्मता निर्माण करने में प्रयत्नशील है तथा चारों ओर की परिस्थिति का यथार्थ ज्ञान लोगों को करा रहा है। अत हम सब उधमशील रहें तथा अपनी पूर्ण शक्ति के साथ अधिकाधिक लोगों को शाखा में लाएँ। यही हमारे राष्ट्र की सामर्थ्यशाली, सुसगठित तथा मृत्युजय अवस्था का स्थायी आविष्कार है। (मूल अग्रेजी)

४९९ विद्यातुर का सकल्प पूर्ण हो

श्री बालकृष्ण नाईक, मुबई ६ अगस्त, १९६२

अधिकाधिक वैज्ञानिक एव तात्रिक ज्ञान प्राप्त करने के हेतु आप जा रहे हैं, यह ठीक ही है, क्योंकि पृथ्वी के उस भाग में निवास करनेवाले बधुओं ने उस क्षेत्र में अभिनदनीय प्रगति की है, कर रहे हैं और उनके ज्ञान का, ज्ञानप्राप्ति की तीव्र इच्छा को अपने में जगाकर, उनकी अध्ययनशीलता, उद्योगप्रियता, अध्यवसायिता के गुणों का अपने में आविर्भाव कर लाभ उठाना उचित व आवश्यक है। आपके इस सकल्प को श्रीभगवान पूर्ण करे।

५०० सात्वन

श्री दादासाहेब गोरवाडकर, नासिक ९ अगस्त, १९६२

आपकी तीर्थ स्वरूपी माताजी को जो असहनीय कायिक और मानसिक पीडा हो रही थी, वह ध्यान में लेते हुए यह कहना होगा कि श्रीपरमेश्वर ने उन्हें शीघ्र उठाकर बडी कृपा की कि उन्हें अधिक काल तक पीडा भोगने नहीं दिया। इस एक सतोष की बात को छोडकर, यह घटना आप सब भाई-बहनों को अत्यत दु खदायी है। आपकी माताजी पर उत्कट कृतज्ञतायुक्त भक्ति थी, इसलिए यह स्पष्ट है कि मातृवियोग की तीव्र वेदना आप अनुभव कर रहे होंगे। फिर भी उन्होंने पुत्र-पुत्रियों के सुखी ससार देखे, नाती-पोते देखे, उनपर लाड-प्यार की वर्षा की। ऐहिक दृष्टि से उनका जीवन सार्थक हुआ—ऐसा विचारकर तथा ज्येष्ठता के नाते पूरे

परिवार में स्नेह-सबध दृढ करने का आपका दायित्व है, यह स्मरण कर दु ख निगलना, मन सतुलित रखना तथा स्वकर्तव्य की ओर पूरा ध्यान देना योग्य है। आप जानकार हैं, अनुभवी हैं, विचारवान हैं, विवेकसपन्न हैं। मैं आपको कुछ कहूँ, ऐसा नहीं है। (मूल मराठी)

५०१ षष्ट्यब्दिपूर्ति पर हार्दिक शुभेच्छा

श्री रामभाऊ प्रभुदेसाई, नासिक — ६ अगस्त, १९६२

आप माननीय श्री बलवतराव पलशीकर सत्कार समिति के कार्यवाह है, इसलिए यह पत्र भेज रहा हूँ। परसों दिनाक १२ अगस्त का यह सत्कार-समारोह डा श दा पेंडसे की अध्यक्षता में होनेवाला है। एक प्रसिद्ध विद्वान साहित्यिक तथा ज्ञानेश्वर महाराज के तत्त्वज्ञान के मर्मज्ञ, ज्ञानेश्वर वाङ्मय में नित्य अवगाहन कर विशुद्ध, सात्विक, भक्तिपूर्ण जीवन जीने में अत्यत सफल हुए माननीय बलवतराव पलशीकर के सत्कार-समारोह का अध्यक्ष स्थान मडित कर रहे हैं, इसमें औचित्य है। यह मणि-काचन सयोग है। अत इसमें सदेह नहीं कि समारोह अविस्मरणीय होगा।

मेरा और माननीय श्री बलवतराव पलशीकर का सबध ऐसा है कि इस 'सत्कार-समारोह' पर औपचारिक कुछ लिखना मुझे सभव नहीं है। किंतु आप सत्कार करने को सर्वथा योग्य हैं। जिनके सत्कार के कारण सत्कार करनेवालों का भी जो सम्मान होता है, वह केवल सान्निध्य-गुण के कारण। श्रेष्ठ व्यक्ति को ही गौरव करने के लिए चुना गया है, इसके लिए आपका तथा सत्कार-समिति के अध्यक्ष आदि सभी सम्माननीय सदस्यों का मैं अभिनदन करता हूँ। श्रेष्ठ व्यक्तियों की सख्या अल्प है, उनका श्रेष्ठत्व पहचाननेवाले गुणग्राहक उससे भी अल्प हैं। यदि हुए भी, तो प्रकट रूप से सत्कार करने का विचार सूझकर उसके अनुसार सारी व्यवस्था करनेवाले तो अत्यल्प हैं। इसलिए यह समारोह अलौकिक सयोग है। प्रसिद्धिपराङ्मुख माननीय श्री बलवतराव पलशीकर द्वारा इस कार्यक्रम को सहमति दर्शाई गई यह उनके प्रति आपके उत्कट स्नेह का ही द्योतक है। इसलिए आपका और सब सदस्यों का मैं अभिनदन कर, उनके आभार मानता हूँ।

माननीय श्री बलवतराव पलशीकर को मै यहाँ से ही मन ही मन सादर साष्टाग नमस्कार करता हूँ। मैं अधिक कुछ लिखूँ, तो वह उन्हें प्रिय नहीं होगा।

श्री परमेश्वर की असीम कृपा से उन्हें दीर्घायुरारोग्य का लाभ हो, स्वीकृत कर्तव्य उत्कृष्टता से करते हुए भगवान के पुण्य-कीर्तन में उन्हें अखड समरसता का लाभ हो। (मूल मराठी)

५०२ समर्थ श्रीराम प्रभु

श्री गोविंद स्वामी आफले, १५ अगस्त, १९६२

श्री राममदिर की नींव डालने का समारोह आप श्री बर्वे के करकमलों द्वारा सपन्न करने जा रहे हैं श्री रामप्रभु सर्वसमर्थ हैं, अज्ञानी जीवों को सन्मार्ग दिखाने के लिए श्रद्धास्थान मदिर आदि रूप में वह स्वय ही खडे करवा लेते हैं। हम निमित्त मात्र होते हैं। निमित्त होने का सौभाग्य भी श्रेष्ठ है। वह आपको प्राप्त हुआ, यह उसी की ही कृपा है। ऐसी ही सदैव कृपा आप पर रहे एव आपका सकल्प सिद्ध हो, इसके लिए श्रीपरमेश्वर के चरणों में नम्र प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

५०३ तमिल समृद्ध भाषा

श्री सुधाकर सोमलवार, सेलम १५ अगस्त, १९६२

आप सेलम पहुँच गए तथा आपकी सारी व्यवस्था हो गई, यह पढकर सतोष हुआ। धीरे-धीरे तमिल भाषा सीखकर आत्मसात करें। वह बहुत समृद्ध भाषा है। अपनी सास्कृतिक परम्परा का बहुत बडा कोष उस साहित्य में है। भाषा सीखने से वहाँ के स्वयसेवक बधुओं से सहजता से बोलचाल होने में सुविधा होकर आपका मन भी उत्साहित होगा। आप जो शिक्षा प्राप्त करने के लिए गए हैं, उसमें उत्तम ध्यान दें तथा उच्च से उच्चतर श्रेणी प्राप्त करें। (मूल मराठी)

५०४ अडचने हमेशा नहीं आतीं, सफल हो

श्री सुधीर फडके, पुणे-२ ७ सितबर, १९६२

ज्ञात हुआ कि आप नया काम हाथ में ले रहे हैं। वास्तव में उद्योग का यह स्वरूप आप को चिरपरिचित है, मनोनुकूल है। पीछे कुछ कारणों से उसमें बाधाएँ आई होंगी एव हानि होकर उसकी क्षतिपूर्ति करने के लिए

इतना दीर्घकाल आपको कष्ट झेलने पडे होंगे। परतु ऐसा नहीं कि ऐसी अडचनें हमेशा आती हैं। उसमें अपना उद्योग सुरक्षित रखकर उसकी उन्नति करने का ज्ञान एव कौशल्य आपको उपलब्ध होने से विश्वास है कि इस नवीन उपक्रम में आप अधिकाधिक सफल हो सकेंगे।

उत्तम, उद्बोधक चित्रपट निर्माण में आपको उत्तरोत्तर उत्तम यश एव कीर्ति प्राप्त हो इसलिए श्रीप्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

५०५ भगवान शुद्ध बुद्धि व पवित्र मन हमे दे

श्री दशरथसिह चोडाया, निवाहेडा, राजस्थान ८ सितबर, १९६२

'सावत्सरिक क्षमापना' छपे हुई कार्ड पर ही आपके द्वारा लिखा पत्र मिला। प्रतिवर्ष के इस पुण्य पर्व पर यह नियम मनुष्य मात्र में सद्भाव का व्यवहार बनाकर रखने में सहायक तथा स्वत में नम्रता का पवित्र गुण प्रस्थापित करनेवाला होने से बहुत श्रेष्ठ हैं। तो भी 'क्षमा' करने का मैं अपनी ओर अधिकार ले नहीं सकता। श्रीभगवान ही उसका अधिकारी है। अत मैं उसी के पास प्रार्थना करता हूँ कि हम सब दुर्बल मानवों को सब त्रुटियों के लिए क्षमा कर आगे ऐसे अपराध जाने या अनजाने में भी हम लोगों की ओर से न हों, ऐसी शुद्ध बुद्धि व पवित्र मन वह हमें आशीर्वाद रूप प्रसाद के नाते देकर हम सबको अपने सेवक के योग्य बनाए।

५०६ नींव का पत्थर बनकर रहना चाहता हूँ

श्री के आर मलकानी, दिल्ली ८ सितबर, १९६२

जैसा कि आपको मेरी मनोरचना का ज्ञान है, मैं अपने भव्य राष्ट्रप्रासाद की नींव में दबा हुआ एक छोटा-सा पत्थर बनकर रहना चाहता हूँ। (मूल अग्रेजी)

५०७ प्रचारक का धर्म

श्री मनोहर आठल्ये, कटक २७ अक्तूबर, १९६२

यह ज्ञात हुआ कि आप अपने नवनियोजित क्षेत्र में पहुँच गए। कुल सपूर्ण शहर की जानकारी एव लोगों के मन का गठन शीघ्र ही आपके

ध्यान में आएगा। उस पर से जो बोध होगा, वह एव श्री बाबूराव पालधीकर जी के अनुभव– दोनों का मेल बिठाकर कुशलता से कार्य करें। प्रारभ में यश भले ही आँखों को न जँचे, तो भी उत्साह भग न होने दें। अपनी पूरी योग्यता लगाकर प्रयत्न करते रहना हम प्रचारकों का स्वाभाविक धर्म है। उसके परिणामस्वरूप काम खडा रहेगा ही। (मूल मराठी)

५०८ सघकार्य मे सच्ची सिद्धियो की प्राप्ति

श्री बाबूराव पालधीकर, कटक २७ अक्तूबर, १९६२

उनकी मनोवृत्ति में कार्य करने की भावना विशेष है या निवृत्ति का जीवन ग्रहण करने की, यह स्पष्टत समझ में नहीं आया। आपके कहने पर कार्य प्रारभ कर, बीच में निवृत्ति की इच्छा प्रबल होकर वे बाद में कहीं निकल गए, तो वह बहुत लाभदायक नहीं होगा। आपका निश्चित मत हो कि ऐसा कुछ नहीं होगा, तो आपकी योजना उपकारक होगी।

अपना कार्य श्रद्धा, निरहकार बुद्धि तथा ईश्वरार्पण वृत्ति से उसी की आज्ञा से, उसी के ही धर्मसस्थापन के कार्य का अपने अश के रूप में हम कर रहे हैं तथा इसी में से पारमार्थिक उन्नति निश्चित होगी, यह उनको अच्छी तरह समझाएँ। परमार्थ, चमत्कारादि क्षुद्र सिद्धि नहीं है। उसमें वैसा कुछ भी दिखाई नहीं देगा, मन शाति तथा प्रसन्नता सच्ची सिद्धि है और वह आत्मसात होगी, इसकी उन्हें जानकारी दें। सब सुख-दु ख, यशापयश, मान-अपमान, आदि जो-जो प्राप्त होगा वह धीरज से ग्राह्य कर, अविरत कार्यरत रहें, यही उचित ओर आवश्यक होने से वैसा करने में मन समरस करें, यह उनके अत करण पर अकित करने का प्रयत्न करें। इस प्रयत्न में आपको यश मिलता हुआ दिखाई दे तो मुझे विश्वास है कि वे अपने लिए बडे आधारभूत सहायक सिद्ध होंगे। आपके सान्निध्य ओर सहवास में कार्य करने का विचार मन में अकुरित हुआ है, अतएव आपके मार्गदर्शन में, आपके ही कार्यक्षेत्र में उनके कर्तृत्व का विकास सुलभता से हो सकेगा। (मूल मराठी)

५०९ राजस्थान के प्रवास से लौटने पर

प श्री सातवलेकर, पारडी ३१ अक्तूबर, १९६२

कार्य ठीक है, परतु कुल सब लोगों की, अच्छे-अच्छे, पढे-लिखे

लोगों की भी ग्रहण शक्ति क्षीण भी हो गई है एवं उनमें विचार-विमर्श में ही संतुष्ट होने की वृत्ति है जिससे कार्य बढ़ाने पर भी उसमें दृढ़ता एवं सच्चा चैतन्य पैदा होने में समय लगता है। कार्यकर्ताओं को मेहनत भी बहुत उठानी पड़ती है, परन्तु परिश्रम करना अपना धर्म ही है एवं उसका अच्छा परिणाम हो रहा है। (मूल मराठी)

५१० पत्रोत्तर पाने का अभिमान

श्री नामदेव घाटगे, मुंबई   ३१ अक्तूबर, १९६२

आजकल प्रत्येक पत्र का उत्तर देना संभव नहीं होता है। फिर भी पुरानी स्मृति रखकर कितने ही बंधु केवल उत्तर पाने की अपेक्षा से पत्र भेजते हैं। काम कुछ भी नहीं रहता, केवल कौतुहल और पत्र-प्राप्ति का संतोष, अनेक बार अभिमान। अभिमान सदासर्वदा बुरा ही है। अब उन लोगों को यह समझता नहीं कि अकारण मेरा काम बढ़ाने प्रयत्न करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनको मेरे बारे में आदर और श्रद्धा तो छोड़ो, सामान्य आत्मीयता तथा सहानुभूति भी नहीं है। और आजकल काम के पत्रों की ओर भी ध्यान देने को समय पूरा नहीं पड़ता है, इसलिए वे अनुत्तरित रहते हैं या अन्य कोई उनके उत्तर भेजता है। उसके कारण ये लोग अप्रसन्न होते होंगे। यह बहुत ही अनिष्ट है, परंतु उपाय नहीं है। इसलिए मैं सब से प्रार्थना करता रहता हूँ कि अपने कार्य का निवेदन करनेवाले पत्र नियम से भेजे जाएँ, परंतु हर बार उनके उत्तर पाने की अपेक्षा न की जाए आप इसी रीति से पत्र भेजते हैं, इसलिए आपके बारे में यह प्रश्न पैदा नहीं होता।

आजकल चीन के ही आक्रमण की वार्ताएँ वातावरण में गूँज रही हैं, इस परिस्थिति में सभी देश-बंधुओं की कर्तव्यनिष्ठा जागृत रखकर क्षुद्र स्वार्थ, मतभेद, हृदय में से हटाकर काम करना आवश्यक है। इसका बोध आपके क्षेत्र में विशेष स्पष्टता से रहना आवश्यक है। इस दृष्टि से उचित प्रयत्न करते रहें।

परंतु ऐसे प्रयत्न करने के लिए जो परिश्रम करने पड़ेंगे, वे स्वास्थ्य ठीक होने पर ही कर सकेंगे। आपने तो लिखा है कि स्वास्थ्य 'कुछ नादुरुस्त' है। इससे चिंता लगी हैं। पर्याप्त ध्यान देकर, योग्य उपचार करवाकर शरीर स्वस्थ एवं कार्यक्षम बनाएँ जिससे उत्साह से काम कर सकेंगे। (मूल मराठी)

५११ जागृत रखें, जागृत करें

प रामनारायण शास्त्री, इदौर — १ नववर, १९६२

देश की वर्तमान सकटग्रस्त स्थिति में आक्रामकों की भीति के साथ अपने नेताओं की दुर्वल नीति अतीव भयावह प्रतीत हो रही है। देखें, समय क्या-क्या रग लाता है। हम सब अपनी ओर से जनसाधारण के धैर्य-आत्मविश्वास को जगाकर तथा दृढ करके आक्रमणकारियों पर पूर्ण विजय पाने के लिए उचित परिश्रम की सिद्धता जागृत करें, जागृत रखें। यही इस समय अपने सामने प्रथम कतव्य है।

५१२ एकतरफा विचार ठीक नहीं

श्री त्र्यबकराव मोरे, पोखरी - विदर्भ — २ नवबर, १९६२

'एक सतही स्तर पर दूर गया स्वयसेवक' ऐसा आपने स्वय का वर्णन किया है, वह आश्चर्य लगने लायक है। दूर जाना क्यों हो इसका एकतरफा विचार न कर, दूसरों के दोषों का ही केवल विचार न कर, अपनी भी कुछ गलती तो नहीं होती होगी, यह विचार अधिक महत्त्व का समझकर करें, जिससे सब गलतफहमियों का निवारण होकर वातावरण में स्नेह, खुलेपन का सुख अनुभव में आएगा। कदाचित् परिस्थिति आपको दूर रख रही हो। कितने ही बधु नौकरी-चाकरी आदि के कारण इच्छा के विरुद्ध दूर रहते हैं, विवश होकर रहते हैं। ऐसी स्थिति में मन प्रसन्न रखना, इतना ही अपने हाथ में रहता है। (मूल मराठी)

५१३ नाच न जाने, आँगन टेढा

श्री सपतराव शिदे, पुणे — २ नवबर, १९६२

अपने सामने अपना पवित्र कार्य है। उसके अनेक स्वयसेवक हैं। उनकी ओर शुद्ध मित्रत्व की भावना से देखें एव व्यवहार करें। अनेक बधु जो परिचय के हैं, परतु अब तक स्वयसेवक के नाते सहयोगी नहीं बने हैं, उनकी ओर ध्यान दें। उनमें व अपने में अलगाव का भाव न रहे— ऐसा प्रयत्न करें। इस प्रकार अपने क्षेत्र में कार्य बढाने की ओर ही ध्यान दें। यही आवश्यक है।

अनेक लोगों से भेंट करते समय उनकी भली-बुरी बातें दिखाई देंगी। उनसे जिसको घृणा आती है, उसी घृणास्पद समाज के हम हैं, इसका ध्यान कैसे रहे? फिर भी उन सबके मन में समाज बाधवों के प्रति आत्मीयता कैसे रहे? समाज की त्रुटियाँ देखते हुए प्रत्यक्ष परमेश्वर की लज्जा-शरम निकालना कितना बुरा है, इसका विचार करें। मन की ऐसी अवस्था ठीक नहीं है। वह छोड़कर श्री परमेश्वर पर, उसकी चिरतन अच्छाई पर पूर्ण श्रद्धा एव समाज के प्रति सच्ची आत्मीयता की भावना हृदय में नित्य पालन करते रहें तो निर्दोष काम कर सकेंगे। यह अनेक ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं के अनुभव पर से आपके मार्गदर्शनार्थ लिखा है। इसका विचार करें। (मूल मराठी)

५१४ ठडे मन से काम करने का समय

डा वि वि पेंडसे, ४ नवबर, १९६२

सघ स्थिति की ओर देखें तो ऐसा अभागा देश में नहीं होगा, जिसे चिता न होती हो। आपको विशेष चिता होना स्वाभाविक है। परतु उसके कारण कुछ भी सूझता नहीं, ऐसी मानसिकता लेकर आप पत्र लिखने के लिए उद्युक्त हुए, इससे विशेष चिता हो रही है। मन ठडा रखकर काम करने का यह समय है। विचारपूर्वक कर्तव्य निर्धारित कर चलना हितकारी होगा। इसे कोई भीरुता या अदूरदृष्टि भले ही कहे फिर भी उत्तेजित न होकर योग्य, वही करनेवाले यश प्राप्त करेंगे। (मूल मराठी)

५१५ सर्वस्व समर्पण अपना स्वभाव एव धर्म

श्री मधुकर राव देव, पटना ६ नवबर, १९६२

परिस्थिति कैसी भी रहे, हमें अपना कर्तव्य पूर्ण करने के लिए प्राणपण से चेष्टा करनी पडेगी। जनता में एकता एव दृढ निश्चय आत्मविश्वास एव परिश्रम करने की सिद्धता पैदा करनी चाहिए एव सामने कोई भी क्षुद्र स्वार्थ न रखकर मातृभूमि की मुक्ति गौरव के लिए, उसकी सेवा करने के लिए सर्वस्व समर्पण, यही अपना स्वभाव एव धर्म है– इस प्रकार विशुद्ध भूमिका का निर्माण करने के लिए प्राणपण से चेष्टा करनी चाहिए। इसमें निराशा, विरक्ति आदि नहीं चाहिए। (मूल मराठी)

५१६ राष्ट्रनिष्ठा विचारवान व्यक्ति का कर्त्तव्य

श्री नारायणराव धनागरे, वाशिम, मुबई   १८ नवबर, १९६२

ऐसा दिखता है कि मेरे भाषणों के सबध में जानबूझकर अपसमझ निर्माण करने का प्रयत्न चालू है भाषण सपूर्ण पढने पर ज्ञात होगा कि उसमें बुरा लगे, ऐसा कुछ भी नहीं है। उसमें जो टीका है, वह तो सुधार होने के लिए आत्मीयता की भावना से ही कहा गया है। सत्तारूढ बधुओं का विरोध करना होता या उनका बुरा सोचना होता तो उनकी प्रशसा करने की ओट में सुरक्षित रहकर भीतर से वैसी कार्यवाही की जा सकती थी। माननीय प नेहरू के ऐसे स्तुति- पाठक देश की दृष्टि से 'विष कुभ पयोमुख' जैसे हैं, यह किसी को भी दिखने लायक है। अपने को ऐसा नहीं होना है। जो हितकारक होगा, वही कहना, मधुर बोलना एव अनिवार्य होने पर ही दिखावटी कटु शब्दों का प्रयोग करना यही प्रत्येक राष्ट्रनिष्ठ विचारवान व्यक्ति का कर्तव्य है। सब योग्य राष्ट्र-सुरक्षा सवर्धन कार्य में उन्हें सर्वतोपरी समर्थन एव सहायता देने की नीति का पालन करना भी सबका कर्तव्य है। हम लोग सघ का कार्य इसी दृष्टि से कर रहे हैं, इसलिए माननीय श्री कन्नमवार जी की आज की अपसमझ दूर होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

चीनी युद्ध के समय प्रारभिक असावधानी के विषय में सघ ने टीका की, फिर भी युद्ध-कार्य में सर्व प्रकार की सहायता की, यह सर्वविदित है। (मूल मराठी)

५१७ केवल सगठन कार्य मे रुचि है

श्री विजयभूषण सिहदेव, जशपुरनगर   ११ मार्च, १९६३

आप तो जानते ही हैं कि मुझे राजनीति में रुचि नहीं है। केवल समाज के सगठन का कार्य मात्र कर रहा हूँ। उससे यह अवश्य लगता है कि जैसे समाज के जाति-जाति, पथ-पथ के सब बधु एकत्र आएँ, एक भाव से काम करें वैसे ही पक्षोपपक्ष में फँसे हुए बधु भी एकत्र होकर राष्ट्र के लिए समान विचार करने तथा समाज को सामर्थ्यसपन्न बनाने में प्रयत्नशील हों। यह करते हुए किसी प्रकार जोर-जबरदस्ती से तो काम चलेगा नहीं, न ही ऐसा कभी विचार आया। अपना ही कार्य बढने से लोगों की भावनाएँ

ठीक होगी, इसी विश्वास से चल रहा हूँ। आपसे भेंट होने पर सभी विषयों पर विचारपूर्वक वातचीत होगी ही।

५१८ कर्तव्यों के अति कष्टप्रद संघर्ष

श्री पी परमेश्वरन, एरनाकुलम (केरल) १२ मार्च, १९६३

आप की मानसिकता समझना कठिन नहीं है। परंतु हमें तो परमात्मा के आशीर्वाद के रूप में प्राप्त ध्येय सिद्धि के लिए कार्य की निष्ठा से, हृदयपूर्वक और अपनी पूरी शक्ति से उत्साहपूर्वक प्रयत्नशील रहने की शिक्षा एवं प्रेरणा मिली है, जो कभी भी क्षीण नहीं हो सकती। उस लक्ष्यप्राप्ति के पथ का अनुसरण करते समय हमें अपनी कर्तव्यपूर्ति में परस्पर विरोधी एवं विसंवादी कर्तव्यों के अति कष्टप्रद संघर्ष से गुजरना अपरिहार्य है। अपने स्वाभाविक स्नेहपाशों की प्रबल खींचातानी में स्वकर्तव्य का निर्धारण करते समय संघर्ष अनिवार्य है। इस संघर्ष में सफलता प्राप्ति के लिए हमें चाहिए कि जगज्जननी भारत-माता के चरण कमलों में मुक्त हृदय से हम समर्पण करें और उनकी कृपा का कवच धारण करें। शांत चित्त से एवं अदम्य दृढ निश्चय से अपना ईश्वरीय कार्य करते रहें। ऐसी अभेद्य इच्छाशक्ति, अडिग दीर्घोद्योग, मानसिक संतुलन एवं जगन्माता के आदेशों के प्रति सहर्ष समर्पण का दृढ निश्चय प्राप्त करने हम सभी उसी के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर प्रार्थना करें। (मूल अंग्रेजी)

५१९ प्रोत्साहक पुस्तक समीक्षा

श्री रवींद्र रामदास, मुंबई २० मार्च, १९६३

आप अभ्यासपूर्वक अपने राष्ट्र के उज्ज्वल इतिहास का संशोधन कर रहे हैं एवं उसके निष्कर्ष लेखों, ग्रंथादि द्वारा सबको बतलाकर अपने अतीत काल के विषय में गौरवपूर्ण भावना जगाने का महत्कार्य कर रहे हैं। इस दिशा में आपका अभ्यास अधिकाधिक गंभीर, सत्यनिष्ठ एवं सुफलदायी हो– यह इच्छा श्रीपरमेश्वर की कृपा से पूर्ण हो। (मूल मराठी)

५२० स्वयंसेवक की सत्प्रवृत्ति पर विश्वास

श्री विलास चाफेकर, नेवासा, अहमदनगर २२ मार्च, १९६३

आपके पत्र से ज्ञात हुआ कि आप अपने उद्योग में प्रवेश करनेवाले

हैं। पत्र में यह आश्वासन भी पढा कि आप सघ-विरोधी ऐसा कुछ नहीं करेंगे। इस प्रकार शब्द-रूप में आश्वासन व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं थी। आपके मन में सघ का विचार, कार्य-पद्धति आदि के प्रति प्रेम, विश्वास आदि न भी हो, तो भी आपके आचरण तथा सत्प्रवृत्ति के विषय में हम सबको पूर्ण विश्वास है। इसलिए आप इसके पश्चात् कहाँ रहेंगे, कौन-सा काम हाथ में लेंगे आदि यथावकाश सूचित करें, जिससे अत करण में विद्यमान विश्वासपूर्ण आत्मीयता के अनुरूप कभी-कभी तो भी भेंट या कम से कम, क्वचित् क्यों न हो, परतु पत्र-व्यवहार चालू रह सकेगा।

(मूल मराठी)

५२१ उपनयन सस्कार के निमित्त आशीर्वाद

श्री लक्ष्मीकात चतुर्वेदी, देवरिया (उ प्र) २२ मार्च, १६६३

द्विजत्व देकर ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरणा देनेवाला यह पवित्र सस्कार बालकों को भाग्योदयकारक हो। सुदृढ, शुद्ध शरीर, देह-मन-बुद्धि के विवेक से नियमित श्रेष्ठ बल तथा कर्तव्यनिष्ठा, सद्गुणोपासना, श्रीभगवान एव राष्ट्र में अटूट श्रद्धायुक्त भक्ति से वे अपने जीवन को उन्नत, सुखी तथा कृतकृत्य कर सकें, इस हेतु उनके लिए परमदयाघन श्रीपरमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

५२२ राष्ट्रसमर्पित जीवन की प्रेरणा

श्री श्रीकात जोशी, नादेड २६ मार्च, १६६३

यह उत्तम है कि आपका अध्ययन चालू है। श्रीमद् विवेकानद स्वामी के ग्रथों में से जिस प्रकार अध्यात्म की अचूक शिक्षा मिलती है, उसी प्रकार इह लोक में शुद्ध, त्यागपूर्ण, स्व-समाज, स्व-राष्ट्र, मातृभूमि की सेवा में समर्पित जीवन बनाने की असदिग्ध प्रेरणा मिलती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। सर्वप्रथम अपने कर्तव्य नि स्वार्थ तथा निरहकार बुद्धि से करने के लिए परिश्रम करना चाहिए। उनका उपदेश है कि इससे अपने-आप ही आध्यात्मिक जीवन उन्नत होता है। परतु जो ध्यानपूर्वक सपूर्ण अध्ययन करेगा, उसे ही इसका रहस्य ज्ञात होगा, अन्यथा उनका बहुमूल्य उपदेश केवल शब्दरूप से कठस्थ करने जैसा निष्फल होगा। (मूल मराठी)

५२३ विवेकानंद प्रबल प्रेरणा स्रोत

डा स या जोशी, नांदेड २६ मार्च, १९६३

यह बहुत ही अच्छा है कि आपने स्वामी विवेकानंद के ग्रंथों का अध्ययन प्रारंभ किया है। उसमें से सभी सत्कार्यों को, स्वधर्म-प्रेम को, स्वराष्ट्रार्पित मातृभूमि-भक्ति परिपूर्ण जीवन को, निःस्वार्थ-निरहंकार वृत्ति को, कर्तव्यदक्षता को प्रबल प्रेरणा प्राप्त होगी। (मूल मराठी)

५२४ पारिवारिक कर्तव्य एवं जीवनव्रत

(भाई के द्वारा घर, माता-पिता की योग्य चिंता न करने के कारण व्यथित हुए एक प्रचारक को लिखते हैं–)

श्री शरद कुलकर्णी, रत्नागिरि २७ मार्च, १९६३

आपने घर की स्थिति का जो चित्र खींचा है, वह सचमुच व्यथित करनेवाला है। आप उसमें से मार्ग निकालने का विचार कर रहे हैं। उसमें आपको यश प्राप्त हो। परंतु बंधुओं को नौकरी मिली भी तो ज्येष्ठ बंधुओं के समान वे भी स्वयं की गृहस्थी को सब कुछ मानकर पिताजी के प्रति दायित्व नकारेंगे नहीं, इसका क्या भरोसा किया जाए? वास्तव में, माता-पिता के पालन-पोषण तथा स्वयं की गृहस्थी की रचना में लगनेवाले खर्च का योग्य विभाजन किया, तो कुछ अड़चन नहीं आएगी एवं सब सुखपूर्ण जीवन जी सकेंगे। परंतु पिता को कबाड़खाने की चीज माना जाए एवं स्वयं के बारे में किसी प्रकार मितव्ययिता न बरतने का विचार किया जाए, तो आपके घर की जो अवस्था आज आपने वर्णन कर सूचित की है, वैसी दयनीय स्थिति पैदा होती है। परंतु अपने चारों ओर के युवकों को यह तथ्य ध्यान में लेने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती है। किसी ने बतलाया, तो बतलानेवाला शत्रु लगता है। ऐसी स्थिति में कुछ काल तक संघ के पवित्र संस्कार, तदनुसार व्यवहार आदि सभी बातों का विस्मरण होता है। मनुष्य को ऐसा विलक्षण मन प्राप्त हुआ है कि इन संस्कारों का कोई हवाला देने लगे, तो संघ का और हमारा मानो कोई वास्ता नहीं, संघ के हम कुछ लगते नहीं, ऐसा आचरण स्वीकारने को प्रवृत्त होते हैं, विवेक से जो उसे (मन को) सन्मार्ग पर रखेगा, वही 'मनुष्य' नामाभिधान को पात्र होता है।

५२५ 'रामायण मडली का वैशिष्ट्य'

श्री शरद कुलकर्णी, रत्नागिरि मार्च, १९६३

मैं दिनाक ३० ०३ १९६३ को प्रस्थान कर मध्यप्रदेश के जशपुरनगर में जा रहा हूँ। वह वन्य क्षेत्र है। उस क्षेत्र में सौ से अधिक गाँवों में गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस वितरित कर उसका पठन-भजन करवाकर अपने धर्म के विषय में ज्ञानयुक्त भक्ति जगाने के लिए विगत पाँच मास से अधिक एक धर्म जागरण का कार्यक्रम चल रहा है। विभिन्न साधु-सत, महात्माओं एव रामचरितमानस के श्रद्धावान विद्वानों ने गाँव-गाँव में घूमकर यह कार्य चलाया है। अब तक हुए कार्य का समापन समारोह श्री रामनवमी (२ ४ ६३) को सपन्न करने का निश्चय हुआ है। उस कार्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए मैं जा रहा हूँ। (मूल मराठी)

५२६ परिस्थिति को बदलने मे सलग्न हो

श्री दादासाहेब दवे, वडनगर २ जून, १९६३

आपका यह पत्र पढकर आपकी स्थिति का ज्ञान होने से मन दु खी हुआ है। दुर्भाग्य जब खडा होता है, अच्छे-अच्छे बुद्धिमानों की बुद्धि कुठित हो जाती है, इसका प्रमाण ही मानो आपके व्यवहार से तथा उससे उत्पन्न अवस्था से उपस्थित हुआ है। इस स्थिति में धैर्य से काम लेना, केवल चिता से शरीर न सुखाना और क्रम से यह स्थिति सुधरेगी, इस विश्वास से चलना लाभदायक होता है। आप भी अपनी स्वाभाविक मन शाति को बनाए रखें। आपने किसी के प्रति अनिष्ट कामना नहीं की है। अत आर्तित्राण श्रीपरमेश्वर का आपको आशीर्वाद एव बल प्राप्त होने में सदेह नहीं है।

सघ का अपना दायित्व पूर्ण करने में कुछ काल आपको कठिनाई होगी, यह स्पष्ट दिखता है। उसमें से मार्ग निकलेंगे। यदि थोडे समय के लिए प्रत्यक्ष दायित्व से छुट्टी प्राप्त होने से आपका मन सताप दूर होता हो तो आपकी ही सलाह से वैसी अस्थायी व्यवस्था की जा सकती है। परिस्थिति ने अनुकूल करवट फेर लेने पर फिर आप सोत्साह अपने कार्य में यथापूर्व जुट सकेंगे। किंतु मेरी आग्रहपूर्वक प्रार्थना है कि आप ग्लानि न करें, मन को सतप्त तथा व्यथित न होने दें। परिस्थिति को वश में लाने

के लिए जो जितना आवश्यक है, उतना ही अनिवार्य रूप से करना पडता है। वह करना चाहिए। फिर ग्लानि करने का कारण क्या?

आपके सकट दूर होने के लिए परमदयाघन श्रीभगवान के पास मैं प्रार्थना करता हूँ। आप भी उसका स्मरण करते हुए प्राप्त परिस्थिति का बदलने में सलग्न हों।

५२७ पिताश्री के स्वर्गवास के पश्चात् सात्वना पत्र

श्री सुखदेव गोस्वामी जी, नोगॉव, असम ३ जुलाई, १९९३

यद्यपि उनकी वृद्धावस्था परिपक्व थी, और जैसा हम सभी जानते हैं कि कभी न कभी अपनी पूर्व निर्धारित जीवन यात्रा पूर्ण होनेपर इहलोक छोडकर प्रत्येक व्यक्ति को जाना पडता है, तो भी अपने निकटवर्ती प्रिय स्वजनों के बिछुडने पर होनेवाले मर्मभेदी दु ख से छुटकारा नहीं होता है। मैं जानता हूँ कि अपनी सुदृढ एव सतुलित मानसिकता के कारण आप इस दु ख को प्रशात और समत्वभाव से सहेंगे। परतु अपनी व्यथा में और भी कोई सहभागी है, इस जानकारी से कुछ प्रमाण में तो सात्वना मिलती है। इसी कारण पत्र लिखता हुआ मैं परमदयामयी जगज्जननी के श्रीचरणों में प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आप पर सदैव कृपा बनी रहे और इस दु खद अवस्था में आपको मन शाति प्राप्त हो।

दिवगत आत्मा के प्रति परमसुख प्रदान करती हुई श्रीजगन्माता उसकी चिता करें।

५२८ निश्चित कार्य मे मग्न रहे

डा वसतराव फुटे, रत्नागिरि ३ जुलाई, १९९३

आपका पत्र पढकर बहुत आनद हुआ। सुना था कि इस वर्ष प्रचारक न रहकर घर पर अन्य काम (स्वय का उद्योग-व्यवसाय) सँभालकर काम करनेवाले हैं, याने एक अच्छा प्रचारक कम होगा। परतु आपके इस पत्र से ज्ञात हुआ कि आप प्रचारक-कार्य में ही हैं एव नया एव बडा क्षेत्र आपकी ओर आया है। उसके कारण बहुत आनद हुआ। आपके घर के लोगों को यह पसद न होना स्वाभाविक है। परतु ऐसा अनुभव है कि अपना निश्चय पक्का रहा एव घर के लोगों से स्नेहादरपूर्वक व्यवहार कर इस

निश्चय के अनुसार ही जीवन-रचना चलाने का निश्चय हो, तो कुछ कालातर से घर का वायुमडल भी आपने निश्चय का अभिनदन करनेवाला सर्वतोपरि अनुकूल बनता है। इसलिए आप निश्चित रहकर कार्य में मग्न रहें। (मूल मराठी)

५२९ आपकी मर्जी

श्री रामसजीवनसिह, अवलगज ४ जुलाई, १९६३

'सत्य' के सबध में आपने जो विचार व्यक्त किए हैं, उनके सर्वथा विपरीत आगे की बातें लिखने में आपको क्या सुख मिला होगा, यह समझना कठिन है। आपके पत्र से मुझे इतना बोध हुआ कि आपने असत्य की उपासना, मिथ्या भाषण का अभ्यास बहुत किया है और उसमें बडी प्रगति की है, अन्यथा ऐसी काल्पनिक और नितात असत्य बात आपके अत करण को स्पर्श भी न कर पाती।

प्रत्येक व्यक्ति स्वतत्र है। यदि आप असत्याचरण में ही सुखी होते हों तो वैसा करते रहें, किंतु श्रेष्ठों द्वारा प्राप्त उपदेश के स्मरण से मैं आपसे नम्रतापूर्वक अनुरोध करूँगा कि अपने इस अनिष्ट अभ्यास से मुँह मोडकर सद्भाव से सोचने, बोलने, में अपनी शक्ति लगा दें।

आपके लिए मैं परममगल, सत्यस्वरूप श्रीपरमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

५३० स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर

श्री ग द खरे, गदग (कर्नाटक) ६ जुलाई, १९६३

आपके स्वास्थ्य में अच्छा सुधार आया होगा एव क्रमश आप अपने दैनिक काम में अधिकाधिक ध्यान देने लगे होंगे, अर्थात् इसमें शीघ्रता न होने दें एव तनाव भी न आने दें। इस व्यावहारिक विश्व में चढाव-उतार का चक्र रहता है। यह प्रकृति का नियम है। उनके कारण मन को पीडा न होने दें। समान प्रसन्नता से आनेवाली प्रत्येक अवस्था का स्वागत करनेवाला, सब अडचनों पर मात देकर जीवन सच्चे अर्थ में सुखी एव पूर्ण कर सकता है– यह आप उत्तम रीति से जानते हैं। उस प्रकार का स्वस्थ मन रखकर, शरीर-स्वास्थ्य सुदृढ कर, अपने कार्य की ओर भी ध्यान देने की क्षमता आप शीघ्र प्राप्त कर लें, यह प्रार्थना कर रहा हूँ।

(मूल मराठी)

५३१ कल्पनातीत कर्तृत्व के धनी दादा परमार्थ

श्री वि प साठे, सघचालक, नासिक ८ जुलाई, १९६३

श्री दादा परमार्थ के अकस्मात चल बसने के समाचार से सर्वदूर बहुत शोक हुआ। उनका सपूर्ण जीवन बाल्यकाल से ही सघ और सघ-निर्माता से जुडा हुआ था। भिन्न-भिन्न प्रातों में उन्होंने बडे परिश्रम से कार्य का सूत्रपात कर उसे बढाया। उन दिनों के कष्टों की आज के कार्यकर्ताओं को यथार्थ कल्पना आ नहीं सकती। अब उनका अभाव हो गया है। उसकी पूर्ति अन्य सहकारियों के अथक परिश्रम से ही हो सकेगी।

सत्कार्य करनेवालों को सद्गति प्राप्त होती है– यह श्री भगवान श्रीकृष्ण का आश्वासन हम लोगों को मनोधैर्य देता है।

५३२ कार्यकर्ताओ मे गुणो का आविष्कार हो

श्री का भा लिमये, पुणे १२ अगस्त, १९६३

आपका पत्र तथा राखी मिली। इस समय सब प्रचारकों की बैठक चल रही होगी। आवश्यकता के अनुसार सब प्रचारकों की पुन योजना की जाएगी। उपस्थित सब कार्यकर्ता उस समय सूझनेवाले और भी अन्य विषयों पर विचार करेंगे। इच्छा है कि इस सब विचार-विमर्श से तथा योजनाओं से स्नेहवर्धन हो और दृढ निश्चय निर्माण हो। कार्य कितना भी विस्तारपूर्ण हुआ हो, परतु यदि उसका स्वरूप केवल औपचारिक, तांत्रिक, अथवा वैधानिक बना रहा, तो उसमें न आवेश उत्पन्न होगा न दृढता रहेगी और न सजीवता दिखाई देगी। गुणों का प्रादुर्भाव ऊपर होना चाहिए, तब वे झरनेवाले जल की तरह नीचे तक उतरते हैं। यह बात सगठन के लिए भी लागू है और समाज के लिए भी लागू है। इस बात को ध्यान में रखकर हमारे कार्य के उच्चस्तरीय कार्यकर्ताओं में स्नेहादि गुणों का प्रभावी आविष्कार निर्माण करने के हेतु मनोयोग से ध्यान देना आवश्यक है। हर प्रात में इस प्रकार का प्रयास चल रहा है।

राष्ट्र पर अनेक सकट छाए हुए हैं। वे प्रतिदिन बढ रहे हैं। उत्तर सीमा के साथ-साथ पूर्व (पूर्व-पश्चिम सीमाओं पर भी) परिस्थिति अधिकाधिक बिगड रही है। फिर से कब आघात होगा, नहीं कहा जा सकता।

फिर भी हमारा समाज स्वार्थ के अतिरिक्त कुछ भी सोचने के लिए

उद्यत नहीं है। यह सब देखकर ध्यान में आता है कि हमें कितने प्रबल प्रयत्न करने होंगे। उस ढग के प्रयास हमारे सब छोटे-बडे स्वयसेवक बधुओं के द्वारा होने चाहिए तब ही अपेक्षित परिणाम निकलेगा और हम सभी शत्रुओं का नि शेष करनेवाले, विजिगीषु, बलशाली राष्ट्र के नाते दुनिया के सामने निर्भयता से खडे रह पाएँगे। यही इच्छा है। परमेश्वर की कृपा से वह पूर्ण होगी। (मूल मराठी)

५३३ *सहयोग-जागरण-सगठन*

श्री बशीलाल सोनी, कोलकाता १३ अगस्त, १९६३

चारों ओर की परिस्थिति स्पष्ट है। इसमें अपना कर्तव्य भी स्पष्ट है। समाज को जागृत एव सगठित करना, उसमें धैर्य बॉधना, सुरक्षा का प्रयास अपने शासन की ओर से स्वभावत चल रहा है, उसमें पूरा सहयोग देने की सिद्धता रखना, अव्यवस्था, शासन-कार्य में बाधा, अशाति बिल्कुल उत्पन्न न होने देना, कोई ऐसा विपरीत सोचे या करे तो उसे परावृत्त करना आदि-आदि आवश्यक दृष्टि से समाज के सब व्यक्तियों को सतर्क रखने के लिए प्रोत्साहित करना– यह सब अवश्यमेव करणीय है। अपने सब नए पुराने स्वयसेवक बधु दत्तचित्त होकर शाखा को निरतर वृद्धिगत करते हुए सगठित शक्ति के रूप में समाज खडा रहे– ऐसा कार्य करने में सर्वथा सलग्न रहें। मुझे विश्वास है कि अपने सपूर्ण क्षेत्र में स्थायी, उत्साहपूर्ण, प्रभावी शाखाएँ शीघ्र ही चलती रहेंगी।

५३४ *शाखाएँ प्रभावी हो*

श्री नामधारक नाडकर्णी, मडगॉव, गोवा १३ अगस्त, १९६३

इस बीच मुझे ज्ञात हुआ था कि प्रारभिक उत्साह ठडा पड़ गया है एव अब धीमी गति से काम चल रहा है। ऐसा है, तो भी एक दृष्टि से अच्छा ही कहना होगा। क्योंकि अब केवल नवीनता का आकर्षण नहीं है। वैसा आकर्षण टिकता नहीं। अब अपने विचार-व्यवहार का आकर्षण, अपने कार्य की आवश्यकता का तकाजा एव योग्य ज्ञान के कारण आनेवाले स्वयसेवक बधु, सदैव कार्य करनेवाले, निष्ठावान, कर्तृत्वशाली ऐसे ही होंगे। इन लोगों के भरोसे पर पूरे जिले में उत्तम वातावरण उत्पन्न हो सकेगा।

यह पढकर अत्यत सतोष हुआ कि इस स्थिति में कार्य च

है एव और कुछ गाँवों में शाखाएँ खोलने का आपका विचार है। यह अत्यत शुभ लक्षण है कि शाखा में कार्यकर्ता तैयार हो रहे हैं एव सब प्रकार के समाज के वर्ग शाखा में हैं। स्थिरता प्राप्त होकर ऐसा अनुशासनबद्ध काम करने की ओर ध्यान देते रहें। (मूल मराठी)

५३५ नए क्षेत्र मे नए प्रचारक को मार्गदर्शन

श्री अच्युतराव तिलक, धाराशिव (महाराष्ट्र) १४ अगस्त, १९६३

आपके लिए कार्यक्षेत्र नया एव प्रचारक के नाते सभी अनुभव नए हैं। फिर भी आपने बहुत समय तक दायित्व ग्रहण कर काम किया है, इसलिए यहाँ विशेष अडचन नहीं होगी। उसमें भी घर के जैसी अपनेपन की व्यवस्था रहने से परायापन नहीं लगता है, यह अपना अनुभव आपने व्यक्त किया है। इसलिए खुले मन से, सकोच न करते हुए काम करना सहज साध्य हो सकता है। क्रमश पुरानी शाखाओं का पुनरुज्जीवन कर उन्हें स्थायित्व प्राप्त करा देने का प्रयत्न करें एव उत्तम नए स्थानों की खोज कर वहाँ कुछ आत्मीय लोग एकत्र करें एव उनके प्रेम के आधार पर टिकाऊ शाखा प्रस्थापित करें। प्रारभ से ही नियमितता, अनुशासनबद्ध कार्यक्रमों की आदत डालना, स्वयसेवकों में सदैव परस्पर की पुकार का उत्तर देकर सहायतार्थ दौड पडने की वृत्ति निर्माण करना, उत्तम बधुभाव एव शुद्ध स्नेह से युक्त व्यवहार उत्तम रखकर दूसरों को भी सही मार्ग पर चलाना आदि आवश्यक बातों की ओर कभी दुर्लक्ष न होने दें। धीरे-धीरे अपना कार्य-सिद्धात, विचार, भावना, व्यवहार की दृष्टि से प्रत्येक के अत करण को स्पर्श करने के लिए अकृत्रिम व्यवहार से सहजता से योग्य प्रयत्न होना चाहिए। उपदेशक की भूमिका निश्चयपूर्वक टालनी चाहिए। इस प्रकार से प्रयत्न किया गया, तो उत्तम शाखा खडी करने में आपको उत्तम यश प्राप्त होगा।

५३६ परमेश्वर परीक्षा ले रहा है

श्री दत्तोपत म्हसकर, सातारा (महाराष्ट्र) १४ अगस्त, १९६३

अपने काम में अनेक अडचनें आती रहती हैं। उनमें सबसे दु ख देनेवाली अडचन अपने ही उत्तम स्वयसेवक बधुओं में उत्पन्न होनेवाली उदासीनता, विमनस्कता, असतुष्टता एव उसमें से निर्माण होनेवाला विपरीत

विचार-व्यवहार-उच्चार ही है। परतु यह मानकर कि श्रीपरमेश्वर परीक्षा ही ले रहा है, अपना मन स्वच्छ रखकर इन सभी बधुओं से आदरपूर्ण, स्नेहमय सबध रखकर, इस मामूली परीक्षा से हतोत्साहित न होकर कार्य करते रहे, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि श्रीपरमेश्वर की कृपा से सब सकट दूर होकर कार्य वर्धिष्णु उत्साह से लहलहाने लगेगा।

स्थानीय स्वयसेवक बधु योग्य ज्ञान रखकर शाखा के दैनदिन काम का दायित्व सँभालेंगे– ऐसा होना लाभदायी है। इस ओर ध्यान देने को सभी सबधित कार्यकर्ताओं को बतलाएँ। दैनिक काम में से उत्साह, अनुशासन, सहयोग, परस्पर निर्मल व्यवहार एव पुकार को प्रत्युत्तर देकर सहायता करने की तैयारी आदि गुणों का विकास होना एव विचार विनिमय से सघकार्य का यथायोग्य ज्ञान एव कार्य के बारे में अटूट श्रद्धा पैदा होगी। ऐसा करना कितना आवश्यक है, यह अपने कार्यकर्ताओं को समझाकर उनकी ओर से यह करवा लेने की ओर सबका ध्यान रहना चाहिए।

(मूल मराठी)

५३७ सगठन शास्त्र का दिशादर्शन

श्री टी जी श्रीरामुलु चेट्टी, होसूर, सेलम　　　　१६ अगस्त, १६६३

श्री कोदडराम रेड्डी द्वारा आपका पत्र पढवाकर मैंने समझा। उससे लगता है कि आप तल्लि मडल के प्रचारक हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप अपने दायित्व को उत्तम रीति से निभाते हुए उस क्षेत्र में कुछ कार्यक्षम शाखाओं का निर्माण कर सकेंगे। दैनदिन शाखा का कार्य उत्तम प्रकार से चलाने के लिए स्थानीय स्वयसेवकों को प्रशिक्षित करें। शारीरिक कार्यक्रमों को करवाकर उत्साह उत्पन्न करते हुए कठोर अनुशासन निर्माण करने का प्रयास करें। स्वयसेवकों के जीवन में, अपने कर्तव्य को तत्परता से करते हुए पारस्परिक सम्मानयुक्त बधु-भावना की निर्मिति में मार्गदर्शन करें। बडों के साथ, सौजन्यपूर्ण, आदरभावना से सभ्यतापूर्वक व्यवहार करने का, और ऐसे ही कार्य करते समय आवश्यक सद्गुणों की निर्मिति में स्वयसेवकों का मार्गदर्शन करें।

स्थानीय स्वयसेवकों के मार्गदर्शन-प्रशिक्षण के साथ ही प्रतिष्ठित सत्प्रवृत्त लोगों से मिलकर उनके हृदय में सघ के प्रति स्नेह जगाकर अपने कार्य में सभी प्रकार से सहयोग करने की अनुकूलता निर्माण करने का

प्रयत्न करें। कभी-कभी शाखा में आने के लिए उनसे अनुरोध करें। वाद-प्रतिवाद के चक्कर में न पडें। उनको अनावश्यक ही अधिक भारान्वित न करते हुए, परन्तु धीरे-धीरे उनके हृदय में कार्य के प्रति स्नेहयुक्त आदर और सहानुभूति निर्माण करें। अपने मंडल के कुछ अच्छे स्थान चुनकर वहाँ के आदरणीय महानुभावों से संपर्क करें, जिससे उनका सहयोग प्राप्त होकर वहाँ शाखा निर्माण की जा सके।

५३८ शाखा कैसी चलाएँ

श्री हेमराज मेहरे, १ सितबर, १९६३

श्रीगुरुपौर्णिमा, रक्षाबधन, श्रीगुरुदक्षिणा उत्सव सपन्न हुए होंगे। उत्सव के निमित्त अपने गाँव के नए-पुराने सभी स्वयसेवकों से मिलकर यह प्रयत्न किया जाए कि वे कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे। गाँव के सभी लोगों से प्रेम एव प्रामाणिकता का व्यवहार करें। किसी के साथ व्यर्थ वाद-विवाद न करते हुए अपने व्यवहार से एक-एक को अपना अच्छा मित्र बनाएँ एव धीरे-धीरे उसे सघकार्य समझाकर बताएँ एव यह चेष्टा करें कि वह अपने साथ शाखा का नियमित स्वयसेवक बनेगा। इससे कार्य बढेगा एव गाँव में उसके प्रति अपनत्व पैदा होगा।

शाखा में उत्तम कार्यक्रम होना चाहिए। अनुशासन पैदा करनेवाले कार्यक्रमों का अभ्यास बिना चूके होना चाहिए। सप्ताह में या पद्रह दिनों में एक बार तो भी सघ के विचार रखें, उसपर चर्चा करें। श्री छत्रपति शिवाजी महाराज एव उनके पराक्रमी सहयोगियों के चरित्र की घटनाएँ बतलाएँ। प्रभु रामचद्र, महावीर हनुमान का चरित्र कथन करें एव उनके जैसे थोडे से गुण अपने में आएँ ऐसा प्रयत्न करें। इससे उत्तम गुणवान स्वयसेवकों की प्रबल शाखा खडी रहेगी एव निरतर चलेगी। (मूल मराठी)

५३९ शाखा-वृद्धि के विषय मे

श्री शामराव जोशी, १७ सितबर, १९६३

आज शाखा में कुछ बाल एव तरुण विद्यार्थी ही आते हों फिर भी कोई आपत्ति नहीं है। उनके साथ मिल-जुलकर, खेल आदि से प्रारभ कर क्रमश अपना विचार एव पद्धति के विषय में आस्था उत्पन्न करते गए तो

ऑखों से दिखाई देने लायक कुछ स्वरूप खडा रहेगा। विचार समझने के लिए प्रथम कथाऍ, ऐतिहासिक घटनाऍ, श्रेष्ठ पूर्वजों के चरित्र, सद्य स्थिति, उसमें प्रत्येक का कम से कम कर्तव्य का विवेचन रोचक सभाषणों में से सहज बताऍ, समझाएँ। सबध में आए उन बधुओं की ओर से कहलवाऍ एव यह करते समय हम अपने ही विचार एव भावना व्यक्त कर रहे हैं, ऐसा उन्हें सतोष होगा– ऐसी कुशलता से कहलवाना आदि की ओर ध्यान देते रहना लाभदायी होगा। ऐसे थोडे-बहुत समझदार स्वयसेवकों का मडल निर्माण होने पर ये पुराने बधु एव नए पालक आदि सबध से सपर्क में आनेवाले व्यक्तियों को कार्य के निकट लाना सुलभ होगा। आप अनुभव से व्यक्तियों को पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं, वह योग्य ही है। ऐसा लगता है कि अनुभव से सीखकर आप उत्तम रीति से अपने कार्यक्षेत्र में यश प्राप्त करेंगे। यह शीघ्रता से नहीं होगा एव क्षणभर में ही सब कुछ अपेक्षित प्रगति होगी– ऐसी भोली धारणा रखी तो केवल निराशा ही पल्ले पडेगी, यह ध्यान में रखकर गभीरता से, परतु प्रगति के विषय में उपेक्षा या अनास्था न रखकर व्यवहार करें।

मेरे इस लिखने की अपेक्षा आप स्वय ही प्रत्यक्ष कार्य करते समय जो अनुभव प्राप्त करेंगे, उनका ही सच्चा मार्गदर्शन आपको उपयुक्त सिद्ध होगा। (मूल मराठी)

५४० प्रबल विवेक ही सहारा

श्री रामसिह ठाकुर, गोहाटी — १८ सितबर, १९६३

अपने मन की अवस्था आपने लिखी है। मैंने अनुमान से तथा आपसे होनेवाली थोडी-बहुत बातचीत से बहुत पहले ही उसका पता लगाया था, परतु योग्य समय पर ही उस सबध में बोलना पडे तो आपसे कुछ कहने का विचार कर मैं स्वस्थ्य रहा। अब आपने स्वय अपने विवेक से तथा दृढ इच्छाशक्ति से अपने मन को पक्का कर लिया है। अत मेरे लिए कहने का कुछ शेष नहीं है। किसी को कार्यनिवृत्त होते देखने से या किसी की अन्य कोई त्रुटि या अवस्था के कारण अपना मन विचलित क्यों होना चाहिए? तो भी होता है, यह अनुभव है। ऐसे समय प्रबल विवेक ही अपना सहारा होकर अपने को अपने ध्येय मार्ग पर बना रख सकता है। इसी शुद्ध विवेक की शक्ति से आपने योग्य निश्चय किया है, इसकी मुझे अतीव प्रसन्नता है।

५४१ उत्साह की लहर मे भी सावधानी रखे

डा केशवराव जोगलेकर, जलगाँव २० सितबर, १९६३

आपके उत्साह से काम में वृद्धि होगी ही। सहज मेरे मन में आया कि केवल एक बात की ओर आपका ध्यान खींचा जाए। अनेक बार अपने उद्योग एव लगन के कारण हम कार्यकर्ताओं एव कुछ स्थानों के कार्य के बारे में कुछ अपेक्षाएँ रखते हैं। यह नहीं है कि ये पूर्ण होती हैं। फिर मन में चिढ पैदा होती है, क्रोध आता है एव उसके फलस्वरूप जो व्यवहार होता है, उसके कारण कार्यकर्ता भयभीत होता है, चौंकता है एव फिर हमें टालने की ओर एव धीरे-धीरे कार्य से दूर होने की ओर उसकी प्रवृत्ति होने लगती है। इससे मन की इच्छा कि काम बढे ऐसी होते हुए भी परिणाम उल्टा होने लगता है। ऐसा न हो, इसकी सावधानी आपको बरतनी चाहिए एव अपने सहयोगियों को भी यह सूचना अमल में लाने को बतलाते रहें। इससे इस जिले में उत्तम काम खडा रहेगा, यह विश्वास पूर्ण होगा। (मूल मराठी)

५४२ अधूरा कर्तव्य निश्चयपूर्वक पूर्ण करो

श्री राजा भातखडे, रत्नागिरि २३ सितबर, १९६३

आपके द्वारा लिखा गया पत्र, जिसमें स्वय अपने बारे में आपने लिखा है, प्राप्त होने से सतोष हुआ। जिस मन स्थिति का आप अनुभव कर रहे हैं, ऐसी घटनाएँ एकदम अनपेक्षित तो नहीं कही जा सकतीं। अनेकों ने अपनी अपेक्षाएँ गलत सिद्ध हुई देखकर, अपेक्षाभग के कारण अपना मन असतुलित होने जैसा अनुभव पाया है। ऐसी असतुलित मन स्थिति से स्वय को सँभालकर और अपना व्यवहार विवेकपूर्वक नियन्त्रित कर सही मार्ग के अवलबन का बहुत महत्त्व है। इस प्रकार के व्यवहार में आप सफल हो रहे हैं, ऐसा दिखाई देने के कारण मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। परीक्षा के लिए शात चित्त से अध्ययन करें। कौन जानता है कि आगे क्या होगा, इस विचार का स्पर्श भी अपने मन को न हो। इससे मन में अधीरता, अकारण ही उत्सुकता निर्माण नहीं होती। अध्ययन करते समय पढा हुआ ग्रहण कर उसका स्मरण रखने में आपका मन सक्षम, समर्थ होगा और परीक्षा में निश्चय ही सफलता मिलेगी। इस मनोवृत्ति को धारणकर किया गया अल्प अध्ययन भी सफलता-प्राप्ति में पर्याप्त सिद्ध

उतावली नहीं करूँगा, इसका अर्थ घबराना नहीं है।

यह उत्तम है कि काम करते समय आप प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। चित्त प्रसन्न रहा, काम करते समय होनेवाले कष्टों में भी सुख लगने लगा, तो सफल होने में कोई भी अड़चन नहीं रहती है, ऐसा जानकारों का अनुभव है।

आपने सूचित किया है कि इस वर्ष के पश्चात् आप प्रचारक नहीं रह सकेंगे। अभी बहुत अवकाश है। तब तक आगे क्या करना चाहिए एवं उस अवस्था में अधिक से अधिक संघकार्य हो सके इस दृष्टि से कैसी योजना की जाए आदि सभी आवश्यक बातों का विचार निश्चित किया जा सकेगा। आप स्वयं ऐसा विचार करें एवं आपके जो अधिक अनुभवी सहयोगी हैं, उनसे विचार-विनिमय करें, जिससे योग्य एवं उपयुक्त निर्णय करना सरल होगा।

घर की अडचनें दूर करना, यह कर्तव्य ही है। अडचनें प्रत्येक को न्यूनाधिक प्रमाण में रहती ही हैं। कोई उनपर मात देते हैं, कोई उनकी चिंता नहीं करते हैं। कोई उन्हें भोगते हुए भी अविकंप अंतःकरण से कार्यक्षेत्र में व्यवहार करते हैं। कोई उसके सामने घुटने टेककर कभी-कभी टूट जाते हैं। ऐसे अनेक प्रकार दिखाई देते हैं। अपने-अपने मनोबल पर सब निर्भर करता है एवं मनोबल निष्ठा पर निर्भर रहता है। आप अपने मनोबल का अच्छी तरह पोषण कर इस कर्तव्य में सफल हों, यह इच्छा है।

आपने लिखा है कि आप मेरे पत्र की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस समय मैं श्रीविजयादशमी के कार्यक्रम के कारण यहीं हूँ एवं यह पत्र लिख सका हूँ। कभी किसी को उत्तर जाता ही नहीं। कभी उत्तर भेजा भी तो वह विलंब से जाता है। ऐसा आपके बारे में हो तो 'उत्सुकता' के कारण आपको विषाद होकर संभवतः संपूर्ण कार्य के प्रति अनास्था निर्माण हो जाए, इस प्रकार के विपरीत परिणाम से रक्षा करना आवश्यक है। इसलिए 'उत्सुक' न हों, यही विनती है। (मूल मराठी)

५४५ नियमित शाखा की प्रस्थापना करें

श्री टी जी श्रीरामलु चेट्टी, होसुर, जिला सेलम   २५ सितंबर, १९६३

(क्षेत्र के) वायुमंडल का अध्ययन करो। कुछ सुप्रतिष्ठित लोगों से संपर्क करो। अपने कार्य के प्रति उनकी सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करो। कुछ

सदाचारी युवकों से मैत्री जोडो। खेल के कार्यक्रम से प्रारभ कर धीरे-धीरे प्राथमिक शारीरिक कार्यक्रम शुरू करो। जव लगेगा कि कुछ प्रमाण में नियमितता एव समझदारी दृष्टिगोचर हो रही है, तो प्रार्थना चालू करो। कभी शाखा का कार्य देखने के लिए कुछ प्रौढ सज्जनों को प्रवृत्त करते हुए उन्हें अपने किशोर-युवा लडकों तथा पाल्यों को शाखा में भेजने के लिए सफलतापूर्वक अनुरोध आप कर सकते हैं। ऐसा क्रम चालू रखें। जव श्री शेषाद्रि या उनके जैसे कोई वरिष्ठ अधिकारी आपके क्षेत्र में पधारेंगे और कार्य की प्रगति के वारे में सतोष अनुभव करेंगे, तव यदि वे उचित समझें तो आपकी शाखा में ध्वज लगाने की अनुमति दे सकते हैं। इस प्रकार आपके प्रयत्नों के फलस्वरूप नियमित शाखा की विधिवत् प्रस्थापना हो सकेगी। (मूल अग्रेजी)

५४६ प्रचारक का मन व चितन

श्री अरुणचद्र भराली, असम ३ अक्तूबर, १९६३

प्रचारक का काम करने के लिए मन शात, उत्साही रखना, समाज के प्रति अतीव स्नेह का अनुभव करना, अपने ध्येय विचार के प्रति अटूट विश्वास रखना आवश्यक है। उसके लिए नित्य चितन करना, अपने व्यवहार का नित्य परीक्षण कर उसे निर्दोष वनाने की चेष्टा करते रहना चाहिए। आप यह करते रहे तो आपके द्वारा कार्य का विस्तार, कार्य को दृढ, शुद्ध वनाना सफल हो सकेगा।

५४७ मनुष्य जोडना अपना काम

श्री भानुदास येवला, ३ अक्तूबर, १९६३

आपके पत्र में अनावश्यक अश वहुत रहता है। उदाहरणार्थ 'सघ का जन्म न हुआ होता तो', 'शिवाजी पैदा न होते तो?' आदि। परतु पत्र में इन भावनाओं का निष्कारण व अस्थायी वार-वार प्रदर्शन अयोग्य है। प्रदर्शन से भावना उथली होती है व उसकी शक्ति नष्ट होने लगती है। इसपर विचार करके वोलना तथा लिखना सयमित गभीर व सुसगत करें।

आपकी ऐसी कल्पना हो कि भडकीले शब्दों में अपनी भावनाएँ प्रकट करने से ही हम अच्छे कार्यकर्ता हैं, ऐसा वाकी लोगों को लगेगा, तो

वह भूल है। उल्टे बाकी लोगों को ऐसा लगेगा कि अकारण कदाचित् मिथ्या दिखावा कर रहा है। अपने बारे में ऐसा मत होना, अपना कार्य करते समय अपने मार्ग में बाधास्वरूप खड़ा हो सकेगा।

समाज के उन बंधुओं से, जो आज शाखा में नहीं आते हैं इसलिए झगडे पर उतारू होकर तू-तू मैं-मैं करते बैठना, यह अपना मार्ग नहीं है। फिर भी आपने ऐसा ही विलक्षण व्यवहार करने का उल्लेख अपने पत्र में किया है। मनुष्य जोडना अपना काम है, उन्हें भला-बुरा कहने से या उनसे उपमर्दकारक व्यवहार करने से आप स्नेह-संपादन कैसे कर सकेंगे?

सौम्य वृत्ति से, शांति से, क्षुब्ध न होते हुए हमें संपूर्ण समाज के साथ स्नेहपूर्ण, आदरपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, जिससे हमसे मिलने के लिए लोग उत्सुक होंगे। हम उनके सम्मानास्पद होंगे, ऐसा सौजन्य जीवन के प्रत्येक अंग में होना अत्यंत आवश्यक है। यह समझकर व्यवहार करें- यह आपसे नम्र विनती है। (मूल मराठी)

५४८ सहकारी संवेदना

श्री भास्करराव कलंबी, एर्नाकुलम (केरल) ३ अक्तूबर, १९६३

मित्रवर श्री एम ए कृष्णन की शारीरिक स्थिति बहुत बिगड गई है, यह अत्यंत चिंताजनक विषय है तज्ञ डाक्टरों के उपदेश के अनुसार सभी उपचार व शुश्रूषा आग्रहपूर्वक करें। किसी प्रकार का दुर्लक्ष्य न हो इसपर ध्यान रखें। खर्चे की चिंता छोड दें। जितना आवश्यक हो, उतना खर्चा करके जल्दी उनको रोगमुक्त करें, यह सब आप जानते ही हैं, तो भी मन में न रहने के कारण मैंने लिखा। समय-समय पर सुधार की प्रगति के बारे में अवगत कराते रहें। मेरी चिंता कम होने में वह सहायक होगा।

५४९ शिविर के बाद कार्य-वृद्धि अपेक्षित

श्री यादवराव जोशी, बंगलौर १७ फरवरी, १९६४

हैदराबाद के शिविर के समाचार से युक्त समाचार-पत्रों की कतरनें प्राप्त हुई। साथ में छायाचित्र थे। उन्हें भी देखा। छायाचित्रों में मुझे कितनी रुचि है, आपको बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। मन में बडे विचित्र भाव उत्पन्न हुए। यह आधुनिक काल है। उसमें नवनवीन रुचि-अरुचियों

का निर्माण होना स्वाभाविक ही है। महाराष्ट्र में इसका अनुभव बहुत निराले ढग से प्राप्त हुआ। उस समय मन में तीव्र बवडर उत्पन्न हुआ। अब इस शिविर के फलस्वरूप प्रात में कार्य की वृद्धि हो, अनेक सज्जन आकृष्ट होकर कार्यरत हों। यही इच्छा है। (मूल मराठी)

५५० बिहार के एक-दिवसीय कारावास का अन्वयार्थ

श्री ए दक्षिणामूर्ति, मदुरै — १ अप्रैल, १९६४

बिहार की उस छोटी-सी घटना से किसी को भी उत्तेजित नहीं होना चाहिए। राजकीय क्षेत्र में सत्ताधिष्ठितों के द्वारा जो अपेक्षित था, वही हुआ है। सभी वस्तु, घटना, व्यक्ति एव सगठनों के विषय में ऐसे लोग, स्वय को सत्ता के स्थान पर, अभी और हमेशा के लिए आसीन रहने में ये सभवत कितने उपयुक्त या हानिकर सिद्ध होंगे, इस एकमात्र दृष्टि से देखने के आदी हो गए हैं। इस प्रकार दूषित बने दृष्टिकोण के कारण उनके लिए, ऐसे अन्य कामों को, जो सत्ता या अवैध धनप्राप्ति की स्पर्धा में उतरने जैसे अवनत नहीं हुए हैं और इसी कारण वे राष्ट्रभक्ति का लुभायना स्वरूप धारण करते हैं, देखना या समझना असभव है। दूसरों को नापने और उनके बारे में विवेकपूर्ण निर्णय करने के इन लोगों के मापदड में राष्ट्रहितैषी सेवा करनेवाले निरपेक्ष कार्यकर्ताओं की क्षमता नापना सभव नहीं है। उनमें मात्र अपने दलगत स्वार्थ नापने की क्षमता है। अदरूनी एव बाह्य सकटों के घेरे में स्थित अपने देश को, और जिन लोगोंपर देशहित का दायित्व है, उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति को देखते हुए हमें तो गृहीत मानकर ही चलना होगा कि हमारे राष्ट्र को और राष्ट्रीय इस नाते हमें निकटवर्ती भविष्यकाल में सभवत गभीर आपत्तियों से सघर्ष करना पडेगा।

(मूल अग्रेजी)

५५१ बिहार के अल्प कारावास का और एक अन्वयार्थ

श्री अण्णासाहब भावेरे, येवला — १ अपैल, १९६४

बुद्धि में अपने को पराया एव पराए को अपना, मित्र को शत्रु एव प्राण लेनेवाले शत्रु को जिगरजान दोस्त मानने की विपरीतता, अवास्तव सत्ता की हवस से पैदा होने का प्रमाण, याने बिहार प्रात में मेरे साथ हुई घटना कहना पडेगा। ऐसा नहीं कि बुद्धि की इस अवस्था का परिणाम मुझे

एवं अन्य थोड़े राष्ट्रभक्तों को भी सहना पड़ेगा। इससे संपूर्ण राष्ट्र-जीवन भीषण संकटों से ग्रस्त होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे हैं। ऐसे समय अपने सभी स्वयंसेवक बंधु क्षुब्ध न हों। राष्ट्र के विशुद्ध सामर्थ्य का आविष्कार करने के लिए चलनेवाला अपना कार्य अत्यंत वेग से बढ़ाकर इन सभी अंतर्गत एवं बाह्य संकटों पर मात देनेवाले अजेय शक्तिरूप से अपना राष्ट्र दुनिया के सामने खड़ा करने के काम में काया-वाचा-मनसा जुट जाएँ, यही उचित होगा। कार्य की वृद्धि एक विशिष्ट सीमा तक होने तक ये अड़चनें हैं। यह सीमा लाँघते ही सब ओर सब क्षेत्रों में यशश्री हाथ जोड़े खड़ी रहेगी एवं अपनी आँखों से जगन्मान्य सार्वभौम राष्ट्र-सत्ता प्रस्थापित होने का दृश्य देखने का महद्भाग्य हमें प्राप्त होगा। (मूल मराठी)

५५२ मन क्षुब्ध न हो

श्री विनायक राव कानेटकर, कोल्हापुर ३ अप्रैल, १९६४

इन घटनाओं का विचार करने का कारण नहीं। शत्रु-मित्र विवेकशून्यता शासन का एक 'गुण' (धर्म) बन जाए, तो राष्ट्र-कार्य शुद्ध भावना से करनेवालों को ऐसे अनुभव आते हैं, इसमें आश्चर्य लगने लायक कुछ भी नहीं है। अतः किसी के भी मन में क्षोभ पैदा नहीं होने देना चाहिए एवं अपना कार्य बढ़ाने के लिए परिश्रमपूर्वक प्रयत्न करते रहना चाहिए। (मूल मराठी)

५५३ बटु को शुभेच्छा

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, २४ अप्रैल, १९६४

का उपनयन संस्कार यथाविधि संपन्न होकर उसे अब द्विजत्व प्राप्त हुआ है। इसके अनुरूप ज्ञानोपार्जन तथा सद्गुण-संग्रह कर वह अपने परिवार की कीर्तिवृद्धि करे– इस हेतु उसे कुशाग्र बुद्धि, शुद्ध संयमित मन तथा निरोगी बलिष्ठ देह प्राप्त होकर वह चिरकाल अपने पवित्र धर्म, संस्कृति राष्ट्र की सेवा करने में यश प्राप्त करे– यह आशीष परममंगल श्रीभगवत्कृपा से उसे प्राप्त हो एतदर्थ मैं परमकृपालु श्री परमात्मा के पास नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ।

५५४ विवाह की मंगलकामना

श्री श्यामल सेनगुप्ता, डिब्रुगढ, असम — २७ अप्रैल, १९६४

भगवान की असीम कृपा से संपूर्ण वैवाहिक कार्यक्रम सानंद संपन्न हो तथा आपको सुख-शांतिपूर्ण गृहस्थ जीवन का लाभ हो। सहधर्मचारिणी का साथ प्राप्त होने से जीवनव्रत-परिपालन उसके सहयोग से, प्रेरणा से आप उत्तम रीति से कर सकेंगे और जीवन में कर्तव्यपूर्ति का समाधान अनुभव कर सकेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। आपको सब प्रकार का सुख तथा सुदीर्घ आयुरारोग्य प्राप्त होकर आपका गृहजीवन अति स्नेहपूर्ण आनंददायी सिद्ध हो। आपकी पूज्य श्रीमाताजी को नित्य सुख-संतोष तथा उचित सेवा-आदर प्राप्त होता रहे। आप सबकी ओर से परममंगलदायी, सर्व सुखप्रदायिनी, बुद्धिशक्ति दायिनी श्री जगज्जननी के पास मैं प्रार्थना करता हूँ।

५५५ नवदंपति को शुभाशीर्वाद

श्री जयंत कवठेकर, पुणे — २९ अप्रैल, १९६४

ईशकृपा से कार्य-समारोह आनंद से संपन्न हो। धर्म परिपालनार्थ गृहस्थाश्रम विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है। व्यक्ति, समाज के घटक, राष्ट्र के अंग के नाते जो-जो कर्तव्य करना आवश्यक है, वे परिश्रमपूवक, स्वाथ-विषयों में आसक्त न होते हुए करते रहना, स्वकर्म से श्रीपरमेश्वर की पूजा करना, इसमें इस आश्रम का सार्थक है— ऐसा मैंने बुजुर्गों से सुना है। यही आपके सामने रखकर आपको सब सुख-समृद्धियुक्त विपुल आयुरारोग्य प्राप्त हो, इसके लिए परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

५५६ विश्व हिंदू परिषद् की निर्मिति का उद्देश्य

श्री के कृष्णमूर्ति, अधिवक्ता, मदुरै — ३० जून, १९६४

संसार के अपने सभी हिंदू-बंधुओं का आपस में जीवंत संपर्क बनाए रखने के लिए यथोचित कार्यव्यवस्था निर्माण करने हेतु सोचने के लिए भारत के सभी प्रदेशों से चुने हुए श्रेष्ठ व्यक्तियों की एक बैठक का आयोजन किया गया है। हमारे सहकारियों के ही द्वारा इस संकल्पना को प्रस्तुत किए जाने के कारण बैठक में मेरी उपस्थिति अनिवार्य है।

(मूल अंग्रेजी)

५५७ स्वय निर्णय ले

श्री हरि लोकगारीवार, वहरामपुर (गजम) १ जुलाई, १६६४

सद्य स्थिति में आप स्वय निर्णय लें। यही उचित होगा। घर लौट कर पिताश्री की सहायता करने का विचार किया, तो वहाँ भी अपना कार्य किया जा सकेगा। उत्कल प्रदेश की आवश्यकता वहाँ की अपेक्षा कई गुना अधिक है, इसलिए वहाँ थोडी अडचन पैदा होगी, परतु उसका निवारण करने का सब बधु प्रयत्न करेंगे ही। इसलिए अपने पीछे ब्रह्मपुर का कैसे होगा, इसकी चिता न कर आप निर्णय करें। यह प्रश्न मुझ पर छोडना अडचन में डालनेवाला है, क्योंकि मेरे मन का एक विलक्षण गठन हो चुका है। उसमें सघकार्य के अतिरिक्त अन्य सब बातों को गौणत्व प्राप्त हुआ है। घरबार, आत्मीय-स्वजन सबके होते हैं। अडचनें भी आती हैं। बिल्कुल अनिवार्य अडचन आई तो फिर चारा नहीं रहता है। कुछ कर्तव्यों का पालन करना ही पडता है एव उसके लिए मन मारकर जो आवश्यक है, वह करना पडता है। इसलिए अब यह विचार आपका है। इसमें मेरा उपयोग कम है, अर्थात् आपके परिवार पर आई आपत्ति से मुझे भी अत्यत दु ख हुआ है। यह स्पष्ट है कि आपने घर जाने का निर्णय लिया, तो मुझे वह स्वाभाविक ही लगेगा। (मूल मराठी)

५५८ दैनदिन कार्य का स्वरूप

डा ग स लेले, सावतवाडी १ जुलाई, १६६४

इस वर्ष सब क्षेत्रों में काम बढे, नए-नए स्थानों में शाखाएँ खुलें एव इसके लिए अपने छोटे-बडे कार्यकर्ता आलस छोडकर काम करने को सिद्ध हों। यह इच्छा है कि एक-एक गाँव निश्चित कर, कभी लगातर १०-१५ दिन रहकर एव बाद में प्रति सप्ताह भेंट देकर सब ग्रामवासी बधुओं से आत्मीयता का नाता जोडकर शाखा सुदृढता से खडी करने का प्रयास करें। इस दृष्टि से आपको अनेकों को प्रेरित करना पडेगा। बहुत दीर्घकाल तक हमने काम की उपेक्षा की है। प्रत्येक विचारी बधु के अत करण में यह वास्तविक भावना रहे कि भूल का परिमार्जन करने के लिए मैं कमर कसकर अधिकाधिक उद्योग करूँगा। उसमें से उत्कृष्ट एव स्थायी स्वरूप का कार्य-निर्माण होगा, ऐसी अपेक्षा है। (मूल मराठी)

५५९ सकोच न कर कार्य-भार सँभाले

श्री प्रकाशदत्त जी भार्गव, एडवोकेट, दिल्ली ६ जुलाई, १९६४

आपने अपनी कमजोरियाँ आदि बातों का उल्लेख किया है। इस कारण कुछ लिखने का साहस भी टूट रहा है। वैसे, आपका मेरा परिचय और घनिष्ठ स्नेह-सबध बहुत वर्षों का है और आपने अपने कार्य का कुछ विशिष्ट दायित्व स्वीकार करना उचित होगा, ऐसा मुझे बहुत समय से लगता रहा है। माननीय लालाजी (लाला हसराज जी गुप्त, प्रात सघचालक) का भी यही विचार रहा है। आपके सम्मुख भी उन्होंने यह विचार प्रकट किया था। परतु आपका सकोच से विशिष्ट पद स्वीकार करने को 'ना' करना देखकर बात आगे बढ नहीं पाती थी। इस बार सबने मिलकर दिल्ली कार्य के सबध में सोचा और सब इसी निर्णय पर पहुँचे कि शाखा सघचालकविहीन रहने देना ठीक नहीं और इस स्थान के लिए आप ही सर्वथा योग्य हैं। वही निर्णय आपके सामने आया है। यद्यपि आपको अटपटा लगता है, तो भी यह स्मरण रखें कि प्रत्येक मनुष्य को जब नया दायित्व प्राप्त होता है, तब ऐसा ही अनुभव होता है। विशेषत अपने कार्य का यह गुण है कि शीघ्र ही सकोच मन से दूर होकर मुक्त हृदय से अपने कार्य का भार मनुष्य सँभाल लेता है। यह मेरा स्वय का अनुभव है। जो न्यून रह जाता है, अपने सब सहयोगियों के निरतर चलनेवाले प्रयत्नों से वह दूर हो जाता है।

तो भी आपके चिरपरिचित सौजन्य के अनुरूप ही आपका पत्र है। और आपकी योजना उचित तथा योग्य होने का यह पत्र भी प्रबल प्रमाण है।

५६० निर्णय से पूर्व कार्यकर्ताओ से विचार-विनिमय

श्री आर गोपालन, चेन्नै ७ जुलाई, १९६४

यहाँ बात चल रही है कि श्री जगदीश अग्रोल के कार्य-क्षेत्र को, जो अभी कोयबटूर में है, बदलना आवश्यक है। एक तो खान-पान और अन्य जीवन-व्यवस्था से सबधित वहाँ की स्थिति से स्वय अपना मेल बिठाना उसे सभव न हो सका। परिणामत वह बहुत दुर्बल हुआ है। दूसरा यदि उसे अन्य प्रात में भेजा गया तो आप और यादवरावजी को कोई आपत्ति नहीं होगी और उसके जाने से रिक्त बने क्षेत्र की चिता करने के

लिए आप किसी अन्य स्वयसेवक की योजना कर सकेंगे। मैं निर्णय करने से पूर्व यह जानना चाहता हूँ कि निश्चित रूप से आपका क्या विचार है। क्या आप उसे सहर्ष मुक्त कर सकेंगे? या अभी के ही क्षेत्र में उसे कार्य करते रहने देते हुए और किन्हीं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की इच्छा और सभवत दबाव के कारण ही उसे मुक्त करेंगे, अन्यथा नहीं करेंगे? आपसे यथाशीघ्र पत्रोत्तर की प्रार्थना है, जिससे, उसे यदि कहीं अन्यत्र भेजना सभव और आवश्यक हो, तो कहाँ भेजा जाए इस बारे में हम सोच सकें और अकारण विलब न करते हुए निर्णय कर नियोजित क्षेत्र में उसे भेज सकें। (मूल अग्रेजी)

५६१ कार्य और हम

श्री जगदीश अब्रोल, कोयबटूर — ६ जुलाई १९६४

'जनसाधारण की उदासीनता, स्वार्थमग्नता, तदुत्पन्न स्वार्थ को छोडकर अन्य सामाजिक आदि कामों में अकर्मण्यता सब जानते हैं। इसी परिस्थिति को बदलना अपना काम है। समय बहुत लगता है। अनिष्ट तत्त्वों का जोर बढता है। यह सब सत्य है। तथापि आगे अपने तत्त्व तथा कार्य की शरण में सबको आना पडेगा। इस अवस्था की सिद्धता, अपनी ओर से अच्छा केंद्रीभूत ठोस कार्य कुछ छोटा भी क्यों न दिखाई दे, अनेक स्थानों पर खडा करने से होगी– यह आप जानते ही हैं। उसके लिए आप प्रयत्नशील भी हैं। तब मन को अस्वस्थ्य बनने देने की आवश्यकता नहीं है। प्रसन्नचित्त से यत्न करते रहना उचित दिखता है।

परिस्थिति को नगण्य मानने योग्य अभी अपना कार्य न होने से 'छाछ भी फूँककर, बरफ डालकर' भी पीने को स्थानीय बधु बाध्य हुए होंगे। अत उनपर दोषारोपण कर उनके सबध में तुच्छता का भाव मन में नहीं आने देना चाहिए। सहानुभूति से व्यवहार कर कार्य को अधिक दृढ शक्तिशाली बनाने में ही जुट जाना योग्य होगा।

५६२ अत प्रेरणा के अनुकूल कार्य मे सलग्न हो

श्री अशोक सिघल, उ प्र , — १३ जुलाई १९६४

वेदों के उच्चारों के अध्यापन की व्यवस्था का कार्य आपको रुचिकर लगा है, लगता है– यह प्रसन्नता का विषय है। सघ के कार्य में

आपको स्फूर्ति, शांति नहीं मिली, चेतना, समाधान निर्भयता आदि का अनुभव नहीं मिला। वेदों के उच्चार-श्रवण से वह बात हुई है। यह उन मन्त्रों तथा स्वरों का सामर्थ्य है, यह बात नि संदिग्ध रूप से सत्य है। अत जिसमें मन शांति आदि प्राप्त नहीं होती, उसके रहने के स्थान पर जिससे वह प्राप्त हुई होती है, उसमें रममाण होने की इच्छा होना स्वाभाविक है। आप अपनी अत प्रेरणा के अनुकूल कार्य में सलग्न हों, यही लाभदायक होगा। इस दृष्टि से श्री रज्जू भैया, श्री भाऊराव देवरस जी से परामर्श कर आप अपनी आज के दायित्व की स्थिति से मुक्त हो सकते हैं, जिससे कि हृदयानुकूल काम में निर्बाध रूप से आप लग सकें।

सघ की दृष्टि से एक योग्य अनुभवी कार्यकर्ता का अभाव सबको खटकेगा। मेरे जैसा व्यक्ति सब कार्यकर्त्ताओं के प्रति स्नेह रखने के कारण एक सहयोगी अन्य क्षेत्र में चले जाने से व्यथित भी होगा, परतु सघकार्य तो चलेगा ही। इसके आगे-पीछे उसके चारों ओर, इसके अत स्थल में ईश्वरीय शक्ति का निवास है। अत यह चलता रहेगा और अपने उद्दिष्ट को पूर्ण करने में सफल होगा। यह इसकी नियति है। इस विश्वास के कारण आपने अन्य कार्य करने का निर्णय करने पर भी कार्य की दृष्टि से अत्यधिक चिता करना व्यर्थ होगा। आप भी यह सोचकर चितित न हों कि आप पर विश्वास से छोडा हुआ कार्य बीच में छोडकर जाने पर कार्य का क्या होगा? जो होना हो, सो होता रहेगा, किंतु आप अपने मनोनुकूल पवित्र कार्य के लिए प्रस्तुत होने से न रुकें। यही उचित और अतत लाभदायक होगा।

५६३ योजनानुसार प्रयत्न आवश्यक है

श्री दिगबर घाटपीटे, मिरज — १४ जुलाई, १९६४

ज्ञात हुआ कि इस वर्ष प्रात में विस्तारक योजना कार्यान्वित होनेवाली है, जिसमें कुछ स्वयसेवक बधु विभिन्न स्थानों पर कुछ दिन रहकर शाखा चालू करने का प्रयत्न करनेवाले हैं। नएपन का उत्साह रहना सभव है। यह उत्साह तात्कालिक रहने से लाभ न होकर क्वचित् हानि होने की सभावना भी है। इस उत्साह का स्वरूप अस्थायी न रहे। योजना के अनुसार जिस स्थान पर बाद में भी प्रति सप्ताह, वैसा न जमा तो प्रति पखवाडे जाने की परिपाटी चालू रखकर शाखा का उत्साह स्थायी बनाए—

रखकर एव यह कार्य अपनी प्रतिदिन की शाखा के कार्य का अग है, ऐसा समझकर सबको व्यवहार करना चाहिए। इस दृष्टि से विस्तार-योजना के लिए आगे आनेवाले बधुओं से बातचीत कर उन्हें ये सारी बातें समझाएँ। इस ओर सभी सबधित कार्यकर्ताओं का ध्यान होगा ही। (मूल मराठी)

५६४ उपकारी-अपकारी सब अपने

श्री बाबूराव पालधीकर, कटक — १४ जुलाई, १९६४

आपके कल मुक्त होने का समाचार तार द्वारा आज दोपहर को मिला। आज शाम को आपसे फोन पर हुई बातचीत से मुझे बताया गया कि आपका स्वास्थ्य आदि ठीक है एव आप प्रसन्नचित्त हैं। बहुत आनद हुआ।

जिन महानुभावों ने इस प्रकरण में आपका समर्थन कर अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई, उन सभी (समाचार-पत्रों के सपादकों आदि सहित) को व्यक्तिश मिलकर उनके सत्पक्ष के समर्थन करने के लिए अभिनदन कर उनका आभार मानना भी आवश्यक है। जिन्होंने मन में अपसमझ धारण किया, उन्हें भी क्रमश मिलकर उनका मन निर्मल करने का प्रयत्न करें। ऐसा करते समय उन्हें दोष न दें। जो हुआ, सो कृष्णार्पण कर उनसे सबध बनाए रखना ही उपयोगी होगा। यह कब किया जाए, इसका विवेक आप स्वय करें एव योग्य अवसर प्राप्त होते ही उस पर अमल करें।

अपकारकर्ता भी अपने ही हैं, हृदय जीतने की यह सघ की सफल सिद्ध हुई रीति है। (मूल मराठी)

५६५ सफल कार्यपद्धति का सबल

श्री सुदर्शन टेंभेकर, — २० जुलाई १९६४

लोगों में सौजन्य है, विचारों से सहमत होने में उन्हें अडचन नहीं आती है, परतु प्रत्यक्ष कार्य में सम्मिलित होने के लिए कर्तव्य का स्वय पर भी दायित्व है, इसका एव दैनदिन जीवन का एक निश्चित हिस्सा नियम से कार्य के लिए देना चाहिए– इसका भान एव उद्यमशीलता उनमें जितने प्रमाण में जागृत रहना चाहिए उतनी मात्रा में दिखाई नहीं देती है। बाल

तरुण, छात्रवर्ग में गाभीर्य नहीं है। मनमौजी आवारगी करने में बहादुरी समझने की वृत्ति, अन्य स्थानों के समान ही अनुभव में आती है। इस वातावरण को योग्य दिशा देकर देश का चितन, राष्ट्र के लिए बेचैनी अनुभव करने का स्वभाव बनाना होगा। इसके साथ ही नियमितता, समय पर काम करने का गुण, अनुशासन का सस्कार भी दृढ करना है। यह सब आपके ध्यान में है ही। हम लोगों ने सघकार्य में एक विशिष्ट व्यवहार का पोषण किया है। स्वयसेवकों का परस्पर व्यवहार शुद्ध, प्रामाणिकता, सहानुभूति, सहयोग, एक-दूसरे के लिए चाहे जितने परिश्रम सानद उठाने का, अर्थात् उत्कट प्रेम, बधुभाव का हो– ऐसा हम लोगों ने ध्यानपूर्वक प्रयत्न किया है एव उसका सर्वत्र अनुभव होकर सघ-व्यवहार से अपरिचित लोगों को वह अनुभव में आते ही उन्हें आश्चर्यचकित किया है। यह व्यवहार अकृत्रिम हो, रोम-रोम में समाया हो। उसमें खींच-खॉचकर कृत्रिमता से कुछ किया है, ऐसा न हो। इसके लिए आपको स्वय अधिक परिश्रम कर अपने उदाहरण से सभी स्वयसेवक बधुओं को समझाना पडेगा। शेष प्रतिदिन के कार्यक्रम, बैठकें, विचार-विनिमय, नैमित्तिक उत्सव आदि कार्यक्रम स्मरणपूर्वक योग्य रीति से करने की जानकारी आपको है ही। सर्वांगीण वृद्धि करनेवाला अपना काम अपने हाथ से घटित होने में इन बातों पर ध्यान रखना हितकारी होगा यह मुझे लगा, इसलिए लिखा है।

(मूल मराठी)

५६६ पुराने स्वयसेवकों का बैठ जाना कैसा रोकें?

डा ग रा लेले, २१ जुलाई, १९६४

नए-पुराने कार्यकर्ताओं का आना-जाना चलता रहता है। केवल आनेवालों का प्रमाण अधिक हो एव जानेवालों का प्रमाण उत्तरोत्तर कम होता जाए, यह लाभदायक होगा। अनेक स्वयसेवक बधु आते हैं, नएपन के उत्साह से व्यवहार करते हैं एव उसपर से लगता है कि वे कार्य करने में कुशल हो गए है, कार्य का विचार-व्यवहार (तत्र-मत्र) पूरी तरह से समझ गए हैं एव निरतर कार्य करने की निष्ठा भी उनमें प्रस्थापित हो गई हे। उनके विचार, आचरण, भावनाओं की शुद्धता, चारित्र्य-गठन, श्रद्धा-निष्ठाओं के सवर्धन की ओर दुर्लक्ष्य होता है। इस कारण ये पुराने बनकर झरने लगते हैं। अपने सब कार्यकर्ताओं की यह कमी दूर हुई, एव पुराने अनुभवी

स्वयंसेवक भी मार्गदर्शन की अपेक्षा रखते हैं– यह ध्यान में लेकर, उनमें नित्य विचार-विनिमय, उनकी अड़चनें समझकर उनके व्यवहार में न्यूनता न आए ऐसा मार्गदर्शन होता रहे। सब दृष्टि से उनका पोषण किया गया एवं उनपर अन्य बंधुओं के संस्कारित करने का दायित्व सौंपकर उन्हें कार्य में, मैं भी अपने अन्य अधिकारियों के समान ही महत्त्व का घटक हूँ– ऐसा विश्वास पैदा किया गया तो यह झड़ना बहुत प्रमाण में रुक सकेगा। आप ध्यान रखकर कार्यवृद्धि के लिए विश्वास से परिश्रम कर ही रहे हैं। इससे निश्चित ही उत्तम वृद्धि होगी। (मूल मराठी)

५६७ श्रीगुरुदक्षिणा समर्पण भाव से हो

श्री विजय बाराहाते, रायगढ २२ जुलाई, १९६४

इस वर्ष विभाग की श्रीगुरुदक्षिणा का जो लक्ष्य आपकी शाखा को दिया गया है, वह पूर्ण होने की दृष्टि से प्रयत्न करते समय दक्षिणा समर्पण भावना से हो एवं एक पुनीत कर्तव्य के नाते अधिक से अधिक समर्पण हो, ऐसा वातावरण निर्माण किया एवं रखा जाए। पैसे देने, उपकार, चंदे की भावना अनिष्ट है। राष्ट्रभक्ति, कार्यनिष्ठा, कर्तव्यबुद्धि से प्रेरित होकर, अधिकाधिक समर्पण तन-मन-धन से करना है, ऐसा विचार एवं शुद्ध भावना रहना अपनी पद्धति के अनुरूप है। संक्षेप में कार्य की रीति-नीति-पद्धति, विचार-भावना मन में रखकर कार्य जोर से बढ़ेगा, ऐसा प्रयत्न करें। (मूल मराठी)

५६८ अनुवर्ती क्रियान्वयन

श्री शरद चौथाईवाले, खामगाँव २२ अगस्त, १९६४

नादुरा को आपके द्वारा आयोजित कार्यक्रम के लिए वे (श्री बालासाहब देवरस) जाएँगे कार्यक्रम उत्तम एवं उपयोगी होगा ऐसा प्रयास करें। कौन-कौन उपस्थित हुए इसकी जानकारी प्राप्त कर कार्यक्रम के पश्चात् उनसे मिलकर उनमें पैदा हुए उत्साहपूर्ण संस्कारों का उपयोग होगा– इस प्रकार से उन्हें काम में लगाने की योजना रहे। इसके लिए खामगाँव, मलकापुर, नादुरा आदि प्रमुख शाखाओं से उत्तम स्वयंसेवकों का काम में लग जाना आवश्यक है। आप प्रयत्न करेंगे ही। इससे शाखाओं की

सख्या में बढोत्तरी होगी एव उस क्षेत्र में पहले जैसा सघ का वातावरण फलता-फूलता पुन बन सकेगा।

शाखा का प्रश्न पुराना ही है। स्वयसेवक बहुत हैं। उनमें से अधिकाश विचारों से अच्छे हैं एव सोचेंगे तो उत्तम कर्तृत्व प्रगट कर सकनेवाले हैं, परतु 'सोचेंगे तो ही'– यहीं पर अडचन है। शाला-कॉलेज की नई पीढी हाथ में लेकर काम करनेवालों का सच खडा हुआ तो ये पुराने भी स्वय के अनुभव का लाभ करा देने को आगे आ सकेंगे।

(मूल मराठी)

५६६ नए प्रचारक के लिए पाथेय

श्री सभाजीराव भिडे, धाराशिव २३ अगस्त, १९६४

आप नए प्रचारक के नाते कार्यार्थ आगे आए हैं, इसलिए थोडा नयापन लगना स्वाभाविक है। क्या करना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए आदि सब दृष्टि से माननीय बाबाराव भिडे, श्री मोरोपत पिंगले आदि द्वारा सूचनाएँ दी गई होंगी। श्री सुरेश केतकर से भी भेंट होती होगी ही। इसलिए आपको कोई अडचन अनुभव नहीं होनी चाहिए।

इस क्षेत्र में अभी तक स्थानीय मडली अधिक प्राप्त नहीं हुई है, तथापि स्थानीय सज्जनों के विषय में मन में किसी प्रकार की तुच्छता की भावना आने देना उचित नहीं। अपने इसके पूर्व के प्रयत्न ही अपर्याप्त हुए हों, ऐसा सोचकर उसकी पूर्ति करने के निश्चय से व्यक्ति-व्यक्ति चुनकर, आत्मीयता के सबध स्थापित कर क्रमश कार्य की जानकारी उनमें पैदा करते रहे, तो सब ठीक हो सकेगा। दैनदिन शाखा में भी अच्छे तरुण-बाल आएँ एव वहाँ नियमित रूप से अनुशासनबद्ध एव उत्साहपूर्ण कार्यक्रम हों, स्वयसेवकों में 'यह अपना कार्य है' इस प्रेरणा से वे कार्यवृद्धि के लिए परिश्रम करेंगे– ऐसी चेष्टा करें। आपके क्षेत्र के प्रमुख स्थानों में ऐसी शाखाएँ खडी करने का प्रयास करते रहें।

आप भी नियमित व्यायाम, सद्ग्रथ-पठन, श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र का मनन आदि सत्सस्कार प्रदान करनेवाली एव कार्य करने की शक्ति देनेवाली बातों की ओर ध्यान देते रहें।

(मूल मराठी)

५७० पाथेय

श्री ओमप्रकाश शर्मा, तेजपुर, असम — २३ अगस्त, १९६४

आप इस क्षेत्र में प्रचारक के नाते आए हैं। अपना सब व्यवहार उत्तम रहे तथा संघ के कार्य के प्रति रुचि एवं आदर बढानेवाला रहे, यह तो आप जानते हैं। दैनंदिन कार्यक्रमों से उत्साह, अनुशासन, नियमितता आदि स्थानीय स्वयंसेवक बंधुओं में लाना, यह अपना निजी दायित्व है। यह कार्य करने का अवसर मिलना अपने सद्‌भाग्य का विषय है, ऐसी धारणा निर्माण करने का प्रयत्न चाहिए।

५७१ कार्य के प्रति दृढ प्रवृत्ति निर्माण करें

श्री रघुनाथ मिश्र जी, राऊरकेला — २४ अगस्त, १९६४

राऊरकेला में कई दिनों से अपना कार्य सुचारु रूप से नहीं चला था। यह स्थिति बहुत दीर्घकाल रहने देना ठीक नहीं। अतः वहाँ के सब बंधुओं को समझाकर नियमित रूप से अपना पवित्र कार्य करते रहने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना आवश्यक है। बीच में कुछ सज्जनों को कारावास आदि हुआ। ऐसा तो होता ही रहा है। इससे भयभीत होकर अपना अत्यंत आवश्यक कार्य स्थगित होने देने का अर्थ होगा कि समाज-विघातक तथा उनके पोषक तत्त्वों के ही हाथों में हम लोग रहे हैं। उन्हें तो यही चाहिए कि अपने समाज में जागृति न हो, एकता न हो, शक्ति का अभाव हो, ताकि वे सरलतापूर्वक आक्रामक बनकर इसका विनाश कर सकें। उनकी इस अनिष्ट नीति का एक प्रकार से अपनी ओर से पोषण ही होगा, यदि हम अपने विशुद्ध कार्य को किसी तात्कालिक परिस्थिति से भय खाकर अपने मार्ग से विचलित हों। ऐसा तथा अन्य सब आवश्यक समझाकर कार्य के प्रति दृढ प्रवृत्ति निर्माण करनी चाहिए। कृपया आप इन बातों की ओर ध्यान देकर सबको व्यक्तिशः तथा समूहशः मिलकर सुयोग्य वायुमंडल बनाने का पूरा प्रयास करेंगे तो बडा लाभ होगा। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही उस पूरे क्षेत्र में धैर्य का, शांति का तथा अपने कार्य के प्रति अतीव अनुकूलता का वातावरण बनेगा।

५७२ कार्य-प्रगति चालू रहे

मानेनीय ए रामराव जी, मैसूर २५ अगस्त, १९६४

अपनी शाखा सभी प्रकार से प्रगति पथ पर है, इसे जानकर हम सब बहुत सतुष्ट हैं। मैं आशा करता हूँ कि प्रगति का यह क्रम चालू रहेगा और अपने कार्यकर्ता शाखा के दैनदिन कार्यक्रम, नियमितता, समयपालन और अच्छे अनुशासन की ओर दक्षतापूर्वक ध्यान देंगे। साथ ही अपनी विचार-प्रणाली और राष्ट्रीयता की विरासत प्रत्येक स्वयसेवक के हृदय पर अकित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। (मूल अग्रेजी)

५७३ व्यवसायी कार्यकर्ता को मार्गदर्शन

श्री केलबाईकर, २६ अगस्त, १९६४

आपने दुकान खोलकर स्थायी उद्योग चालू किया, यह बहुत अच्छा किया। वहाँ से (दुकान प्रारभ किए गाँव में व्यवसाय करते समय) आपको जिले के कार्यक्षेत्र में ध्यान देना कठिन नहीं होगा। शाखा के साथ ही आप अनेक सामाजिक कामों में ध्यान देते हैं, यह उचित ही है, परतु उसमें आप उलझे न रहें, यह ध्यान रखना ठीक होगा। उन कामों का सघकार्य में उपयोग, अनेकों से घनिष्ठ स्नेहसबध प्रस्थापित किया जा सके, इस पद्धति से ही इन कामों को हाथ में लिया जाए। अन्यथा सघ का स्वयसेवक उद्योगी होता है, इसलिए बाकी के सभी आप पर ही सपूर्ण बोझ डालकर अपना दायित्व झटक डालने का सोचेंगे एव उन कामों में आपकी उलझन बढकर सघकार्य की ओर ध्यान देने को समय नहीं मिलेगा– ऐसी अवस्था पैदा हो सकेगी। आप जागरूक रहकर सब करें। (मूल मराठी)

५७४ कर्मण्येवाधिकारस्ते

श्री सुधाकर जोशी, कोरेगाँव (महाराष्ट्र) २६ अगस्त, १९६४

आपने लिखा है कि बीच में निराशा छा जाती है। अपनी इच्छा एव अपेक्षा बडी होती हैं। अनेक बार उनकी तुलना में अत्यल्प कभी-कभी तो बिल्कुल नहीं के बराबर काम होता है। क्वचित् परिस्थिति के बदलाव से अकस्मात अपेक्षा से अधिक काम होता है, उसकी तुलना में अपने प्रयत्न

कम रहते हैं। यह सब होता रहता है, इसलिए कार्यकर्ता को केवल अपने प्रयत्नों, उद्योगों की ओर ध्यान देना चाहिए। उसमें कुछ कमी न रहने दें। अपना व्यवहार शुद्ध, स्नेहयुक्त रखें। वाणी मधुर हो, परतु अपने सत्य सिद्धात का उच्चारण करनेवाली हो एवं उन सभी उचित प्रयत्नों से जो फल हाथ लगेगा, वह दृढता से अपना होकर रहे, ऐसी वृत्ति से कार्य करते जाएँ, जिससे श्रीपरमेश्वरकृपा से उत्तम यश प्राप्त होगा। यह ईश्वरीय कार्य है। उसे उसके उत्कर्ष की चिता है। हम लोग उसके उपकरण हैं, इसलिए अपनी ओर से पराकाष्ठा करते रहना, इतना ही बस है। (मूल मराठी)

५७५ अपनी रीति-नीति न भूले

श्री रामशरणजी, २६ अगस्त, १९६४

पत्र पढकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पढे-लिखे समझदार व्यक्ति भी विवेक नहीं करते और यह नहीं सोचते कि सघकार्य की रीति-नीति में यदि कभी कोई परिवर्तन होनेवाला हो तो उसका समाचार 'उजाला' या तत्सम सनसनी-निर्माण के लिए मनगढत सर्वथा असत्य बातें छापनेवाले वृत्त-पत्रों से नहीं तो सघ के कार्यालय से या दायित्वपूर्ण कार्यकर्ताओं से प्रथम सब स्वयसेवक बधुओं के पास पहुँचता तथा वैसा वह पहुँचा नहीं होने से यह वृत्त-पत्रीय असत्य का एक उदाहरण मात्र है।

५७६ चमत्कार की प्रतीक्षा मे समय नष्ट न करे

श्री वेदप्रकाश शर्मा, सहारनपुर, उ प्र १५ सितबर, १९६४

आपका पत्र पढकर बहुत दु ख हुआ। गत १५ वर्ष सघकार्य में रमे हुए बधु अपने मन को इधर-उधर भटकने देते हैं और उससे कार्य में उनका ध्यान कम हो जाता है यह वास्तव में बहुत दु ख की बात है। मुझे शौलमारी आश्रम का ज्ञान नहीं है। उसकी गतिविधियाँ ऐसी चलती दिखती हैं कि मन में सदेह तथा चिता उत्पन्न होती है। श्रद्धेय नेताजी यदि वहाँ हैं और आगे आएँगे तो उनका स्वागत उनके आगमन के स्वरूप को देखकर जैसा उचित होगा वैसा करने में सबको हर्ष होगा। परतु जब तक वैसा प्रस्थापित नहीं होता केवल तर्क करते रहकर स्वकर्तव्य से च्युत होना ठीक नहीं है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि किसी भूतकालीन महापुरुष के पुनरागमन की प्रतीक्षा में समय नष्ट न करते हुए स्वीकृत कार्य को दृढता से, लगन से बढाने में, उसमें बल, सद्गुण तथा निष्ठा सुप्रतिष्ठित करने में पूरी शक्ति से जुट जाएँ।

५७७ सच्चा उपकारकर्ता आवश्यक है

श्री य य लिमये, गतकुणकी, बीजापुर   १६ सितबर, १९६४

आपने मेरे भीतर की अनेक त्रुटियाँ उत्तम रीति से प्रकट कर परमपूजनीय डा हेडगेवार के चरित्र के प्रसग का स्मरण दिलाकर एव अपनी स्वय की प्रखर निष्ठा उदाहरण के लिए विशद कर मेरी गलती मेरे ध्यान में ला दी। आपका जितना आभार माना जाए, उतना थोडा ही है। मुझे अज्ञात अनेक त्रुटियाँ मुझमें हो सकती है, उनका ज्ञान करा देकर मेरे कान ऐंठनेवाला सच्चा उपकारकर्ता आवश्यक है। इसके बाद भी मुझमें सुधार न हो तो मुझे बाजू में हटाकर कार्य का सच्चा हित साध्य करनेवाला भी आवश्यक है। ईश्वर-कृपा से ऐसा कल्याणकर्ता शीघ्र प्राप्त हो एव योग्य व्यक्ति के कंधे पर कार्य की धुरा रखकर, कार्य का विशुद्ध स्वरूप में उत्कर्ष हो।

यहाँ शाखा-स्थापन कर वह नियमित रूप से चालू हो जाने पर, वैसी सूचना आप यहाँ भेजेंगे ही। (मूल मराठी)

५७८ कार्य की सुस्पष्ट कल्पना

श्री मधुकर राव मालशे, धुले   १६ सितबर, १९६४

दैनदिन शाखा के बारे में, उस विषय के प्रत्येक काम के सबध में आप करते होंगे ही। नए-नए, छोटे-बडे लोगों से मिलकर उन्हें सघ की ओर आकर्षित कर नियमित दैनिक शाखारूप कार्य में वे समरस होंगे, ऐसी कृति-उक्ति की एव यह करना आवश्यक है– इसकी जानकारी करा देना आवश्यक है। सभी स्वयसेवकों को सघ के विचार, ध्येय की यथायोग्य जानकारी होगी, उसपर विश्वास होगा, तदनुरूप व्यवहार का निश्चय एव ध्येय पूर्ण करेंगे ही, ऐसी निष्ठा बढती रहेगी– ऐसा बोलना, चर्चा करना, इतिहास आदि के प्रमाणों से समझा देना अत्यत आवश्यक है। आप, आपके स्थान, स्थान के अधिकारी एव कार्यकर्ताओं को इस ओर ध्यान देना अत्यत आवश्यक है। (मूल मराठी)

५७९ आवश्यकता की तीव्रता गुण-विकास की जननी

श्री अरविंद साखलकर, दोंडाई — १६ सितंबर, १९६४

आत्मविश्वास से काम करें। भाषण देना नहीं बनता हो तो भी कुछ बिगड़ता नहीं। बैठकों, चर्चा में बात कर सकें, प्रश्नोत्तर कर सकें एवं अपने विचार-सिद्धांत समझा सकें तो बिल्कुल पर्याप्त है। भाषण के विषय में विचार करने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता की तीव्रता हो तो अपने-आप वह गुण आपमें प्रकट होगा।

परंतु दैनंदिन शाखा की गटपद्धति से व्यवस्था, कार्यक्रमों की रचना, शारीरिक कार्यक्रमों, व्यवस्थित रूप एवं अनुशासन आदि दैनिक आवश्यकता के बारे में आपको योग्य रीति से मार्गदर्शन करना चाहिए। उसी प्रकार नए स्थान ढूँढकर या पुरानी बंद पड़ी शाखाओं के स्थानों पर जाकर शाखा चालू करें। इस दृष्टि से प्रयत्न करने में आपको नित्य तत्पर रहना चाहिए। ऐसा लगता है कि आप यह सब उत्तम रीति से कर सकेंगे।

(मूल मराठी)

५८० जनशक्ति का राष्ट्रकार्यार्थ उपयोग

डा. के.आर. कुलकर्णी, गजेंद्रगढ — १६ सितंबर, १९६४

प्रांत में अपना कार्य अच्छी तरह से चल रहा होगा, ऐसी मुझे आशा है। देश में सर्वत्र अशांति है। सर्वसाधारण मनुष्य को स्वयं का पेट भरना ही कठिन है, तो परिवार तथा अन्य आश्रितों के विषय में क्या कहना। मुझे आशा है कि परिस्थिति शीघ्र सुधरेगी, केवल दमननीति से नियंत्रित नहीं की जाएगी। कुछ लोग इस अवसर का, शासन का, समाज की शांति एवं प्रगति तथा देश की सुरक्षा तथा आत्मसम्मान को हानि पहुँचाने की हद तक, दुरुपयोग करने पर तुले हैं। हमें अपना कार्य सुदृढ़ नींव पर खड़ा करते हुए जनशक्ति की विस्फोटक भावनाओं को नियंत्रित कर, उसे देशभक्तिपूर्ण शांतिमय कार्यों में लगाना है। (मूल अंग्रेजी)

५८१ दूषण नहीं, भूषण

श्री ब्रह्मदेव जी, जयपुर — २० सितंबर, १९६४

आपके पत्र से Subversive (विध्वंसक) शब्द के कारण आपको

होनेवाली व्यथा का ज्ञान हुआ, किंतु इसमें दु ख करने का कारण नहीं है। इस शब्द का सघ के लिए प्रयोग करनेवाले अज्ञानवश ऐसा नहीं करते तो उनका हेतु उसमें अच्छा न होने के कारण करते हैं। साथ ही मातृभूमि की अक्षुण्णता से खिलवाड करनेवाले, राष्ट्र की धार्मिक, सास्कृतिक धरोहर को हेय मानकर उसको भिन्न-भिन्न प्रकार से ध्वस्त करनेवाले काम करने में सलग्न लोग अपने सघ के लिए इस शब्द का प्रयोग करते हैं, यह हम लोगों के लिए गौरव का विषय होना चाहिए, क्योंकि मातृभूमि की अक्षुण्णता भग करने, उसे होने देने का विरोध, राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के विनाश के प्रयासों का विरोध करनेवाला सघ है— यह अर्थ उसमें से सरलता से प्रकट होता है। यह अर्थ अपने लिए भूषणावह है।

५८२ आत्मविश्वास से ही बोले

श्री सुदर्शन जी, इदौर — १३ अक्तूबर, १९६४

आपने अपने भ्रमण में आए अनुभवों को लिखा है। धैर्य से बात करने का गुण सबमें लाना आवश्यक है। यह सभव है, परतु स्वच्छद रहने की प्रवृत्ति बढने से इस गुण को धारण करने के कारण जो सयमित कार्य का बधन आता है, उसकी अरुचि होने के परिणामस्वरूप इस गुण को अपने में लाने के लिए कई बधु सिद्ध नहीं होते। यह सोचकर प्रयत्न में बहुत बल भरना आवश्यक है।

५८३ मकरसक्रमणोत्सव मे नेपाल-नरेश

२७ दिसबर, १९६४

मा दादासाहेब गोखाडकर, विभाग सघचालक, नासिक

आपने समाचार-पत्रों के माध्यम से पढा ही होगा कि नागपुर के मकर सक्रमणोत्सव का निमत्रण श्रीमन्महाराजाधिराज नेपाल-नरेश ने स्वीकार कर लिया है। कार्यक्रम भव्य हो, ऐसी व्यवस्था की जा रही है। नेपाल एकमेव हिंदू-राज्य है, इसलिए समस्त हिंदुओं के लिए अभिमान का विषय है। उसके महाराजा का प्रकट सत्कार करना— इतना ही हेतु इस कार्यक्रम का है। हम लोग किसी से कुछ याचना नहीं करते हैं। केवल आत्मीयता एव प्रेम रहे— यही अपनी अपेक्षा है।

५८४ अवाछनीय शब्दप्रयोग न हो

श्री प्रेमचद जी, हिसार, हरियाणा ८ मार्च, १९६५

आप मुझसे क्षमा माँगे, ऐसी कोई बात नहीं हे। वह शब्द मुझे खटका और श्री माधवराव जी से मैंने कहा कि यह शब्दप्रयोग अनिष्ट है, यह आपके ध्यान में वे ला दें। अनेक बार शब्द का प्रयोग अनवधान से होता है। वही भाव मन में रहता ही है, ऐसा नहीं होता। तो भी एक बार मुँह से निकल गए शब्द को सुननेवालों पर आघात होकर अपनी इच्छा-अपेक्षा के विरुद्ध परिणाम निकल सकता है। शब्द को लौटा लेना सभव नहीं होता। बाद में स्पष्टीकरण आदि से कुछ समाधान भले ही हो, आघात के परिणाम सर्वथा दूर होना बहुत कठिन होता है। यह सोचकर ही मैंने आपके ध्यान में उस दिन के उस शब्द की अवाछनीयता ला देने का प्रयत्न करने के लिए सूचित किया था।

इस विषय पर चिंतन करते बैठकर विमनस्कता का शिकार बनना नहीं चाहिए। आगे के लिए अधिक सतर्क रहकर वही अपना स्थायी भाव बने और अनिष्ट शब्द मुँह से निकालना असभव हो— यही प्रयत्न करना उचित होगा। शीघ्र ही आपको इसमें सफलता मिलेगी। सब प्रकार की सतर्कता रखनेपर भी कभी भूल से ऐसा शब्दप्रयोग हुआ तो तुरत ध्यान में आ सकेगा और उसी क्षण उसे सुधारना भी सुगमता से हो सकेगा।

५८५ अनवधानता के लिए क्षमाप्रार्थी

श्री रघुवीरचरण शर्मा, ब्रिजराजनगर, उत्कल १९ मार्च, १९६५

आपने मेरे व्यवहार में हुई भूल को ध्यान में ला दिया— यह मेरे ऊपर बडा उपकार हुआ है। अब वैसा न हो, इसका ध्यान रखूँगा। तो भी अनवधान से कुछ गलतियाँ हो जाती हैं। जागरूक साथियों के प्रयत्न से उसका कुप्रभाव नहीं होता और मुझे चेतावनी प्राप्त होती है। यह सब अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं के कर्तृत्व का ही फल है। बलागीर की बैठक में जो दुर्व्यवहार मेरी ओर से हुआ था, उसके लिए मै सर्व स्वयसेवक बधुओं से विशेषत जिन नूतन बधुओं का इसमें सबध है, उनसे क्षमायाचना करता हूँ। अब अधिक कुछ करने की गुजाइश नहीं रही है। आशा है अपने सब बधु कुशल होंगे

५८६ दोनों के सद्सद्विवेक पर छोड़ दें

श्री बापूराव घारपुरे, महाराष्ट्र   २३ मार्च, १९६५

आपका विचार ध्यान में आया। यह स्पष्ट है कि चुनाव में हिंदू महासभा एवं जनसंघ ने चुनावी तालमेल किया तो दोनों का ही लाभ है, यह उनके कार्यकर्ताओं को सोचना चाहिए, परंतु यह बात बहुत कठिन है, ऐसा मेरा पुराना अनुभव है। एक बार मैं इस प्रयोग में झुलस गया हूँ। इसलिए अब उन दोनों संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के सदसद्विवेक बुद्धि एवं व्यवहार-ज्ञान पर छोड़कर मेरा स्वयं अलग रहना मुझे उचित दिखता है। अन्यथा, सीधे संघ के मार्ग से जाने की इच्छा रखनेवाले मुझ जैसे को यह राजनीति के पचड़ों की उठापटक करना शोभा भी नहीं देता। हिंदू-समाज के लिए आप अनेक क्षेत्रों में काम कर रहे हैं उनमें आप अधिकाधिक सुयश प्राप्त करें, इस दृष्टि से यह बतलाया जा चुका है कि संघ के विधि-निषेध का पालन करते हुए जो कुछ कर सकता हो, वह वहाँ के कार्यकर्ता करें। (मूल मराठी)

५८७ मातृवियोग की सांत्वना

डा मुरली मनोहर जोशी   २६ मार्च, १९६५

आपकी पूज्य श्री माताजी का स्वर्गवास हो गया है। बहुत दिनों से असाध्य रोग से वे पीड़ित थीं। मुबई में आपने उपचार कराए थे। किन्तु रोग का स्वरूप ही ऐसा है कि उससे आक्रात होने पर सभवत कोई बच नहीं पाया है। इस स्थिति में उससे प्राप्त होनेवाली असहनीय पीडा से छुटकारा केवल मृत्यु ही दे सकती है। मेरे एक निकटवर्ती मित्र और सघ के कार्य के सहयोगी की धर्मपत्नी की स्थिति मैंने देखी है। तात्कालिक दु ख-विस्मृति के लिए मारफिया इजेक्शन लगातार बढती मात्रा में देते रहने पर भी जब कभी होश आ जाता था, तब उनकी व्यथा देखना भी असह्य होता था। आपकी पूज्य माताजी के सबध में मुझे यही लगता है कि श्रीभगवान ने दया करके उन्हें उठा लिया और दैहिक पीडा से इस जन्म के लिए उन्हें छुडा लिया।

आपने उनकी उत्तम सेवा कर पुत्रधर्म का उदाहरण उपस्थित किया

है। आपको मातृवियोग से अपार शोक होना स्वाभाविक है, तथापि यह अच्छे के लिए ही हुआ है, ऐसा सोचकर मन शात, सतुलित कर स्वकर्तव्य में जुट जाना भी आप जैसे सत्कर्मी व्यक्ति के लिए स्वाभाविक है। परमकृपालु श्रीभगवान के चरणकमलों में आपको शोक-निवृत्ति प्राप्त हो तथा घर में सबका सात्वन करने की शक्ति प्राप्त हो, एतदर्थ मैं प्रार्थना करता हूँ। दिवगत जीव को सद्गति प्राप्त हो, ऐसी उसपर कृपा प्रभु करेंगे ही।

५८८ *भ्रम अपने ही मन में है*

श्री पी एम पड्या, गाधीधाम, गुजरात ५ अप्रैल, १९६५

आपने जिस कठिनाई का उल्लेख किया है, उसका उद्गम अपने ही मन में होता है। अपने मन में ही सघ-जनसघ का सबध, सघ मानो जनसघ की सहायक सस्था के रूप में चलता है, ऐसे भ्रम रहते हैं और उनका बाकी लोगों पर आरोप कर लोगों को समझना कठिन होता है, ऐसी बातें करने की, याने एक प्रकार की आत्मवचना की प्रवृत्ति होती है। शात चित्त से देखने पर सघकार्य अपनी विशिष्ट गति से अपनी नीति से चल रहा है-- यह स्पष्ट हो जाएगा और जनसघ या अन्य किसी राजनैतिक सस्था में कोई स्वयसेवक होंगे तो भी सघ के कार्य में उन सस्थाओं का हस्तक्षेप न करने के नियम से वे चलेंगे। उन्हें वैसा चलने के लिए अन्य स्वयसेवक बधुओं की सहायता भी मिलती रहना आवश्यक होता है।

अत आप स्वय को भ्रम से बचाकर कार्य करते रहें तो अच्छा होगा, परतु आपके पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि आप प्रत्यक्ष कार्य में न रहकर केवल 'सबध' मात्र के होने में सतोष मान रहे हैं। केवल दूर से 'सबध' होने से अनेक प्रकार के विचित्र विचार-प्रचार सत्य लगने लगते हैं, मन सशयाकुल होता है और सघ की जानकारी दूषित हो जाती है।

आप गभीरता से सोचें, अपने अन्यान्य कार्यकर्ता बधुओं से परामर्श करें और निश्चय के साथ अपने सघकार्य में प्रत्यक्षत जुटे रहें। यही आपसे मेरी नम्र प्रार्थना है।

५८९ *और कुछ काल जोरदार प्रयत्न*

श्री श्रीकात जोशी, असम ५ अप्रैल, १९६५

आपका पत्र पढकर क्या अनुभव हुआ-- यह मैं नहीं बतला

सकता। स्थानीय कोई शाखा चलाता रहेगा, तब उसकी जड जमेगी। इसके लिए जो प्रयत्न हुए है, लगता है कि अब तक फलदायी नहीं हुए हैं। स्पष्ट रूप से यही है कि और कुछ काल जोरदार प्रयत्न जारी रखने पडेंगे। अनेकों से घनिष्ठ सबध जोड कर, उसमें से स्थिरता से कौन काम करेगा इसका चुनाव कर उन्हें शाखा का तत्र समझाकर कार्यप्रवण करना पडेगा। यह सब करते समय उतावलेपन से, कभी रोष, तो कभी निराशा आ सकती है। उससे सर्वथा अलिप्त रहना चाहिए। हम श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं– यह आत्मविश्वास रखकर मन सदैव प्रसन्न एव उत्साही रखना चाहिए। इससे अपेक्षित यश मिलेगा। इसके लिए कम-अधिक समय लग सकता है।

(मूल मराठी)

५६० एक गृहस्थाश्रमी कार्यकर्ता को मार्गदर्शन

श्री राजाभाऊ कोल्हटकर, कऱ्हाड, महाराष्ट्र ३० जून, १९६५

ससार में ऐसे अनुभव आते ही है। स्वय के स्वार्थ के समय दूसरों से सौजन्यता से व्यवहार करना मात्र दिखावा रहता है, अन्यथा परस्पर से परायापन का भाव रखकर, व्यवहार में भी स्नेहशून्यता का आचरण करना सामान्यत मनुष्य का स्वभाव होता है। इसमें कुछ लोग सच्चे होते हैं, मन पूर्वक सौजन्यपूर्ण आचरण करनेवाले हैं, ये अपवादस्वरूप होते हैं। यह स्थिति बदलनी चाहिए, और यही सामान्य गुण होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति, घरपरिवार एव सपूर्ण समाज में अभिजात सौजन्य से व्यवहार करनेवाला बने– ऐसा हम प्रयत्न कर रहे हैं। इस गुण का स्वाभाविक परिणाम नि स्वार्थ राष्ट्र सेवा में हो– ऐसा अपना प्रयत्न है। इस श्रेष्ठ प्रयत्न में अपना भी हिस्सा है। अतएव उदार अत करण से सब कुछ कृतघ्नता भी सहकर अपने आप्त-स्वजनों को प्राप्त दु ख से छुटकारा दिलाने का अपना कर्तव्य पालन करना स्वाभाविक ही है। श्रीपरमेश्वर की कृपा से प्राप्त कठिन प्रसग का शीघ्र निवारण होगा एव एक कर्तव्य– जिसकी प्रतिकूल प्रतिक्रिया ही होनेवाली है– उत्तम रीति से पूर्ण करने का विशुद्ध सात्विक सतोष आपको प्राप्त होगा। धीरज धारण करे, मन की उदारता न छोडें। जिससे आपकी इच्छा के अनुसार सब कुछ घटित होगा।

५६१ विचित्र तरीका

श्री काशीनाथपत लिमये, सागली   २२ अगस्त, १९६५

इस बीच समाचार-पत्रों में यह पढा कि कोल्हापुर के क्षेत्र में कुछ धूमधाम मची थी। दु ख हुआ। जनता का धैर्य जब टूट जाता है, और लोग जब ऊधम मचाने लगते हैं, तब कहीं शासन की ओर से दौडधूप होती है और धान्य का सभरण किया जाता है। यह तो एक विचित्र तरीका प्रतीत हुआ। कार्यतत्परता का यह लोकविलक्षण नमूना ही समझना चाहिए। देशभर में यदि ऐसी ही तत्परता चलती रही, तब तो परिस्थिति निश्चित ही बहुत शोचनीय हो जाने का भय लगता है। अनेक शत्रु केवल दरवाजा ही नहीं खटखटा रहे हैं, अपितु भीतर प्रविष्ट हुए हैं, और सकटों को बढा रहे हैं। ऐसे समय में जिम्मेवार लोगों को बहुत दक्ष रहना चाहिए। देश के भीतर सुव्यवस्था रखनी होगी और शत्रु के प्रतिकारार्थ अबाधित सिद्धता रखनी होगी। इन बातों में अव्यवस्था न रहे। यदि केवल बलप्रयोग के आधार पर सुव्यवस्था रखने का प्रयास किया गया, तो कालातर से वह देश के लिए घातक सिद्ध होगा। (मूल मराठी)

५६२ गुरुदक्षिणा का धर्मसकट

श्री अण्णासाहब डबीर, वाशिम (विदर्भ)   २३ अगस्त, १९६५

आज ५१ रुपए प्राप्त हुए। मैं एक महान धर्मसकट में पड गया हूँ। आप ज्येष्ठता के नाते सब प्रकार से अत्यत आदरणीय हैं। आपकी इच्छा की उपेक्षा करने की इच्छा नहीं होती है एव व्यक्ति के नाते गुरुदक्षिणा ग्रहण करना मेरी योग्यता एव सघकार्य के सिद्धातों की दृष्टि से अयोग्य है। ऐसी स्थिति में 'क्या करूँ' यह सूझता नहीं है। आप ही मार्गदर्शन कीजिए- यह विनती करने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। तब तक यह धनराशि सुरक्षित रखने की व्यवस्था कर रहा हूँ। (मूल मराठी)

५६३ आवेश मे आना उचित नहीं

श्री जगदीश अग्रोल, रॉची   ६ अक्तूबर, १९६५

मैं आश्चर्य कर रहा हूँ कि आपको इतना आवेश क्यों आया।

मित्रवर श्री चमन स्वरूप के सबध में उपचार करना धन के लिए रुका नहीं था। वहाँ के चिकित्सकों ने पूर्ण निराशा व्यक्त करने से ही सब लाचार हो गए। तो भी पूछताछ तथा प्रयत्न चल रहा है। आपके पत्र को पढकर कुछ अटपटा लगा, क्योंकि उससे यह अर्थ निकलता है कि हम सब लोग, श्री माधवराव मुल्ये आदि श्री चमन स्वरूप के सबध में लापरवाह हैं और उसकी चिकित्सा के लिए धन लगाने में आनाकानी करते हैं। आप जैसे विश्वासपात्र सहयोगी जब ऐसा आरोप करने लगे तो फिर हम लोगों का सघ में किसी दायित्व के स्थान पर रहना उचित नहीं प्रतीत होता। आगे आपसे प्रत्यक्ष में परामर्श कर योग्य निर्णय करना पडेगा कि हम अपने-अपने स्थान से हटें और अन्य सुयोग्य व्यक्ति कार्यभार सँभालें।

५६४ पितृवियोग पर सात्वना

प्राध्यापक श्री राजेंद्रसिंह जी, प्रयाग   २२ नवबर, १९६५

कल मुबई में समाचार मिला कि आपके पूज्य पिताश्री इहलोक छोड गए। अकस्मात यह समाचार मन को बधिर सा बनानेवाला है।

आप सबको सात्वना के शब्द लिख भेजना यह एक औपचारिक कर्तव्यपालन मात्र है। मेरे शब्दों में वैसी शक्ति नहीं है। न ही मेरी मन स्थिति इतनी शोकमुक्त है कि मैं आपको सात्वना दे सकूँ। अभी मन का सतुलन स्थापित करने का प्रयास ही कर रहा हूँ।

परमकृपालु श्रीभगवान आपको पूर्ण मन स्वास्थ्य प्रदान करें। असहनीय दु ख को सहकर स्व-कर्तव्य करते रहने की शक्ति, धृति प्रदान करें। मर्त्यलोक का त्यागकर दिव्य लोकों की ओर प्रस्थान कर गए अतिपूज्य प्रिय जीव को सर्वमगल प्रदान करें। यही इस प्रसग में परमदयाघन के चरणकमलों में प्रार्थना करता हूँ।

और कुछ लिखना सूझ नहीं रहा है।

५६५ अच्छे परिणाम के प्रति आशान्वित रहें

श्री अनतबधु वसु, तिनसुकिया, असम   २३ अक्तूबर, १९६५

गत दो तीन मास, मैं 'युद्ध' जैसी परिस्थिति से प्रभावित क्षेत्र में कुछ स्थानों पर जाने के कारण नागपुर के बाहर ही था। कल ही मैं वापस

लौट आया हूँ। वहाँ लोगों ने सभी प्रकार के कष्ट और विपत्तियों को प्रशसनीय साहस के साथ सहा है। उनका मनोबल ऊँचा है। सभी लोग, किंतु अनुभव कर रहे हैं कि स्थायी शातता अभी तक दृष्टिगोचर नहीं हो रही है और शत्रुपक्ष की वैरभावना का कभी भी विस्फोट हो सकता है। अर्थात् अपने नेतागण किस निर्णय पर पहुँचते हैं, इसपर बहुत कुछ निर्भर है। परतु एक बात तो स्पष्ट है कि 'अपना देश, अपने लोगों' की प्रामाणिकता एव गौरवगरिमा को हानि पहुँचानेवाली शाति-सधि की अपेक्षा वे इस समस्या को सही ढग से हल करना ही पसद करेंगे। (मूल अंग्रेजी)

५६६ सफलता का श्रेय

प्रा राजेन्द्रसिह जी, प्रयाग ५ फरवरी, १६६६

प्रयाग में विश्व हिंदू परिषद् की सफलता का श्रेय उसके लिए प्रारभ से अधिक परिश्रम करनेवाले परिषद् के कार्यकर्ताओं को तथा प्रत्यक्ष उसका सचालन करनेवाले महानुभावों को है ही। किंतु अपने प्रात से आए अनेक कार्यकर्ता तथा प्रयाग शाखा के स्वयसेवक बधुओं ने जिस लगन से अविश्राम काम किया, वह उस सफलता के लिए अत्यत महत्त्व का कारण है। सब बधुओं को मेरी ओर से बधाई देने की कृपा करें।

प्रत्यक्ष शाखा के कारण कितने ही लोगों को जुटाकर श्रद्धायुक्त स्नेहसबध प्रबल कर सबके समन्वय से कितना उत्तम काम कितनी सुगमता से हो सकता है, इसका इस परिषद् की सफलता से स्पष्ट प्रमाण मिलता है। इसे सोचकर शाखा की दृष्टि से अधिक उद्योगशीलता तथा शाखा रूप अपनी पद्धति पर अधिक दृढ विश्वास अपेक्षित है।

५६७ प्रसिद्धि-पराङ्मुखता

श्री गणेशपत पराजपे, हरिपुर (सागली) २१ मार्च १६६६

आपकी भेजी पुस्तकें नारियल एव दस रुपए आपकी स्नेह की भेंट प्राप्त हुई। रुपयों के कारण मन अस्वस्थ हुआ। परतु श्री केशवराव जावडेकर जी ने आग्रह से कहा कि उन्होंने पराजपे जी को यह धन देने के बारे में पत्र में लिखा था, इसलिए मुझे वह ग्रहण करना ही चाहिए। इसलिए निरुपाय होकर वह कार्य के हिसाब में जमा करने को मैंने कहा, परतु मन को वह अत्यत अनुचित लग रहा है।

मेरे नाम का उपयोग कर आपने कुछ पुस्तकें भेंट स्वरूप देने का सकल्प किया है, यह भी मन को दु ख देनेवाला है। मेरे नाम का इस प्रकार डका बजाना, जिस प्रसिद्धि-पराङ्मुखता के सिद्धात के अनुसार काम करते रहने का मुझे श्रेष्ठों का आदेश है, उसे कालिख पोतना है। इससे अत करण को असहनीय वेदना हो रही है। इसलिए आपसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप यह उपक्रम न करें एव मुझे सदैव खलनेवाली व्यथा से बचाएँ। मनोव्यथा शरीर को मारक होती है एव मेरे दीर्घ एव निरोगी जीवन को मारक होती है। मेरे दीर्घ एव निरोगी जीवन की सदिच्छा आप रखते हैं, इसलिए सफल चिकित्सक के नाते भी यह मारक उपयोग में नहीं लाएँगे– ऐसा विश्वास है। इसलिए यह नम्र, परतु आग्रहपूर्वक विनती कर रहा हूँ। (मूल मराठी)

५९८ दोनो कामो का तालमेल

श्री विनायक कानेटकर, गुवाहाटी, असम — २१ मार्च, १९६६

यह पढकर बहुत सतोष हुआ कि यहाँ के समग्र जीवन से आप समरस हो रहे हैं, भाषा सीखने में भी आपकी उत्तम प्रगति हुई है। श्री भाऊराव देवरस से ज्ञात हुआ कि कार्य की दृष्टि से भी आप उत्तम यश-सपादन कर रहे हैं। इससे बहुत सतोष हुआ। क्वचित् एकाध कार्यक्रम अपेक्षा से छोटा हुआ तो उससे मन खट्टा न होने देते हुए, कारण खोज कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना श्रेयस्कर होता है। अनेक स्वयसेवक बधुओं को नियमितता, अनुशासन, कार्यक्रमों का महत्त्व, स्वय पर दायित्व लेकर काम करने का अभ्यास आदि अभी तक समझा नहीं है। अनेक बार समझकर भी ध्येयनिष्ठा पर्याप्त प्रखर न होने से काम की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति बलवती होती है। इससे अपने सकल्पित कार्यक्रम अपेक्षा के अनुसार नहीं होते हैं। यह सब ध्यान में लेकर एव कुछ प्रमाण में मानो अपेक्षा एव प्रत्यक्ष में अतर रहना अपरिहार्य ही है– यह अनुभव करके मन में कोई भी विपरीत भाव आने न देना उचित होगा।

आपको आपकी भगिनी के विवाह की सिद्धता के लिए शीघ्र ही घर जाना पडेगा, यह ध्यान में आया। जब आवश्यक समझें, तब जाकर कार्य यथाविधि पूर्ण कर अपने क्षेत्र में वापस जाएँ। आपके प्रात का वर्ग सभवत गुवाहाटी में होगा। गुवाहाटी का दायित्व आप पर होने से आपकी

बहुत दीर्घकाल अनुपस्थिति ठीक नहीं होगी। इस दृष्टि से आप प्रत्यावर्तन का दिन निश्चित कर लें। जाने के पूर्व वर्ग के विषय में कुछ प्राथमिक व्यवस्था करके रखना सभव हो तो वह करके जाना ठीक होगा। (मूल मराठी)

५६६ हृदय की व्यथा

श्री काशीनाथपत लिमये, सागली — १० अप्रैल, १६६६

धार्मिक सस्कार बिल्कुल व्यवस्थितता से सपन्न करने की ओर विशेष सावधानी से ध्यान दिया जाता है। महाराष्ट्र 'प्रगतिशील', 'सुधारवादी', अर्थात् स्वजीवन की परपरागत सब बातों का त्याग करने को उद्युक्त हो गया है– ऐसा कहने की बारी आ रही है। परपरा का त्याग, परपरा की अवहेलना एव अवमानना, याने स्वराष्ट्र के अभिमान का त्याग होता है। आजकल व्यवहार, सस्कार, मनोवृत्ति से हिंदू रहने के बदले केवल राजनीतिक आदोलन तक ही Political Hindu (राजनैतिक हिंदू) अथवा अन्य समाजों के केवल विरोध तक हिंदू, ऐसी अपने समाज के बडे-बडे कार्यकर्ता कहलानेवालों की अवस्था दिखती है। अनिष्ट स्थिति का वह निदर्शक है आदि विचारार्ह बातों की ओर दुर्लक्ष्य करना चल नहीं सकता है। फिर भी महाराष्ट्र में स्व-सस्कारत्याग एव सस्कार-लोप अधिक होने लगा है– ऐसा कहने लायक स्थिति इस प्रकार की घटनाओं के कारण पैदा होती है। कई अन्य प्रातों में विगत सहस्रों वर्षो में नित्य युद्ध परिस्थिति के कारण सस्कार-लोप हुआ एव 'जैसा राज शासन, वैसा रहन-सहन' हुआ। परतु जिस क्षेत्र से स्वधर्म- स्वराष्ट्र रक्षण का प्रचड उद्योग सफलतापूर्वक किया गया एव जिस क्षेत्र पर विदेशी राज का फदा सबसे बाद में पडने से स्वजीवन-रक्षणार्थ जिन्हें अधिक समय मिला, उस क्षेत्र में इस प्रकार सस्कार-लोप होना चिता पैदा करनेवाला है। मन में प्रक्षोभक व्यथा पैदा करनेवाले ऐसे कितने ही विचार अस्वस्थ कर रहे हैं। इसलिए अब एक तो मुझे यह करना चाहिए कि मैं प्रत्यक्ष कार्य के प्रमुख स्थान से निवृत्त हो जाऊँ, जिससे कहीं जाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होगा अथवा सब व्यक्तिगत सामाजिक सबध तोडकर केवल सघ तक ही सस्थागत सबध रखने की अनिष्ट आदत डाल लेना, इनमें से एक निश्चित करना पडेगा। इसमें मैं क्या तय करूँ इस विषय में आप मुझे योग्य परामर्श दें इसलिए यह पत्र लिखा है। इसमें कम-अधिक बहुत सा है उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। (मूल मराठी)

६०० धीरोदात्त कर्मयोगी की भूमिका अपनाएँ

श्री सुरेश रिसवूड, आसनसोल, प बगाल   २० अप्रैल, १६६६

आपके पत्र से एक निराशा का स्वर निकलने का भास होता है। उस प्रात में ऐसा अनुभव नया नहीं है। वहाँ काम करनेवाले को 'सुख-दु खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ' ऐसी धीरोदात्त कर्मयोगी की भूमिका अपने अत करण में अकित कर लेनी पडती है। त्वरित फल नहीं दिखाई दिया, तो भी अपने प्रयत्नों का वातावरण पर उचित परिणाम होता ही रहता है। कालातर से समय परिपक्व होकर उत्तम कार्य-निष्पत्ति हुई– ऐसा दिखाई पडता है। यदि एक काम करनेवाला ऊबकर या अन्य किसी अपरिहार्य कारण से एकाध क्षेत्र से चला गया एव उसके स्थान पर दूसरा आकर उसके प्रयत्नों को सुयश मिला हुआ दिखाई दिया तो उस यश के पीछे पूर्ववर्ती कार्यकर्ता द्वारा खून- पसीना एक कर किए हुए नींव भरने के श्रम ही रहते हैं, यह भूलना नहीं चाहिए। वह वापस नहीं जाता, वह काम करता रहता तो उसे भी वह यश प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त होता। काम का इसी प्रकार का अनुभव अनेक स्थानों पर आया है। आगे भी आता रहेगा। इसलिए इतने दिनों में यश न दिखाई देने से पस्त होने का कारण नहीं है। उल्टे अधिक लगन से एव आग्रह से काम खडा करने में यश प्राप्त करूँगा ही, इस निश्चय से व्यवहार करना– यही आप जैसे कार्यकर्ताओं को शोभा देनेवाला है। (मूल मराठी)

६०१ स्थानीय स्थायी कार्यकर्ता कार्य का आधार

२३ अप्रैल, १६६६

श्री कृष्णा गणपत सावत, वैजापुर, जिला औरगाबाद

अपने कार्यक्षेत्र से आप उत्तम एव पर्याप्त स्वयसेवक बधु चुनकर वर्ग के लिए ले जाएँ एव उनके द्वारा इस वर्ष काम में उत्तम सहायता होगी–ऐसा करें। अब वर्ग का विचार ही प्रमुख है। परतु वर्ग की कालावधि में शाखाएँ व्यवस्थित चलती रहें– ऐसा दायित्व स्वीकारनेवाले स्वयसेवक बधु खडे कर उनपर काम का भार सौंपें। ऐसे स्थानीय स्थायी कार्यकर्ता रहना अपने कार्य की रचना में अत्यत महत्त्व का है, यह आप जानते ही हैं। केवल कोई प्रचारक आएगा एव वह काम करेगा, हम उसके कथनानुसार थोडा-बहुत करने का आभास पैदा करेंगे, इस प्रकार की प्रवृत्ति किसी की

भी न हो, यह काम मेरा ही काम है, मुझपर यह दायित्व है, मैं योग्यता से, व्यवस्थित रीति से यह करूँगा ही, करता रहूँगा ही, ऐसा विचार प्रत्येक हृदय में प्रतिष्ठित हो एव उसमें से उन्हें अखड कार्य-प्रेरणा प्राप्त हो, ऐसी स्थिति आवश्यक है। इसकी ओर ध्यान देकर स्थानीय कार्यकर्ता शाखाओं के काम उत्साह से करते रहेंगे, ऐसी व्यवस्था करें। (मूल मराठी)

६०२ सहकारी क्षेत्र का मार्गदर्शन

श्री सदूभाऊ केलकर, आजी रोड, वर्धा — २३ अप्रैल, १९६६

'विश्वकर्मा उद्योग प्रतिष्ठान' नाम से आपने एक लघु उद्योग चालू किया है एव अनेक स्वयसेवक वधुओं का उसमें सहकारी के नाते समावेश है– यह आपके पत्र से ज्ञात हुआ है। उद्योग करने में लाभ हो, यह उद्देश्य रहता ही है। सहकारिता से कार्य होने से सब सहकारियों को उद्योग की सपूर्ण जानकारी रहे एव लाभ में उनका उचित हिस्सा यत्किंचित् भी चखचख या अपसमझ पेदा न होने देते हुए प्राप्त हो आदि वातों की ओर जेसा ध्यान आवश्यक है, वैसा ही ध्यान उद्योग के कारण जिन किसानों को या अन्य लोगों को काम करने का सुयोग मिलेगा, उनका विश्वास एव प्रेम-सपादन करने की ओर, उन्हें सच्ची सहायता, न्यूनतम उचित मुआवजा देने की ओर रहना आवश्यक है। किसी की अडचन का, अज्ञान का, भोलेपन का या अपने ऊपर के निष्कपट विश्वास का नाजायज लाभ उठाना अत्यत अनीतिकर, चोरी, डकेती, लूटमार के समान ही निद्य कर्म है। इन वातों की ओर ध्यान देकर आप अपना यह उद्योग चलाएँ यह अपेक्षा है।

आपके इस कार्य में श्रीपरमेश्वर आपको यश प्रदान करें, यह इच्छा। (मूल मराठी)

६०३ कितनी सावधानी।

श्री वापूराव मोघे, लखनऊ — २३ अप्रैल, १९६६

अभी-अभी जर्मनी से ज्ञानेश्वर दयाल जी का पत्र आया है। उन्होंने मेरे पत्र की प्राप्ति की सूचना दी है। मैं उन्हें लिख रहा हूँ कि इसके आगे इस विषय में वे आपसे ही पत्र-व्यवहार करें।

इसके बाद जब आप उन्हें पत्र लिखेंगे, तब सहज रूप में पृच्छा करें। जो पुस्तकें हम उनके पास भेजना चाहेंगे, उनमें से कुछ तो हमें खरीदनी होंगी। अत उनका मूल्य वे चुकानेवाले हैं अथवा सब पुस्तकें बिना मूल्य प्राप्त करने की उनकी इच्छा है? इन पुस्तकों का उपयोग क्या होगा? व्यक्तिगत पढाई, विद्वत्तापूर्ण भाषणादि देकर पद-प्रतिष्ठा इत्यादि प्राप्त करना, यही यदि उनका उद्देश्य हो, तो उन्हें उनका मूल्य देना ही उचित होगा। यदि वे वहाँ कोई सस्था-स्थापन करनेवाले हों, और उसके द्वारा वहाँ के लोगों को भारतीय सस्कृति, भाषा, इतिहास इत्यादि का ज्ञान देनेवाले हों, और उस सस्था को व्यक्तिनिरपेक्ष बनानेवाले हों, अर्थात् उनके जर्मनी छोडने के बाद भी वह सस्था वहाँ कार्यशील रहेगी– ऐसी व्यवस्था वे करनेवाले हों, तब तो ठीक है। ऐसा यदि उनका उद्देश्य होगा तब तो हमारा थोडा-बहुत व्यय सहन करना उचित होगा। अकस्मात इस प्रकार का विचार मन में उपस्थित हो गया। अत आपके सम्मुख यह रखा है। यदि आप उसे उचित मानते हैं, तो आप कुशलता से उनसे पूछें।

(मूल मराठी)

६०४ *अविश्वास भरा व्यवहार न हो*

श्री चद्रशेखर शर्मा जी, मुजफरपुर, बिहार — ६ जुलाई, १९६६

आपने जो लिखा है, उसके सबध में मैं पूरी जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। अपने सघकार्य में कुछ थोडे अपवाद छोडकर अन्य सभी बधु अपना घरबार-परिवार आदि चलाते हुए कार्य करें– ऐसी ही योजना है। जो अपवाद के रूप में हैं, उनकी सख्या नगण्य है। आवश्यकता पडने से कुछ अच्छे कर्तृत्वसपन्न, बुद्धिमान युवकों को केवल सघ कार्यार्थ जहाँ कहीं उन्हें भेजना पडे, वहाँ जाकर पूरा समय एव पूरी शक्ति लगाकर काम करने के लिए कहा जाता है। स्वेच्छा से और सच्चाई से जो सिद्ध होते हैं और घर के लोगों से कुछ भी न छिपाते हुए निश्चय से कार्य करने के लिए तत्परता से आते हैं, ऐसे ही बधुओं की योजना होती है। आपके बधु के सबध में तो जब तक उनकी एम ए की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, यह प्रश्न उठता नहीं।

आपके बधु ने विवाह के सबध में अनिच्छा प्रकट की– यह आपके पत्र से ही ज्ञात हुआ। इस सबध में किसी पर दबाव नहीं डालते हुए उसे मनाना, यही ठीक रहेगा। और आप सब घर के आत्मीयों

काम है। हम लोग किसी को विवाह करने या न करने के विषय में कुछ नहीं बोलते। यह बात हमारे कक्ष के बाहर है।

आपने लिखा है कि वह मैट्रिक्युलेशन तथा बी ए के प्रमाणपत्र घर में न रखकर कहीं अन्यत्र छिपाकर चले गए। इन प्रमाण-पत्रों की खोज करने की आवश्यकता आपको क्यों अनुभव हुई, यह समझना मेरे लिए कठिन है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि आप सब उसकी ओर अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं, आत्मीयत्व की नहीं। इसका परिणाम परस्पर स्नेह कम होने में हो सकता है, यह आपको ज्ञात होगा ही। मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि आपस में ऐसा स्नेहशून्य, अविश्वास से भरा हुआ व्यवहार न हो, इस प्रकार प्रयत्न करें। वह तो आपसे छोटे, आपसे कम अनुभववाले हैं। अत भावावेग में आनेवाले हैं। अत आपसी स्नेह बनाए रखने का, बढाते रहने का अधिक दायित्व आप पर है। हम लोग उसके पारिवारिक कर्तव्यभाव को, स्नेह को जगाने का जो प्रयत्न कर सकते हैं, वे सब बेकार सिद्ध होंगे, यदि आप जैसे घर के आप्तजनों से उसे अविश्वास ही प्राप्त होता रहेगा। मेरे इस अनुमान में यदि त्रुटि हो तो बहुत सुख का विषय है। इस अनुमान के बल पर मैंने जो लिखा है, वह निरर्थक हो जाता है। उसके लिए मैं आपसे नम्रतापूर्वक क्षमायाचना करता हूँ।

आशा है, शीघ्र ही सब समस्याएँ सुलझ जाएँगी और आप सब सुखी होंगे।

६०५ स्वकर्तव्य का निर्णय करे

श्री सौभाग्यचद्र नाहर, लाडनू (राजस्थान) ७ जुलाई, १६६६

आपको परीक्षा में अपयश आया, दु ख की बात है। सघकार्य करते समय परीक्षा, शेष समय की पढाई तथा व्यवहार आदि में भूल न होना सघकार्य की दृष्टि से भी लाभदायी होता है। कार्यकर्ता के अपयश से अन्य स्वयसेवक बधुओं पर, उनके अभिभावकों पर अनिष्ट परिणाम होता है। घर का वायुमडल भी प्रक्षुब्ध होकर काम करने में बाधा आती है। इसका ठीक विचार कर अध्ययन में ध्यान लगाना उचित होगा। घर का भी विचार करना चाहिए। यद्यपि ऐसी स्थिति बन सकती है, जब राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता को देखकर कुछ लोगों को घर की ओर का ध्यान हटाना अनिवार्य होता है, या जब मनुष्य पूर्णत विरक्त होकर परमात्मसाधना में

अपने आपको लीन कर देता है और परिणामस्वरूप घर की ओर का ध्यान हट जाता है, तथापि सामान्यत अपने जीवन में स्वभावत प्राप्त कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्रकार्य, भगवदाराधना आदि चलाना उचित होता है। यह सोचकर अपने स्वकर्तव्य का निर्णय करना चाहिए।

६०६ सरल सत्यता से जीवन चलाएँ

श्री श्रीकृष्णपत सराफ, अहमदाबाद ७ जुलाई, १९६६

सब वृत्त पढा। बाद में क्या-क्या हुआ होगा इसकी खोज की। आपके चातुर्य से स्तंभित हुआ।

सगठन में कहीं भी घुन न लगे, यह आपकी इच्छा एव तदनुरूप चेतावनी के बारे में मैं आपका आभारी हूँ, कहाँ-कहाँ अनिष्टता है, इसकी खोज करके उपाययोजना करने का प्रयत्न चालू रहता है। आपने जिस घटना का उल्लेख किया है, उसमें से जिन व्यक्तियों में अनिष्टता पाई जाएगी, उन्हें कार्य से दूर रखने की सूचनाएँ हैं।

इस प्रकार की घटनाओं का विचार करते समय स्वय का निरीक्षण, गुणदोष-विवेचन करना हितकारी होता है। आप वैसा करें, यह विनती एव चातुर्य का अवलब न करते हुए सरल सत्यता से जीवन चलाएँ, यह आग्रहपूर्वक नम्र विनती है। सूज्ञ को अधिक बतलाना नहीं पडता है।

(मूल मराठी)

६०७ गृहस्थाश्रमी शिक्षक सघ कार्यकर्ता को मार्गदर्शन

श्री मधुकरराव पलसोकर, बीड, महाराष्ट्र १० जुलाई, १९६६

आप शिक्षक का उत्तम उद्योग कर गृहस्थाश्रम का जीवन, पत्नी, सतान आदि से परिपूरित चला रहे हैं, इसमें मन को दु ख हो, ऐसा कुछ दिखता नहीं। आपने १९५० में 'एकता' मासिक में पढा हुआ एक परिच्छेद दिया है। वह आपको जँच गया हो तो घर में छोटे-बडे पत्नी-बच्चों में स्वय का बिंब देखकर सच्चा सुख आपको प्राप्त हो, ऐसा लगता है। घर में आत्मीयता का अनुभव नहीं एव अन्यत्र 'आत्मा वाऽरे द्रष्टव्य ' वचनों का आधार लेकर मन लगाना, यह केवल मोह है– यह ध्यान में लेकर एव अपना गृहस्थाश्रम प्रामाणिकता से कर स्वधर्म, अर्थात् राष्ट्र-सेवा करते

रहने में बिल्कुल कामचोरी न करते हुए व्यवहार करना– यही युक्त लगता है। आपकी मनोभावनाएँ, उनसे पैदा होनेवाले आपके अश्रु बहुत मूल्यवान धन है। व्यक्तिगत मोह के पीछे उनका अपव्यय होने देना उचित नहीं है। राष्ट्र की चिंता करते रहते हुए भी सब समाज के दुःख से व्यथित होकर अश्रु बहाते न बैठते हुए, उसे रोककर उसमें से नष्ट होनेवाली मनःशक्ति संचित कर विवेक से गृहीत मार्ग से प्रयत्न करने में उस शक्ति का विनियोग करना यही उचित है।

आप जैसे पुराने जानकार स्वयंसेवक बंधु को इससे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। भगवत्कृपा से आपको मनःस्वास्थ्य, मनोबल एवं संतुलन प्राप्त हो एवं आपके द्वारा उत्तम कार्य-निष्पत्ति हो, यही इच्छा है।

(मूल मराठी)

६०८ स्वयं योग्य निश्चय करें

श्री सुरेश रिसबूड, १० जुलाई, १९६६

काम करते समय घर की अड़चनों का विचार अनेकों को व्यथित करता है। घर में सब सुख-समृद्धि रहने पर काम करेंगे– ऐसा कहने पर कितने ऐसे सामने आ सकेंगे, यह प्रश्न ही है। सुख-समृद्धि में रहनेवाले, समाज, राष्ट्र के दुःख-अपमान कितने प्रमाण में समझ पाएँगे, यह भी प्रश्न है। सुस्थिति में पले हुए राष्ट्रकार्यार्थ जीवन समर्पित करनेवाले बिल्कुल विरल। अनुभव यही है कि जिन्हें घर में रोज संकटों से जूझना पड़ता है, उनमें से ही सचमुच तन-मन-धन कार्य के लिए समर्पित करनेवाले प्राप्त होते हैं। फिर भी घर का विचार मन में आता ही है। उस स्थिति में कार्य पर ध्यान देना असंभव-सा होता है। ऐसी स्थिति में घर जाकर वहाँ अपने कर्तव्य करते हुए उसमें से जितना साध्य होगा, उतना काम करते रहना उपयुक्त होता है। आप योग्य निश्चय कर उसके अनुसार चलें। (मूल मराठी)

६०९ सर्वशक्तिमान की इच्छा शिरोधार्य

श्री पी नारायणन १३ जुलाई, १९६६

अचानक प्रिय पी सी एम राजा की मृत्यु का समाचार देनेवाला तार पढ़कर हम सब दुःख में डूब गए। जीवन-मृत्यु हमारे हाथ में नहीं है। हमारे विगत जन्मों के गुणावगुणों के अनुसार सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी इच्छा

कार्यान्वित करता है। प्रत्येक जन्म में हमें अपना भाग्य उन्नत करने तथा कर्मसिद्धात के परिणामों से छुटकारा पाने का अवसर मिलता है, तथापि सर्वशक्तिमान की इच्छा सर्वश्रेष्ठ तथा हमारे अतिम हित में है– यह मानकर तथा उसके सामने विनम्रता और श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होकर स्वीकार करनी पडती है। परतु राजा हमारे बीच में नहीं है, उन्हें मैं फिर कभी देख नहीं सकूँगा, इन्हीं वेदनादायक विचारों का मेरे मन में वार-वार अनुभव आता है। (मूल अग्रेजी)

६१० श्रेय दूसरो को दे

श्री अशोक कावले, राहुरी, महाराष्ट्र   १३ जुलाई, १९६६

आप एक वर्प के लिए सघकार्य करने के लिए आए हैं, ऐसा न मानें। एक वर्प स्वय की शिक्षा आदि उद्योग वाजू में रखकर प्रचारक के समान केवल सघकार्य करने को आए हैं। यह कालावधि पूर्ण होने पर स्वय की शिक्षा आदि पुन चालू कर अधिक से अधिक समय अपनी शाखा के काम के लिए खर्च करना है। इस वर्प के अनुभय से कार्य करने का तदर्थ आचरण का अधिक कौशल्य प्रकट करना है– ऐसा विचार मन में रखें तो वह उपकारक होगा।

स्थानीय पुराने स्वयसेवक वधुओं का उचित मान रखकर उन्हें शाखा की जिम्मेवारी लेने को प्रोत्साहित कर सब काम उनके द्वारा ही करा लेना चाहिए। श्रेय उन्हें प्राप्त होते रहने से उन्हें तृप्ति होगी। यह आपके अपनी कालावधि पूर्ण कर वापस जाने पर भी शाखा उत्तम चालू रहने के लिए लाभदायी होगा। (मूल मराठी)

६११ शाखा क्यो बद पडती है?

श्री श्री म भावे, जामनेर, महाराष्ट्र   १८ जुलाई, १९६६

शाखा कुछ काल चलकर वद पडती है, उसका कारण प्रमुखता से स्थानीय कार्यकर्ता, समझदार, निष्ठावान एव परिश्रमपूर्वक शाखा चलाने के निश्चय का न होना ही है। इस अभाव के कारण शाखा में उत्साह एव लगन नहीं आती। स्वयसेवक वधुओं को कैसा वर्ताव करें, कैसा वोलें, अनुशासन कैसा पालन करें, आसपास के समाज-वाधवों की सहायता करने

को तत्पर ऐसे आत्मीय सबध कैसे रखें आदि आवश्यक बातें समझती नहीं, यह ध्यान में लेकर उत्तम स्वयसेवक चुनकर, स्थान-स्थान पर नित्य कार्य करते रहनेवाले शिक्षक, मुख्यशिक्षक, कार्यवाह आदि खडे होंगे– ऐसा करें। (मूल मराठी)

६१२ बढते दाम के लिए जिम्मेदार

श्री राधिकामोहन गोस्वामी, नौगाँव (असम) १८ जुलाई, १९६६

वर्षा सतोषजनक है। अच्छी फसल की हम आशा करें। तथापि वस्तुओं के दाम बाजार में कम होंगे, इसपर मैं विश्वास नहीं करता। निर्बंध, क्षेत्रबदी और इसी प्रकार की स्वैर, सनकी एव अपथ्यकर सरकारी नीति तथा अपनाए जा रहे प्रयोग ही बढते दाम के लिए अधिक जिम्मेदार हैं। सत्ताधारियों के मस्तिष्क में सही व्यवहार-ज्ञान का कब उदय होगा, देखें। (मूल अंग्रेजी)

६१३ कार्यरूप-भावना श्रेष्ठ

श्री श्रीनिवासराव घुमाल, औरगाबाद १८ जुलाई, १९६६

आप एक शाखा के मुख्यशिक्षक का दायित्व ग्रहण कर सागोपाग कार्य करने को कटिबद्ध हुए हैं, यह मालूम हुआ एव बहुत सतोष हुआ। मन में सघ के पवित्र विचार जागृत रखें, सद्गुण बढाएँ, सद्भावनाएँ उद्योग को प्रेरणा देनेवाली हों, परतु भावनाओं का प्रगटीकरण करने का मार्ग कभी भी शब्दों द्वारा नहीं होता है। शब्दों द्वारा व्यक्त होनेवाली भावनाएँ उथली एव क्षणिक रहती हैं। प्रत्यक्ष कार्यरूप से, अखड उत्साह-रूप से भावना अभिव्यक्त होना यह श्रेष्ठ पक्ष है। (मूल मराठी)

६१४ हम ईश्वरीय कार्य कर रहे हैं

श्री दत्तोपत म्हसकर, १९ जुलाई, १९६६

आप इस जिले में बहुत वर्षो से हैं, फिर भी स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है– ऐसा आपने लिखा है। असमाधान लगता है, ऐसा भी लिखा है। असमाधान होना स्वाभाविक है, परतु उसके कारण धीरज खोना या स्वय पर अपात्रता का दोष मढना उचित नहीं। यश अनेक बातों

पर निर्भर रहता है। उसमें कुछ अपने हाथ में नहीं रहता है। वे अनुकूल होना आवश्यक होता है। कालगति, ईश्वरीय अनुग्रह के कारण यह घटित हो सकता है। हम ईश्वरीय कार्य ही कर रहे हैं। वह लगन से, निरलसता से, पूर्ण निष्ठा से एव स्वय की ओर कोई कर्तृत्व न लेते हुए यह सब भगवत्प्रेरणा से घटित होता है, ऐसे शुद्ध ज्ञान से करते जाना, प्रयत्नों में कहीं भी दोष न रहने देने का प्रयत्न कर अधिक-न्यून परमेश्वर-चरणों में अर्पण कर, निश्चित मन से कार्यरत रहना यह मात्र अपने वश में है। इतना आपने किया कि ईश्वर के अनुग्रह से कालगति भी अनुकूल होकर, कार्य यशस्वी होगा, इसमें संदेह रखने का कारण नहीं। (मूल मराठी)

६१५ ग्रामीण एव वनवासी क्षेत्र मे सघकार्य

श्री सुमत घायाल, वसई, महाराष्ट्र — १६ जुलाई, १६६६

प्रमुख गाँवों का चुनाव कर शाखाओं की दृष्टि से प्रयत्न करते रहते समय ही छोटे गाँव, आसपास के वन्य क्षेत्र की छोटी-बडी बस्तियों का निरीक्षण कर वहाँ के लोगों से अपने बडे गावों के अच्छे बधुओ से स्नेह-सबध, सहानुभूति पूर्ण सहायता की तत्परता का सबध जोडने का एव उससे उनके मन में अपने बारे में यथार्थ विश्वास एव आत्मीयता निर्माण करने का उपक्रम थोडा-थोडा चालू रखा जाए। वन्य सदृश क्षेत्र के ये लोग भोले हैं। आसपास की दुनिया की योग्य जानकारी उन्हें नहीं है। दारिद्रय से पीडित हैं। उनके अज्ञान, भोलेपन, एव गरीबी का लाभ लेकर उन्हें धर्मच्युत, राष्ट्रीयत्व-भ्रष्ट करने के अनेकों के प्रयत्न चालू रहते हैं। उन्हें रोककर दूर गए लोगों की पुनरपि अपने समाज में समाविष्ट कर लेने की दृष्टि से स्व-समाज व स्वधर्म की सुरक्षा की दृष्टि से यह उपक्रम उपयोगी सिद्ध होगा। (मूल मराठी)

६१६ स्थानीय कार्यकर्ता खडा करना आवश्यक

श्री अरुण साठे, बरपेटा, असम — २० जुलाई, १६६६

प्रत्येक शाखा में स्थानीय कार्यकर्ता तैयार करने की ओर ध्यान देकर प्रयत्न किए जाएँ, जो अपने ऊपर दायित्व लेकर योग्यता से काम करेगा। दैनदिन कार्यक्रम चलाना, स्वयसेवकों से मिलकर, उनसे बातचीत

कर सघविचार एव व्यवहार विवित करने का यशस्वी प्रयत्न करना, स्वयसेवकों के घर पर सब लोगों से स्नेह के, विश्वास के सबध स्थापित कर स्थायी बनाना, अन्यान्य लोगों से हिल-मिलकर उन्हें कार्य की ओर आकृष्ट करना, सब परिस्थिति समझकर, समझाकर व्यवहार करना आदि बातें कर सकेगा— ऐसे एक से अधिक, कम से कम दो भी कार्यकर्ता स्थानीय स्वयसेवकों में तैयार करना आवश्यक है। उनके द्वारा ही सब काम, सब कार्यक्रम करा लें एव आप केवल मार्गदर्शन कर उनके विश्वास एव कर्तृत्वशक्ति की वृद्धि होगी, ऐसा करें। सब काम स्वय करने से, प्रमुख कार्यक्रमों की छोटी-मोटी सब जिम्मेवारी स्वय पर लेकर व्यवहार करने से स्थानीय बधुओं की कर्तृत्वशक्ति जागृत नहीं होती, उसे योग्य दिशा नहीं लगती है एव प्रमुख बात यह है कि यह अपना काम है— ऐसा ज्ञान एव अत स्फूर्त दायित्व का ज्ञान उत्पन्न न होने से उन्हें कार्य में आत्मीयत्व लगता नहीं, रस आता नहीं एव वे जडवत, यत्रवत, जितना बताया उतना काम करनेवाले मात्र बनते हैं। ऐसों के भरोसे काम चलता नहीं। इसलिए शाखाओं में स्थैर्य नहीं आता। शाखाओं के बारे में विश्वास पैदा हो, ऐसी वे चलती नही। ऐसा सब विचारकर आप अपने जिले मे अच्छे स्थान चुनकर काम करें, बरपेटा के ज्येष्ठ स्वयसेवक बधुओं को भी काम में लगाएँ। इससे अच्छा प्रभावी काम होगा— ऐसा विश्वास लगता है।

(मूल मराठी)

६१७ कार्य हेतु उत्कठा जागृत करे

श्री मनोहरराव सहस्रबुद्धे, भवानीपटना, महाकोशल २१ जुलाई, १९६६

आपके कार्यक्षेत्र के कार्य की प्रगति ध्यान में आई। स्वयसेवकों के गुणों में वृद्धि होनी चाहिए। सघकार्य अनेक उदाहरणों, सद्य स्थिति के वर्णनों एव कुल मनुष्य के नाते उनका स्वाभाविक कर्तव्य क्या है— यह समझाकर, उनके मन में कार्य के सबध में उत्कठा जागृत करना लाभदायक होगा। क्रोध करके, टीका या उपहास कर कुछ साध्य होनेवाला नहीं है। एकदम बहुत कठोर जीवन का चित्र खडा करके कार्य से दूर रहने की वृत्ति मात्र दृढ होगी। इसलिए क्रमश , सयम से उनकी प्रकृति के अनुसार उनके जीवन में सघ का आदर्श उतारना हितकारी होगा। यह सब करते समय कार्य करनेवाला, करानेवाला श्रीपरमेश्वर है, यह जो अपनी वृत्ति है, वह श्रेष्ट है। केवल स्वत के सबध में ग्लानि पैदा न होने देते हुए परमेश्वर

पीठ पीछे रहने से वह उत्तम कार्य करा लेगा ही, इस निष्ठा से रहें। यह भावना एव यह विचार अत्यत उपयुक्त एव जीवन भव्य बनानेवाला है।

(मूल मराठी)

६१८ प्रमाण से अधिक दौड़धूप की शिकायत

श्री वामनराव ओक, ठाणे २२ जुलाई, १९६६

आपको श्रम करना उचित नहीं है। उससे शरीर स्वास्थ्य बना रहेगा। 'युक्ति की चार बातें बताऊँगा'— इसके लिए सूत्रों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक सूत्र प्रत्यक्ष दौड़धूप के काम करनेवाला रहना ही चाहिए— ऐसा नहीं। इसलिए आपने श्रम न करने का सोचा है, वह उत्तम है। मेरी तो शिकायत है कि आप प्रमाण से अधिक दौडधूप एव परिश्रम करते हैं। इस विषय की चर्चा प्रत्यक्ष भेंट में ही की जा सकती है। (मूल मराठी)

६१९ स्वेच्छा से निश्चय करे

श्री अरुण वालिवे, २२ जुलाई, १९६६

आपके घर से आपके पिताजी के पत्र आए, इसमें विशेष कुछ घटित नहीं हुआ है। ऐसे पत्र स्वाभाविक रूप से आते रहते हैं। घर पर सब अनुकूलता रही, कोई भी अडचन न रही तो भी अपने घर से कोई इस प्रकार बाहर जाए नहीं, जाता हो तो शीघ्र लौट आए, इसलिए पत्र आते हैं।

जहाँ सचमुच थोडी-बहुत अडचन है, उस घर से पत्र आया तो उसमें आश्चर्य या दु ख करने जैसा क्या है? उसमें यह विशेष है कि जिनके यहाँ अडचन रहती है, उनके पत्र क्वचित् ही आते हैं। कार्य हो, अपनी अडचनें तो हैं ही। वे थोडी अधिक या अधिक काल सहना पडीं तो क्या बिगडनेवाला है ऐसा विवेक कर वे प्रोत्साहन ही देते हुए दिखाई देते हैं। कभी-कभी मात्र अडचनों का भार सहना दु सह लगा तो ऐसे लोगों की ओर से भी पत्र आते हैं। वैसा यह आपके पिताजी की ओर से आया हुआ पत्र होगा, ऐसा मुझे लगता है। कार्य के प्रति उनकी अनुकूलता है, परतु स्वय की अवस्था देखकर उन्होंने यह पत्र लिखा होगा। फिर भी आप स्वय का निश्चय उत्तम रीति से, घर के बुजुर्गो के विषय में कृतज्ञतापूर्ण सम्मान एव अन्य सब आत्मीयत्व में से प्रेरणा लेकर, उसके साथ ही अपने कार्य के विषय की अनिवार्य आवश्यकता एव इसलिए अनेक कार्यकर्ताओं को घर

के ससार की ओर पीठ फेरकर राष्ट्र-ससार व्यवस्थित लगाने में तत्पर होने की आवश्यकता, इन विचारों में से तय करें एव स्निग्ध शब्दों में वैसा घर को सूचित करें। परतु आपके मन में किसी प्रकार का दवाव न रहे। स्वेच्छा से निश्चय करें। कोई भी निर्णय लेते समय मन को सकोच न हो, क्योंकि आपका कोई भी निश्चय हुआ, तो भी वह प्रिय ही रहेगा।

एक श्रेष्ठ लक्ष्य पाने के लिए श्रेष्ठ समर्पित जीवन की आप रचना कर रहे हैं। उसमें आपका अत करण अविकप रहे एव इस रचना में से उत्कृष्ट कार्य सपन्न करने में आपको उत्तरोत्तर अधिक यश-गौरव प्राप्त हो। (मूल मराठी)

६२० बाहर के पानी से कुआँ भर नहीं सकता

श्री नानाराव ढोबळे, विभाग प्रचारक, महाराष्ट्र   २२ जुलाई, १९६६

केवल प्रचारक रूप में वर्ष दो वर्ष के लिए कार्यकर्ता खडे करने से काम नहीं होगा। बाहर से पानी लाकर कुआँ भर नहीं सकता है। वह उपयोगी होगा नहीं। त्रस्त होने, ऊबने, हताश, हतबुद्ध होने के समान बर्ताव कर स्थानीय कोइ स्थायी कायकर्ता निर्माण होने के विषय में निराशा अनुभव कर प्रचारक पर ही काम निर्भर रखना चिता पैदा करनेवाला विषय है। इसलिए आप पुराने-पुराने सब कार्यकर्ताओं को कार्यप्रवण करने तथा नए-नए कार्यकर्ता खडे करने की ओर ध्यान देकर प्रयत्न करें। स्वय के अत करण से निष्ठा, श्रद्धायुक्त प्रेरणा लेकर स्वय पर शाखा का या कार्यक्षेत्र का दायित्व रहने की अनुभूति सँजोकर वह दायित्व एव उसे यशस्विता से पूर्ण करने का निश्चय जागृत रखनेवाले स्थायी सम्मान्य कार्यकर्ता खडे करना आवश्यक है। इस दृष्टि से ज्येष्ठ अधिकारी थोडी हलचल करेंगे तो बहुत ही अच्छा परिणाम निकलेगा।

आप इसका विचार करें। आपके तीनों ही जिलों के ज्येष्ठ स्वयसवेक बधुओं को सोचने की विनती करें एव आवश्यक उत्साही वातावरण निर्माण करे। (मूल मराठी)

६२१ सतोष से उत्तम कार्य की निष्पत्ति

श्री विनायक कानेटकर, गुवाहाटी (असम)   २२ जुलाई, १९६६

यह ज्ञात होकर बहुत आनद हुआ कि आपके घर पर सब कुशल है। इस आधार पर अपना काम आप निश्चितता से कर सकते हैं। व्रत ये

रूप में यह जीवन स्वीकार कर इस प्रकार के आधार की अपेक्षा नहीं रहती है। केवल कार्य करना, यही सामने रहता है। अन्य विचार व्यथित नहीं कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में यदि यह मालूम होता रहा कि घर पर कुशलमगल है तो मन को सतोष होता है एव कार्य करने में अधिक उत्साह का सचार होता है। आपको ईश-कृपा से यह सतोष मिल रहा है। उसमें से उत्तम कार्य की निष्पत्ति होगी। (मूल मराठी)

६२२ माथापच्ची करने का क्षेत्र

श्री गजाननराव बापट, सिलीगुडी (प बगाल) २८ जुलाई, १६६६

स्थानीय स्थायी कुछ स्वयसेवक बधु– अपने ऊपर कार्य निरतर चालू रखने एव वह परिणामकारक करने का दायित्व है, इसका ज्ञान रखनेवाले– आगे आने तक शाखा अस्थिर ही रहेगी। इस क्षेत्र में सपूर्ण समाज से जीवत आत्मीयता का सबध जब तक पैदा होगा नहीं, तब तक यह वातावरण रहेगा कि शाखा एक ऊपरी वस्तु है। यह ध्यान में रखकर आप ध्यानपूर्वक ऐसे स्वयसेवक तैयार करने के उद्योग में लगे होंगे ही। इस प्रकार ध्यान रखकर काम करते समय कुछ काल सख्या आदि दृष्टि से आँखों को चौंधियानेवाली प्रगति कदाचित् होनेवाली नहीं, परतु ठोस रूप प्राप्त होकर शीघ्र ही अच्छी वृद्धि हो सकेगी एव मुझे लगता है कि वह दृढ नींव पर रहने से टिकाऊ, परिणामकारक होगी। सब कुछ सोचने के बाद ऐसा दिखाई देता है कि कुछ क्षेत्र, कुछ कालखड कार्य को बहुत अनुकूल रहते हैं, तो कुछ में बहुत माथापच्ची करनी पडती हे, तब कहीं यश मिलता है। आपका कार्यक्षेत्र इस दूसरी श्रेणी का है। इसलिए तुरत बहुत बडा फल न दिखा तो भी उसका मन पर परिणाम न होने दें। क्रमश दिखाई देगा, इसमें सदेह नहीं। (मूल मराठी)

६२३ सत्कार सब स्तरों के लोगों द्वारा होना इष्ट है

श्री लक्ष्मणराव इनामदार, प्रात प्रचारक, गुजरात २६ जुलाई, १६६६

माननीय प सातवलेकरजी के सत्कार की योजना सब स्तरों के लोगों द्वारा होना इष्ट है। सरकार की ओर से होना परिणामकारक होगा। सुना था कि श्री विष्णुदेव पडित वैसा प्रयत्न कर रहे हैं। उससे समाधान हुआ था, परतु आपके पत्र से दिखता है कि इसमें कुछ ८८ हो

गई है। केवल हम, याने सघ सत्कार करेगा तो उसमें अनुचित कुछ भी नहीं है। सघ को वह भूषणावह ही होगा, परतु लगता है कि माननीय पडितजी का यथोचित सत्कार होने में थोडी न्यूनता आएगी। आप प्रयत्न करने के लिए आगे आएँ, सब लोगों की प्रातिनिधिक समिति बनाकर उसके नाम से कार्यक्रम बनाया तो उपयुक्त होगा। दिनाक १६ सितबर को धार्मिक कार्यक्रम पारडी में ही होने के बाद, आगे नवबर में या थोडा और आगे, उत्तम स्थान का चयन कर वहाँ प्रगट कार्यक्रम करना योग्य होगा। इसपर आप विचार करें। (मूल मराठी)

६२४ रुग्णालय की प्रगति मे आनद

डा अशोक कुकडे, विवेकानद रुग्णालय, लातूर　　२६ जुलाई, १६६६

आप सब सहकारी डाक्टरों के हस्ताक्षर का छह मास का प्रतिवेदन दिनाक २७ ७ ६६ को प्राप्त हुआ। उससे ज्ञात हुआ कि आपका श्री विवेकानद रुग्णालय प्रगति कर रहा है। आनद हुआ। आप सब तन होने से लातूर तथा उसके आसपास के स्थानों के अनेक लोगों की उत्तम सुविधा हुई है। सब प्रकार का उत्तम उपचार विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त होने का सुअवसर उन्हें प्राप्त हुआ है। सेवावृत्ति रखकर केवल आर्थिक लाभ की ओर दृष्टि न रखकर योग्य, सीमा के भीतर कम खर्च में उपचार करने की ओर ध्यान रखा ही होगा। कभी प्रवास के क्रम में उधर आने का सुयोग प्राप्त हुआ तो सबसे भेंट होगी ही। (मूल मराठी)

६२५ सात्वना-पत्र मृत्यु उपकारकर्ता

श्री कैलाश जी, पटना　　६ अगस्त, १६६६

आपके पितृतुल्य ज्येष्ठ भ्राता प श्री मनभावन जी के इहलोक छोड जाने का समाचार पढकर बहुत दु ख हुआ। उनको जो रोग हुआ था, उसपर कोई उपाय होने का समाचार नहीं है। उसका कष्ट बहुत होता है। असहनीय वेदना रहती है। विदेशों में ऐसी स्थिति उत्पन्न होनेपर रोगी तथा उसके आत्मीयजनों की मजिस्ट्रेट के सम्मुख लिखित अनुमति प्राप्तकर, दु ख बधिर कर शीघ्र मृत्यु लानेवाले इजेक्शन देने की व्यवस्था है। अपने यहाँ इस जन्म में भाग्य-प्राप्त कष्ट भोग लेना उचित ही माना है, अन्यथा आनेवाले जन्म में उसका शेष हिस्सा भोगना ही पडेगा— ऐसी मान्यता है।

इस स्थिति में मृत्यु उपकारकर्ता ही कहा जा सकता है, क्योंकि उससे दु ख से छुटकारा मिलता है। यह सब सोचकर अपने ज्येष्ठ भ्राता के निधन को विवेक से धैर्य धारण कर सहना तथा मन शात सतुलित रखना आवश्यक है।

६२६ द्वेष-भाव नष्टकर स्नेह पैदा करने का परिश्रम

श्री श्रीकृष्ण मोतलग, डिब्रूगढ, असम — ८ अगस्त, १६६६

डिब्रूगढ के सबध में समाचार-पत्रों में प्रकाशित समाचारों से लगता है कि वहाँ बहुत प्रक्षोभ हुआ है। सरकारी प्रवक्ता की भूमिका के अनुसार, 'एक विशिष्ट वर्ग ने एक विशिष्ट वर्ग के सबध में' इस प्रकार का शब्द प्रयोग पढकर मनोरजन हुआ। परतु उस सबध में अधिक लिखना आवश्यक नहीं। अब वातावरण शात हो गया होगा। अपना काम सपूर्ण समाज में एकता निर्माण करने का है। इसलिए ऐसी विचित्र, अनिष्ट घटनाओं से पैदा हुए, होनेवाले वातावरण को अच्छी दिशा देने की दृष्टि से परस्पर द्वेषभाव नष्ट कर स्नेह पैदा करने को यावच्छक्य परिश्रम करने एव उसके लिए अपना यह कार्य अधिकाधिक विस्तृत शुद्ध व दृढ करने की आवश्यकता अपने सब कार्यकर्ताओं के ध्यान में आई होगी। अपना यह पुनीत दायित्व पहचान कर प्रयत्न बढाना चाहिए। ऐसी घटनाएँ होंगी ही नहीं, इसका ध्यान रखकर कार्य करना आवश्यक है। एकदम यह नहीं होगा। परतु लक्ष्य स्पष्ट रहे। वह पूर्ण करने की बेचैनी रहे। पूरा होने में हो रहे विलब की कसक हो एव यह टीस मन में पाल कर परिश्रम निरलसता से करें, यह स्पष्ट है। सब बधुओं को इस दृष्टि से प्रेरित करेंगे ही। (मूल मराठी)

६२७ एकात्म सगठन खडा करना अत्यत आवश्यक

नानासाहेब शुक्ल, नदुरबार (महाराष्ट्र) — ८ अगस्त, १६६६

काम की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ रही है। परिस्थिति अत्यत अस्थिर है। वातावरण में अस्वस्थता, एक प्रकार से लक्ष्यविहीनता से पोषित विफलता, स्पष्ट दिखती है। अपने सब कार्यकर्ताओं को प्रबल प्रयत्न कर समाज की विफलता, निराशा, ध्येयशून्यता हटाने के लिए लगनेवाला बलिष्ठ, राष्ट्रसमर्पित, एकात्म सगठन खडा करना अत्यत आवश्यक है। ऐसे समय आबाल-वृद्ध कार्यकर्ता अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार कृतिशील रहेंगे- ऐसा शरीर-स्वास्थ्य आवश्यक है। (मूल मराठी)

६२८ कर्तृत्ववान स्वयसेवको का सघ खडा करे

डा वसतराव कुटे, रत्नागिरि १० अगस्त, १६६६

शाखा की दृष्टि से जो सोचा है, वह पूरा कर टिकाए रखने की जिद यदि प्रत्येक शाखा के दो-चार स्वयसेवकों में भी पैदा हुई तो शाखाएँ ठीक होंगी। आसपास के वातावरण पर उनका प्रभाव भी पडेगा। उपस्थिति, नियमितता, अनुशासनवद्ध कार्यक्रम अच्छे रहे तो केवल उस दृश्य का भी वडा प्रभाव पडता है। इसके साथ ही स्वयसेवकों का परस्पर व्यवहार, अपने छोटे-वडे सब पडोसियों के साथ स्नेह, आत्मीयता, सहानुभूतिपूर्णता से सदैव सहायता का व्यवहार रहने का परिणाम वहुत वडा होता है। यह ध्यान में रखकर शाखा के कार्यकर्ता स्वय तैयार हों, अन्य कर्तृत्ववान स्वयसेवकों का सघ वे खडा करें, इस दृष्टि से प्रयत्न हों। इसकी ओर जागरूकता से ध्यान दें। (मूल मराठी)

६२६ नई पीढी को योग्य दृष्टि दे

श्री चि का मोडक, कल्याण १२ अगस्त, १६६६

आपके पत्र से दिखाई देता है कि आयु के कारण पैदा हुई दृष्टिक्षीणता के कारण आप विभिन्न स्थानों पर जाकर सघकार्य कर नहीं सकते हैं। यह विचार मन में आकर आप बहुत व्यथित हैं। आप स्वय को दोषी मानकर व्याकुल हो रहे हैं, परतु कुछ बातें अपने वस में नहीं होती हैं। आयु का भी वैसा ही हे। वह वढनेवाली ही है। उसके साथ शारीरिक दोष भी पैदा होंगे। परतु अपना मन, सघकार्य की निष्ठा, सघ की अनिवार्य आवश्यकता के सवध का विश्वास-- ये सब ही महत्त्व की बातें, दुर्बल नहीं होती हैं। आप सब कार्यकर्ताओं को मिलने के लिए बुला सकते हैं, पूछताछ कर मार्गदर्शन कर सकते हैं। इस तरह आपकी प्रेरणा से बहुत कुछ कार्य हो सकेगा। यह सतोष रखकर आप मन में दु ख न करें, व्यर्थ में व्यथित न हों-- ऐसी आपसे मेरी अत करणपूर्वक प्रार्थना है।

जिले में अपना कार्य पुराना हे। अपने पुराने कार्यकर्ता अधिकारी शारीरिक दृष्टि से वृद्ध, प्रत्यक्ष दौडधूप करने में असमर्थ हो गए है, ऐसा आप अनुभव कर रहे हैं। फिर भी नई पीढी में से अच्छे काया-वाचा-मनसा सघकार्य में जीवन समर्पित करनेवालों को खोज करके उन्हें अपने सहकारी वनाना, अपने अनुभव का लाभ उन्हें करा देकर उनके द्वारा श्रम के प्रवास

के काम करा लेना, काम में कोई भी न्यूनता नहीं रहेगी– ऐसी व्यवस्था करना उपकारक होगा। आप अब ऐसे कार्यकर्ताओं की, अपने कधों पर दायित्व लेकर चलनेवालों की खोज करें, उन्हें तैयार करें, उन्हें यशस्वी करते हुए, वर्धिष्णु कार्य की बढती हुई प्रभावशीलता के आनद का उपभोग करें– यही योग्य दिखता है। (मूल मराठी)

६३० तरुण कार्यकर्ता कैसे उपलब्ध किए जाएँ

श्री शकरराव दप्तरदार, मोडनिंब, महाराष्ट्र — १६ अगस्त, १६६६

तरुण कार्यकर्ता के अभाव के बारे में आपने जो लिखा है, वह अधिकाश सही है, परतु उनमें हिल-मिलकर, उनकी भाव-भावना, आशा-आकाक्षा समझने का प्रयत्न कर उनकी सद्य प्रवृत्ति को इष्ट मोड देने का उपक्रम चालू रखा, तो अच्छे कर्तृत्ववान तरुण उपलब्ध होंगे। मुझे लगता है कि आज के कार्यकर्ता इस दृष्टि से प्रयत्न कर यश प्राप्त करेंगे। (मूल मराठी)

६३१ सर्वांगीण सुधार हमारा कार्य

श्री के एन अण्णाजी राव, कोयबटूर — १८ अगस्त, १६६६

अपने सभी स्वयसेवक बधु यदि नियमित रूप से प्रयत्न करते रहें तो उनके द्वारा शाखाओं में सर्वांगीण सुधार हो सकता है। परिस्थिति अनुकूल है और लोग अपने कार्य की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। जीवन-विषयक परिस्थिति में हो रही अवनति, सर्वसामान्य जीवनावश्यक स्वास्थ्य का सुधार दृष्टिगोचर न होने से निर्माण हुई निराशा, वैफल्य की भावना और सर्वसाधारण जनमानस की अशाति, यह सब दुर्भाग्यपूर्ण मोड पर जा रहे हैं। अनेक बार केवल कल्पित क्षुद्र निमित्त भी अराजक और हिंसाचार के स्फोट का कारण बन सकता दिखाई देता है। सर्वत्र धाधली और प्रस्थापित शासन-व्यवस्था के क्षय में ही इसकी परिणति हो सकती है। मानवी जीवन के श्रेष्ठ एव उदात्त आदर्शों के प्रति आस्था और आदर भावना नष्ट हो चुकी है। लोगों के चारित्र्य में अधोगति हुई है। लोगों के हृदय की एकात्म भावना और सभी के उद्यमशील सहयोग से देश की सर्वांगीण उन्नति में सामूहिक दायित्व के भाव का पूर्ण अभाव हम देख रहे हैं। इस प्रकार की परिस्थिति में भविष्य अधकारमय प्रतीत हो रहा है। इस

समस्या को हल करने का एकमात्र उपाय यही है कि लोगों को एकत्र लाकर उनमें विशुद्ध चारित्र्य, एक-दूसरे के प्रति स्नेह और सह-संवेदना जागृत करें। अपने समूचे राष्ट्रजीवन के प्रति गहन स्नेहभाव एव अनुशासित जीवन और परस्परपूरक सहयोगी कार्यशैली की निर्मिति के लिए उनको प्रशिक्षित करें। यह हमारा काम है। शाखाओं के माध्यम से हम इस कार्य की अपेक्षा करते हैं। इसी लक्ष्यप्राप्ति में अपने सभी कार्यकर्ताओं की पूरी शक्ति लगी रहे। (मूल अंग्रेजी)

६३२ दृढ कार्य शीघ्र खडा हुआ दिखेगा

श्री बाळासाहेब खासबारदार, कोल्हापुर १८ अगस्त, १९६६

देश की अशात परिस्थिति प्रत्यक्ष दिखती है। छोटे-बडे विस्फोट हों, ऐसे आदोलन उग्र रूप धारण कर रहे हैं, ऐसा चिंताजनक दृश्य दिखता है। एक प्रकार की विफलता, निराशा, आगे दु ख कष्ट का ही जीवन रहने की भावना, सुखपूर्ण भविष्य के विषय में अध कार रहने का अनुमान– यह सब समाज में दिखता है। उसके फलस्वरूप ही यह विस्फोटक परिस्थिति है। ऐसे समय लोगों को योग्य मार्गदर्शन कर, समाज को विघातक, देश को हानिकारक होनेवाले, सुरक्षा को धोखा पैदा करनेवाले प्रचार, कार्यपद्धति से परावृत्त करना आवश्यक है। स्थिरता, सगठित तथा नि स्वार्थ भाव से राष्ट्र के अभ्युदय के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता समझाकर एक-एक मनुष्य, को आत्मसात कर द्रुतगति से कार्य बढाने की ओर अपने सब स्वयसेवक बधुओं का ध्यान खींचना चाहिए। भडकीले कार्यक्रम के बारे में अरुचि पैदा होकर स्थायी, बलिष्ठ कार्य का आकर्षण लगे, ऐसा प्रयत्न होना चाहिए। आप सब प्रयत्न कर रहे हैं। उसमें यश प्राप्त होकर दृढ कार्य शीघ्र खडा हुआ दिखेगा, ऐसी आशा है। (मूल मराठी)

६३३ कुशलतापूर्वक काम करे

श्री हरि मिरासदार, जोरहाट (असम) १८ अगस्त, १९६६

असम प्रात में हुई गडबडी का समाचार पहले समाचार-पत्रों से एव अपने कुछ कार्यकर्ताओं के पत्रों से ज्ञात हुआ था। तरुण छात्र वर्ग शीघ्र क्षुब्ध होता है, उसमें विचार शक्ति, विवेक कम होता है। अशाति निर्माण करनेवालों के प्रचार से उच्छृखलता करने को वह सहज प्रवृत्त होता है।

उसमें देश, समाज, राष्ट्र की भलाई किसमें है एव हानि किसमें है– इसके विषय में योग्य ज्ञान नहीं होता है। इस प्रसग में भी छात्रों का व्यवहार ऐसा ही दिखाई दिया– यह ध्यान में लेकर आलोचना आदि की झझट में न पडते हुए कुशलता से एक-एक तरुण को अपने कार्य में सम्मिलित करने का अत्यधिक प्रयत्न करना कितना आवश्यक है, यह अपने सहकारी स्थानीय बधुओं को समझाकर कार्यवृद्धि का प्रबल उद्योग आगे चलाना चाहिए। आपका इस ओर ध्यान होगा ही। (मूल मराठी)

६३४ किसी के सबध मे टीका-टिप्पणी न हो

श्री अशोक काबले, राहुरी, अहमदनगर ३ सितबर, १६६६

आपके कार्यक्षेत्र के कार्य की स्थिति ध्यान में आई। स्थानीय कार्यकर्ताओं ने 'यह अपना प्रमुख कर्तव्य है'– इसका ज्ञान जागृत रखकर प्रयत्न किए, तो बहुत ही उत्तम सघकार्य खडा होने में बहुत अधिक समय नहीं लगेगा। समाज कितनी कठिन परिस्थिति में है, यह स्पष्ट है। केवल हाय-हाय करके या अन्य कार्यपद्धति एव उसमें कार्य करनेवालों पर टीका करके क्या साध्य होगा? ऐसी टीका करना, स्वय अकर्मण्य रहना दोनों का मेल नहीं बैठता है। कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति टीका करते बैठने में समय नहीं गँवाता। इसलिए बातचीत गपशप, चर्चा आदि में से केवल सघकार्य की ही प्रेरणा मिले, अन्य किसी के सबध में टीका-टिप्पणी न हो, इस ओर सब प्रमुखों को ध्यान देना चाहिए।

आप ऐसे स्थानीय कार्यकर्ता आगे लाकर उन्हें प्रोत्साहित कर ही रहे हैं। अत शीघ्र ही वातावरण का पूरा-पूरा लाभ लेकर शाखाओं की वृद्धि करने में सब बधुओं को यश प्राप्त होगा– ऐसी आशा है। (मूल मराठी)

६३५ सघकार्य समाजव्यापी हो

श्री भास्करराव मराठे, अलीबाग ४ सितबर, १६६६

आपके जिले में अनेक पुराने प्रतिष्ठित, स्वय का स्वतत्र छोटा-बडा उद्योग करनेवाले स्वयसेवक बधु हैं। उनकी तुलना में कुल जिले की तरुणों की सख्या देखें तो ऐसा दिखाई देता है कि ये सब नवीन बधु हैं एव पुराने बहुत मात्रा में काम के प्रति उदासीन हैं। उन्हें यह अनुभव होता है, फिर भी ऐसी स्थिति है। यह अच्छा नहीं है। चारों ओर की परिस्थिति इस बात

की ओर सकेत करती है कि सघकार्य समाजव्यापी हो, प्रत्यक्ष दैनंदिन शाखाओं के रूप में समाज का महान जागृत सामर्थ्य सबको दिखे एव उसमें से धैर्य, आत्मविश्वास लेकर प्रत्येक प्रश्न का योग्य समाधान कर सकनेवाली योजनाएँ कार्यान्वित हों। यह ध्यान में रोकर लगता है कि सब बधुओं को आलस्य झटक कर यावज्जीव अपना कार्य सुयोग्य रूप से करने के लिए आगे आना चाहिए। आप एव स्थानीय कार्यकर्ता इस दृष्टि से प्रयत्नशील होंगे ही। (मूल मराठी)

६३६ कृतकृत्यता का सतोष

श्री रवींद्र देवकुले, ५ सितबर, १९६६

जब से आप काम करने को गए, तब से उस काम के क्षेत्र का वृत्त ध्यान में आया। अच्छा काम हुआ है। स्थानीय स्वयसेवक बधु स्वयस्फूर्ति से अपने ऊपर दायित्व लेकर एव कार्य का विचार, शाखा की कार्यपद्धति एव स्वयसेवक के नाते सबसे व्यवहार करने का सौजन्य अपने में आत्मसात करने का प्रयत्न करते हुए आगे आ रहे हैं। कुछ आ चुके हैं। यह अत्यत शुभ लक्षण है। ऐसे ही प्रयत्न सर्वत्र होने की आवश्यकता है, एव वैसा हो भी रहा है।

आपके पत्र से ज्ञात होता है कि आपकी प्रचारक की अवधि समाप्त हो रही है। काम करते समय कालखड की न्यूनतम मर्यादा निश्चित करना योग्य, परतु उस अवधि को ही कभी अधिकतम न मानने की कार्यकर्ताओं की रीति है।

अवधि समाप्त कर घर वापस जाने तक शाखाओं को स्थैर्य प्राप्त होकर वृद्धि की आकाक्षा कार्यकर्ताओं में पैदा होगी, ऐसा करें– जिससे बाद में भी कार्य अच्छा चलते रहने का सतोष आपको एव हम सबको मिल सकेगा। (मूल मराठी)

६३७ व्यवस्थित रीति से प्रयत्न करे

श्री मधुकरराव जोशी, ६ सितबर, १९६६

अपने काम का शाखाओं की दृष्टि से विस्तार अपने को करना है ही। उनके साथ ही अनेकविध काम साथ-साथ करने का दायित्व अपने पर आता है। उन कामों का स्वरूप तात्कालिक रहा तो भी उनका स्वरूप ऐसा

होता है कि उन्हें करना ही होता है। उसमें ध्यान व श्रम बँट जाता है, परतु थोडा व्यवस्थित रीति से प्रयत्न हुआ, तो ऐसे काम करते हुए भी शाखाएँ दृढ रह सकती हैं। और अच्छा ध्यान दिया तो ऐसे आनुषगिक कार्य से सहज रीति से अनेक अच्छे व्यक्ति मिल जाते हैं। उनसे आत्मीयता के सबध प्रस्थापित कर सकते हैं एव उन्हें सघकार्य में सम्मिलित कर लेने का सुअवसर प्राप्त होता है। प्रत्यक्ष सघकार्य को पोषक हो– इस दृष्टि से ऐसे प्रयत्न करने पडते हैं। इस ओर आपका ध्यान है ही। अन्य कार्यकर्ताओं का भी ध्यान रहे। (मूल मराठी)

६३८ सहयोग का अनुरोध

श्री महाराजकुमार सहदेव विक्रम किशोरदेव वर्मन महोदय,
अध्यक्ष, धर्ममहासघ, अगरतला (त्रिपुरा) १६ अक्तूबर, १६६६

सपूर्ण देश में भारत के सत्पुत्रों को धर्म एव राष्ट्रीय विरासत से अनुप्राणित कर उनका जन-जीवन समुन्नत करने में अनेक प्रयत्नशील हैं। इस हेतु हो रहे सभी प्रयत्न आवश्यक और स्वागतार्ह हैं। आपके द्वारा हो रहे प्रयत्नों की परिपूर्ण सफलता के लिए मैं जगज्जननी माँ के श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

इस हेतु कार्यशील सभी प्रयासों का और सस्थाओं का पारस्परिक सहयोग निर्माण करने का कार्य विश्व हिदू परिषद् के द्वारा किया जा रहा है। इसी कारण वि हि प आपके द्वारा आयोजित सभी कार्यों में निश्चय ही पूर्ण सहयोग करेगी। उनकी यह भी स्वाभाविक अपेक्षा रहेगी कि आनेवाले दिनों में अपनी पूज्य भूमि के उस क्षेत्र में आयोजित सभी कार्यों में आवश्यक सहकार्य आपके द्वारा उपलब्ध होता रहेगा।

गुवाहाटी में हुई बैठक में आपसे मिलना सभव न हो सका। आपकी अनुपस्थिति मुझे, श्री तीर्थनाथ शर्मा और अन्य सहकारियों को व्यथित करती रही। (मूल अग्रेजी)

६३९ स्वय का अनुभव

श्री गोविदराव कुलकर्णी, भडारा २० अगस्त, १६६६

आपके पत्र से पूज्य माताजी के स्वास्थ्य के सबध में पढकर बडी चिता हुई। रक्तचाप बहुत बढ गया है। चिता का विषय है। किन्तु भाग्य

में जो होगा, सो होगा ही। श्रीभगवान की इच्छा के सामने झुकना ही पड़ेगा। उसमें यह सोचकर कि वह जो करता है, अपने भले के लिए ही करता है, मन स्वस्थ तथा शात रखना उचित रहता है। मेरी माता के स्वर्गवास का समाचार पाने पर कामकोटि पीठ के श्रीमत् शकराचार्य महाराज जी ने जो सात्वनापरक सदेशरूप आशीर्वाद मुझे भेजा था, उसमें उन्होंने कहा था कि अपनी माता भारतमाता है। उसकी सेवा में काया-वाचा-मनसा जो सलग्न है, उसने उसी में अपनी जन्मदात्री की भी सेवा की है– ऐसा समझो और मन में ग्लानि न आने न दो। यह शुभाशीर्वाद आपकी इस मानसिक अवस्था में आपको बल एव उत्साह प्रदान कर सकेगा।

६४० अपनी माता भारतमाता है

श्री राजेन्द्रसिंह, प्रयाग ७ नवबर, १९६६

आपकी स्थिति का अनुमान कर सकता हूँ, क्योंकि मुझे भी इस अवस्था में से गुजरना पड़ा है। उस समय कामकोटि पीठ के श्रीमत् शकराचार्य महाराज जी ने सस्कृत में सात्वनापरक श्लोक (इस पत्र के अत में दिए हैं - सपादक) भेजे थे। उसमें कहा था कि अपनी माता भारतमाता है। जन्मदात्री के इहलोक छोडने पर भी यह माता अपने असीम स्नेह से लाड-प्यार करने के लिए सदैव निकट है। उसी की भक्ति, उसके प्रति प्रेम तथा उसकी सेवा करने में अपने आपको खोकर चलनेवाले को इसका पुनीत अनुभव आता है कि वह अमृतमयी माता हमारे माथे पर अपना सात्वना का वरदहस्त रखकर खडी है। आपके सबध में यह पूर्णत यथार्थ है।

अत आप शोक-सवरण कर माता का नित्य शुभाशीष मस्तक पर होने का सदैव अनुभव करते हुए अपने कार्य में रममाण रहें। श्रीभगवत् कृपा से आपको इस हेतु उत्तम शक्ति तथा मन सतुलन प्राप्त हो और आपसे उत्कृष्ट कार्यनिर्मिति अधिकाधिक मात्रा में होती रहे।

उक्त श्लोक मातृमानितश्रुत्युक्तमातृशिभावलादिह।
राष्ट्रस्वयसेवकस्य ध्रुव भारतमातरम्।।
मातृवत् सेवमानस्य स्वमातृविरहो न ते
जननीजन्मभूम्योश्च न हि गोपाल ते भिदा
महात्रिपुरसुन्दर्या चन्द्रमौलीश्वरस्य च
करुणा त्वयि नित्यास्तु मातृदेवे शुभाश्रये।।

६४१ पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की अतीव आवश्यकता

श्री रामनाथ जी, सेलम (तमिलनाडु) २४ नवबर, १६६६

अब तक तो आप पारिवारिक जिम्मेदारी से मुक्त थे, परतु अब स्थिति बदल गई है। अपने परिवार के प्रति कर्तव्य का अनुभव करना आपके लिए स्वाभाविक है। अच्छा होगा कि आप घर जाकर कुछ दिन तक रहें और घरेलू व्यवस्था सुसूत्र करें। कुछ समय पश्चात् यदि आपको लगा कि कभी-कभी अपने घर की अल्प चिता करते हुए और थोडा-सा समय व्यतीत करने से आपके भाई घर-परिवार की पूर्ण व्यवस्था देखने में सक्षम हो सकते हैं, और यदि आपके मन में अपना सघकार्य, जो गत कुछ वर्षो से आप कर रहे हैं, पुन पूर्ववत करने की अनुकूलता निर्माण होती है, तो अति उत्तम होगा। सभव हो तो ऐसा करने का अवश्य प्रयास करें। मन में यदि पुन कार्यरत होने का विचार चलता रहा, तो यह कठिन नहीं है। यथावश्यक व्यवस्था करने में अधिक समय भी नहीं लगेगा। अपने मन-मस्तिष्क पर, किंतु, किसी भी प्रकार का दबाव न रहे, क्योंकि आप सेलम में रह कर भी उत्तम प्रकार से कार्य करते हुए अपने परिवार की चिता भी कर ही सकते हैं। तो भी आप आज जहाँ कार्यरत हैं, उसी क्षेत्र में लौट जाने की सूचना मैं कर रहा हूँ, इसलिए कि अपने कार्य में पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की अतीव आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि कार्य की आवश्यकता जैसी हम अनुभव करते हैं, उस प्रकार आप भी करते हैं।

आप तो जानते ही होंगे कि अपने तमिलनाडु प्रात का शिविर सेलम में होने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि इस शिविर में आप अवश्य मिलेंगे।

तब तक जो समय है, उसमें घरेलू बातों को सुसूत्र एव सुव्यस्थित करने की चिता करें। (मूल अंग्रेजी)

६४२ अनुभवसिद्ध मार्गदर्शन हमें आवश्यक

डा काकासाहेब मुले, सोलापुर २५ नवबर, १६६६

महाराष्ट्र का नियोजित प्रवास पूर्ण कर कल प्रात में नागपुर पहुँचा। ज्ञात हुआ कि आप हैदराबाद गए हुए थे एव लौटने में अपेक्षा से अधिक विलब होने से इन कार्यक्रमों में आप नहीं जा सके। ज्ञात हुआ कि हैदराबाद का आपका काम अच्छा होकर रुग्णालय का दायित्व तरुणों पर

सौंपने में आप सफल हुए। आपको अब शारीरिक परिश्रम एव मानसिक चिंता से दूर रहना चाहिए। एक-एक दायित्व से मुक्त होना आवश्यक है। अब ऐसी व्यवस्था करना आवश्यक है कि खेती आदि ठीक करने एव उसमें लगातार ध्यान देने की आवश्यकता न पडे। लगता है कि यह काम भी तरुण पीढी योग्यता, दक्षता एव कुशलता से कर सकेगी। सक्षेप में, आप सर्वसामान्यत घर पर ही रह कर, ध्यान देकर विश्राम का अनुभव ले सकेंगे। इससे स्वास्थ्य पर तनाव नहीं आएगा एव वह उत्तम रहकर आप सुदीर्घ जीवन आगे भी व्यतीत कर सकेंगे। आपका अनुभव-सिद्ध मार्गदर्शन हम सबको बहुत काल तक आवश्यक है। सच पूछो तो यह हमारा स्वार्थ है, परतु आपकी दीर्घायु भी हमें अत्यत प्रिय है, यह उससे भी अधिक महत्त्व की बात है। (मूल मराठी)

६४३ लदन जानेवाले शिक्षार्थी को शुभेच्छा

श्री सुभाष मेहता, २० फरवरी, १९६७

यह पढकर बहुत आनद हुआ कि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लदन जा रहे हैं। आपके पिताश्री ने यह मुझे बताया था। उत्तम शिक्षण ग्रहण कर, श्रेष्ठ तज्ञ बनकर आप शीघ्र वापस आएँ एव अपने बधुओं को अपने ज्ञान का लाभ कराएँ— यही इच्छा है। आपको पूर्ण यश प्राप्त हो एव उस देश में अपने आचार-विचार से अपने चिरजीव राष्ट्र की प्रतिष्ठा वृद्धिगत हो— ऐसी श्री परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

६४४ धूल झाडकर मदिर स्वच्छ करे

श्री ओमप्रकाश जी मेंगी, सघचालक, जम्मू ५ अप्रैल, १९६७

शाखाओं पर जो परिणाम हुआ है, वह समझ में आया। आँधी उठनेपर चारों ओर धूल छा जाती है। घर, धर्मशाला, भगवान का मदिर सभी उसकी लपेट में आ जाते हैं। भक्तों का काम है कि आँधी का प्रकोप कम होते ही धूल झाडकर मदिर स्वच्छ करें और अपनी नियमित पूजा चालू रखें। आप वहाँ के प्रमुख होने के नाते अपने सब कार्यकर्ताओं से स्नेह, आत्मीयता से विचार-विमर्श कर शाखाओं को सुचारु रूप से चलाने के

लिए उन्हें प्रेरित करने का अधिकार आपका है। परिस्थिति से केवल दु खी होकर सबके प्रति दोषार्पण करने से कुछ होनेवाला नहीं है। आपसे यह अपेक्षित भी नहीं है।

६४५ सकट अपनी कसौटी है

श्री दामोदर माधव दाते, ६ जून, १९६७

विगत कुछ दिनों में ही एक के पीछे एक दु ख के आघात आप पर हो रहे हैं। उनमें यह अत्यत कठोर आघात हुआ है। परमेश्वर मानो हमारी परीक्षा ही ले रहा है। घर की व्यवस्था छिन्न-विच्छिन्न सी होती हुई दिखाई दे रही है। अपना एव घर के सब शोकग्रस्तों का सात्वन कर उन्हें धीरज बँधाने का दायित्व आप पर आ पडा है। कृपामय श्रीप्रभु की कृपा से आपको आवश्यक शक्ति-धृति प्राप्त हो, सबको मन शाति प्राप्त हो। दिवगत जीव को सद्‌गति प्राप्त हो। एतदर्थ भगवच्चरणों में प्रार्थना करने के सिवा मैं क्या कर सकता हूँ।

सकट, मानो अपनी कसौटी हैं। अपनी परीक्षा करने के लिए ही वे आते हैं। सबका कल्याण हो, ऐसी व्यवस्था करनेवाले सर्वशक्तिमान करुणामय भगवान की ही ऐसी योजना रही हो। कृपालुता से वह अल्प धीरज देखता है– ऐसा अनुभवी साधु-सत कहते हैं। वह सत्य है। ऐसी परीक्षा में तपा-गलाकर अग्नि-परीक्षा में से उज्ज्वलता से बाहर निकल सकें, इसलिए सकट लानेवाला परमात्मा अपनी सहायता के लिए सिद्ध खडा है, सदैव अपनी पीठ पीछे धीरज बँधाने, सामर्थ्य देने को उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है। केवल अपनी ओर से प्रगट होनेवाले निराशारहित, उत्साह-पूर्ण निश्चय के अल्प प्रगटीकरण की ही आवश्यकता है। बाद में अपना हाथ पकडकर वह दयाघन प्रभु अपने को सकट के पार, दु ख-शोक के परे ले जाकर स्वकर्तव्यपूर्ति में यश प्राप्त करने को सर्वतोपरी सहायता करने हेतु खडा है। इसका ज्ञान रखकर सब दु ख उसके चरणों में निवेदन कर काम में जुट जाना, यही उचित दिखता है।

आप को सदैव श्रीपरमेश्वर का वरद्‌हस्त प्राप्त हो एव सब सँभालकर जीवन-लक्ष्यपूर्ति के लिए नित्य आगे जाने की शक्ति हममें बढती रहे– यही प्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ।

(मूल मराठी)

६८६ हम भगवान के हाथ के उपकरण हैं

श्री बाबूराव अत्रे, २८ जून, १९६७

पुणे का वर्ग पूर्ण होकर लगभग एक मास होता आया है। जो बंधु शिक्षण प्राप्त करने गए थे, वे अपने-अपने स्थानों पर वापस लौटकर लगन से काम में जुट गए होंगे। लोग अंधे, बहरे एवं समझ न रखनेवाले से दिखते हैं, अन्यथा अपने समाज पर धर्म संस्कृति, राष्ट्र तथा अपने स्वाभिमानपूर्ण अस्तित्व पर अनेक दिशाओं से बड़े पैमाने पर मँडरा रहे भयावह संकटों को देखकर योग्य दिशा में कार्य करने की आवश्यकता न बतलाते हुए भी उन्हें समझती, एवं संघकार्य व्यापक हुआ होता। श्रीपरमेश्वर-कृपा से यह जागरण त्वरित घटित हो। इसके लिए भगवान के हाथ के उपकरण के नाते हम हैं एवं हमें अपने कर्तव्य परिश्रमपूर्वक पूर्ण करने चाहिए– यह अपने छोटे-बड़े स्वयंसेवक बंधुओं को ध्यान में रखकर मन में कार्यरत रहना आवश्यक है। (मूल मराठी)

६८७ अनुभवसिद्ध अलिप्तता से देखें

श्री चंद्रकिशोर मेहरोत्रा, २६ जून, १९६७

आपके पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ रहा था। आप संपूर्ण सृष्टि के गंभीर चिंतन में लगे हैं। सृष्टि का एक पहलू जो अनेक प्रकार से बुराइयों से भरा दिखता है, आप देख रहे हैं। उसमें आपकी वैयक्तिक जीवन की अनुभूतियाँ विविध होने से वैसा चित्र दिखा है। ऐसा ही और चिंतन करें तो संभव है कि अन्य पहलू भी दिखाई देंगे। तब तक व्यक्तिगत जीवन में कुछ मनोनुकूल काम प्राप्त कर सांसारिक स्थैर्य प्राप्त करने का प्रयास करें तो इस स्थैर्य का भी चिंतन में लाभ हो सकेगा।

संसार की गतिमानता तथा उस तीव्र प्रवाह में जो भीषणता एवं दुःख है, उसे समझना और उसका यथार्थ वर्णन करना तभी संभव है, जब उसका अनुभव कर किनारे पर आकर कोई खड़ा हो जाए। ऐसा कोई श्रेष्ठ भाग्यवान आपसे मिले तो आपकी समस्याएँ दूर हो सकेंगी। फिर मुझे भी आपसे कुछ मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। उसी की राह देख रहा हूँ। शेष कुशल है।

६४८ गृहस्थाश्रमी का दृष्टिकोण व आवश्यकता

श्री गणपतराव गुरव, ३० जून, १९६७

यह ज्ञात हुआ कि आप अपना सकल्प पूर्ण कर घर लौट आए हैं। अपना घर सँभालते हुए अच्छा कार्य करने का अवसर आपको मिला है। समाज ठीक से चले, इसका अर्थ है अपने-अपने उद्योग प्रामाणिकता से कर, घर-बार सँभालनेवाले सब व्यक्तियों को परस्पर-पूरक होकर सहयोग से एव स्नेह से सवकी उन्नति के लिए परिश्रम करना चाहिए, एक दूसरे की कठिनाइयों को समझकर आत्मीयता से सहायतार्थ दौडकर जाना चाहिए। घर-बार छोडकर सब लोग वाहर निकल पडे तो क्या होगा, यह बतलाना जरूरी नहीं है। पूरा समाज विशृखल हो जाएगा, इसलिए ऐसे बिल्कुल थोडे लोग रहें। बाकी सब व्यक्ति अपना परिवार सँभालकर समाज की ओर पूरा ध्यान दें, परतु कुछ थोडे ऐसे हों, जो अपने व्यक्तिगत परिवार से समाजहित सर्वोपरी महत्त्व का अनुभव कर, वैसी मानसिकता को धारण कर समाज जीवन में व्यवहार करें तथा समाज सुस्थिर करें। यह कर्तव्य करने का सौभाग्य अपनी ओर चलकर आया है। वह अच्छी तरह से करें एव उसमें से अपनी शाखा की वृद्धि आदि करने में परिश्रम करें। जो नया दायित्व प्राप्त होगा, वह आप योग्य रीति से वहन करेंगे ही। (मूल मराठी)

६४९ कार्यवृद्धि समय की माँग

श्री आर हरि, कोझीकोड (केरल) १ जुलाई, १९६७

आपके द्वारा भेजा गया पत्र और दिव्य जगन्माता का कुकुम-प्रसाद प्राप्त हुआ। यह केवल सूचित करने हेतु यह लिख रहा हूँ। निकटवर्ती भविष्य में अपने कार्य की दृढता एव विस्तार बढेगा। ऐसी हम आशा करें, क्योंकि समय ही ऐसा है, जो हमारा दृष्टिकोण अपनाकर ही सभी को सोचने को बाध्य करता है। हमें चाहिए कि इस सही विचार-प्रवृत्ति को अपने कार्य के अनुकूल बनाते हुए उसका सघन दृश्य स्वरूप सघ-शाखाओं के माध्यम से हम प्रकट करें। मैं आशा करता हूँ कि अपने अपेक्षित कार्यवृद्धि का चित्र श्री भास्करराव कलवी जो यहाँ आनेवाले हैं, के द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

(मूल अंग्रेजी)

६५० आप का पथ शुभ हो

श्री जगदीशप्रसाद सर्राफ, हजारीबाग   ५ जुलाई, १६६७

आपने अपने स्वाभिमान के अनुसार जीवन का मार्ग बदलने का निश्चय किया है, यह ध्यान में आया। जीवन सफल होने के लिए सघार्पित जीवन ही एकमात्र मार्ग है, ऐसा कहना तो अहंकार का या आत्मश्लाघा का परिणाम कहा जाएगा। मैं यह कहता नहीं। इस कारण आप आगे जो भी मार्ग स्वीकार करेंगे, उसमें आपको यश मिले और जीवन में उपयुक्त कार्य करने का समाधान आपको प्राप्त हो– यही श्रीभगवच्चरणों में प्रार्थना करता हूँ।

आपके पत्र से आपने दृढ निर्णय कर लिया है, यह बोध प्राप्त कर ही यह मैंने लिखा है। आप जैसे निश्चयी पुरुष अपने विचार पर अटल रहते हैं। किसी से परामर्श करना, निश्चय करने से पूर्व आवश्यक नहीं मानते। निश्चय करने के पश्चात् दूसरे किसी से परामर्श का कुछ भी मूल्य प्रतीत नहीं हो सकता। यह सब सोचकर 'शुभास्ते पथान' इस शुभकामना को प्रकट करनेवाला यह पत्र लिखा है। आपने मार्ग पृथक कर देने पर भी अनेक बधुओं के साथ जो स्नेह-सबंध प्रस्थापित हुए हैं, वे अटूट रहेंगे ही।

६५१ सत्सकल्प से सफल हो

श्री सतोषकुमार गुप्त,   २० जुलाई, १६६७

अनेक लोगों में दोष होते हैं। कुछ उनके सबंध में सोच नहीं सकते, कुछ सोचते नहीं, कुछ उन्हें दोष मानते ही नहीं और कोई उनका समर्थन कर उन पर अभिमान भी करते हैं। थोडे ही ऐसे होते हैं, जो अपने दोषों को पहचानते हैं तथा उनकी बुराई का अनुभव करते हैं। ऐसे श्रेष्ठ बुद्धिमान लोगों में आप एक हैं। अत आप स्वय ही अपने निश्चय से उचित मार्ग अपना सकेंगे, इसमें सदेह नहीं है।

चडी से अन्य स्थान में जाने पर भी यदि आप कार्य से सबंध रखते और उसमें मान-सम्मान की भावना को प्रश्रय न देते हुए काम करने में मन को लगाकर रखते तो अच्छा होता। अब तो आपका अपना दृढ निश्चय ही आपका सहारा है। ईशकृपा से आप सत्सकल्प कर उस में सफल हों।

६५२ मधुर वाणी, मधुर व्यवहार, स्वाध्याय

श्री नवकात बरुआ, २२ जुलाई, १९६७

कार्य करते समय कुछ बातें ध्यान में रखना आवश्यक है। घर में पूज्य पिताश्री को नियमित रूप से पत्र भेजना चाहिए। उन्हें और विशेषकर पूजनीय श्री माताजी को चिता लगी रहती है। नियम से पत्र भेजकर अपना कुशल समाचार देते रहने से उन्हें सतोष होगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। सूर्यनमस्कार आदि नियमित व्यायाम तथा खाने-पीने में अनियत्रितता का त्याग लाभदायक रहेगा। अपने क्षेत्र में सबसे अच्छे स्नेह के सबध रखना चाहिए। आलस्यरहित होकर सबसे मिलना-जुलना, सहायता करना आदि उचित व्यवहार आवश्यक है। पुराने स्वयसेवक बधुओं का योग्य सम्मान कर उन्हें कार्य का दायित्व उठाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। किसी पर रुष्ट होकर टीका-टिप्पणी न कर मधुर वाणी से, मधुर व्यवहार से सबको कार्यप्रवण करना पडता है। नए-नए तरुणों से मिलकर उनके हृदय में अपने देश, धर्म, सस्कृति, समाज, राष्ट्र के विषय में प्रेम, श्रद्धा एव कर्तव्य-भावना जगाकर वे सघ के स्वयसेवक बनेंगे, ऐसा निरतर प्रयास करने से और प्रतिदिन की उपस्थिति, नियमितता, कार्यक्रमों का अभ्यास करा लेने से शाखा के रूप में चलनेवाला अपना कार्य सुचारु रूप से चल सकेगा और चारों ओर अच्छा वायुमडल बन सकेगा।

इन सब उद्योगों में जो समय रिक्त रहेगा, उसका उपयोग सद्ग्रथ-पठन में, अपने ध्येय के चितन में हो। इससे अपनी बौद्धिक योग्यता बढेगी, सत्सस्कार प्रबल होंगे और लोगों के अत करण में अपने लिए श्रद्धा तथा आदर बढेगा। कार्य के लिए यह बहुत उपकारक है।

सक्षेप में उत्तम प्रयत्न कर आप यश प्राप्त करें।

६५३ उचित शब्दों मे विचार व्यक्त करें

श्री हरिहर नद, कटक १६ अगस्त, १९६७

'राष्ट्रदीप' अपना जनजागरण का कार्य निर्भीकता से करता हुआ, अनेक सकटों से गुजरता हुआ अपने उपयुक्त अस्तित्व के तीन वर्ष पूर्ण कर चतुर्थ वर्ष में पदार्पण कर रहा है, यह ध्यान में आया। बहुत प्रसन्नता हुई।

विशुद्ध राष्ट्रभाव, सत्य एव धर्मपथानुसरण सद्गुण-सच्चारित्र्य सवर्धन

आदि को दृष्टिपथ में रखकर भयरहित रहकर अपने प्रचार कार्य में 'राष्ट्रदीप' संलग्न रहे, उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे।

निर्भयता से विचार प्रकट करने में भाषा की मृदुता का त्याग न हो। अकारण उद्दंड वाक्प्रयोग अथवा अकारण दीनता-प्रदर्शन सर्वथा त्याज्य है। सरल, मृदु, मधुर तथा दृढ़ता से ओतप्रोत शब्दों में अपने पवित्र विचार व्यक्त कर अधिकाधिक लोगों के मानस तक पहुँचने की क्षमता आपको प्राप्त हो।

६५४ प्रेम-विश्वास-सहयोग से सुधार

१८ अगस्त, १९६७

कुँवर श्रीपालसिंह जी, राजासाहब सिंगरामऊ, लखनऊ

आपके हृदय की व्यथा मेरी समझ में आती है। सब बातें सिद्धांतानुकूल कराने के लिए प्रयत्न चल रहा है। एकदम अपने सहयोगियों से पृथक होकर उनका विरोध करना लाभदायी नहीं होगा, अन्यथा भिन्न-भिन्न संस्थाएँ जिस प्रकार भग्न होकर अनेक छोटे-छोटे निष्प्रभ गुटों में बँट गईं, वैसा होकर आगे राष्ट्र के लिए बहुत गंभीर प्रश्न खड़ा हो जाएगा।

आप वहाँ प्रत्यक्ष में हैं। अनेक त्रुटियाँ, भूलें आप निकट से देख सकते हैं। उनकी जानकारी देते रहें, ताकि उन विषयों को लेकर संबंधित व्यक्तियों को सन्मार्गगामी बनाने में सहायता हो। वैसे, आपके प्रांत में, आपके सहकारी बंधुओं में पद का मोह हो गया है, ऐसा लगता नहीं। सोचते होंगे कि 'Line of least resistance' (अत्यल्प टेढ़े रास्ते) से चलकर परिस्थिति में योग्य मोड़ लाया जा सकता है। ऐसी नीति में प्रारंभ के दिनों में आपके मन में उनके विषय में जो भाव खड़े हुए हैं, वैसे खड़े होना अस्वाभाविक नहीं है। तो भी शांति से काम लेना लाभदायी होगा। अपनों का त्याग करके नहीं, तो उनसे अधिक प्रेम, विश्वास, सहयोग करके स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा। यह आप स्वयं जानते ही हैं।

६५५ अधिवेशन सुचारु रूप से सपन्न हो

१८ अगस्त, १९६७

श्री हिम्मतसिंह सिन्हा, प्रधान, विद्यार्थी परिषद्, कुरुक्षेत्र

आपने आयोजित किया हुआ अधिवेशन सुचारु रूप से सपन्न हो तथा अपने छात्र बधुओं के हृदय में परस्पर अटूट बधुप्रेम, शुद्ध शील, चारित्र्यसपन्नता, ज्ञानपिपासा, राष्ट्र के प्रति विमल भक्ति एव तदर्थ कर्तव्यपरायणता, सत्य, नम्रता, ऋजुता आदि गुणसपन्नता, अनुशासन, शरीर, मन, बुद्धि की लोकहितकारी शक्ति आदि श्रेष्ठ जीवन बनानेवाले सस्कार प्राप्त करने की प्रबल प्रेरणा उससे सब बधुओं में प्राप्त हो। परममगल श्रीप्रभुचरणों में इस हेतु प्रार्थना करता हूँ। 'तरुणोदय' का विशेषाक उद्बोधक बने—यही इच्छा है।

६५६ कार्यरत प्रवृत्ति व कृतिशीलता को देखें

श्री नद बदलानी जी, मुबई

१८ अगस्त, १९६७

मुझे पूरा विश्वास है कि जिस क्षेत्र के दायित्व की चिता आप के द्वारा की जा रही है, वहाँ अपना कार्य परिस्थिति के बावजूद प्रगति कर रहा है। एक स्वयसेवक के बारे में, किंतु, उनकी बातचीत की शैली एव व्यवहार का सही स्वरूप हृदयगम करने में आप सभवत असफल रहे हैं। बातचीत में कर्णमधुर भाषा के प्रयोग से और असभ्य एव तदनुसार मीठे व्यवहार से वह पूर्ण अनभिज्ञ है। उसका व्यवहार रूखा और असभ्य जैसा अवश्य प्रतीत होता है, परतु वह अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित है। सघकाय की परिधि के बाहर कुछ काम वह भले ही करता होगा, परतु उनकी सभी प्रकार की कृतिशीलता अपने कार्य के प्रति लाभ पहुँचाने हेतु ही होती है। उनकी कार्यरत प्रवृत्ति एव कृतिशीलता को इसी दृष्टि से देखकर समझना आवश्यक है। उनके बारे में इसी प्रकार विचार करने से आप उनके द्वारा उपयुक्त सघकार्य करवा लेने में समर्थ होंगे। मुझे इसलिए ऐसा लगता है क्योंकि श्री अनत देशपाडे को गत अनेक वर्षों से प्रगाढ सपर्क के कारण मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ।

(मूल अग्रेजी)

६५७ राष्ट्रजीवन की विरासत जागृत करनी है

श्री गुरुचरणदास,

६ अक्तूबर, १९६७

यह ज्ञात होने से कि आपने कार्यारम अच्छी प्रकार से किया है, मुझे बहुत सतोष हुआ। उस क्षेत्र में और अन्यत्र भी आज की परिस्थिति में कार्यप्रसार और अपने समाज को सुसगठित करने में हमें अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। समाज के हृदय में स्थित सुप्त देशप्रेम और अपने राष्ट्रजीवन की विरासत हमें जागृत करनी है। अपने धर्म एव सस्कृति की समुन्नत श्रेष्ठता के विषय में उनके मन में विश्वास जगाकर, उनके ऐहिक जीवन को सुधारने हेतु भी प्रयास करना है। सुदृढ सघ-शाखाओं के सुसूत्र कार्यान्वयन से ही इस दायित्व को सफलतापूर्वक निभाया जा सकता है। इस तथ्य को अपने सभी मित्रों को एव सहानुभूति रखनेवाले लोगों को समझाने का प्रयास करना होगा, जिसके परिणामस्वरूप वे भी इसी वैचारिक आधार को ग्रहण कर स्वयसेवक के नाते हमारे साथ काम करने में आगे बढ सकेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि आप इस काम को करते हुए अपने कार्य का सर्वांगीण विकास सफलतापूर्वक करने में समर्थ हो सकेंगे।

(मूल अंग्रेजी)

६५८ शब्दों का उपयोग बहुत सावधानीपूर्वक करें

श्री रमेश खेरडे, नौगॉव

७ अक्तूबर, १९६७

आपके पत्र का एक वाक्य चमत्कारिक लगा। 'तथापि सघ के सबध में या अन्य राजनीतिक चर्चा होती नहीं।' यह वाक्य पढनेवाले को सघ के विषय में यही लगेगा कि यह भी एक राजनीतिक काम है। लिखते समय आपका उद्देश्य सघ एव राजनीतिक काम भिन्न रहने का सत्य व्यक्त करने का था। फिर भी ऐसे असमजस पैदा करनेवाले वाक्य बोलने-लिखने में नहीं आएँगे, बिल्कुल अनवधान से या भूल कर भी नहीं आएँगे, सघ के कार्य के यथार्थ स्वरूप के बारे में इतना दृढ विश्वास मन पर अकित होना लाभदायक होगा।

(मूल मराठी)

६५९ आनंदमार्ग संप्रदाय के विषय में सावधानी

श्री साधनचंद्र सेन, मुंगेर (बिहार) १० अक्तूबर, १९६७

आपका पत्र पढकर विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। देशभर में इस 'संप्रदाय' का काम संदेहजनक रूप में चल रहा है और बढ भी रहा है। उनकी पुस्तकों से अनुमान होता है कि धार्मिक परिवेश की आड में साम्यवादी क्रांति की सिद्धता वे कर रहे हैं। सब लोगों को सतर्कता से उसका अध्ययन करना आवश्यक दिखता है। भोलेपन में उनके साधु सदृश वेश से प्रभावित होकर उनके हाथों में खेल जाना महँगा पडेगा। ऐसा तर्क करने के लिए अवकाश है।

६६० विद्यार्थी क्षेत्र का महत्त्व

श्री अरुण साठे, कोलकाता १० अक्तूबर, १९६७

इस नए क्षेत्र में आपका पर्याप्त परिचय हो चुका होगा। विद्यार्थी क्षेत्र का आपका पुराना अनुभव रहने से इस क्षेत्र में कोलकाता के विद्यार्थी बंधुओं का ध्यान आंदोलनप्रियता की ओर से मोडकर स्वयं के जीवन में राष्ट्रोपयोगी गुण एवं ज्ञान-संवर्धन करने की ओर उनका मन मोडें एवं उनका उपयोग अपने कार्य की ओर करा लें। उसमें से शाखा बढेगी, शिक्षण-संस्थाओं का वातावरण सुधरेगा एवं उस प्रांत की परिस्थिति, जो अनेकों को चिंताजनक लगती है, उसमें परिवर्तन हो सकेगा। यह सब करने की दृष्टि से अधिकाधिक श्रम करने के लिए आगे आना आवश्यक है। अधिक से अधिक सहयोगी प्राप्त करना भी आवश्यक है। (मूल मराठी)

६६१ आपका निर्णय आपका भरोसा

श्री नारायण आर्तवाणी, मेहसाणा (गुजरात) ११ अक्तूबर, १९६७

आप आजकल कार्य में प्रत्यक्ष कुछ कर नहीं रहे हैं, ऐसा आपने लिखा है। आप पुराने कार्यकर्ता होने के नाते विचार-विवेक युक्त हैं, ऐसी मेरी मान्यता है। अतः आपने सोच-विचार करके ही स्वयं को कार्य से अलग रखा होगा। विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुँचे हैं, तो उसी के अनुसार चलना आपके लिए लाभदायी है। उसमें मुझसे बात करने की आवश्यकता कहाँ है?

पुराने स्वयसेवक के नाते आप मेरे आत्मीय हैं। आप जिस किसी स्थिति में, जो कुछ सोचें और करें, उसमें आपकी उन्नति हो— यही मेरी स्वाभाविक इच्छा है। इस हेतु मैं परममगल श्रीपरमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

६६२ गलती फिर से न हो, इसकी चिता करे

श्री विनायक कानेटकर, बरपेटा (असम) १२ अक्तूबर, १६६७

अनेक बार एकाध बात बोलने या करने या एकाध घटना घटित हो जाने के बाद यह ऐसा घटित होता तो या कहा होता या बर्ताव किया होता तो— इस प्रकार के विचार मन में आकर अस्वस्थता उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस पर उपाय क्या? एक तो, ऐसे विचार आना पश्चात्-बुद्धि है, इसलिए उन्हें मन से निकाल डालना चाहिए। दूसरे, योग्य विचार कर पुन ऐसे प्रसग घटित हुए तो, पुरानी गलती न होने देते हुए मन की जागरूकता से व्यवहार करने का निश्चय करते हुए वैसा नित्य मन को सिखाते रहें। अनेक बार वैसे विचलित करनेवाले विचार आते हैं, परतु उनके बारे में केवल खेद करने से लाभ नहीं। काम में आ सकनेवाले अनेकविध प्रसगों की कल्पना कर उन प्रसगों में बोल-चाल के प्रकारों का व्यवस्थित रूप निर्धारित कर उनका पर्याप्त चितन करते हुए विचार दृढ एव व्यवस्थित करने का प्रयत्न करने से यह समस्या हल हो सकती है। सारा विचार करने पर भी ऐसे पश्चाताप के प्रसग आए तो सब 'श्रीकृष्णार्पण' कर निर्दोष कार्य करने के लिए आगे परिश्रम करते रहना, यही हितकारी होगा। बीत गई, सो बात गई। उसके लिए जी खट्टा कर लेना एव मन में कुढना, बिल्कुल लाभदायी नहीं। आप जो योग्य समझते हों, वह निश्चित करें, क्योंकि ऐसा तय करने की पात्रता आपमें है। (मूल मराठी)

६६३ सगठित सामर्थ्य प्रत्यक्ष खडा करना

१८ अगस्त, १६६७

डा काकासाहब मुले, सघचालक, सोलापुर (महाराष्ट्र)

इस वर्ष सब प्रातों में विवेकानद शिला स्मारक निधि सग्रह करने का कार्यक्रम हुआ। उसमें पक्षोपक्ष विरहित सहयोग प्राप्त होने का वृत्त अधिकाश जिलों से मिला है। यह शुभ लक्षण है। अच्छे काम के लिए प्रयत्न करते समय यह समझ जागृत होती है, इसका बोध होता है कि हम सब

एक हैं। इसमें संदेह नहीं है कि अपना सगठन-कार्य इसी प्रकार सपूर्ण राष्ट्रहित का ही है एव आवश्यक है– यह बोध जागृत रखकर प्रयत्न करते रहें, तो सभी क्षेत्रों में योग्य सहयोग मिलेगा।

दुर्भाग्य से सोलापुर, वार्शी, पढरपुर आदि स्थानो पर श्रीगणेशोत्सव के सबध में दगाइयों ने सिर उठाया– यह वृत्त पढकर अच्छा नहीं लगा। प्रतिवर्ष यह मानो कुलाचार ही हो गया है। राष्ट्रजीवन को अपमानित करने की यह अनिष्ट प्रथा वद होनी आवश्यक है। शासन की नीति इतनी लोक विलक्षण है कि उससे दगाइयों का साहस वढे, हमने चाहे जो ऊधम मचाया तो भी शासन अपना रक्षक है एव रहेगा और अपने को कोई हानि नहीं होगी– ऐसी उनकी समझ दृढमूल होगी, ऐसी ही विचित्र नीति दिखती है। अत इसका एक ही उपाय है– हिंदू समाज का सगठित स्वाभिमानी सामर्थ्य प्रत्यक्ष नित्य खडा रखना। इस शक्ति के अस्तित्व का विश्वास हुआ, तो ये अपमानकारक घटनाएँ रुकेंगी। अन्य उपाय नहीं है।

(मूल मराठी)

६६४ शुरू किए काम को सँभाले

श्री विश्वासराव, देवगढ (महाराष्ट्र) १५ अक्तूबर, १९६७

आपने इस समय कुछ वधुओं को विस्तारक भेजने की योजना वनाई होगी। वे नियोजित स्थानों पर जाकर शाखा प्रारभ करने का प्रयत्न करेंगे, परतु वहुत काल उन स्थानों पर रह नहीं सकेंगे। तब उनकी उपस्थिति में प्रारभ हुआ काम चलाने को योग्य स्थानीय कोई इतनी अल्प अवधि में खडा नहीं रह सकेगा एव काम कैसा चलाएँ– यह प्रश्न उपस्थित होगा। इस वात का विचार कर ये विस्तारक वधु आगे भी प्रति सप्ताह एक दिन तो भी वहाँ जाकर शुरू किए काम को सँभालेंगे ऐसी योजना बनाएँ एव अन्य दायित्व सँभालनेवाले अधिकारी वधु भी समय-समय पर जाकर कार्य को प्रेरणा-चेतना देकर ठीक सस्कार डालते रहें– यह आवश्यक है। इस ओर ध्यान रहने दें। (मूल मराठी)

६६५ प्रगति धीरे-धीरे होगी

श्री शरद कटककर, कर्जत (महाराष्ट्र) १५ अक्तूबर, १९६७

आपके द्वारा उल्लिखित अडचनें सबदूर हैं। अपने पर काम का दायित्व है एव वह अपने को पूरा करना चाहिए– ऐसा आग्रह या जिद कम

ही रहती है। साधारणत सर्वत्र उदासीनता एव कर्तव्यपराङ्मुखता, आलस एव क्षुद्र भोगेच्छा का ही प्राचुर्य दिखता है। यह सही है तो भी क्रमश उनमें व्यक्तियों का चुनाव कर धीरे-धीरे काम में रुचि उत्पन्न होती रहेगी, ऐसे काम उन पर सौंपकर, उन्हें कार्यकर्ता के रूप में खडे कर सकेंगे। आप प्रयत्न करते रहें एव कभी भी निराशा को मन में स्थान न दें। (मूल मराठी)

६६६ अनेकों के हृदय मे नई जिद निर्माण होगी

श्री राजू भोंसले, १५ मार्च, १९६८

प्रिय बधु स्व दीनदयालजी के आकस्मिक निधन की वार्ता मुझे प्रयाग के निवास-काल में मिली। तुरत वाराणसी गया। सामने केवल मृतदेह। मन की जो स्थिति हुई, उसका वर्णन करना असभव है। हृदय पर पत्थर रखकर बाकी का प्रवास पूरा किया एव अन्य काम भी चालू हैं। ईश-कृपा से अच्छा-बुरा सब घटित होता है। उसकी लीला अगम्य है। इसमें से भी अपने राष्ट्र के लिए कुछ अच्छा ही निकलेगा एव श्री दीनदयाल जी का जीवन जैसा राष्ट्रोत्थानार्थ घिसा वैसी यह अकाल मृत्यु भी राष्ट्रहितार्थ उपयुक्त ठहरेगी। अनेकों के हृदय में नई जिद निर्माण होगी एव अगणित कार्यकर्ताओं के रूप में उनकी बुद्धिनिष्ठा, कार्यकुशलता सहस्त्रश बढी हुई प्रगट होगी– ऐसी मेरी श्रद्धा है। (मूल मराठी)

६६७ डा हेडगेवार जी की प्रतिमा का अनावरण

श्री बालाजीपत बोरकर, सघचालक नवरगाँव, विदर्भ २३ अप्रैल, १९६८

दिनाक २८ ४ ६८ को नवरगाँव ग्रामपचायत सभागृह में परम पूजनीय डा हेडगेवार जी की प्रतिमा का अनावरण माननीय श्री आप्पाजी जोशी के करकमलों द्वारा सपन्न होने जा रहा है, यह आज प्राप्त हुए निमत्रण-पत्र से ज्ञात हुआ। समारोह उत्साह से सपन्न होगा। सपूर्ण नवरगॉव मडल में, विशेषत आसपास के छोटे-बडे गॉवों में, परमपूजनीय डा हेडगेवार जी के राष्ट्र, धर्म, सस्कृति के लिए बचपन से अनेक कष्ट सहकर घिसनेवाले, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ नामक अद्वितीय राष्ट्रभक्तिपूर्ण सगठित शक्ति निर्माण कर हिदुराष्ट्र के आत्मविश्वासयुक्त, स्वाभिमानसपन्न सामर्थ्य को साकार करनेवाले एव उज्ज्वल भविष्य बनाने की दुर्दम्य विजिगीषा से ओतप्रोत आकाक्षा हिदू समाज में जागृत करनेवाले देदीप्यमान

जीवन की जानकारी होकर उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग से राष्ट्र हित के लिए परिश्रम करने की प्रेरणा आबालवृद्ध बधुओं के हृदय में सदैव जागृत रहेगी– ऐसी स्फूर्ति इस कार्यक्रम में से एव आगे, वह स्फूर्ति अखडता से उनकी प्रतिमा के दर्शन से प्राप्त होनेवाले पुण्य में से निर्माण हो एव आसपास व्याप्त हो। सर्वशक्तिमान, सर्वमगलमय श्रीप्रभु की कृपा हम पर सदा रहे, इसलिए उस मडल के नागरिकों के लिए उस दयाघन के चरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

६६८ स्वाध्याय एव व्यायाम और एक शाखा का काम

श्री हनुमत बापट, प्रचारक, बेलापुर (महाराष्ट्र) ५ जुलाई, १९६८

नएपन के कारण सकोच का अनुभव करना स्वाभाविक है। विस्तृत क्षेत्र में काम करने का अनुभव न हो तो भी एक शाखा का काम आपने जिम्मेवारी से किया है, इसलिए अधिक कठिनाई नहीं आएगी। प्रारभ में ऐसा अनुभव सभी को आता है। उससे चितित न होकर अपने कार्य से सबद्ध जो ग्रथ प्रसिद्ध हो चुके हैं, उनका पठन-मनन करते रहें। अन्य भी श्रेष्ठ ग्रथों का अध्ययन, दासबोध, गीतारहस्य, ज्ञानेश्वरी आदि पवित्र ग्रथों का पठन करना, चारों ओर के विश्व की साधारण जानकारी प्राप्त कर लेना, अपना इतिहास शुद्ध स्वरूप में समझ लेने का प्रयत्न करना लाभदायक होगा। वैसे ही नित्य थोडा व्यायाम, सूर्यनमस्कार, सुलभ आसन एव थोडे पवित्र स्तोत्रादि का पाठातर सस्कार शुद्ध करने में उपकारक होगा। इसलिए नियमित रूप से ध्यान देना हितकारी होगा। इस सबध में माननीय प्रात सघचालक, प्रात प्रचारक का परामर्श लेकर चलें। (मूल मराठी)

६६९ एक चुटकी मे काम होगा, ऐसी अपेक्षा व्यर्थ

श्री दुर्गानद नाडकर्णी, प्रचारक ८ जुलाई, १९६८

यह जिम्मेवारी उठाने में आपको आत्मविश्वास एव आनद का अनुभव होगा। फिर भी सब सहयोगियों के साथ बैठकर, विचार-विनिमय कर स्वय के प्रवास की रूपरेखा बनाएँ। उसके अनुसार प्रवास करें। कभी अनपेक्षित किसी भी शाखा में जाकर वस्तुस्थिति देखें, परतु किसी को दोष न देकर वह स्थिति न हो तथा उसे सुधारने के सबध में सूचना दें। एक चुटकी में काम होगा, ऐसी अपेक्षा करना व्यर्थ है। निरतर, सतत उचित

प्रयत्न करते रहना पडता है। यह निरतर ध्यान में रखकर काम किया गया तो अच्छा होगा।

अन्य अडचनों के सवध में अपने जो अधिक अनुभवी प्रचारक वधु हैं, उनसे पूछकर व्यवहार करें। (मूल मराठी)

६७० *ध्यानपूर्वक स्थानीय लोगो से सपर्क करे*

श्री कालिदास कानगो, प्रचारक, सवलपुर (उत्कल) १० जुलाई, १९६८

यह ज्ञात हुआ कि सवलपुर में आपकी योजना हुई। क्षेत्र अच्छा है। सम्मिश्र वस्ती है। पजावी, राजस्थानी आदि सुसपन्न स्थिति में हैं। अनेक अपने कार्य के प्रति अनुकूल हैं, परतु आप ध्यानपूर्वक स्थानीय लोगों से सपर्क स्थापित करने का प्रयत्न करें। वकील, डाक्टर, शिक्षक, अन्यान्य उद्योग-धधों के तथा पाठशाला, कॉलेज आदि सस्थाओं के विद्यार्थियों, स्थानीय अर्थात् उडिया-भापियों से निकट सवध स्थापित कर उन्हें कार्य में खडा करें। यह आवश्यक है। स्थानीय स्वयसेवकों की उपस्थिति कम एव अन्य प्रातों के वाशिदों की अधिक, यह स्थिति विपम मानना चाहिए। पूरा ध्यान देकर उत्तम कार्य खडा करें। आपको उत्तम यश प्राप्त हो, यह इच्छा है। (मूल मराठी)

६७१ *करणीय का विशद सूत्ररूपी मार्गदर्शन*

श्री अरुण वैद्य, प्रचारक १० जुलाई, १९६८

आप अपने कार्यक्षेत्र से समरस होकर योजना के अनुरूप कार्य में प्रगति करेंगे, इसमें सदेह नहीं है। कार्य का दायित्व स्वय हमें ही निभाना है– इस दृढ विश्वास से काम करनेवाले कार्यकर्ता प्रत्येक क्षेत्र में निर्माण करने का प्रयास हो। उनको अपने लक्ष्य के वारे में सुस्पष्ट जानकारी रहे, लक्ष्य के प्रति निष्ठा रहे, लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयास करते समय वे सतोप अनुभव करें, इस दृष्टि से प्रयत्न आवश्यक हैं। अपनी नीति, कार्यपद्धति, दैनदिन चलनेवाली शाखाओं की रचना, प्रतिदिन चलनेवाले कार्यक्रमों के माध्यम से शाखाओं का सचालन, आपसी व्यवहार आदि प्रत्येक विपय में अपने कार्यकर्ता जानकार रहने चाहिए। इस प्रकार के कार्यकर्ता निर्माण करने के साथ ही नए स्थान पर, वहाँ के लोगों से परिचय प्राप्त करते हुए वहाँ अपनी शाखा आरभ करने हेतु अनुकूल वातावरण निर्माण करने का भी प्रयास करते रहें। (मूल मराठी)

६७२ कार्य भावात्मक आधार पर सुस्थिर बने

श्री एन गोविंद मेनन, कोट्टायम (केरल) ९ सितंबर, १९६८

श्री भास्करराव के पत्र से ज्ञात हुआ कि अपना कार्य प्रगति कर रहा है। बढती हुई संघ-शाखाओं की संख्या के साथ कार्य को सुदृढ करने का प्रयास भी आवश्यक है। अपने हिंदू समाज के बंधु, संभवत परिस्थिति की प्रतिक्रिया के नाते, अधिकाधिक संख्या में संघानुकूल बन रहे हैं। इन बंधुओं की हृदयस्थ भावना, जो आज प्रतिक्रिया के रूप में है, बदलकर संघकार्य की सही जानकारी, अपनी विचार-प्रणाली एवं कार्यपद्धति के प्रति भावात्मक प्रेम और भक्ति पर आधारित सुस्थिर बने, इस हेतु प्रयास करने की आवश्यकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने कार्यकर्ता सोत्साह और हर्षोल्लास से कार्य करते समय कार्य के इस महत्त्वपूर्ण पहलू को ध्यान में रखेंगे। (मूल अंग्रेजी)

६७३ व्यवस्थित शाखा का निर्माण

श्री बापू माडे, परभणी (महाराष्ट्र) ११ सितंबर, १९६८

कार्यक्रम होते रहते हैं। उनमें त्रुटि न रहे, ऐसा प्रयास भी सब करते हैं और उसमें बहुतांश सफलता भी प्राप्त करते हैं। अपना लक्ष्य, किंतु, केवल कार्यक्रम उत्तम हों– यह नहीं है। दैनंदिन चलनेवाला कार्य प्रगति करता रहे, शाखाएँ हर रोज समय पर लगें, उपस्थिति, कार्यक्रम, अनुशासन, पारस्परिक शुद्ध व्यवहार, लक्ष्य, कार्यपद्धति, नीति–इन विषयों में सुस्पष्ट जानकारी और उनपर दृढ निष्ठा रहे और इस प्रकार कार्य करते समय संपूर्ण समाज अपने साथ सहयोग करने सिद्ध है, इस प्रकार का अनुभव अपना कार्यकर्ता करे– ऐसा संघकार्य का स्वरूप हमें निर्माण करना है। अपने स्थानीय कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त कर इस प्रकार कार्य निर्मिति की ओर आपको अधिक ध्यान देना आवश्यक है, ऐसा मुझे लगता है। (मूल मराठी)

६७४ आचार्य रंगा विजयादशमी महोत्सव के अध्यक्ष

श्री पी लिंगय्या चौधरी, हैदराबाद ७ अक्तूबर, १९६८

आचार्य रंगा जी, विजयादशमी उत्सव की अध्यक्षता करने हेतु दिनांक ३० ०९ ६८ को यथानिश्चित नागपुर पहुँचे। उनके भाषण की सब

प्रयत्न करते रहना पडता है। यह निरतर ध्यान में रखकर काम किया गया तो अच्छा होगा।

अन्य अडचनों के सबध में अपने जो अधिक अनुभवी प्रचारक बधु हैं, उनसे पूछकर व्यवहार करें। (मूल मराठी)

६७० ध्यानपूर्वक स्थानीय लोगो से सपर्क करे

श्री कालिदास कानगो, प्रचारक, सबलपुर (उत्कल)   १० जुलाई, १९६८

यह ज्ञात हुआ कि सबलपुर में आपकी योजना हुई। क्षेत्र अच्छा है। सम्मिश्र बस्ती है। पजाबी, राजस्थानी आदि सुसपन्न स्थिति में हैं। अनेक अपने कार्य के प्रति अनुकूल हैं, परतु आप ध्यानपूर्वक स्थानीय लोगों से सपर्क स्थापित करने का प्रयत्न करें। वकील, डाक्टर, शिक्षक, अन्यान्य उद्योग-धधों के तथा पाठशाला, कॉलेज आदि सस्थाओं के विद्यार्थियों, स्थानीय अर्थात् उडिया-भाषियों से निकट सबध स्थापित कर उन्हें कार्य में खडा करें। यह आवश्यक है। स्थानीय स्वयसेवकों की उपस्थिति कम एव अन्य प्रातों के बाशिदों की अधिक, यह स्थिति विषम मानना चाहिए। पूरा ध्यान देकर उत्तम कार्य खडा करें। आपको उत्तम यश प्राप्त हो, यह इच्छा है।   (मूल मराठी)

६७१ करणीय का विशद सूत्ररूपी मार्गदर्शन

श्री अरुण वैद्य, प्रचारक   १० जुलाई, १९६८

आप अपने कार्यक्षेत्र से समरस होकर योजना के अनुरूप कार्य में प्रगति करेंगे, इसमें सदेह नहीं है। कार्य का दायित्व स्वय हमें ही निभाना है– इस दृढ विश्वास से काम करनेवाले कार्यकर्ता प्रत्येक क्षेत्र में निर्माण करने का प्रयास हो। उनको अपने लक्ष्य के बारे में सुस्पष्ट जानकारी रहे, लक्ष्य के प्रति निष्ठा रहे, लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयास करते समय वे सतोष अनुभव करें, इस दृष्टि से प्रयत्न आवश्यक हैं। अपनी नीति, कार्यपद्धति, दैनदिन चलनेवाली शाखाओं की रचना, प्रतिदिन चलनेवाले कार्यक्रमों के माध्यम से शाखाओं का सचालन, आपसी व्यवहार आदि प्रत्येक विषय में अपने कार्यकर्ता जानकार रहने चाहिए। इस प्रकार के कार्यकता निर्माण करने के साथ ही नए स्थान पर, वहाँ के लोगों से परिचय प्राप्त करते हुए वहाँ अपनी शाखा आरभ करने हेतु अनुकूल वातावरण निर्माण करने का भी प्रयास करते रहें। (मूल मराठी)

६७२ कार्य भावात्मक आधार पर सुस्थिर बने

श्री एन गोविद मेनन, कोट्टायम (केरल) ६ सितवर, १६६८

श्री भास्करराव के पत्र से ज्ञात हुआ कि अपना कार्य प्रगति कर रहा है। बढती हुई सघ-शाखाओं की सख्या के साथ कार्य को सुदृढ करने का प्रयास भी आवश्यक है। अपने हिंदू समाज के वधु, सभवत परिस्थिति की प्रतिक्रिया के नाते, अधिकाधिक सख्या में सघानुकूल वन रहे हैं। इन वधुओं की हृदयस्थ भावना, जो आज प्रतिक्रिया के रूप में है, वदलकर सघकार्य की सही जानकारी, अपनी विचार-प्रणाली एव कार्यपद्धति के प्रति भावात्मक प्रेम और भक्ति पर आधारित सुस्थिर वने, इस हेतु प्रयास करने की आवश्यकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने कार्यकर्ता सोत्साह और हर्षोल्लास से कार्य करते समय कार्य के इस महत्त्वपूर्ण पहलू को ध्यान में रखेंगे। (मूल अग्रेजी)

६७३ व्यवस्थित शाखा का निर्माण

श्री वापू माडे, परभणी (महाराष्ट्र) ११ सितवर, १६६८

कार्यक्रम होते रहते हैं। उनमें त्रुटि न रहे, ऐसा प्रयास भी सब करते हैं और उसमें वहुताश सफलता भी प्राप्त करते हैं। अपना लक्ष्य, किंतु, केवल कार्यक्रम उत्तम हों– यह नहीं है। दैनदिन चलनेवाला कार्य प्रगति करता रहे, शाखाएँ हर रोज समय पर लगें, उपस्थिति, कार्यक्रम, अनुशासन, पारस्परिक शुद्ध व्यवहार, लक्ष्य, कार्यपद्धति, नीति–इन विषयों में सुस्पष्ट जानकारी और उनपर दृढ निष्ठा रहे और इस प्रकार कार्य करते समय सपूर्ण समाज अपने साथ सहयोग करने सिद्ध है, इस प्रकार का अनुभव अपना कार्यकर्ता करे– ऐसा सघकार्य का स्वरूप हमें निर्माण करना है। अपने स्थानीय कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त कर इस प्रकार कार्य निर्मिति की ओर आपको अधिक ध्यान देना आवश्यक है, ऐसा मुझे लगता है। (मूल मराठी)

६७४ आचार्य रगा विजयादशमी महोत्सव के अध्यक्ष

श्री पी लिगय्या चौधरी, हैदरावाद ७ अक्तूवर, १६६८

आचाय रगा जी, विजयादशमी उत्सव की अध्यक्षता करने हेतु दिनाक ३० ०६ ६८ को यथानिश्चित नागपुर पहुँचे। उनके भाषण की सब

लोगों ने प्रशसा की। इस अवसर पर वे मुक्त तथा आश्वस्त लगे। केवल 'हिंदूराष्ट्र' शब्दों का उच्चारण किए बिना जिन राष्ट्र-विषयक कल्पनाओं का हम लोग सत्य रूप में नित्य प्रतिपादन करते हैं, उन्हीं का विस्तारपूर्वक ढग से सावेश विवेचन उनके भाषण की विशेषता थी। श्रोता उनसे बहुत प्रभावित हुए।

बाद में केवल सोमय्याजी की उपस्थिति में उनसे अनौपचारिक तथा मुक्त वार्तालाप भी हुआ। उन्हें जो बात समझाने की हमारी इच्छा थी, वह बात वे समझ गए होंगे, यह आशा करता हूँ। इस समारोह का सविस्तार विवेचन श्री सोमय्या जी ने आपसे किया होगा। सपूर्ण समय तक आचार्य जी, अपने मित्रों के साथ जैसा बर्ताव करते हैं, वैसा ही मुक्त बर्ताव कर रहे थे। अपने सगठन की दृष्टि से यह सबध फलदायी होगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ। (मूल अंग्रेजी)

६७५ शाखा, कार्यक्रम सब स्वयसेवक निर्माण हेतु

डा कोठावले, नदुरबार (महाराष्ट्र) ८ अक्तूबर, १९६८

सघ शाखाओं की उपस्थिति के बारे में जो आपने लिखा, वह सही है। अन्यान्य कार्यक्रमों के सबध में आकर्षण तब तक ही रहता है, जब तक हृदय में सघनिष्ठा प्रबल नहीं होती। इस तथ्य को जानकर ही हमें कार्य करना है। जितनी चिंता हम दैनदिन शाखा और कार्यक्रमों की करते हैं, उससे कहीं अधिक चिंता हम स्वयसेवकों की मानसिक एव बौद्धिक क्षमता बढाने हेतु आवश्यक प्रयासों की करें। स्वयसेवकों के आचरण एव चारित्र्य के सवर्धन की ओर अधिक ध्यान देकर, उनके हृदय में शुद्ध भावना जागृत कर, निष्ठावत स्वयसवेक निर्माण करने का अधिक प्रयास किया तो इन समस्याओं का हल हो सकेगा, ऐसा लगता है। (मूल मराठी)

६७६ सर्वशक्तिमान की इच्छा पर निर्भर रहे

श्री राधिकामोहन गोस्वामी, नौगॉव (असम) १६ अक्तूबर, १९६८

(पत्र में) समाचार पढकर कि आप मानसिक एव शारीरिक स्वास्थ्य में दुर्बलता और शक्ति-क्षय का अनुभव कर रहे हैं, मेरा हृदय व्यथित हुआ है। शारीरिक दुर्बलता तो ऑखों के कारण निर्माण हुई होगी। मानसिक दुर्बलता, किंतु निर्माण न हो, इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ

कि धीर-वृत्ति से, सर्वशक्तिमान श्रीपरमेश्वर की इच्छा पर पूर्णतया निर्भर रहने की दृढ भावना से, अपने भाग्य में जो है, उसे भोगना ही पडेगा— इस धारणा से अपना मन सतुलित रखें और भगवद्गीता प्रणीत शिक्षा के अनुसार सब कुछ दृढता से एव शातिपूर्वक सहते हुए जीवन व्यतीत करें।

आज की विकल अवस्था में सचमुच ही आप बहुत कुछ काम कर रहे हैं, जिसकी सर्वसाधारण मनुष्य से अपेक्षा नहीं की जा सकती। अत आपको निराश होने का कुछ भी कारण नहीं है। (मूल अंग्रेजी)

६७७ समाजहितार्थ जीवन अभिनदनीय

२७ नवबर, १९६८

डा बालासाहब खाडिलकर, तासगाँव, जिला सागली (महाराष्ट्र)

अपने परिवार के सभी लोगों की सहमति से अपना व्यवसाय स्थगित कर आप इस कार्य के लिए सपूर्ण समय उपलब्ध करने सिद्ध हुए हैं, यह एक बहुत अभिनदनीय निर्णय है। इस प्रकार काम करनेवाले कार्यकर्ता यदि प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए तो निकट भविष्यकाल में ही हम कार्य की ऊर्जितावस्था अनुभव करेंगे। मुझे विश्वास है कि अपनी कर्तृत्वपूर्ण कुशलता के कारण, सागली, सातारा और कोल्हापुर के आपके कार्यक्षेत्र में अपने विचार प्रसृत होकर उत्तम अनुकूल वायुमडल निर्माण होगा। भगवत्कृपा से आप अवश्य ही उत्कृट सफलता प्राप्त करेंगे। (मूल मराठी)

६७८ 'सर्वेषामविरोधेन' अलिप्त रहे

श्री बाबाराव भिडे, पुणे — १६ दिसबर, १९६८

पुणे में 'याग' होनेवाला है, ऐसा ज्ञात हुआ है। प्रत्यक्ष निमत्रण प्राप्त नहीं हुआ है। पशुबलि का विषय वादग्रस्त बना हुआ है। इस प्रकार बलि चढाना शास्त्रीय दृष्टि से योग्य है अथवा नहीं, इस विवाद में उलझना मुझे आवश्यक प्रतीत नहीं होता। कालानुसार सुसगत विचार करते हुए, बलि न चढाते हुए कुछ करना सभव न होगा, ऐसी भी बात नहीं है। परतु इस विषय में कुछ निश्चित धारणा बनाना या उसे प्रकट करने का प्रयोजन अनुभव नहीं होता है। इस वादग्रस्त कार्य में हम सहयोग करें या अलिप्त रहें, इतना ही विचार हमारे लिए पर्याप्त है। यथासभव, कितु वाद-विवाद के झमेले में न पडते हुए 'सर्वेषामविरोधेन' कार्य करने में हम प्रयत्नशील

रहने के कारण इस 'याग' से अलिप्त रहना उचित है, ऐसा मुझे लगता है। उसकी कार्यवाही में अध्यक्ष या उपाध्यक्षादि प्रमुख पद तो बिल्कुल ग्रहण न करें, अर्थात् यदि इस काम से पूर्ण अलिप्तता असभव हो तो ही इस प्रकार विचार करें। आपका भी विचार यही रहने से आप इस विवाद से दूर रहने की वैचारिक भूमिका सुस्पष्ट कर वैसा व्यवहार करें। इसमें कुछ भी कठिनाई नहीं होगी, ऐसी अपेक्षा है। (मूल मराठी)

६७६ माँ के दु खद निधन पर सात्वना

श्री पी परमेश्वरन, मुहम्मा, केरल   १६ दिसबर, १६६८

आप पर बीती विपत्ति के बारे में मुझे बताया गया। परमकृपालु श्रीजगन्माता का वरदहस्त, आपकी दिवगत माता को सद्गति प्राप्त हो, इसलिए सदैव उनके सिर पर रहे। आपको अपनी मन शाति इस विवेक से बनाई रखनी है कि जिस जन्मदात्री से आपने इस जग में पदार्पण किया, उनकी प्रार्थना सवशक्तिमान श्रीपरमात्मा ने स्वीकार करने से ही उनको अपना नश्वर शरीर प्रसन्नता एव मन शाति से त्यागना सभव हुआ। शुद्धहृदय से निर्मल जीवन व्यतीत करनेवाले ईश्वर-भक्तों को ही ऐसा मरण प्राप्त होता है।

माँ का प्रकट स्नेह अब न रहा, इसलिए आप अकेलेपन का अनुभव करते होंगे, परतु नश्वर शरीर के नष्ट होने से उस असीम स्नेह का विलोप तो नहीं हुआ है। अपनी श्रद्धेय मातृभूमि की समर्पण भाव से आजीवन सेवा का व्रत हम ग्रहण कर चुके हैं। क्या हमें भी माँ का वियोग हो सकता है? वह तो यहाँ, वहाँ, सर्वत्र विद्यमान है। जो भी थोडी-बहुत सेवा हम करते हैं, उसका स्वीकार कर, हम पर, भले ही हम उनके अयोग्य पुत्र क्यों न हों, अपनी कृपा की वर्षा तो करती ही रहती है।

हमें विशुद्ध स्नेह एव सदैव कृपा-दृष्टि से देखनेवाली अनादि-अनत दिव्य जगन्माता विद्यमान रहते हुए हमें उद्विग्नता अनुभव करने का क्या कारण हैं ?

आपकी मन शाति के लिए, और जो सेवाकार्य पूर्ण समर्पण भाव से जीवन-व्रत इस नाते आपने स्वीकार किया है, उसमें आप वर्धिष्णु-मात्रा में सदैव यश-प्राप्ति करते रहें, इसलिए मैं श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

(मूल अग्रेजी)

६८० पात्रता-अपात्रता की चिंता छोड दे

श्री बालासाहेब दीक्षित, पुणे ३ जनवरी, १९६६

पुणे के काम के संबंध में जो आपने लिखा है, उसका आशय ध्यान में आया। स्वयं अपने बारे में जो आपने लिखा, उसका भी पठन मैंने किया है। जानकारों के अनुसार कार्य करते समय स्वयं अपनी पात्रता या अपात्रता के विषय में अधिक चिंता करने के बजाय प्राप्त दायित्व पूर्ण करने के अपने कर्तव्य का विचार प्रधानता से मन में रहना ही योग्य है। इसे तो आप भी जानते हैं। कार्यवृद्धि मान्यवर सरकार्यवाह जी के द्वारा अभिव्यक्त अपेक्षा के अनुरूप न हो सकी, तो भी हतोत्साह होने का कारण नहीं है। अपेक्षा भी काफी ऊँची है और वह तुरंत पूरी की जाएगी, ऐसा संभवतः वे भी नहीं सोचते होंगे। उस अपेक्षा के अनुरूप, किंतु, कार्य बढेगा और निरंतर बढता हुआ कार्य चिरस्थायी बनकर नित्य बढता ही रहेगा, इसलिए सातत्य एवं लगन से प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि अपने छोटे-बडे सभी कार्यकर्तागण इस प्रकार कार्यरत होकर प्रयास करते रहेंगे।

(मूल मराठी)

६८१ परमेश्वर की इच्छा

श्री बाबासाहब आप्टे, सीतापुर २८ फरवरी, १९६६

यह जानकर बहुत ही अच्छा लगा कि आपकी ऑखों की अवस्था सुधर रही है। इच्छा है कि सुधार और अच्छा हो और आप अबाध गति से घूम-फिर सकें तथा स्वेच्छा से पढ-लिख सकें। अतः डाक्टरों के परामर्श के अनुसार वहाँ रहना आवश्यक है। शीघ्रता करने से कोई लाभ नहीं होगा। स्वाभाविक है कि इस कारण से आप आगामी बैठक में उपस्थित नहीं रह पाएँगे। मुझे बडा विचित्र लग रहा है। आपकी अनुपस्थिति सब कार्यकर्ता अनुभव किए बिना नहीं रहेंगे, परंतु आपका सीतापुर में रहना अनिवार्य है। ऐसा करने से ही आपकी ऑखों का विकार दूर होगा और आप पूर्ण उत्साह से देशभर का प्रवास कर सकेंगे। इस विचार को ध्यान में रखकर सबको अपने मन को समाधान करना होगा। परमेश्वर की इस समय यही इच्छा है, ऐसा मानकर हमें चलना होगा।

(मूल मराठी)

६८२ यथोचित प्रयास हो

श्री दिनकरराव खावेटे, इदौर (म प्र) ७ जुलाई, १९६९

समाचार ज्ञात होकर कि इदौर में हुए जातीय दगे में आततायी आक्रामकों की गोली से आपका भतीजा मारा गया, असीम दु ख का अनुभव कर रहा हूँ। न्यायालयीन कार्यवाही के अनुसार अभियोग चलेगा। उसमें निर्णय जो भी हो, परतु उससे आपकी क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती। अनेक निरपराध परिवार इस प्रकार विपद्ग्रस्त हैं। इससे लाभ तो किसी का भी नहीं है, वह हो भी नहीं सकता।

ऐसी परिस्थिति में आततायी आक्रामकों के मन में भय पैदा हो, इस प्रकार की कार्यवाही के बजाय उनको सरक्षण देनेवाले सत्ताधारी दल में दिखाई दे रहे हैं। यह चिता का विषय है। ऐसी दुर्घटनाग्रस्त स्थिति में, अपने दल का गौरव और अन्य दलों की बदनामी करने का मानो सुअवसर प्राप्त हुआ है, ऐसा मानकर वैसा प्रचार हो रहा है, यह तो चिता करने का एक और कारण बना हुआ है। इदौर के कोई जवाहरलाल राठौड नामक सज्जन के द्वारा लिखे गए दो लेख, जो दिल्ली से 'हिदुस्तान' नाम से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र में छपे हुए हैं, मैंने पढे हैं। ये लेख मानो मेरे उपर्युक्त विचारों के सबूत जैसे ही हैं।

इस स्थिति में सत्य की खोज और सज्जनों की रक्षा करते हुए दुर्जन दडित हों– इस प्रकार के यथोचित प्रयास आवश्यक हैं। क्या निष्पन्न होता है, देखें। (मूल मराठी)

६८३ उदात्त मनोवृत्ति का जीवत व्यक्तित्व

श्री प्रभाकरराव हेगडे, ठाणे (महाराष्ट्र) ६ जुलाई, १९६९

आपके पिताश्री आदरणीय श्री माधवराव जी हेगडे के निधन का दु खद समाचार प्राप्त हुआ। सघ सस्थापक परमपूजनीय डा हेडगेवार जी ने जिनके सबध में असीम आदरयुक्त आत्मीयता हृदय में अनुभव कर ठाणे जिले के सघकार्य का दायित्व सौंपा था, उनके आशीर्वाद से अब हम वचित रहेंगे, इस विचार से मन अति व्यथित हुआ है। जिस समय सघकार्य का अत्यल्प परिचय था, और सुनी-सुनाई बातों के द्वारा ही जो थोडा-बहुत जानते थे, उनमें से अनेकों के मन में कुछ विपरीत धारणाएँ थीं। इस प्रकार की परिस्थिति में सघकार्य प्रमुख का दायित्व स्वीकार कर तथा लोगों के

अज्ञान एव विपरीत धारणाओं का निर्मूलन कर उनको कार्यप्रवण करने का अति कष्टप्रद काम उन्होंने स्वीकार किया। उनकी ही प्रेरणा के कारण छोटे-बडे अनेक कार्यकर्ता सघ के लिए उपलब्ध हो सके। आगे चलकर काग्रेस के एक निष्ठावान कार्यकर्ता के नाते, काग्रेस दल के विचार एव व्यवहार के अनुरूप, उन्होंने सघ-प्रमुख पद के दायित्व का त्याग किया, अथवा त्याग करने को उनको बाध्य किया गया, तो भी उनका सघ के प्रति प्रेम अबाधित ही रहा था। परोक्ष-अपरोक्ष सघकार्य सुदृढ करने में उन्होंने सहयोग किया था। आवश्यकता होने पर सघ के समर्थन में सघर्ष कर स्वयसेवक बधुओं की रक्षा की थी। उनकी इस प्रकार की सर्वसग्राहक उदार नीति एव तदनुसार व्यवहार का स्मरण मेरे हृदय में विद्यमान है।

इस प्रकार के विशाल हृदयी विरले ही होते हैं। इसीलिए उनका वियोग अधिक ही दु खद लगता है। छोटी-बडी मतभिन्नता से ऊपर उठकर, राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए, स्नेह के कारण सबसे मिल-जुलकर, सभी कामों में अधिकतम सहयोग करनेवाली उदात्त मनोवृत्ति का जीवत व्यक्तिमत्व उनके निधन के कारण दृष्टि से ओझल हुआ है। यद्यपि स्थूल दृष्टि से यह सही है, तो भी मुझे विश्वास है कि उनकी स्मृति हम सभी को यथोचित मार्गदर्शन करती रहेगी। (मूल मराठी)

६८४ *हम मध्यम मार्ग के अनुयायी*

श्री अनतराव देवकुले, पुणे   १४ जुलाई, १६६६

माननीय श्री बाबा भिडे के यहाँ सपन्न हुए मगल समारोह में (आप) आए थे, ऐसा पता चला। वहाँ आपसे मिलना सभव न हो सका था। अत आपका पत्र पढकर बहुत सतोष हुआ।

सतोष के साथ अनेक विचार भी मन में उठे। मनुष्य स्वभावत कुछ सोचकर अपनी व्यवहार-नीति तय करता है, उसी में स्वय को व्यस्त रखते हुए वही एकमात्र सत्य, अन्य सब झूठ है- इस प्रकार धारणा बनाकर वह स्वय और अन्यों के बारे में श्रेष्ठ-कनिष्ठता की भावनाओं का शिकार बनता है। इसका परिणाम एक ही देखने को मिलता है कि उनका सद्गुण समुच्चय व्यर्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार के अनेक विचार मेरे मन में उत्पन्न होते रहे हैं और मेरी स्वय की अवस्था का भी विचार में कर रहा हूँ। स्वपरीक्षण बहुत जटिल और सभवत हमेशा ही सदोष एव त्रुटिपूर्ण

सिद्ध होता है। तो भी यथासभव पूर्ण अलिप्त, तटस्थ की भूमिका स्वीकार करते हुए सोचने का प्रयास कर रहा हूँ।

समय-समय पर स्वय अपने दोषों को देखना और दोष दृष्टिगोचर होने पर, अव मैं कार्य के लिए हानिकर या न्यूनतम अनावश्यक हूँ, इस प्रकार की सुविधाजनक धारणा यदि बनी, तो कार्य में औदासीन्य निर्माण होता है। वह अपने हृदय को स्पर्श तक न करे इस बारे में नित्य दक्ष रहते हुए स्वय मुझमें सुधार करने हेतु मैं प्रयत्नशील रहता हूँ। आपके पत्र से मेरी इस विचार-प्रक्रिया की गति तेज हुई है।

अपने सभी शास्त्रों में दुराग्रही, एकातिक अतिरेकी विचार-व्यवहार त्याज्य माना गया है। मध्यम मार्ग को ही अनुसरण करने योग्य माना गया है। समय-परिस्थिति के कारण ही कभी अतिरेकी व्यवहार ग्राह्य माना जा सकता है, अन्यथा जीवन में उसका कभी स्वीकार न किया जाए, ऐसा माना गया है। सघकार्य में भी जिनकी जीवन-ज्योति के प्रकाश में आलोकित पथ का हमें मार्गक्रमण करना है, उनके द्वारा हमें मध्यम मार्ग की श्रेष्ठता एव उपयुक्तता की ही शिक्षा प्राप्त हुई है।

लक्ष्यप्राप्ति के लिए लगन से परिश्रम करने में शारीरिक, मानसिक आदि अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। कष्टों की तुलना में चारों ओर से अनुकूल प्रतिसाद प्राप्त होता नहीं है, ऐसा भी अनुभव आता है। लगता है कि समाज कृतघ्न है, परतु इससे विषाद न मानते हुए मन में सहज प्रसन्नता धारण कर जो ध्येयमार्ग पर चलता रहता है अपने सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं के कदम से कदम मिलाकार मार्गक्रमण करता रहता है, वही सच्चा कार्यकर्ता है। अन्य सब कुशल है। (मूल मराठी)

६८५ परीक्षक नहीं सहयोगी

श्री गोविदराव पूर्णपात्री, १५ जुलाई, १९६९

मुझे विश्वास है कि इस क्षेत्र में भी आप सोत्साह कार्य करेंगे। सघ शिक्षा वर्ग में प्रशिक्षित होकर जो स्वयसेवक बधु इस वर्ष आपके क्षेत्र में वापस आए हैं, या जो गत कुछ वर्षों में प्रशिक्षित हुए हैं, उनको कार्यप्रवण करने में आप ध्यान दें। इस प्रयास में उनके परीक्षक के नाते नहीं, अपितु एक जिम्मेदार सहयोगी के नाते हम काम करें। सघकार्य करने की यह अपनी रीति रही है। आपको तो यह ज्ञात है ही। (मूल मराठी)

६८६ माता प्रथम परमदैवत है

श्री नसीबलाल जी, सुदरगढ, उत्कल ३ सितबर, १६६६

आपके पत्र से बोध हुआ कि आपकी पूज्या माताजी का आप पर अपार प्रेम है, आपके सबध में उन्हें सदैव चिता बनी रहती है। अत आपको दृष्टि से ओझल भी होने देना नहीं चाहती हैं, किंतु उनके इस शुद्ध प्रेम के प्रति कृतज्ञता आपके मन में नहीं है, अपितु एक प्रकार की घृणा है, यह अत्यत अनुचित है। माता अपना प्रथम परमदैवत है। अत मेरी आपसे नम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि माता के विशुद्ध भाव का समुचित आदर कर उसके प्रति उत्कट भक्ति धारण करें और उसकी उत्तम सेवा कर उसे प्रसन्न रखें, उसका आशीर्वाद प्राप्त करें। सब सकटों में यही सहारा बनेगा। जो करने की इच्छा हो, वह यदि पवित्र है तो इस आशीर्वाद से आपको जीवन में निरतर यश प्राप्त होता रहेगा और कुछ लिखने का मेरा अधिकार नहीं है।

६८७ आपसी विचार-विमर्श से सामजस्य सभव

श्री सुरेश लिमये, २१ अक्तूबर, १६६६

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ कल्पनाएँ तो रहती ही हैं। सगठन के विषय में भी अपनी कल्पना-धारणा है। इन दोनों में अतर असभव नहीं है, परतु जिस मात्रा में समानता है, उसी पर बल देकर, तदनुसार सगठन के कार्य में अधिकाधिक प्रयत्नशील रहना सभवनीय हे। यही हितकारी सिद्ध होता है। आगे चल कर इन दोनों कल्पनाओं में रहा अतर, या तो मात्र कल्पना-विलास सिद्ध होकर नष्ट होता है, अन्यथा आपसी विचार-विमर्श कर उनमें सामजस्य प्रस्थापित करना सभव होता है।

इस प्रकार सोचकर आप स्वय को कार्यानुकूल बनाएँ, ऐसा मुझे लगता है। आपसे बोलने के लिए सुयोग्य, सुविधाजनक समय निश्चित होते ही आपको सूचित करूँगा। मुझे केवल विस्मरण न हो, इसलिए पत्र लिखें। तब तक आपकी अपनी कल्पनाएँ और आप स्वय अनुभव कर रहे अतर को, मुझे पत्र के द्वारा लिखकर अवगत कराते रहना अच्छा होगा।

(मूल मराठी)

६८८ *वह भक्त जीव मूल स्वरूप मे चला गया*

श्री सोमभाई सगर, ५ नवबर, १९६६

वैसे उसका मुझे स्मरण आपका पत्र पढकर होने के कारण उसका वियोग होना मुझे बहुत दु ख दे रहा है, परतु उसका जिस प्रकार भगवन्नाम-स्मरण में देहत्याग हुआ, वह तो बडे सौभाग्य से, बहुत उपासना, तपस्या के बाद ही किसी के वश में रहता है। उसका पूर्वजन्म किसी श्रेष्ठ भक्त का होगा और किसी कर्मफल भोग के हेतु फिर कुछ काल के लिए उसे जन्म लेना पडा होगा और इस देह धारण का हेतु पूर्ण होते ही वह भक्त जीव अपने मूल स्वरूप में चला गया होगा, ऐसा ही प्रतीत होता है।

इस स्थिति में उसके लिए शोक करना ठीक नहीं, तथापि मानव-सबध से जो आया था, उसके कारण शोक स्वाभाविक है। फिर भी विवेक से मन सतुलित करना, धैर्य से परिवार को सात्वना देना और अपने पवित्र कर्तव्य में सलग्न रहना, यही उचित है। परम कृपामय श्रीभगवान आपको इस हेतु शक्ति, धृति, मन शाति दे और दिवगत जीव को सद्‌गति प्रदान करे, यह उस दयाघन के चरणकमलों में मैं प्रार्थना करता हूँ।

६८९ *निष्ठावान कार्यकर्ताओ का सघ खडा करे*

श्री के सूर्यनारायण राव, उडुपी २४ दिसबर, १९६६

सम्मेलन समाप्त हुआ। उसमें मिली अपूर्व सफलता अनपेक्षित थी। अनपेक्षित से मेरा मतलब है कि सम्मेलन के लिए सपूर्ण प्रात से मिला प्रतिसाद बहुत अधिक प्रमाण में उत्साहवर्धक था और उडुपी के सभी नागरिकों के द्वारा प्राप्त सहयोग भी अत्यधिक था। इस सहयोग को स्थायी बनाने में अब अनुवर्ती प्रयास आवश्यक हैं। इसलिए निष्ठापूर्वक काम करनेवाले कार्यकर्ताओं का एक सघ खडा करना होगा, जिससे आप अपने नित्य कार्य की ओर ध्यान दे सकेंगे।

श्री यादवराव जोशी ने एक प्रदीर्घ पत्र लिखकर सम्मेलन से निर्माण हुए उत्साह का अपने सघकार्य को व्यापक एव सुदृढ बनाने में सफलतापूर्वक उपयोग करने का निश्चय प्रकट किया है। सम्मेलन की सफलता में पूज्यपाद श्री पेजावर स्वामी जी का श्रेय सर्वाधिक है। उनके कृपाशीर्वाद एव अथक प्रयास के कारण ही यह सफलता मिली है। उनके प्रति मेरे अनेक साष्टाग प्रणाम प्रविष्ट करें। (मूल अग्रेजी)

६९० आपकी विपरीत धारणा

श्री मोहन गोरवाडकर, नासिक २४ दिसबर, १९६९

आपकी मन स्थिति के सबध में पत्र के द्वारा कुछ सूचित करना बहुत कठिन है। प्रत्यक्ष बातचीत में, प्रश्नोत्तर के द्वारा सपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् यदि कुछ सूचित करना सभव हो, तो अवश्य ही सूचित करूँगा। मेरे बारे में कुछ विपरीत धारणा आप सभी ने बना रखी है, ऐसा आपसे कहना उचित होगा। आप जो यह समझ बैठे हैं कि मैं बडा ज्ञानी और सभी विषयों का जानकार हूँ, वह आपकी विपरीत धारणा है। आपके परिवार के सभवत सभी की ऐसी भ्रामक धारणा बनी हुई दिखाई देती है। ऐसी हृदय में धारणा रखकर भी यदि आपने मुझसे कुछ पूछा तो सोच-विचारकर या किसी और से पूछकर आपको यथोचित सूचित करने का प्रयास करूँगा। (मूल मराठी)

६९१ सम्मेलन स्वय ही एक प्रबोधन था

श्री सी आर गुरुराज राव, उडुपी २९ दिसबर, १९६९

उडुपी का सम्मेलन अपने आपमें ही एक प्रबोधन था। अपनी अनादि सस्कृति के उच्चतम आदर्श, जिसमें अतिथि-सत्कार सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, अपने हिंदू-समाज का सहर्ष एव सक्रिय सहयोग, अपने हिंदू-धर्म के सभी मत एव पथोपपथों के आचार्यों के द्वारा प्राप्त कृपापूर्ण आशीर्वाद और ऐसी ही अन्य अनेक घटनाओं के कारण मेरा मन प्रभावित हुआ है। हम आशा करें कि सम्मेलन की फलश्रुति पुनर्जागृत, प्रबुद्ध, आनदमय हिंदू चेतना के उदय में हो और उस हेतु हम कार्यमग्न हों। भगवान हमारे साथ हैं। अब हमारे प्रयत्नों की आवश्यकता है। मेरी सुनिश्चित धारणा है कि यशप्राप्ति दृष्टिपथ में आ रही है। (मूल अंग्रेजी)

६९२ सकारात्मक सामजस्य अपेक्षित

श्री प्रेमचदजी, रुडकी (उत्तरप्रदेश) १० फरवरी, १९७०

आपके विचार एव भावनाएँ बहुत श्रेष्ठ हैं, परतु विचारादि में कुछ सामजस्य की कमी दिखाई देती है।

इस जगत् में रहते हुए स्वकर्म करना, याने अपना जीवन शुद्ध

चाना तथा अपने देश, धर्म, समाज, राष्ट्र के लिए अपनी शक्ति बुद्धि समर्पित कर बदले में किसी बात की अपेक्षा न रखना– यही उचित है, ऐसा श्रेष्ठों ने कहा है।

आप स्वयं इसका विचार करें। समाज का ह्रास तथा संघकार्य में त्रुटियाँ बहुत देख सकते हैं। समाज के गुण तथा संघकार्य में लगकर ही समाजोत्थान की लगन देखकर, उसमें वृद्धि कर, संपूर्ण समाज में उचित परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न करनेवाले और वह प्रयत्न भी सुव्यवस्था से, अनुशासित रीति से करने के लिए अपने व्यक्तिगत अभिमान को जीतनेवाले बहुत थोड़े मिलते हैं। इन दो श्रेणियों में कौन-सी अच्छी है– इसका निर्णय आप जैसे बुद्धिमान के लिए सरल है।

इसका निष्कर्ष स्पष्ट है। आशा है आप उसे समझकर व्यवहार में उतारेंगे।

६६३ पौरुष-पराक्रम की सार्थकता

श्री काशीनाथपंत लिमये, सांगली २ मार्च, १९७०

ऐसा कहा गया है कि दो प्रकार के मनुष्य सूर्यमंडल का भेद करके परमगति को प्राप्त होते हैं। सब सांसारिक मोह, आकर्षण आदि से झगड़कर विजय प्राप्त करनेवाला सफल योगी, और इसी प्रकार से शत्रुओं से निर्भयता के साथ लड़ता हुआ धारातीर्थ पर शयन करनेवाला महापुरुष। दोनों प्रकारों में विजय प्राप्त करना, कायर का काम नहीं है। निर्भय पराक्रमी वीर पुरुष ही यह कर सकता है। इस विषय का एक श्लोक जैसा मुझे स्मरण है, इस प्रकार होगा, ऐसा लगता है। यदि गलत हो तो क्षमा करें।

द्वाविमौ पुरुषव्याघ्र सूर्यमंडलभेदिनौ ।
परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ।।
(महभारत, उद्योग ३३-६१)

आज जिस 'पौरुष' को प्रसिद्ध कर रहे हैं, उसे पढ़कर दोनों में से किसी भी मार्ग पर आगे, और आगे ही चलते रहने में एक व्यक्ति भी यदि सफल हुआ तो भी आपके परिश्रम सफल माने जा सकेंगे। ऐसा यश आपको प्राप्त हो, इस हेतु परमशक्ति पौरुषपराक्रमसंपन्न श्री प्रभुचरणों में प्रार्थना करता हूँ। (मूल मराठी)

६६४ मन दोलायमान न हो

श्री शरदराव कटककर, ३ मार्च, १६७०

अपने क्षेत्र में सघकार्य की स्थिति के सबध में आपने जो लिखा, समझ में आया। वह क्षेत्र ही ऐसा है। प्रत्यक्ष प्रतिकूलता तो नहीं है, परतु अपने द्वारा किए गए प्रयासों को यथोचित सहयोग भी प्राप्त नहीं होता है। इस प्रकार के वायुमडल में अपने मन की शाति एव प्रसन्नता की स्थिति कायम रखते हुए और लगन से परिश्रमपूर्वक कार्य करते हुए सघानुकूल व्यक्ति की खोज करते रहना हितावह होता है। सपूर्ण समाज के सबध में कटुता की लेशमात्र भावना भी अपने मन को स्पर्श कर न सके— इस प्रकार शुद्ध स्नेह को हृदय में जगाकर हमें कार्य करना है। एक प्रकार की अपनी यह तपश्चर्या परिपक्व होने के पश्चात् अपेक्षित सुपरिणाम अवश्य दिखाई देगा। साधना के फल के विषय में लालायित होकर अकारण उतावली करना भी योग्य नहीं है। अपनी साधना निष्ठापूर्वक चलती रहनी चाहिए। आशा-निराशा के चक्कर में मन दोलायमान न हो। सफलतापूर्वक कार्य करने में यही आवश्यक होता है। (मूल मराठी)

६६५ कार्य ध्येयनिष्ठ है, व्यक्तिनिष्ठ नहीं

श्री सुधाकरराव विद्वास, कोपरगॉव (महाराष्ट्र) ६ मार्च, १६७०

आपने मेरे सबध में जो सद्भावनाएँ व्यक्त की हैं, एक विशाल परिवार के बधु तथा अपने श्रेष्ठ ईश्वरीय कार्य में एक सहयोगी के नाते उचित होते हुए भी अपना कार्य व्यक्तिनिष्ठ न होकर ध्येयनिष्ठ है। मातृभूमि के प्रति शुद्ध भक्ति, धर्म-सस्कृति और अपने हिदू-समाज के विषय में अडिग श्रद्धा, साथ ही अपने इस चिरतन हिदू-राष्ट्र की सेवा में जीवन-समर्पण करने का निश्चय, इसकी ओर अपना ध्यान सदैव रहना चाहिए। इसे नित्य स्मरण में रखकर तदनुरूप आचरण ही इष्ट है। यही धारणा आपके पत्र में व्यक्त होने से मैं असीम सतोष का अनुभव कर रहा हूँ। आप स्वय एक उत्कृष्ट, सद्गुणसपन्न कार्यकर्ता के नाते सभी के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करें और इस पवित्र कार्य को करने में आपको सब प्रकार की अनुकूलता एव प्रदीर्घ आयुरारोग्य प्राप्त हो, इस हेतु परममगल श्रीजगज्जननी के चरण-कमलों में प्रार्थना करता हूँ।

(मूल मराठी)

६६६ तस्यार्थलाभो विजयश्च हस्ते

डा सुरेश रिसवुड, ६ मार्च, १६७०

बहुत दिनों के बाद आप का पत्र आने से बहुत अच्छा महसूस हुआ। आपका व्यवसाय भी ठीक है। रुग्णों की सख्या मौसम के अनुसार कम-अधिक होती रहती है। रुग्ण सख्या कम है, इसमें समाधान ही है। 'मा कश्चित् दु खमाप्नुयात्' यह हमारी सनातन प्रार्थना है। इस भावना के अनुसार ही अपनी मानसिकता रहनी चाहिए। उससे मन को समाधान तो रहेगा ही और उसी के साथ व्यवसाय भी अच्छा चलेगा तथा अर्थप्राप्ति भी सतोष देनेवाली रहेगी।

अपना उद्योग-व्यवसाय करते हुए भी आप अडोस-पडोस के छोटे-बडे गाँवों में सघकार्य का विस्तार कर ही रहे हैं। शाखा प्रस्थापित करना प्रारभ में लोगों ने यदि स्वीकार नहीं किया, या उनको वह जँचा नहीं, ऐसा दिखाई देने पर, सकीर्तन, अभ्यास-वर्ग, चर्चा, कथाकथन, उन्मुक्त खेल आदि का उपयोग कर धीरे-धीरे अपने विचार और भावना लोगों में सक्रमित करना सभव होगा।

इसमें से शाखा-निर्मिति हो सकेगी। प्रत्येक स्थान पर स्थानीय अच्छा, सत्प्रवृत्त, उत्साही व्यक्ति खोजकर, उसे जिम्मेदारी के बारे में अवगत कराकर और जिम्मेदारी के अनुरूप उसे सम्मानित कर अपने कार्य से सलग्न करें। इस प्रकार कार्य करने में थोडा विलब हुआ, तो भी ऐसे अच्छे लोग सहयोगी के नाते प्राप्त हो, ऐसा ध्यान देकर प्रयास किया जाए।

(मूल मराठी)

६६७ सग्राहक राष्ट्रीय सगठन के रूप मे देखें

श्री यशमगल जी, १० मार्च, १६७०

आपकी श्रद्धा के लिए मैं आपको अत करण से धन्यवाद देता हूँ। 'राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ' को पार्टी के रूप में न देखकर तथा 'जनसघ' से इसे न जोडकर इसे एक विशुद्ध सर्व सग्राहक राष्ट्रीय सगठन के सत्य-यथार्थ रूप में देखें, समझें और इसके विकास के लिए पूर्ण शक्ति से सहयोग दें, यही इस अवसर पर आपसे मेरी नम्र प्रार्थना है।

६९८ भगवद्भक्ति के कारण पवित्र प्रेरणा

श्री हरिराम गौड, कोटा २० मार्च, १९७०

जिस महानुभाव की अचित्य शक्ति का आपने उल्लेख किया है, उनमें अवश्य ही किसी महापुरुष की या दिव्य शक्ति की चेतना प्रविष्ट होकर यह चमत्कार सा दिखनेवाला काम करती है। या इन महानुभाव को ही पूर्व जन्मों के सुकृत फलोन्मुख हो गए हैं और इस प्रकार प्रकट हो रहे हैं। जो भी हो, एक बात स्पष्ट हो जाती है।

जिसके अत करण में भगवद्भक्ति के कारण पवित्र प्रेरणाएँ जागृत होती हैं, उनके श्रीमुख से वही उपदेश सुनने को मिलते हैं, जो अपने सघकार्य के रूप में सबके समक्ष हैं। हम सब प्रभुचरणों में प्रार्थना करें कि उक्त महानुभाव की यह पवित्र चेतना और वाणी उनके जीवन-भर प्रकट होती रहे और सब समाज उससे प्रभावित होकर स्वधर्म-परिपालन के साथ स्वसमाज एव स्वराष्ट्र के उत्कर्ष हेतु धर्म-शक्ति के निर्माण का महत्त्व समझकर उसमें जुट जाए। हम लोगों को प्रयत्नपूर्वक समाज-बधुओं की श्रद्धा जगाना और सुव्यवस्थित अनुशासनबद्ध सघशक्ति, धर्मरक्षा हेतु अनिवार्य है– यह सत्य सबको समझाकर अपने कार्य में सब बधुओं को समाविष्ट करते हुए अपना सघकार्य परिपुष्ट करना आवश्यक है। आशा है, अपने सब कार्यकर्ता उचित बोध प्राप्त कर कार्यरत होंगे।

६९९ वर्षप्रतिपदा के पर्व का आदेश

श्री राजाभाऊ पतकी, वर्धा (विदर्भ) ८ अप्रैल, १९७०

वर्ष प्रतिपदा के दिन आप का भेजा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। उसमें लिखी परमपूजनीय डाक्टर जी सबधित कविता इससे पूर्व कहीं पर पढी थी, ऐसा प्रतीत हुआ। याद करने पर ध्यान में आया कि दो दिन पूर्व चैत्र शके १८९२ की 'एकता' मासिक में पढी थी। कितु उस में रचयिता का नाम नहीं था। अब पता चला कि वह आपकी है। बहुत आनद हुआ।

कार्य करने का अपना सकल्प पुन प्रज्ज्वलित कर अधिक लगन एव परिश्रम से कार्य करें। सभी छोटे-बडे कार्यकर्तागण और स्वयसेवक बधुओं की अनुकूलता प्राप्त करें और ऐसी कार्यानुकूल भावना अन्य बधुओं में भी निर्माण करें। कार्य व्यापक सुसूत्र एव बलिष्ठ होने का प्रत्यक्ष

६६६ तस्यार्थलाभो विजयश्च ।

डा सुरेश रिसबुड,

बहुत दिनों के बाद आप का हुआ। आपका व्यवसाय भी ठीक है। कम-अधिक होती रहती है। रुग्ण सख्या कश्चिद् दु खमाप्नुयात्' यह हमारी स अनुसार ही अपनी मानसिकता रहनी च रहेगा ही और उसी के साथ व्यवसाय भी सतोष देनेवाली रहेगी।

अपना उद्योग-व्यवसाय करते हु छोटे-बडे गाँवों में सघकार्य का विस्तार करना प्रारभ में लोगों ने यदि स्वीकार नहीं ऐसा दिखाई देने पर, सकीर्तन, अभ्यास-व आदि का उपयोग कर धीरे-धीरे अपने सक्रमित करना सभव होगा।

इसमें से शाखा-निर्मिति हो सके अच्छा, सत्प्रवृत्त, उत्साही व्यक्ति खोजकर, उसे कराकर और जिम्मेदारी के अनुरूप उसे स सलग्न करें। इस प्रकार कार्य करने में थोडा वि लोग सहयोगी के नाते प्राप्त हो, ऐसा ध्यान दे

६६७ सग्राहक राष्ट्रीय सगठन के रूप मे

श्री यशमगल जी,

आपकी श्रद्धा के लिए मैं आपको अत कर 'राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ' को पार्टी के रूप में न देख इसे न जोडकर, इसे एक विशुद्ध सर्व सग्राहक राष्ट्रीय रूप में देखें, समझें और इसके विकास के लिए पूर्ण यही इस अवसर पर आपसे मेरी नम्र प्रार्थना है।

श्रीगुरु

में विचित्र एव अविवेकपूर्ण लगनेवाले, किंतु उदात्त निर्णय कर तदनुरूप जीवन का स्वीकार कुछ लोगों के द्वारा किया जाना आवश्यक ही होता है। सभी पहलुओं का विचार आप करें। हृदय में थोडा अधिक धैर्य धारण कर निश्चय करें। मुझे लगता है कि आप सुयोग्य ही निश्चय करेंगे। आगे चलकर आपके कार्यक्षेत्र की योजना आपके निश्चय पर अवलबित रहेगी।

(मूल मराठी)

७०१ सातत्य एव लगन से सफलता

श्री भास्करराव कुलकर्णी, इम्फाल — १८ अक्तूबर, १९७०

आपके कार्यक्षेत्र की अनेकविध बाधाएँ और समस्याएँ सब जानते हैं। उनके रहते हुए यह भी दृष्टिगोचर हो रहा है कि नवनवीन कार्यकर्तागण, काम करने का दृढ निश्चय कर सिद्ध हो रहे हैं। इससे आशा बलवती होने की सभावना है। आगामी सघ शिक्षा वर्ग के पश्चात् केवल सघकार्य ही करने का निश्चय श्री मधु मगल शर्मा कर रहे हैं, यह तो सतोष देनेवाली बात है। परिवार का भी उस पर दायित्व है, उसकी व्यवस्था किस प्रकार से होगी? यथोचित व्यवस्था करने के उपरात ही उन्हें अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना उचित होगा, अन्यथा पश्चाताप करने की नौबत आ सकती है।

सातत्य एव लगन से प्रयत्न करने के कारण आप पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में भी सफलतापूर्वक शाखा प्रस्थापित कर रहे हैं। साथ ही अपने निकटवर्ती बुजुर्गों के द्वारा, समाज के सभी स्तरों के सज्जनों की बैठकें, सभाएँ आदि सपन्न कर, परिस्थिति के बारे में लोगों को यथार्थ जानकारी दें। अन्य धर्मीय, भेदप्रवृत्ति धारण करनेवाले तथा परकीय लोगों के द्वारा सभी दिशाओं से आनेवाले, आए हुए, नित्य उग्रता धारण करनेवाले सकटों के बारे में सुस्पष्ट अनुभूति का लोगों में जागरण करने का उपक्रम करें। हम सभी हिंदू हैं, एक ही भारत-माता के पुत्र हैं। हमारी एकात्मता सुदृढ करने में, इसी अनुभूति का आधार दृढ करना ही एकमात्र उपाय है। इसी धारणा को सुसगठित कर शक्ति-सपादन करने से ही सभी सकटों का निराकरण होकर सुखप्राप्ति सभव होगी, इस तथ्य को समझाकर लोगों को सघकार्य के प्रति अनुकूल बनाना हमें आवश्यक है। इसी प्रकार कार्य-निर्मिति लाभप्रद सिद्ध होगी।

(मूल मराठी)

अनुभव हो, इस हेतु निरलसतापूर्वक प्रयत्नशील रहें। सभी स्वयसेवक बधुओं के लिए आज के दिन का (वर्ष प्रतिपदा के पर्व का) यही आदेश है। भगवत्-कृपा से इस आदेश का आप पालन कर सकें, यही श्री चरणकमलों में प्रार्थना है। (मूल मराठी)

७०० उदात्त जीवन स्वीकार करनेवाले आवश्यक

श्री श्रीकात जोशी, असम — १७ अप्रैल, १६७०

आपके द्वारा भेजा गया दिनाक १ ४ ७० का पत्र आज प्राप्त हुआ। पढकर सतोष हुआ। जोरहाट में आयोजित (वि हि प का) सम्मेलन सफल हुआ। वर्षा के कारण असुविधा होते हुए भी सभी कार्यक्रम सोत्साह सपन्न हुए, यह विशेषता थी। पूज्यपाद श्री पेजावर स्वामी जी का आगमन, दक्षिणी सत्रों से उनका मिलना आदि प्रभाव-निर्मिति में परिणामकारक सिद्ध होंगे, इसमें सदेह नहीं है। इसी काम को आगे बढाने का प्रयास अपने वैशिष्ट्यपूर्ण ढग से किया जाना आवश्यक है। मुझे लगता है कि लोगों से, विशेष रूप से गिरिजन, और वनवासी बधुओं के द्वारा उत्तम प्रतिसाद प्राप्त होगा। कुछ स्थानीय अच्छे लोगों का सच निर्माण कर, उनमें पारस्परिक अनुकूलता निर्माण कर, उनमें एकता के भाव जगाकर उनके द्वारा काम करया लेना चाहिए। इस काम के लिए सर्वदूर प्रवास करनेवाला कार्यकर्ता आवश्यक है। उसके द्वारा प्रात में सर्वत्र सपर्क दृढ करने का प्रयास हो, आवश्यक योजना निश्चित कर उसमें एक सच के नाते काम करनेवाले इन लोगों को क्रमश कार्यरत करने का प्रयत्न किया जाए यही आवश्यक है— ऐसा लगता है। अच्छा होता, यदि इस विशेष दायित्व को स्वीकार कर कार्य करनेवाला कोई जोरहाट में ही विद्यमान होता।

ज्ञात हुआ कि आपने अपने घर से होकर आने का विचार हाल में स्थगित किया है, परतु कभी तो अपने मन का दृढ निश्चय करना ही पडेगा। 'एक सामान्य स्वयसेवक जो कर सकता है, उसे मैं करता रहूँगा'— इस वाक्य के अनेक अर्थ दृष्टिगोचर होते हैं। हम सभी, सामान्य ही तो हैं। उनमें से किसी को प्रचलित व्यावहारिक जीवन से पृथक मार्ग का अनुसरण अवश्यभावी होता है। आगामी जीवन के बारे में बहुत व्यावहारिक एव हिसाबी दृष्टिकोण अपनाने से अपने जीवन में सस्कारों के द्वारा कुछ विशेष निर्मिति सभव नहीं हो सकेगी। इसीलिए सर्वसामान्य व्यक्ति की दृष्टि

में विचित्र एव अविवेकपूर्ण लगनेवाले, किंतु उदात्त निर्णय कर तदनुरूप जीवन का स्वीकार कुछ लोगों के द्वारा किया जाना आवश्यक ही होता है। सभी पहलुओं का विचार आप करें। हृदय में थोडा अधिक धैर्य धारण कर निश्चय करें। मुझे लगता है कि आप सुयोग्य ही निश्चय करेंगे। आगे चलकर आपके कार्यक्षेत्र की योजना आपके निश्चय पर अवलबित रहेगी।

(मूल मराठी)

७०१ सातत्य एव लगन से सफलता

श्री भास्करराव कुलकर्णी, इम्फाल — १८ अक्तूबर, १९७०

आपके कार्यक्षेत्र की अनेकविध बाधाएँ और समस्याएँ सब जानते हैं। उनके रहते हुए यह भी दृष्टिगोचर हो रहा है कि नवनवीन कार्यकर्तागण, काम करने का दृढ निश्चय कर सिद्ध हो रहे हैं। इससे आशा बलवती होने की सभावना है। आगामी सघ शिक्षा वर्ग के पश्चात् केवल सघकार्य ही करने का निश्चय श्री मधु मगल शर्मा कर रहे हैं, यह तो सतोष देनेवाली बात है। परिवार का भी उस पर दायित्व है, उसकी व्यवस्था किस प्रकार से होगी? यथोचित व्यवस्था करने के उपरात ही उन्हें अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना उचित होगा, अन्यथा पश्चाताप करने की नौबत आ सकती है।

सातत्य एव लगन से प्रयत्न करने के कारण आप पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में भी सफलतापूर्वक शाखा प्रस्थापित कर रहे हैं। साथ ही अपने निकटवर्ती बुजुर्गों के द्वारा, समाज के सभी स्तरों के सज्जनों की बैठकें, सभाएँ आदि सपन्न कर, परिस्थिति के बारे में लोगों को यथार्थ जानकारी दें। अन्य धर्मीय, भेदप्रवृत्ति धारण करनेवाले तथा परकीय लोगों के द्वारा सभी दिशाओं से आनेवाले, आए हुए, नित्य उग्रता धारण करनेवाले सकटों के बारे में सुस्पष्ट अनुभूति का लोगों में जागरण करने का उपक्रम करें। हम सभी हिंदू हैं, एक ही भारत-माता के पुत्र हैं। हमारी एकात्मता सुदृढ करने में, इसी अनुभूति का आधार दृढ करना ही एकमात्र उपाय है। इसी धारणा को सुसगठित कर शक्ति-सपादन करने से ही सभी सकटों का निराकरण होकर सुखप्राप्ति सभव होगी, इस तथ्य को समझाकर लोगों को सघकार्य के प्रति अनुकूल बनाना हमें आवश्यक है। इसी प्रकार कार्य-निर्मिति लाभप्रद सिद्ध होगी।

(मूल मराठी)

७०२ प्रश्न के दो पहलू

श्री मोहनलाल सोनी, उदयपुर (राजस्थान) १६ नवबर, १६७०

कन्या के जीवन में विवाह-सस्कार यह सबसे अधिक महत्त्व का और जीवनभर गहरा प्रभाव डालनेवाला सस्कार होता है। स्वाभाविक ही उनकी दृष्टि से यह अतीव प्रिय प्रसग रहता है, जिसकी उनके मन में उत्कठायुक्त प्रतीक्षा रहती है। यदि उनके मन में यह विचार आए कि यह सस्कार ऐसे समारोह के साथ सपन्न हो कि उसकी सुखद स्मृति जीवन-भर उन्हें उत्साह देती रहे तो यह स्वाभाविक इच्छा होगी। अत अपने चारों ओर की परिस्थिति देखकर प्रसग यथासभव परिणामकारक और सुखद बनाना कन्या के माता-पिता और अन्य अभिभावकों का कर्तव्य है– ऐसा यदि कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा, तो भी यदि कोई वधुवर किसी सिद्धात को मानकर विवाह का सस्कार केवल अत्यावश्यक धार्मिक विधि के द्वारा कराना चाहे और सब सामाजिक रीति-रस्मों का पालन करने के लिए अनिच्छुक हो तो वह भी उनका स्वभाव, उनकी मनोरचना आदि देखकर उचित ही होगा। परतु ऐसे उदाहरण क्वचित् होते हैं। सामान्यजन कुछ समारोह में ठाठ-बाट नित्य के नीरस जीवन से भिन्न उसमें रस भरनेवाला चाहते हैं। उस क्षुधा को नगण्य मानना कहाँ तक उचित है, यह प्रश्न है। आप तो पूण विचार कर योग्य रीति से इस मगल प्रसग को सपन्न करेंगे– ऐसा मेरा विश्वास है।

७०३ धैर्य-आनद-निर्भयता से काम करते रहना

श्री प्यारेलालजी बेरी, पजाब १० दिसबर १६७०

समाचार मिला कि आपके ऊपर किसी व्यक्ति ने छुरे से आक्रमण किया, परतु भगवत्कृपा से वैद्यकीय सहायता त्वरित उपलब्ध होने के कारण आपके प्राण बच गए। ईश्वर की इस अनुकपा के लिए हम सब उनके नित्य कृतज्ञ हैं।

कार्य करते समय सभी प्रकार के प्रसग आते हैं। अब तो देशभर में वातावरण असहिष्णुता का है, अतएव हिसाचार का है। हमें स्वय असहिष्णु न होते हुए हिंसाचार का विचार भी मन में प्रवेश [illegible] देते हुए, किंतु ऐसी दुर्घटनाओं का शिकार बन[illegible]

धैर्य से, आनद से, निर्भयता से अपने कर्तव्य करते रहना है। इस हेतु व्यवहार में सतर्कता तथा दक्षता रखना आवश्यक है। पुन श्रीप्रभु के उपकार के लिए कृतज्ञता से उसके चरणों में शतश प्रणाम करता हूँ और आपके सफल जीवन के लिए प्रार्थना करता हूँ।

७०४ साहस जुटाकर सावधान रहो

श्री ए वी भास्कर, पालघाट, केरल — १८ फरवरी, १९७१

आपका पत्र प्राप्त हुआ। इससे पूर्व अखबार में मैंने इस दु खद घटना का समाचार पढा था, किंतु आपके पत्र से ही विस्तृत जानकारी मिली। मेरा हृदय दु ख से भरा है। मेरा पूरा विश्वास है कि अपने बधु शोकग्रस्त परिवार की देखभाल करेंगे ओर घरवालों को सात्वना एव यथोचित सहायता देंगे।

आपकी मानसिक स्थिति मैं समझ सकता हूँ। इस तरह के आघात हमें उदास बनाते होंगे। किन्तु हमें इस कटुसत्य का सामना करते हुए उसकी पुनरावृत्ति न हो, इस हेतु काम करना पडेगा। उसके लिए हमारे स्वयसेवकों को साहस जुटकार मनोबल बनाए रखते हुए सावधान रहना होगा। आपके मार्गदर्शन से कार्य को योग्य प्रोत्साहन व दिशा मिलेगी, इसमें मुझे संदेह नहीं। (मूल अंग्रेजी)

७०५ चुनावी प्रदूषण

माननीय काकासाहब मुले, सोलापुर — २४ फरवरी, १९७१

इन दिनों में चुनाव के कारण वातावरण अधिक ही दूषित बना हुआ है। अच्छे, सत्प्रवृत्त कहलानेवाले सज्जन भी निम्न स्तरपर उतरकर विचार-प्रकटन और व्यवहार करते देख बहुत दु ख होता है। समाज में जाति-उपजाति, पथोपपथ या ऐसे ही अनेक निमित्तों का आधार लेकर आपसी वैमनस्य बढाने का प्रयास ख्यातिप्राप्त नेतागण भी करते दिखाई देते हैं। रिश्वत लेने की प्रथा तो सभी सीमाएँ लाँघकर मानो सर्वोच्च स्तर प्राप्त कर रही है। इस कारण राष्ट्र की शक्ति, नैतिकता, राष्ट्रभावना, प्रभावशून्य हो जाने से ऐसा व्यवहार मात्र क्षुद्र चुनाव स्वार्थसिद्धि हेतु किया

जाना, सच कहा जाए तो राष्ट्रद्रोह, देशद्रोह जैसा है, परतु इस विषय के बारे में कोई सोचता हुआ दृष्टिगोचर नहीं होता। सब प्रकार की इस दूषित अवस्था के कारण मैं नागपुर में ही एकातवास सदृश स्थिति अनुभव कर रहा हूँ। (मूल मराठी

७०६ वायुमडल की शुद्धता केवल सघकार्य द्वारा

प रामनारायण शास्त्री, प्रात सघचालक, इदौर   २५ फरवरी, १९७१

चारों और चुनावों के कारण वायुमडल विषाक्त बना प्रतीत हो रहा है। परस्पर विद्वेष, वैरभाव, सब प्रकार के भेदों की कल्पना कर, उन्हें उग्र बनाकर उभाडना, इत्यादि अनिष्ट प्रकार चल रहे हैं। राष्ट्र की एकरसता पर आघात हो रहा है ओर उससे राष्ट्र अधिकाधिक निर्बल बनकर उसकी अवस्था हीन से हीनतर होती जा रही है– इसका विचार किसी के मन में मानो आता ही नहीं।

यह सब देखकर अपने दायित्व की अनुभूति अति तीव्रता से होती है। यह सब विषाक्त वायुमडल शुद्ध कर राष्ट्र को एकसघ समर्थ बनाने की दृष्टि से केवल अपना सघकार्य ही है। अत उसी में पूरी शक्ति लगाकर वातावरण निर्दोष करने के लिए घर-घर में व्यक्ति-व्यक्ति के पास पहुँच कर शुद्ध राष्ट्रीय भाव जगाने का तथा सबको सूत्रबद्ध कर राष्ट्र को शक्तिमान तथा उन्नत करने का अपना कार्य पूरी लगन से करना अत्यत आवश्यक है। अपने सब बधु यह समझकर काया-वाचा-मनसा स्वकर्तव्य पूर्ति में जुटे रहेंगे, और प्रयत्नों को अधिक प्रबल बनाएँगे, यही इच्छा है।

७०७ जन्मदात्री के स्थान पर मातृभूमि

श्री अण्णासाहब कदम, देवलाली (महाराष्ट्र)   १ मार्च, १९७१

यह तो एक ईश्वरीय सकेत ही हो सकता है कि प्रदीर्घ रुग्णावस्था एव बीमारी से उनको मुक्ति मिली अन्यथा औषधोपचार फलदायी सिद्ध होकर सुदीर्घ काल तक आप मातृ-छाया की कृपा के पात्र बने रहते। लगता है कि यही ईश्वर की इच्छा रही होगी।

बीमारी के कष्टों से उनकी मुक्ति हुई, ऐसा सोचकर और यद्यपि मातृवियोग का दु ख सहना कठिन है तो भी उसे सयमित करने का प्रयास उचित सिद्ध होता है। साथ ही एक लक्ष्यप्राप्ति की धुन में हम लगन से

निरतर प्रयत्नशील हैं। दु ख करते बैठने के लिए हमारे पास समय भी कहाँ उपलब्ध है? आपके मानवी शरीर की जन्मदात्री तो चल बसी, परतु जिनकी गोदी में हमारी अनेकानेक पीढियाँ निर्माण हुईं, वढीं, श्रेष्ठता को प्राप्त हुई ऐसी हमारी दिव्य मातृभूमि विशुद्ध प्रेम-वर्षा से हमें पुलकित कर रही है। निरपेक्ष, निरलस सेवा की हमसे अपेक्षा करती हुई हमें सुख का अनुभव और सत्प्रेरणा देती रही है। उसकी दिव्य मूर्ति आँखों के सम्मुख रखकर शोक-सवरण कर स्वकर्तव्यरत रहना ही आवश्यक है। मातृवियोग के इस दु ख में आपके साथ हम सभी सहभागी हैं। (मूल मराठी)

७०८ सतोष की अनुभूति मे समाधान

बबन सहस्रभोजनी, बगाल ६ मार्च, १९७१

सघकार्य करते समय आपको सतोष की अनुभूति फिर से हो रही है, पढकर बहुत समाधान प्राप्त हुआ। यही अनुभूति चिरस्थायी बने, बढे और सुखद सिद्ध हो। सभी का अनुभव है कि कार्य से जितनी अधिक मात्रा में समरसता एव उसके प्रति निष्ठा सुदृढ होती जाती है, उतना सुख का अनुभव भी अधिक होता है। (मूल मराठी)

७०९ अनिष्ट प्रवृत्ति के निर्मूलन हेतु सघकार्य

श्री माधवराव कुलकर्णी, प्रचारक, महाराष्ट्र २९ मार्च, १९७१

आपके द्वारा लिखा हुआ पत्र आज प्राप्त हुआ। चुनाव परिणामों का आपने अच्छा चित्र प्रस्तुत किया है। अपयश के पश्चात् उसका दोषारोपण किसी और के मत्थे मढकर स्वय को उससे पृथक रखने की सामान्य प्रवृत्ति का यहाँ भी अनुभव होता है। पढा-लिखा कहा जानेवाला 'मध्यम वर्ग' इस प्रवृत्ति से अभिभूत हुआ दिखाई देता है। सच कहा जाए तो अपयश के फलस्वरूप उनको चाहिए कि अधिक लगन से, योग्य एव समाजव्यापी घनिष्ठ सपर्क प्रस्थापना के काम में वे अधिक प्रयत्नशील होकर जुट जाएँ। इसी से उसकी बुद्धिमत्ता एव शिक्षा की शोभा बढती है, परतु स्वय उदासीन, अकर्मण्य रहकर मात्र कपोल-कल्पित चितन में अपना बचा-खुचा कार्य का उत्साह खोकर वह आत्मघाती मार्गपर अग्रसर होता है, ऐसा अनेक बार हुआ है। इस अनिष्ट प्रवृत्ति का निर्मूलन कर समाज को उच्च स्तर पर ले जानेवाला अपना कार्य है। परिस्थिति कैसी भी क्यों न

हो, निराश न होने का अपना विशेष गुण है। चुनाव से अपना वादरायण जैसा ही सबध रहने से, उसमें कोई सफल या असफल रहा तो उसका अपने कार्यपर असर होने का कारण नहीं है।

इस प्रकार अपने समाज के सभी छोटे-वडे बँधुओं को समझा-बुझाकर उनको कार्यप्रवृत्त करना चाहिए। इसी हेतु आज अपने कार्यकर्ता स्वयसेवक बधुओं का निरलसता से अखड प्रयत्नशील रहने से योग्य परिणाम दिखाई देगा। (मूल मराठी)

७१० दोष-निराकरण के उपाय

श्री माधवराव आठवले, १६ अप्रैल, १६७१

यह तो स्वाभाविक है कि आप सघकार्य के विषय में सोच रहे हैं। आत्मीयता से विचार करते समय आत्मसशोधन होकर अनेक त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। वैसी वह आपको भी दिखाइ दे रही हैं। अपने अधिकाश कार्यकर्ता भी उन्हें देखते हैं और उनको दूर करने का प्रयास करते हैं।

दिन-प्रतिदिन आयु अवस्था बढती है। बढती आयु के साथ थोडा-बहुत शैथिल्य बढने के कारण प्रत्येक मनुष्य में अनेक प्रकार के दोष भी उत्पन्न होते हैं। इस बारे में सजग रहकर प्रारभिक अवस्था में रही उत्साहपूर्ण चैतन्यावस्था कायम रखने का प्रयास आवश्यक होता है। अपना अनुभव तो ऐसा है कि पारस्परिक दोषों का ही दिग्दर्शन करने से दोष बढते हैं। इसीलिए सौजन्यपूर्ण सहानुभूति से आचरण करते हुए, स्वय निर्दोष व्यवहार करने का अधिकाधिक प्रयत्न करने से ही दोष नष्ट होते हैं। इस तथ्य को हृदयगम कर तदनुसार आचरण करने का दायित्व सभी जानकार एव विचारी स्वयसेवकों पर है।

आपने बहुत अच्छा किया कि मुझे पत्र लिखकर सपूर्ण परिस्थिति के बारे में अवगत कराया। एक दृष्टि से आपने मुझे उपकृत किया है। मैं भी प्रयास करूँगा और आप भी अपने समविचारवाले बधुओं के सहयोग से प्रयत्न करें। ऐसे प्रयत्न करते समय एक परहेज की ओर सजग होकर ध्यान देते रहें कि किसी भी व्यक्ति के बारे में उसके दोषों की बार-बार चर्चा लाभप्रद नहीं होती। (मूल मराठी)

७११ विचित्र सुझाव

श्री ए रामाराव जी, १६ अप्रैल, १६७१

अपने सगठन में मौलिक सुधार करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई सूचनाओं पर भारत के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सावधानी से विचार-विनिमय होना आवश्यक है। इस प्रकार के गभीर विषय के बारे में, किसी के साथ विचार-विमर्श किए बिना कहना मेरा काम नहीं है। सच तो यह है कि कोई भी सोचने योग्य विषय महत्त्वपूर्ण है या क्षुद्र, इसका निर्णय भी अपने सभी सहकारियों के साथ वार्तालाप कर, उनकी सहमति प्राप्त कर और उनकी अनुमति मिलने के पश्चात् ही मैं करता हूँ। स्वय कुछ भी द्रव्यार्जन न करनेवाले कार्यकर्ताओं द्वारा, रुपया-पैसा कमानेवाले लोगों के घर में भोजन आदि करना अनेक गृहस्थी लोगों को पसद नहीं है, इसे तो मैं जानता हूँ। इस बात का सबध और अपेक्षा मुझसे ही सबसे अधिक है। आपके कथन का परिणाम, जहाँ तक आपका और मेरा सबध है, यही होगा कि जब तक मैं स्वय द्रव्यार्जन नहीं करता, तब तक आपके घर में भोजन तो क्या, चाय भी लेने के आनद एव सुख से मुझे वचित रहना पडेगा, जब तक उसका शुल्क देने की मेरी पात्रता न हो। अन्य स्वयसेवक बधु यदि इसी तरह सोचेंगे तो उनके द्वारा अपने कार्य की बहुत अधिक हानि होगी, जितनी सघ के कट्टर विरोधक के द्वारा भी सभवत नहीं हो सकेगी। छोटी-सी घटना के कारण एक अच्छे गृहस्थाश्रमी अपने ध्येयपथ से विचलित होकर कितने दूर जा सकते हैं।

आपसे एक छोटीसी प्रार्थना है। कोरे शब्दों या घोषणा-वाक्यों के कारण आप कृपया प्रभावित न हों। 'ब्रेन वाशिंग' एक परिश्रमपूर्वक विकसित की गई शास्त्रीय एव मानसिक प्रक्रिया है और उसकी अनुनय एव दृढ विश्वास से परिपूर्ण पृथकता समझना आवश्यक है। (मूल अग्रेजी)

७१२ सहयोगियो से नि सकोच भाव से विचार-विनिमय

श्री सोहन सिह जी, कुरुक्षेत्र १६ अप्रैल, १६७१

कार्य करते समय अत करण प्रसन्न रखना, सबके साथ शुद्ध स्नेह का, इसीलिए खुले अत करण का व्यवहार करना आवश्यक होता है। इसलिए अपने मन, बुद्धि में कितना भी आत्मविश्वास हो तो भी अन्य सहयोगियों से नि सकोच भाव से विचार-विनिमय कर यदि अपने विचार से

भिन्न कुछ निष्कर्ष निकले तो उसे प्रसन्नता से स्वीकार करना, उसके कारण मन में असंतोष या कटुता आने न देना पथ्यकारक होता है। कार्य में सब प्रकार अनुकूल वातावरण के साथ आपको विश्वास करने योग्य सहृदय मित्र भी मिल सकेंगे।

७१३ सही अर्थ मे समाजव्यापी कार्य निर्माण करे

श्री माधवराव कुलकर्णी, खडकी (महाराष्ट्र) १६ अप्रैल, १६७१

अपने कार्य की आवश्यकता सभी स्वयंसेवक बंधुओं को समझा-बुझाकर उनके द्वारा नवनवीन लोगों को शाखा से संलग्न करने का प्रयास किया जाना बहुत आवश्यक है। समाज में जो भी भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग दिखाई देते हैं, उन सभी में प्रवेश कर समाजव्यापी कार्य सही अर्थ में निर्माण होना चाहिए। अपनी यही अपेक्षा है कि समाज की सब प्रकार की विविधता शाखा में विद्यमान हो और इस विविधता में अनुस्यूत एकरसत्व, एकात्मता प्रत्यक्ष व्यवहार में परिणत हो। ऐसा प्रयास होता रहे, इस ओर आपका तथा सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं का ध्यान रहना आवश्यक है।

(मूल मराठी)

७१४ संघकार्य स्वयं एक शुद्ध साधना है

श्री दलीप कुमार गजरिया, अलवर ७ जून, १६७१

प्रत्येक मनुष्य श्री स्वामी विवेकानंद या श्री छत्रपति शिवाजी नहीं होता। साधारण मनुष्य में अनेक दुर्बलताएँ होती हैं। प्रयत्न से अपने इष्ट रूप में भगवान की प्रार्थना से जीवन में पावित्र्य बढता है। त्वरित फल दिखाई न देने पर भी प्रतिदिन प्रातः तथा रात्रि में शयन के पूर्व प्रार्थना करते रहना और जिस समय किसी प्रसंग पर अनिष्ट विचार मन को दूषित करते अनुभव में आएँ, उसी समय भगवत्स्मरण कर उन विचारों को मन से हटाने की प्रार्थना करें।

मन को शुद्ध करना इष्ट साध्यप्राप्ति के लिए एक साधन है। आपने साधना की प्राप्ति के साधन पूछे हैं। प्रयत्न यदि सच्चाई से किया तो सफलता मिलेगी।

फिर अपना संघकार्य स्वयं एक शुद्ध साधना है। सबके प्रति बंधुभाव से आबद्ध होना, इसमें स्वभावतः करना पडता है। बंधुभाव व्यापक

होने से सबके घर की माताएँ, बहनें अपनी माता-बहिन होने का अनुभव होता है। यह सबसे सरल मार्ग है, परतु लगन से निष्ठापूर्वक सघकार्य में रमना होगा। प्रयत्न करें।

७१५ भेदभाव रहित सेवा

श्री बसीलाल सोनी, मालदा (बगाल) ५ जून, १९७१

वर्षा तथा जलाप्लावन के कारण जो विध्वस हुआ है, उसका बोध प्राप्त हुआ। बहुत व्यथित करनेवाला समाचार है। मानव-निर्मित अव्यवस्था से पीडित बग देश को निसर्ग के प्रकोप का भी सामना करना पड रहा है। मनुष्य जब धर्म का पालन करना, याने समाज को सुव्यवस्थित रखने का प्रयत्न छोडकर स्वय समाज उध्वस्त करने लगता है, तब प्रकृति भी कुपित होकर ध्वस करने लगती है-ऐसी अपने यहाँ पुरानी मान्यता है। उसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अपने स्वयसेवक बधुओं की तो सब प्रकार से सहायता कर उनको व्यवस्था से प्रस्थापित करना ही है, परतु सभी समाज अपना है, इस कारण सबकी सेवा करना अपना कर्तव्य है। प्रकृति-प्रकोप की चपेट में सब आते हैं, आए हैं। अत सेवा करते समय मनुष्य-मनुष्य में भेद करना उचित नहीं होगा, यह अपना स्थायी सिद्धात है। इसी भाव को लेकर आपने कार्य चलाया होगा। अर्थात् जितनी अपनी तथा अन्य प्रकार की अनुकूलता होगी, उतना उसका अधिक से अधिक उपयोग कर, सभी आर्त व्यक्तियों के त्राण के लिए अपने सब बधु लगा रहे हैं, ऐसा मैं मानता हूँ। भगवत्कृपा से इस सकट से शीघ्र छुटकारा मिले और जनजीवन स्वस्थ हो सके।

७१६ जीवन कर्तृत्वपूर्ण सफल सिद्ध हो

श्री मार्तंडराव महाजन, पोर्ट ब्लेअर (अदमान) २७ सितबर, १९७१

ज्ञात हुआ कि आपने अदमान में स्थायी निवास करने का निर्णय किया है। वहाँ के अपने सभी बधुओं में एकत्व की भावना जागृत कर, उसे सुदृढ करने की दिशा में आपके द्वारा किया गया सकल्प अत्यत अभिनदनीय है। परमात्मा की कृपा से आपका वहाँ का जीवन सुखी, कर्तृत्वपूर्ण एव सफल सिद्ध हो इस हेतु श्रीप्रभुकृपा के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

यथावकाश वहाँ की अपनी प्रगति के बारे में लिखकर अवगत कराते रहें। (मूल मराठी)

७१७ विपद्ग्रस्त परिवार को सात्वना दे

श्री एम पी बालन, पयङ्गाडि, केरल १२ अक्तूबर, १९७१

आर हरि से मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ। उसमें अपने एक कार्यकर्ता श्री कुजिकोरन की मृत्यु का समाचार है। बहुत दु खद परिस्थिति में उनका निधन हुआ है। उस विपद्ग्रस्त परिवार के लिए सात्वना एव धीरज पहुँचानेवाला एक स्रोत बनकर हमें प्रयास करना पडेगा। उस परिवार की सुव्यवस्था की ओर दत्तचित्त से ध्यान देकर वे हृदय में मन शाति अनुभव करें, एतदर्थ प्रयत्न करना होगा। मुझे विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में अपने सभी स्वयसेवक बधु इस दृष्टि से जो भी आवश्यक है, तत्परता से करेंगे। हमें छोडकर गए इस बधु के परिवार को मेरी असीम दु ख भावना से अवगत कराकर मेरी ओर से सात्वना दें। (मूल अंग्रेजी)

७१८ हमारी अपनी श्रद्धा है

श्री विजयकुमार, पटना (बिहार) १ नवबर, १९७१

आपके दोनों प्रश्न पढे। आप चाहें तो ध्वज को न मानें, हम लोगों को मानने दें। हमारी अपनी श्रद्धा है। उसे ठेस न पहुँचाएँ, यह मेरी नम्रतापूर्वक प्रार्थना है।

राजनीति के सबध में अनेकों बार स्पष्टीकरण हो चुका है। सभी लोग राजनीति, याने सत्ता-पिपासा से ग्रस्त हैं। इससे कुछ तो मुक्त रहें। हम लोगों को उससे दूर रहना अच्छा लगता है। इसी से अपना उद्दिष्ट पूरा होगा, ऐसा हम लोगों का विश्वास है। जो सत्ता-पिपासा या सत्ता-स्पर्धा में रुचि रखते हैं, उन्हें हम लोगों की ओर से कोई रुकावट तो नहीं है। रुकावट डालने का हम लोगों का अधिकार भी नहीं है।

७१९ आपात्कालीन कर्तव्य

श्री श्रीकात जोशी, प्रात प्रचारक, गौहाटी ३ दिसबर, १९७१

कल सायकाल में प्रसृत समाचार के अनुसार कल और आज अगरतला पर आक्रमण हुआ है। आक्रमण का सिलसिला अन्यान्य क्षेत्र में

भी बढ रहा है और प्रत्यक्ष युद्ध आरभ होने जैसी स्थिति बनी हुई है। कल या परसों युद्ध घोषित होता है तो आश्चर्य न हो। ऐसी स्थिति में क्या आपके प्रात में प्रवास सुविधाजनक होगा? इस बारे में तुरत लिखें, जिससे सपूर्ण कार्यक्रम के बारे में सही रीति से सोचा जा सकेगा।

सद्य परिस्थिति में लोगों में एकता कायम रखने का, अपनी सेना के बारे में आदर एव प्रेम-भरे सहयोग की सद्भावना वृद्धिगत करने का और प्रात में शाति रखने का विचार प्रसृत करना अत्यत आवश्यक है। मुझे लगता है कि हम अपने सभी परिचितों के माध्यम से, समाज के सभी अग-प्रत्यगों को इन विचारों से प्रभावित करने का उपक्रम जोर-शोर से प्रारभ करें। (मूल मराठी)

७२० वीर मृत्यु पर सात्वना

श्री उमादत्त जोशी, जबलपुर (म प्र)   २० दिसबर, १९७१

आपके छोटे दामाद श्री मनोहर जी के वीरगति को प्राप्त होने का दु खद समाचार प्राप्त हुआ, राष्ट्र की सेवा में प्राणार्पण करने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ इसका गौरव अनुभव करते हुए भी अल्पायु में एक होनहार जीवन अकस्मात समाप्त होने का तीव्र दु ख भी हो रहा है। आपको, विशेष रूप से आपकी पुत्री को, अपार शोक होना स्वाभाविक है। वीर पत्नी का मान सदैव प्राप्त होता रहेगा– यह सत्य होते हुए भी पति निधन का जीवनव्यापी दु ख उनके सामने उपस्थित हुआ है। किस प्रकार उन्हें सात्वना दी जा सकती है? केवल परमकृपालु श्रीभगवान ही मन को शाति प्रदान कर सकते हैं। उन्हीं के श्रीचरणों में मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।

योगयुक्त परिव्राजक और रण में शत्रु का सामना करते हुए देहत्याग करनेवाले, दोनों को सूर्यमडल भेदकर परममगल गति प्राप्त करने का भाग्य मिलता है। इस वचन से अपने प्रिय व्यक्ति की श्रेष्ठ लोकप्राप्ति का विश्वास धारण कर मन को समझाना ही अपने लिए [illegible] है। श्रीभगवान सबको शोकमुक्त करें। अधिक क्या लिखना सभव है?

७२१ मजहब नहीं, मानव लड़ते हैं

श्री गोपाल, चेन्नै   २६ दिसबर [illegible]

पवित्र कुरआन के कुछ अश, जो आपने कृपया मुझे [illegible]

हुए हैं। मैं आपका अत्यत आभारी हूँ। वैसे तो मजहब आपस में नहीं लडते। किसी न किसी बहाने मानव वर्ग ही लडते हैं। मन पर मजहबों की शक्तिशाली पकड के कारण उन वर्ग विशेषों को परस्पर सघर्ष छेडने में मजहब का बहाना अत्यत उपयोगी रहता है।

हम आशा करें कि परमात्मा की कृपा से मानवी-हृदय में सद्भावना का उदय होगा। (मूल अंग्रेजी)

७२२ कार्य का बढ़ता चरण

डा बालकृष्ण सावईकर, सघचालक, गोवा २३ मार्च, १६७२

इस बार गोवा में श्रीशातादुर्गा एव श्रीमगेश की पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। नए-पुराने अनेक बधु मिले। इसी समय कुछ बधुओं पर भिन्न-भिन्न कार्य का दायित्व सौंपा गया। सघचालक पद का दायित्व आप पर आया। इस कारण मुझे अतिशय सतोष हुआ। क्षेत्र में सपर्क के कारण जो आपका परिचय है, उसका उपयोग कर अनेक बधुओं को अपने दैनिक शाखा के कार्य में समाविष्ट कर कार्यवृद्धि करें। आज जो स्वयसेवक विद्यमान हैं, उनको भी इस हेतु प्रोत्साहित करें। उनके सहयोग करने से बहुत लाभ होगा। आपके प्रयास अवश्य सफल सिद्ध होंगे। (मूल मराठी)

७२३ हम हैं विशाल परिवार

श्री विश्वनाथन, लखनऊ २६ मार्च, १६७२

श्री भाऊराव जी ने लिखा है कि आप अपनी सहधर्मचारिणी के साथ उनसे मिलने के लिए प्रतिदिन जाते हैं और स्वास्थ्य-लाभ में उनको प्रोत्साहित करते रहते हैं। इसे पत्र में पढकर बहुत सतोष हुआ और आपकी स्नेहभरी शुश्रूषा के लिए कृतज्ञता का अनुभव कर रहा हूँ। उनके स्वास्थ्य-सुधार की चिता आप सभी के द्वारा तत्परता से करना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार के शुद्ध-स्नेह ही हृदय में निर्मिति, अपने कार्य की सफलता की ही अभिव्यक्ति है। हम सभी का मिलकर एक विशाल परिवार है। हमारे पारस्परिक स्नेह सबध सुदृढ और मधुर हैं, यह हम अनुभव करते हैं। इसी तथ्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति आपके द्वारा आस्थापूर्वक की जा रही देखभाल एव चिता का रूप लेकर प्रकट हो रही है। इसे जानकर मुझे परम सतोष हो रहा है और अपने कार्य की सफलता के विषय में मन की

आशा अब अडिग निष्ठा का स्वरूप धारण कर रही है।

मुझे विश्वास है कि श्री भाऊराव जी का स्वास्थ्य एव कार्यक्षमता पूर्ववत ठीक होकर वे उनकी अपनी विशेष शैली से सघकार्य में मार्गदर्शन प्रारभ करेंगे। उनके लिए लगभग दो मास तक पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है। एक ऐसा स्थान जहाँ वे सुख-समाधानपूर्वक निवास कर सकेंगे और उनके निरामय स्वास्थ्य की ओर तत्परता से ध्यान दिया जा सकेगा, खोजने की हमें आवश्यकता है। (मूल अंग्रेजी)

७२४ अभ्यास करते रहो, एकाग्रता बढ़ेगी

श्री वसत कुमार, सेलम (तमिलनाडु) ९ अप्रैल, १९७२

अपने मन को एकाग्र करने में जैसा अनुभव आप करते हैं, वैसा, या उससे भी बढकर अनुभव अधिकाश लोग करते हैं। इस कारण, किंतु, विचलित न होते हुए अपना काम जितने अधिक समय तक आप लक्ष्यपूर्वक कर सकते हैं, करते रहने का प्रयास करें। जिस क्षण मन में एक शून्यता जैसा, या विचलित होने का अनुभव होने लगेगा, थोडा विश्राम करें। कुछ समय चलते-टहलते रहें और फिर से अपना काम करना शुरू करें। ऐसा करने से धीरे-धीरे काम को लक्ष्यपूर्वक करते रहने की अवधि बढेगी और आपके कष्ट समाप्त होंगे। अपने जीवन में आप सुयश प्राप्त करें, इसलिए उस परमदयाघन के श्रीचरणों में मैं विनम्र प्रार्थना करता हूँ। (मूल अंग्रेजी)

७२५ धीर वृत्ति से प्रयास करते रहना

श्री भाऊसाहब धवडगाँव, सघचालक, जबलपुर १३ अप्रैल, १९७२

आप पर जो दायित्व सौंपा गया है, वह योग्य ही हुआ है, ऐसा समझने के लिए यह पर्याप्त प्रमाण है कि जबलपुर शाखा की प्रगति अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो रही है और इसकी व्यथा आपके मन में है। शाखाओं में वृद्धि नहीं होती, इसके लिए अनेक कारण होते हैं। क्रमश ये दूर होते जाएँगे। मेरी अपात्रता के कारण ही यह हो रहा है और इसीलिए मुझे दायित्व से मुक्त किया जाना चाहिए, ऐसा यदि प्रत्येक कहने लगा, तो कठिन ही होगा। अपनी लगन एव सातत्यपूर्ण प्रयत्नों से, अन्य लोगों से मधुर वाणी का उपयोग करते हुए और मिल-जुलकर व्यवहार कर उनको कार्यप्रवण करने के प्रयास के कारण वातावरण में बदल करने में आप

सफल होंगे। यह त्वरित हो, इसकी उत्कट उत्सुकता यद्यपि स्वाभाविक है तो भी हमें समझना आवश्यक है कि हम यह न समझें कि प्रत्येक बात अपनी इच्छा एव अपेक्षा के अनुरूप होगी। इसलिए धीर वृत्ति से, उतावली न करते हुए, परतु कार्य की गति अधिक तेज करने का प्रयास करते ही रहना चाहिए। आप तो इसे जानते ही हैं। पत्र-लेखन के क्रम में स्मरण होने मात्र से मैंने लिखा है। (मूल मराठी)

७२६ विकलाग स्वयसेवक, नित्य शाखा और प्रार्थना

श्री मुकुद रामदासी, २८ जून, १९७२

प्रार्थना के सबध में अपना जो अनुभव लिखकर आपने मुझे भेजा उसे पढकर आश्चर्य हुआ। सर्वसामान्य परिस्थिति में यही नियम है कि सघस्थान पर शाखा में नियमित रूप से उपस्थित होकर सब स्वयसेवकों के साथ प्रार्थना करें। मैं अपने घर में ही प्रार्थना करता हूँ- ऐसा कहकर शाखा के बारे में आनाकानी योग्य नहीं है।

आपकी शारीरिक अवस्था शाखा में जाने योग्य नहीं है। इसके लिए कोई उपाय भी नहीं है। ऐसी अवस्था में निष्ठापूर्वक, प्रतिदिन, शाखा में जाना सभव न हो तो अकेले प्रार्थना का उच्चारण करना और इस अपने व्यवहार का श्रद्धापूर्वक आचरण बहुत महत्त्वपूर्ण मनोवृत्ति का परिचायक है। जिस किसी ने आपको ऐसा न करने के सबध में कहा है, उसके विचार का आकलन करना मेरे लिए कठिन सा है। सभवत उसके मन-मानस में सहृदयता और पारस्परिक सबधों के बारे में प्रेम, शुद्ध स्नेह का उदय नहीं हुआ है, अन्यथा आपके हृदय में स्थित शुद्ध भावना को ठेस पहुँचाने का क्रूर प्रमाद वे न करते। भगवत्कृपा से उसके मन-मास्तिष्क में सद्बुद्धि एव सद्भावना जागृत हो। (मूल मराठी)

७२७ यही प्रयास-प्रक्रिया चल रही है

श्री सुरेश लिमये, सोलापुर (महाराष्ट्र) ३० जून, १९७२

आपने वैसे ही विचार प्रकट किए हैं, जैसे कोई पुराने अनुभवी स्वयसेवक के विचार हों। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि अपने मौलिक वैचारिक सकल्प से आज के सभी कार्यकर्ता विलग हो गए हैं या वे उतावली कर रहे हैं। मात्र हम यह कह सकते हैं कि आदर्श व्यक्ति शीघ्र

ही उपलब्ध न होने से सर्वसामान्य लोगों को एकत्रित कर उनमें से ऐसे व्यक्तियों के निर्माण का अपना प्रयास है। प्रयत्न तो इसी प्रकार करना आवश्यक होता है। सघनिर्माता के निकटवर्ती होने से हम जानते हैं कि उन्होंने इसी प्रकार प्रयास किए थे। इसी प्रक्रिया से श्रेष्ठ ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता निर्माण हुए हैं। यही प्रयास-प्रक्रिया चल रही है। कभी नेत्रदीपक सफलता मिलती है तो कभी निराशा का अनुभव होता है। कार्य करते समय मन की अवस्था स्थिर रखनेवाले, लक्ष्य एव प्रयास के सबध में सदेहग्रस्त न होते हुए लगन और सातत्य से अग्रसर होनेवाले कार्यकर्ता रहे तो विपरीत परिस्थिति पर भी काबू पाना सभव होता है और उसी अनुपात में इष्ट-लक्ष्य भी निकट आता है।

सघकार्य की निष्ठा एव लगन से ओत-प्रोत आपके द्वारा लिखे गए पत्र को पढकर अति सतोष हुआ। आपकी यही कार्यरत अवस्था अन्य स्वयसेवकों के लिए प्रेरक, मार्गदर्शक सिद्ध हो और कार्य की वृद्धि विशुद्ध रूप से होती रहे। (मूल मराठी)

७२८ विस्तार और स्थिरता पर योग्य ध्यान

श्री शिवराय तेलग, महाराष्ट्र ६ जुलाई, १९७२

ऐसा दिखता है कि सभी जिलों में प्रतिवर्ष नए सिरे से कार्य खडा करना आवश्यक होता है। कार्य-निर्मिति में इस वर्ष एक न्यूनतम सीमा निर्धारित कर, और उससे किसी हालत में कार्य कम नहीं होगा, ऐसा निश्चय कर उसे सुदृढ करने का प्रयास करें। सभी कार्यकर्ताओं को इसी हेतु प्रेरित करें। इस न्यूनतम सीमा को अगले वर्ष अधिक विस्तृत क्षेत्रव्यापी बनाकर उसे स्थिर करने का प्रयास करें। इस प्रकार प्रतिवर्ष सुनिश्चित कार्य-क्षेत्र अधिकाधिक विस्तृत होता जाएगा। यही लाभप्रद सिद्ध होगा, ऐसा लगता है। इस प्रकार सीमा-निर्धारण करने से, ऐसा न समझ बैठें कि कार्य-विस्तार में बाधा निर्माण होगी। कार्य विस्तार में रममाण होकर स्थैर्य दुर्लक्षित हो जाने से प्रतिवर्ष कार्य-सकोच जैसी अवस्था इतनी अधिक मात्रा में न हो और वर्षानुवर्ष तक उन्हीं शाखाओं को प्रतिवर्ष चालू करने की नौबत न आए, इसे सोचकर ही आपको सूचित किया गया है। आप अपने दीर्घ कार्यानुभव से ही सूचना व्यवहार्य है या नहीं, इसका निर्णय कर जो उचित समझें, सो करें। (मूल मराठी)

७२९ सौम्य-सात्विक जीवन द्वारा मार्गदर्शन देते रहे

श्री काकासाहब आठल्ये, बार्शी (महाराष्ट्र) २८ अगस्त, १९७२

आपके स्वास्थ्य के संबंध में पढ़कर कि शारीरिक दुर्बलता कुछ अधिक ही है, अस्वस्थता का अनुभव कर रहा हूँ। अपने शरीर के द्वारा दैनंदिन शाखा का कार्य करना संभव न हो सका तो भी कार्य की ओर ध्यान देना, स्वयंसेवक बंधुओं में धर्म व संस्कृति के विषय में जानकारी के कारण निर्मित आदर की भावना, अपने समाज-जीवन से एकरूपता अनुभव कर उसे सुसंगठित करने हेतु आवश्यक व्यावहारिक क्षमता की अपने मार्गदर्शन में वृद्धि, यही तो अपने कार्य की मध्यवर्ती वैचारिक आधारशिला है। आप अपने सहज स्वाभाविक समर्पण के द्वारा, स्वयं आपके सौम्य, सात्विक जीवन प्रसंगों का उदाहरण प्रस्तुत कर कार्य के इसी मौलिक विचारों को जागृत करते हैं। यही अति महत्त्वपूर्ण कार्य आपके द्वारा सुदीर्घ काल तक होता रहे और आपके तन में आवश्यक शक्ति एवं ऋजुता बनी रहे, यही हृदय में चाह है। एतदर्थ परम मंगलकारिणी श्रीजगदंबा के चरणकमलों में विनम्र प्रार्थना है। (मूल मराठी)

७३० सफलता का मूल्यांकन

श्री नारायणराव टिकारे, धारवाड, कर्नाटक २८ अगस्त, १९७२

रक्षा-सूत्र प्राप्त हुआ। मन में संतोष हो रहा है। संपूर्ण देश में स्नेह, बंधुत्व एवं अपनत्व का नाता प्रस्थापित करने में अपने प्रयत्नों के प्रतीकस्वरूप यह रक्षा-सूत्र रहने से आत्यंतिक सुख का अनुभव हो रहा है।

आपने लिखा ही है कि संघकार्य वृद्धिंगत करने हेतु सभी बंधु प्रयत्नशील हैं। मैं मानता हूँ कि इन प्रयासों का सुपरिणाम शाखाओं में दृष्टिगोचर होगा। अपने ध्येय की, तदनुरूप व्यवहार की तथा सद्गुण-संपन्नता की अपरिहार्य आवश्यकता जिस अनुपात में स्वयंसेवक अनुभव करेंगे, उसी के अनुकूल उनके जीवन में परिवर्तन लाया जा सकेगा। इसी पर और साथ ही बढ़ती संख्या में स्वयंसेवकों को कार्य से संलग्न कर उनमें सुसंस्कारों का जागरण कितनी अधिक मात्रा में संभव होता है, इसी पर आपके प्रयत्नों की सफलता का मूल्यांकन हो सकेगा। इसका स्मरण रखकर प्रयास हों।

(मूल मराठी)

७३१ ऐसे ही स्वयसेवक अधिक आवश्यक

श्री सगुण परब, २ सितबर, १९७२

आपका निश्चय कि अपना कृषि व्यवसाय करते हुए भी अधिकाधिक जनसपर्क प्रस्थापित करने का प्रयास करूँगा, बहुत योग्य है। ऐसे ही कार्यकर्ता स्थायी रूप से कार्य करते रहते हैं, जिन्हें अपने उद्योग-व्यवसाय में व्यस्त होकर भी अपने पवित्र कार्य करने के लिए पर्याप्त समय निकालना सभव होता है। कार्य का स्थैर्य, दृढता एव निरतर वृद्धि के लिए ऐसे ही स्वयसेवक अधिक आवश्यक होते हैं। पढकर सतोष हुआ कि श्री शरदराव लेले, जो उस क्षेत्र में प्रचारक के नाते कार्यरत हैं, निरतर प्रवास कर सपर्क करने हेतु लोगों से मिलकर कार्यवृद्धि कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप और श्री शरदराव– दोनों मिलकर सफलतापूर्वक कार्य करेंगे। (मूल मराठी)

७३२ व्याधिनिवारणार्थ ईश्वरोपासना

श्री श्रीकृष्णपत जोशी, देवरूख ३ सितबर, १९७२

आपके मन में ईश्वर की उपासना करने का विचार आया है। वैसा अवश्य करें। उस विचार को छोड न दें। एकाग्र चित्त से आराधना करें। केवल शरीर-स्वास्थ्य पुनरपि उत्तम हो, इतना ही सकल्प न कर जीवन शुद्ध, ध्येयसमर्पित, कर्मशील– इस प्रकार सफल होने की शक्ति प्राप्त हो, ऐसा मन में विचार रखकर परमेश्वर की प्रार्थना करें। वहाँ विशिष्ट उपासना बताई गई, तो वह करें तथा अन्य समय यही आराधना करते रहें। इस विषय में अधिक कुछ कहने का मेरा अधिकार नहीं है। (मूल मराठी)

७३३ सभी राष्ट्रबधु ही अपना परिवार

श्री दत्तोपत हर्वे, सातारा (महाराष्ट्र) ३ सितबर, १९७२

आपका कुशल समाचार पढने से असीम समाधान का अनुभव हो रहा है। मेरे 'घरवालों को' आपने नमस्कार प्रविष्ट किया है। आप और आपके सदृश, सपूर्ण देश में रहनेवाले असख्य बधु ही तो मेरे घर के 'पारिवारिक जन' हैं। वे ही इष्ट मित्र एव परिचित भी हैं। ऐसे लोग सघकार्य में अपने सहयोगी हों या किसी अन्य क्षेत्र में कार्यरत हों, 'सभी राष्ट्रबधु, यही अपना परिवार है' उन सभी को आपके द्वारा प्रविष्ट किया गया नमस्कार उनके प्रतिनिधि के नाते मुझे ही स्वीकार करना पड रहा है। (मूल मराठी)

७३४ गृहस्थ जीवन की लक्ष्यपूर्ति

श्री गिरिधारीलाल शास्त्री, मडी (हि प्र) ५ सितवर, १६७२

माननीय श्री वावासाहेब आप्टे जी का अकस्मात ही तिरोधान हो गया। सवको गहरा धक्का लगा है। देश-भर में उन्होंने कई वार भ्रमण किया, अगणित वधुओं का स्मरण रख उनसे आत्मीयता के अटूट सवध रखे, अत सर्वदूर शोक छा जाना अपेक्षित ही था। परतु ईश-कृपा से मन सयमित कर, उनके स्वर्गवास से जो रिक्तता आई है, उसे पूर्ण रूप से भर देने के लिए हम सव लोग अधिक परिश्रमपूर्वक कार्य में जुटे रहें, यही आवश्यक है। शोक करते रहने से क्या होगा?

आपने अपने जीवन की वात तथा मन की व्यथा भी लिखी है। जिस जीवन का आपने स्वीकार किया है, उसे भली-भाँति चलाना, सबको सुख देना, यह आपको करना ही है। स्वीकृत जीवन के प्रति अरुचि, विरोध या तिरस्कार करने से केवल दु ख और मन शाति का अभाव ही प्राप्त होगा। यह गृहस्थ-जीवन ध्येय नहीं है। उसका अपना महत्त्व है। इस कारण उसका योग्य परिपालन करना तथा उसे ही अपने जीवन की लक्ष्य पूर्ति में उत्तम साधन वनाना उचित होगा।

कार्य से प्रेरणा लेना चाहिए, परतु वह प्रेरणा मिलती नहीं। इसका कारण यही दिखता है कि आपने कार्य के दृश्य स्वरूप को ही सर्वस्व माना होगा। दृश्यस्वरूप तो अपने कार्य के अतरग की प्रेरणा से जो सोत्साह प्रयास होते हैं, उनसे वनता है। अतरग की प्रेरणा दुर्वल होते ही विगडता भी है। आप तो अतरग का अनुभव किए हुए हैं। अत आपसे कार्य के लिए बहुत अपेक्षाएँ हैं। उनको आप पूर्ण कर सकते हैं और उस कारण अत करण में समाधान भी प्राप्त कर सकते हैं।

७३५ अब केवल कार्य करना शेष है

श्री काशीनाथजी, वाराणसी ५ सितवर, १६७२

आपने प्रश्न उपस्थित कर स्वय उत्तर भी दे दिए हैं। अव केवल कार्य करना शेष है। किसी व्यक्ति या अवस्था के प्रति क्षोभ मन में आने न देते हुए मिलनसार भाव से लगन से शाखा का काम करना, उसमें नियमितता, उत्साह, अनुशासन भरना, व्यक्ति-व्यक्ति को कार्य में रस उत्पन्न

हो, इस प्रकार ध्येयदृष्टि, विचार, शुद्ध भाव जगाना और ऐसे शुद्ध भाव, विचार, ध्येय की साधना स्वय को भी निरतर करते रहना है, इसका स्मरण तीव्रता से रखना, यही करना शेष है। सो आप अपने सहकारियों को साथ लेकर करें, यह मेरी नम्र प्रार्थना है।

७३६ व्रतरूप कार्य मे अपने आपको विलीन करे

श्री हरिवल्लभ, धनबाद (बिहार) ६ सितबर, १६७२

प्रचारक जीवन पूर्ण कर आप एक मुद्रण कार्य चला रहे हैं, यह जानकारी प्राप्त हुई। उसमें मन को शाति न मिलना एक ध्येयनिष्ठ व्यक्ति के लिए स्वाभाविक है। तो भी यह कार्य करते-करते अपने सघकार्य में अधिकाधिक सलग्न रहने का प्रयत्न करने पर और इसमें कुछ प्रगति होती दिखाई देने पर मन का क्षोभ बहुत कुछ दूर हो सकेगा। कहीं 'एकात शात' स्थान में जाने से लाभ होना कठिन रहता है, क्योंकि अपना मन उसमें आनेवाले विचार-विकार भावनाएँ लेकर अपने साथ ही रहता है। वह 'एकात' को दु सह बना देता है। इसलिए अपने पवित्र जीवन व्रतरूप कार्य में अपने आपको विलीन कर देना— यही शाति दे सकेगा। सब प्रकार के व्यवधानों में भी मन प्रसन्न रह सकेगा।

(माननीय श्री बाबासाहब आप्टे के चले जाने से) आपके अत करण पर आघात होना अपेक्षित है। अपने सघ-प्रचारकों से उनका असीम स्नेह रहता था। आपके प्रति विशेष आत्मीयता तथा आशा उनमें विद्यमान थी। इस कारण आपको अत्यधिक दु ख होना आश्चर्य की बात नहीं है। परतु हम सब कार्य में उतरे हैं। हर्ष-शोकादि के लिए अपने पास समय नहीं है। आया हुआ आघात सहकर दु ख को अत करण में बद कर कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगे रहना, यही अपने लिए आवश्यक है। तदर्थ भगवत्कृपा की प्राप्ति हेतु उसके चरणों में नम्रभाव से, सपूर्ण समर्पण-वृत्ति से प्रार्थना कर हम कार्ययोग्य बने रहें।

७३७ गदगी भरे वातावरण को स्वच्छ निर्मल करे

मा नरसिहाचार जी, सघचालक, बगलौर १४ अक्तूबर, १६७२

उडुपि की परिषद् में पारित प्रस्तावों का कार्यान्वयन आप परिश्रमपूर्वक कर रहे हैं, इसे पढकर बहुत सतोष हुआ। पेजावर मठ के श्रद्धेय स्वामी जी हमारे मार्गदर्शक दिव्य प्रकाशपुज हैं। आपसे मिलने पर, और मैं शीघ्र

ही मिलने की आशा करता हूँ, इस कार्यान्वयन के बारे में विस्तृत बातचीत करेंगे।

इन दिनों में प्रत्येक सामान्य घटना को हरिजन-गैरहरिजन संघर्ष के रूप में, सभवत राजनीति से प्रेरित होकर, प्रस्तुत करने की वृत्ति और अपने समाज की एकता-एकात्मता में भेद-विद्वेष उभाड़ने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है। शीघ्र लाभ-प्राप्ति (जिसके बारे में भी संदेह है) के लिए सपूर्ण समाज-जीवन के स्थायी हित की बलि चढ़ाना यही आज दिखनेवाली प्रवृत्ति का दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है। अपना कार्य करते समय हमें इस विषैली प्रवृत्ति से बचकर इस गदगी भरे वातावरण को स्वच्छ, निर्मल करने के लिए जो भी हमसे बने, सभी प्रयास करने आवश्यक हैं।

(मूल अंग्रेजी)

७३८ ग्राम विकास

श्री हरिभाऊ मोहोलकर, पढरपुर — २ दिसबर, १९७२

साप्रत अवर्षण की परिस्थिति में जिन्हें थोड़ी-बहुत ही क्यों न हो, अनुकूलता है, उनको चाहिए कि असुविधा सहकर भी कम से कम एक क्षुधापीडित बधु की वे चिंता करें। आज की जैसी दैन्यावस्था के कारण शिक्षा प्राप्ति से वचित एक-एक बालक की एक-एक परिवार में व्यवस्था करें। अवर्षण-पीडितों के लिए यह प्रत्यक्ष सहयोग है। इसी के साथ कुँओं की निर्मिति करवाना, ग्राम-ग्राम में पेयजल की व्यवस्था करना– यह भी महत्त्व का कार्य है। इस प्रकार की व्यवस्था सभी ग्रामों में करना हमें सभव न होगा। इसलिए अपनी क्षमता के अनुरूप ग्रामों का चयन कर वहाँ कार्य करें। (मूल मराठी)

> जीवन के अन्य विषय जैसे– भोजन, वस्त्र, घर औषधि तथा अन्य भौतिक प्रयोजन कितने ही आवश्यक क्यो न हो गौण है। प्रथम एव सबसे महत्त्वपूर्ण पूर्वापेक्षा है अजेय सगठित समाज–जीवन की जिसके अभाव मे उच्चतम राष्ट्रीय सपन्नता भी अत्यल्प काल मे धूल मे मिल जाएगी।
>
> – श्री गुरुजी



॥ ॐ ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

दिनांक 2-4-72

आपका [illegible] स्नेहपूर्ण [illegible], [illegible] — आपकी [illegible]
[illegible] है। मेरा शरीर [illegible] ऐसा डॉक्टर
बंधुओं को [illegible] प्रतीत होता है। शरीर नश्वर तो है ही, [illegible]
जायगा। उसके [illegible] आदि [illegible] है।
[illegible] और उसके [illegible]
[illegible] और। [illegible]
उसके [illegible] आवश्यक नहीं है।

मैं तो [illegible] रहता हूँ
जिससे [illegible] किसी पर [illegible] न रहे।

मैं अभी [illegible] हूँ। [illegible]
[illegible] है। शेष ——

मा. स. गोळवलकर

(श्री गुरुजी के हस्ताक्षर में हिंदी पत्र)

अगरतला (त्रिपुरा) ३८६
अटक ५
अण्णाजी के एन ३३६
अग्रोल जगदीश ८४,१७७,२३१, २४४,३०१,३०२,३१८
अ भा वैद्यकीय सम्मेलन ७१
अभ्यंकर प्रल्हाद १००
अभ्यंकर भाऊराव १२४
अलीगढ १२३
अलूर ८४
असम २०४
अत्रे बाबुराव ३४८
आचार्य नंदकिशोर २५०
आचार्य रंगा ३६१
आचार्य श्रीधर १४३
आठवले बंडू ८६,६८
आठवले माधवराव ३८२
आठवले रामभाऊ १४,१३३
आठल्ये काकासाहब ३६२
आठल्ये मनोहर २७४
आठल्ये वासुदेवराव १५०
आडप श्रीराम ६२
आप्टे बाबासाहब ३६५,३६४,३६५
आप्टे बापूसाहब ७३
आपटे बाबूराव ४६
आपटे माधव २५
आपटे रघुनाथ ६६
आपटे वि गो ६
आप्टे विनायकराव ८,३१,१२६
आफले गोविंद स्वामी २७३
आर्गनायजर ७६
आर्तवाणी नारायण ३५५
आर्यवीर दल ६३
आर्य समाज ७८
आवटी भाऊसाहब २४६
इनामदार किसन १२७,१६६
इनामदार लक्ष्मणराव ११४,२०५, २३६ २४१ ३३५
इनामदार सुधाकरराव ७६
इलाहाबाद ४१
ईसरानी नानकराम १२५ १३७
उज्जैन १५२
उत्तरप्रदेश ४
उत्तुरकर १२६
उपाध्याय गौरीनंदन २५७
उल्लाल चक्रपाणी ४३
एकता मासिक ३७५
ओक वसंतराव २१ ४०,१०२
ओक वामनराव १५३,३३३
ओगले बाळू ५४
कडदे कृष्ण ११८
कवल नैन ८२

कटक १३६
कटककर बाबा २२४
कटककर भालचंद्र २१०
कटककर शरद २४८ ३५७,३७३
कदम अण्णासाहेब ३८०
कन्हैयालालजी २१६
कम्युनिस्ट २३६
कयाल बाल ६६
करंदीकर कृष्णराव ५६
करंदीकर भाऊसाहेब १७८
करंदीकर मुकुंदराव ३० २५६
करंदीकर विठ्ठलराव ७३
करथेलकर दामोदरपंत २३३ २६०
कवडेकर जयंत २६६
कराची ४०,४३
कर्णावती ११५
कर्नाटक ४५
कलसकर रामदास ८०
कल्याणकर दत्तोपंत १४८
कवटेकर जयंत २६६
कलणावत शरद ५४
कांग्रेस ७८ ८८ ११५ १३६ २३६
कावळे अशोक ३४१
कागलकर मु ना १५०
काझीपेठ ८४
कानगो कालिदास ३६०
कानपुर २६
कान्हे बाबूराव २१८
कानिटकर दादासाहेब ११२
कानिटकर विनायक २६८,३२१, ३३४,३५६
कामत राजीव १२
कामले अशोक ३२६
कारीगर भाऊ १०४
कालकर यादवराव २३८
काले नाथ १५,६३
काशीनाथ ३६४
कारे सदाशिवराव २३७ २३८
कुजिकोरन ३८६
कुटे वसंतराव १४१,१४४, २०४,२८४ ३३८
कुंवर श्रीपालसिंहजी ३५२
कुकडे अशोक ३३६
कुलकर्णी एकनाथ १०
कुलकर्णी के आर ३१२
कुलकर्णी गोविंदराव ३४३
कुलकर्णी दिगंबर जनार्दन २३६
कुलकर्णी प्रभाकरराव २६३
कुलकर्णी प्रल्हादपंत ११७
कुलकर्णी बाबूराव २८
कुलकर्णी भाऊराव २०
कुलकर्णी भालचंद्र विष्णु १७३
कुलकर्णी भास्करराव ३७७
कुलकर्णी माधव २५६,३८१ ३८४
कुलकर्णी व्यंकटेश ६८
कुलकर्णी शरद २८३

कुलकर्णी श्रीपाद	२३१
कुलाल रामशेट्टी शिवाजी	२३१
कुले त्र्यंबक	१५६
कुर्वे शकरराव	२७
कुसरे बाबा	२५२
कुसरे शरद	१७२,२०७
कृष्णन आर नवनीत	१३४
कृष्णन एम ए	२६६
कृष्णन जी	८६
कृष्णमूर्ति के	२६६
कृष्णलाल	२०७
कृष्णानंद स्वामी	२१३
केंद्रीय कार्यकारी मडल	१११
केतकर सुरेश	१४२ १७०, १६४ २६३ २८३
केलकर वसतराव	१३५,१५०,२६६
केलकर सदुभाऊ	३२४
केलबाईकर	३०६
केवलकृष्णजी	२६
केशवदेव	१२३
केसरसिंह	१३२
केसरी	७८
कैलाश जी	३३६
कोटावले डॉ	३६२
कोलते बाबाजी	२१७
कोली महादेवराव	७३
कोल्हटकर अच्युत	५६ २१४
कोल्हटकर गजाननराव	२०६ २२३
कोल्हटकर राजाभाऊ	३१७
खरवडीकर मा द	६४
खरे ग द	२८५
खरे भाऊसाहब	५२,८८
खत्री द्वारका प्रसादजी	२७
खाबेटे दिनकरराव	३६६
खाडिलकर डॉ व द	१५६
खाडिलकर बालासाहब	३६३
खानचदजी	३०,४३
खानोलकर एकनाथ	१२४
खासबारदार बाळासाहब	१६२ ३४०
खेरडे रमेश	२२०,३५४
खोना भाऊसाहेब	१८७
गजरिया दलीपकुमार	३८४
गाँधी जी	४७
गाडगीळ प्रभाकर	२०२
गाडगे वासुदेव	१४४ १८२
गारू ए रामाराव	१३०
गिरिजाशकर	१७१
गिलाणकर शरद	१२६ १८६,२२०
गीता	१०६
गुजीकर उत्तम	७५
गुजर बबन	१२२
गुजरात	११५
गुप्त उत्सवलाल	२१४
गुप्त नरोत्तमलाल	११६
गुप्त मदनगोपाल	१०५
गुप्त वीरेंद्र	२५२

गुप्त संतोषकुमार ३५०
गुप्त हंसराजजी ११३
गुप्ता छेदीलाल २४६
गुप्ता बाबूराम १८०
गुरुचरणदास ३५४
गुरव गणपतराव ३४६
गुरुनाथ १६
गुरुराजराव सी आर ३७१
गोखले अनंत १८२
गोखले गजाननराव १०४
गोखले बालासाहब २१६
गोपाल ३८७
गोपाल आर १८४
गोपालन आर ३०१
गोरवाडकर दादासाहब २७१ ३१३
गोरवाडकर मोहन ३७१
गोरे विनायकराव १८
गोरेगाँवकर अण्णासाहब १६ २५
गोवा १०३
गोविंद ३८
गोस्वामी राधिकामोहन १७६,२२५, ३३० ३६२
गोस्वामी सुखदेव २८४
गौड हरिराम ३७५
घटाटे बाबासाहब १८८
घनाते मारोतीराव २२६
घाटपांडे दिगंबर ३०३
घाडगे नामदेव २७६
घायाल सुमंत ३३१
घारपुरे बापूराव ३१५
घुमाल श्रीनिवासराव ३३०
घोष प्रदीप १८८
चतुर्वेदी लक्ष्मीकांत २८१
चंद्रगुप्त जी १३६
चमन स्वरूप ३१६
चाडक रा कृ ५६
चापेकर विलास २६६ २८०
चारू बाबू ३८
चिचाळकर तात्या १३
चीन २७६
चेट्टियार रामचंद्र २३७
चेट्टी श्रीरामुलु टी जी २८२,२६४
चेतनसिंह सरदार ६१
चेन्नै १२ १३ ४५ ६६
चौथाईवाले शरद ३०६
चौथाईवाले शशिकांत २२५
चौधरी मोरू १३
चौधरी लिंगय्या जी ११७ ३६१
जगदीश जी २६१
जगदीशस्वरूप जी २६६
जनसंघ ८८,३१५ ३१६,३७४
जबलपुर ८२,१५७
जम्मू १८०
जयदेव जी २०१
जयप्रकाश जी १२३
जवाहरलाल जी बिजनौर १६८

जावरकर गुरुनाथ १६०
जॉन डाक्टर १५२
जावडेकर केशवराव ३२०
जुमडे त्र्यंवक २२८
जैन निर्मलचंद्र १५७
जैन रतनलाल २३६
जोग अप्पा १२०
जोग मार्तण्डराव १२०
जोगळेकर केशवराव ३४,२६२
जोगळेकर शिवराम २२२
जोशी अप्पाजी १०६,२१६
जोशी उमादत्त ३८७
जोशी काकासाहव १३५
जोशी गजानन १६६ २६७
जोशी दत्ताजी ३३
जोशी नरसिंह वालकृष्ण ६५
जोशी प्र पु (भैया) १५२
जोशी वङ्कू १३८
जोशी भाऊराव १६
जोशी मधुकरराव ३४२
जोशी मनोहर २५८
जोशी म भा १४६
जोशी माधवराव १३०
जोशी मुरली मनोहर ३१५
जोशी यादवराव ६ २६६,३०१
जोशी लक्ष्मण २०७
जोशी विठ्ठलराव ४२
जोशी शामराव २६०
जोशी श्रीकृष्णपंत ३६३
जोशी श्रीकांत २१२,२८१,
३१६,३७६,३८६
जोशी श्रीराम ७२
जोशी स वा १६५,१६६
१७३,२४६,२८२
जोशी सुधाकर १५५,३०६
ज्याई प्रीतम २११
झा रमाकांत १६१
झिंझर्डे भास्कर १२१
टिकारे नारायणराव १७३ ३६२
टेंभेकर सुदर्शन ३०४
टेकचंद ५१
ठाकरे कुशाभाऊ १८०
ठाकुर रजनीकांत चंदूलाल १५५
ठाकुर रामसिंह ८३,६८,२६१
ठेंगडी दत्तोपंत १३,३६
डवीर अण्णासाहव ३१८
डागा डॉ रा ग ८५
डिग्रजकर आनंदमूर्ति १६२
डिडोलकर दत्ताजी २३७
डिब्रुगढ असम ८३
डेग्वेकर राजाभाऊ १६३
डोंगरे वावूराव २६६
ढेकिश जुली (असम)
ढोवळे नाना ६४ २५७ ३३४
तमिलनाडु ४१
तारकर सुधाकर १४६

तिरुच्ची (तामिलनाडु)	१३	दिल्ली	४१,४६,११३
तिरुनेलवेली	१३	द्विवेदी प शिवकुमार	१२८
तिलक अच्युतराव	२८८	दीवान खडेराव	१६०
तिलकराज जी	२५३	दीवानी जे पी	५५
तिवारी परशुराम	१०६,१५३	दीक्षित कालीशरण	१५७
तिवारी सतपाल	२०६	दीक्षित बालासाहब	३६५
तुवडे भीमराव	८६	देव आबासाहब	३६
तुकाराम भीमण्णा	२२६	देवकर गणेशपत	३४
तुपटे	५४	देवकुळे अनतराव	६३,१६४,३६७
तुराणकर माणिकराव	२२७	देवकुळे रवींद्र	३४२
तुलस्यान बालाप्रसाद	२५२	देवकुळे वसतराव	१६ ३२
तैलग तात्या	१४	देव धीरेंद्रनाथ	२२६
तैलग बाबूराव	१३	देवपुजारी	५३
तैलग शिवराय १०६,२५४,२६६ ३६१		देव मधुकर	२६२,२७८
थोरात मधुकर	२६८	देव विश्वनाथ	२५६
दप्तरदार शकरराव	१४७ ३३६	देवरस भाऊराव	२५५ ३२१
दफ्तरीजी	४३	देवरस भास्करराव	३७
दवे दादसाहब	२८३	देवरस मनोहर	३७
दशमेश का जयती अक	५८	देव शरद	१२२
दक्षिणामूर्ति ए	५६,२६७	देशपाडे कृष्णराव	२४५
दाडेकर गोपाल	२३	देशपाडे गोपाल	२६
दाडेकर दादासाहब	६२	देशपाडे डॉ	१६२
दाडेकर श्रीकृष्ण	१६७	देशपाडे दत्ता	६०
दाणी भैयासाहब	२१	देशपाडे प्रभाकर	६४
दातार दिनकर	१४०	देशपाडे बाबा	२६
दाते दामोदर माधव	३४७	देशपाडे राजा	४४
दामले भास्कर	६६	देशपाडे वेंकटराव	२४
दासबोध	६७	देशपाडे सुधाकर	८१ १७६,१६६

देशमुख अनत २३५
देशमुख माधवराव २५६
देसाई गजानन १३६,१५२
दैनिक भारत ९८
दोशी डाक्टर ५७
द्रविड राजेश्वरशास्त्री २५६
धनागरे नारायणराव २७६
धवडगाँव भाऊसाहब ३८६
धर्मवीर ६
धाडगे नामदेव १६७
धीरेश बहादुर ३८
धनुसु २०१
नदा वेदप्रकाश २०६
नद हरिहर ३५१
नरसिहाचार ३६५
नरेंद्रजीतसिह ६३,२४३,२५२,२५५
नसीबलाल जी ३६६
नाईक बालकृष्ण २७१
नाईक विनायक १०३
नागपुर ५ ८,१३,१३, २६,३८,४६,१५७,
नागपुर विश्वविद्यालय १६२
नागले पाडुरग १२६
नाडकर्णी दुर्गानद २४०,२४३,३५६
नाडकर्णी नामधारक २८७
नातू माधव ३३
नारग गोकुलचद ५
नारायणन पी २६२ ३२८
नासिक ६४
नाहर सौभाग्यचद्र ३२६
नेने गजा १८६
नेने राजाभाऊ ७६
नेल्लूर १३
नेहरू जवाहरलाल ४६,१११ ११३,१५१,२७६
न्यू टाईम्स ३१
पचनद ५
पचवाघ सुधाकर ६०
पजाब ४,५ ४०,४७,५५,८३
पजाब सहायता कोष ४१
पड्या पी एम ३१६
पटवधर्न अनन्तराव ११
पटवर्धन किशाभाऊ ६२
पटवर्धन दत्तोपत १६३
पटवर्धन मधुकर २३४
पटेल सरदार ५७
पतकी राजाराम २६१ ३७५
पतकी विठ्ठलराव १७
पद्मनाभन ६५
परब सगुण ३६३
परमार्थ दादाराव १०,१२,१३ १५,१८, ४८
परमानद माधवराव २२३
परमेश्वरन पी ७८,२८०,३६४
पराजपे गणेशपत ३२०
पलसोकर मधुकरराव ३२७

पवार दशरथ हरि २३०
पाचजन्य ६३
पाडे दत्ता २४
पाडे मनोहर २३
पाटणकर प्रभाकर १५८
पाटील नेमागोंजू १४
पाटील सखाराम १७०
पातुरकर ७
पाध्ये बाबाजी ३५
पापन्ना डी ११६
पारेख रसिकभाई ५७
पालकर नाना १३८
पालधीकर बाबूराव २७५,३०४
पालवणकर बाल ६७,१८१,२५०
पालवणकर पु न १५४
पिंगले मोरोपत ६८
पिल्ले गोपालकृष्ण १३४
पुरकायस्थ कवींद्र २३०
पुरी गुन्जरमल जी २५७
पूर्णपात्री गोविंदराव ३६८
पेंडसे अप्पा ४४ ११६,२११,२२२
पेंडसे वि वि २७८
पेंढारकर भालजी ५२,६६ १६५,२००
पेंढारकर विठोबा ५५
प्रदीप पत्रिका २११
प्रयाग एस एच १६
प्रबोध बाबू १५१
प्रभाकर स्वदेशकुमार २५६
प्रभु २५
प्रभुदेसाई रामभाऊ २७२
प्राणी दादासाहब १६४
प्रेमचद जी ३१४,३७१
फडके काकासाहब २७
फडके सुधीर १०६,२७३
बगलौर १४,३१
बगाल ४७ ५५
बडजाते चिरजीलाल २०३
बदलानी नद ४२,३५३
बद्रीप्रसाद जी १५६,१६२
बनर्जी पी के २४६
बनर्जी प्रबोध बाबू १७१
बरदलै ललितचद्र १६५
बरुआ कामाख्या राम १५१
बरुआ नवकात ३५१
बर्वे बा गो ७५
बसु अनतबधु ३१६
बसु कालीदास १८६
बसु सत्यनारायण १६७
बाकरे गोपाल ३४,१०४ १३१,१६६
बागडे रावसाहब ८
बागवडे काशीनाथ २४७
बागुल ग पा १८५
बापट गजानन २६४ ३३५
बापट तात्या २४०
बापट माधवराव ७६
बापट हनुमत ३५६

बाराहाते विजय ३०६
बालन एम पी ३८६
बिलासपुर (म प्र) ७५
बिहार ४७
बीजापुर ३३
बुधकर नानासाहब २५६
बेरी प्यारेलाल जी ३७८
बेलगाँव २३
बोडाया दशरथसिंह २७४
बोरकर बालाजीपत ३५८
बोरडकर प्रभाकर २३३
बोवरिल ७२
बोस सुभाषचद्र ३१०
ब्रह्मदेवजी १०७ १२३,३१२
भट्टाचार्य राजकुमार २०४
भट बसतराव २४१
भराली अरुणचद्र २६५
भागरे बाळासाहब २०८
भावेरे अण्णासाहब २५८ २६७
भाई महावीर ४६
भाई सेठ दयाल जी ३६
भागवत कुमारिल ६६,६१
भागवत डाक्टर २०२
भागवत मधुकरराव १६
भाग्यनगर ११७
भातखडे राजा १८८,२६२
भारत कुष्ट निवारण सघ २३८
भार्गव प्रकाशदत्त ३०१
भावे श्री म ३२६
भावे विनोबा १४१
भास्कर ए वी ३७८
भास्करराव २६६
भिडे बाबा ३६,४०,४४,
६८ १६३,३६३
भिडे सभाजीराव ३०७
भिलाई १६१
भोंसले राजाराम ६५
भोसले राजू १३२ ३५८
भोई अण्णा २२३
भोपाल (मध्यप्रदेश) १५८
भोलाबाबू १६४
मणिलाल जी ८७
मनोहर जी ३८
मराठे गो ह १५४
मराठे भास्करराव ३४१
मलकानी के आर ६,२७४
मलबार १८
मल्होत्रा सहदेव १०२
मश्रुवाला ५२
मसुलिपट्टम ११७
महाजन पदमाकर ६२
महाजन मार्तंडराव ३८५
महाजनी भालचद २६४
महादेवन आई ७७
महाराज कुमार सहदेव ३४३
महावीर भगवान २४०

महिपालसिह	२३६	मेहरे हेमराज	२६०
महीपसिह	५८	मेहरोत्रा चद्रकिशोर	३४८
माडे वापू	३६१	मोघे बापूराव	८४,१४६,३२४
माटेगावकर रघुवीर	५८	मोडक चि का	३३८
माधवन	२१०	मोडक बाबूसाहब	६२
मानेकर कृष्णा	१७५	मोडक भाऊसाहब	१४
मारावार वासुदेव	१६६	मोतलग श्रीकृष्ण	३३७
मालशे मधुकरराव	१००,२६५,३११	मोरे त्र्यबकराव	२७७
मालिगॉव-पडु-असम		मोहतकर जनार्दन	१८३
माहेश्वरी पुसाराम	१४२,२२६	मोहनलाल	३८
मिरचे गुलाबराव	१८३	मोहरील कृष्णराव	१२४
मिरासदार हरि	३४०	मोहोळकर हरिभाऊ	३६६
मिश्र काशीनाथ	३८	म्हसकर दत्तोपत६१,२४२,२८८	३३०
मिश्र प्रियनाथ	२४१	म्हालगी रामभाऊ	६२
मिश्र रघुनाथ	३०८	म्हालुगे जि कोल्हापुर	
मिस्किन काशीनाथ	२४५	यशमगल जी	३७४
मुबई	२५ ३२,३६	यादव नारदप्रसाद	७५
मुखोपाध्याय विपुलचद्र	१६८	येवला भानुदास	२६५
मुटाल भाऊराव	२२७	रगनाथ	१६३
मुटाल विष्णुपत	१६८	रघुवीर डाक्टर	७८
मुदिलयार यादवराव	२६०	रघुवीर प्रसाद	१५६
मुने काकासाहब	३४५ ३५६,३७६	रतनचद हीराचदानी सेठ	११
मुले भा वा	७१ १८६	रमाकात	१४५
मुले माधवराव	१८० २४२ ३१६	राघोबा पेशवा	५
मुने त्र्यबक	२१०	राजकोट	५७
मेंगी ओमप्रकाश जी	३४६	राजगीर	६
मेनन एन गोविंद	३६१	राजगोपालन टी आर	१८१
मेहता सुभाष	३४६	राजगोपालाचारी वी १२ ४१ ७८ १११	

११३,१५२,२१०

राजपाल ४३

राजेंद्रसिंह (रज्जू भैया) ६८ ३१६,

३२०,३४४

राणा बलभद्रसिंह १४३

रानडे एकनाथ २६२

रानडे जनार्दन १०२

रानडे जनुभाऊ २५१

रामगोपाल ७१

रामदास रवींद्र वामन १७८,२८०

रामदासी मुकुंद ३६०

रामनाथ जी ३४५

रामप्रकाश २१६

रामप्रसाद ६६

रामरावजी ए ३०६,३८३

रामशरण ३१०

राम सजीवनसिंह २८५

रामेश्वर दयाल ४८

रामेश्वर प्रसाद ५१

रारावीकर रघु २६३

राव सपतगिरी ३१

राष्ट्र जागृति मडल २११

राहुरी (महाराष्ट्र)

रिसवुड पुरुषोत्तम १३०

रिसवुड डॉ सुरेश ३२३,३२८ ३७४

रेशमबाग ६५

रोहतक (हरियाणा) १११,११३

ललवानी सरदारमल १५८

लक्ष्मीनारायण १०८

लक्ष्मीनारायण एस ७०

लक्ष्मीप्रपन्न जी २२६

लक्ष्मीलाल १४७

लाखे प्रभाकर ६४

लाटकर श्रीपादराव १६३

लिमये अविनाश हरि २२१

लिमये काशीनाथपत ६ २२ ४६ १३५

१३७,१६६,१७७,

२८६ ३१८ ३२२,३७२

लिमये मधु १४५ १७१

१८५ २०३ २५४

लिमये य व ३११

लिमये सुरेश ३६६ ३६०

लेले डॉ ग स १००,२२७ ३०० ३०५

लेले त्र्य ग १५४

लोकगारीवार हरि २४८ ३००

लोकमान्य जेटले ४०

लोहोकरे यशवतराव २८

वझे भगवान २१२

वर्तक मनोहर १६२

वसत कुमार ३८६

वालिबे अरुण ३३३

विंध्याचल १७१

विजय साप्ताहिक ६१

विजयकुमार ३८६

विद्वास सुधाकरराव ३७३

विन कार्निस ७२

विश्वनाथन ३८८
विश्व हिंदू परिषद् ३२० ३७६
विश्वासराव ३५७
विष्णुमोहन १२८
वेंकटराम आर ७४
वेणुगोपाल ८१,८७ १०३
वैकुठन एस ५७
वैद्य अरुण ३६०
वैद्य महादेव बुवा १३६
वैद्य माधव ११८
शकरराव ३१
शर्मा ओमप्रकाश ३०८
शर्मा गिरिराज १७६ २५१
शर्मा चद्रशेखर ३२५
शर्मा दुर्गेश्वर २३२
शर्मा देवेन्द्र १४८
शर्मा निर्मलेश्वर २३२
शर्मा रघुवीरचरण ३१४
शर्मा लेखराज ८६,१४७
शर्मा वेदप्रकाशजी ३१०
शर्मा हरदेव २६८
शहाजहापुर ६३
शास्त्री गिरिधारीलाल ३६४
शास्त्री रामनारायण २७७ ३८०
शिंदे सपत विट्ठल ६० २७७
शिवस्वरूपानद स्वामी २१५
शिवाजी ११८
शुक्ल जगदयाप्रसाद २२४
शुक्ल नानासाहब ३३७
शुक्ल भाऊसाहब ११
शुक्ल माधवरावजी २६
शुक्ल रामनाथ जी २२१
शुशाग (पूर्व बगाल) ३८
शेंडे हृषीकेश २४६
शेवडे र द ६६
शेषगिरि वी २७०
शेषगिरिराव ८५
शेषाद्रि हो वे ११६,२६०
श्रॉफ रमणलाल १८७
श्री दत्त आरोग्य केंद्र १५६
श्रीनिवासन आर ३६,२३४,२५१
श्रीराममूर्ति के २६७
सयुक्त प्रात ४७
सक्सेना कृष्णस्वरूप २१६
सक्रवार सुदरसिंह ८०
सगर सोमभाई ३७०
सच्चिदानद १५३
सत्यपाल १३१
सद्‌गोपाल ३६
सदाशिवराव के १०,४५,६६
सप्रे य द २२६
सप्तर्षि नानासाहब २०८
सरनामसिंह ७७
सराफ जगदीशप्रसाद ३५०
सराफ भैयालाल २४
सराफ श्रीकृष्णपत ३२७

सवाईमलजी १५८
सहस्रबुद्धे मनोहरराव ३३२
सहस्रभोजनी वचन ३८१
साखलकर अरविंद ३१२
साठे अरुण ३३२,३५५
साठे बाबूराव २६४
साठे बालासाहब १७४,१८३
साठे राजाभाऊ २५८
साठे राम १८४
साठे वि प २८६
सातर्डेकर भालचन्द्र १३६,१६८
सातवलेकर १३५,१५४,१६१
२२८,२५६,२७५
साम्यवाद का सच्चा स्वरूप १८०
सालोडकर कालिदास १०१
सावंत कृष्णा गणपत ३२३
सावंतवाडी १००
सावईकर बालकृष्ण ३८८
सावरकर वि दा १२४
सावरगाँवकर नारायण २१३
सावरगाँवकर राजाभाऊ २१३,२१५
साहू फूलसिंह ८२
सिंहल अशोक ३०२
सिंध ३८ ४० ५५
सिंहदेव विजयभूषण २७६
सिकंदराबाद ८४
सिन्हा परिमल बाबू २२
सिन्हा हिम्मतसिंह ३५३
सुदर्शन जी ३१३
सूर्यनारायण राव ३७०
सेनगुप्ता श्यामल २६६
सेन साधनचंद्र १४५,३५५
सोनी वंशीलाल ७६,१४७,
१७५,२८७ ३८५
सोनी मोहनलाल ३७८
सोमलवार सुधाकर २७३
सोहनसिंह जी ३८३
सौराष्ट्र ५७
स्मृति-मंदिर २१४
स्वदेश ६३
हपी वकील १२६
हकीमभाई २१४
हरकरे बाळासाहब ५०
हरदास बालशास्त्री १५३
हरि आर ३४६
हरिचंद्र ७०
हरिबाबू १३६
हरिवल्लभ ३६५
हरिश्चंद्र १५३
हरिहरसिंह मर्दराज ८६ १२३
हर्षे दत्तोपंत २७०,३६३
हिंदुस्थान समाचार ११३
हिंदू महासभा ८८,१२४,३१५
हिंदू विश्व विद्यालय १५१
हिरवे सदाशिव ६०
हीरेन बाबू १६१

हुवली (कर्नाटक) ११८
हेगडे प्रभाकरराव ३६६
हेडगेवार आवाजी ५
हेडगेवार जी ५ ६ ७,८,६,११,
१२ ७३ ८३ ८७,६५,
१०६,१३५ १६४,१७४,
२०२ ३५८,३६६,३६१
हेळेकर आवासाहव ३२
हैदरावाद (सिध) ३८,४०
होतचदजी ४३
त्रावणकोर १८
त्रिवेंद्रम (केरल) १३
त्रिवेदी श्रीकृष्ण १४१
ज्ञानेश्वर दयाल ३२४

फ फ फ

खड ७ पत्राचार

सतवृद, विदेशस्थ बधु, नेतागण, अन्य मतानुयायी, माता, भगिनि, प्रबुद्ध जन तथा सामाजिक सस्थाओ के कार्यकर्ताओ को लिखे पत्र।

खड ८ पत्र सवाद

स्वयसेवको व कार्यकर्ताओ को लिखे पत्र।

खड ९ भेटवार्ता

प्रश्नोत्तर, वार्तालाप, प्रमुख लोगो से वार्तालाप। पत्रकारो के सम्मुख भाषण। महत्त्वपूर्ण भेट तथा अनोपचारिक चर्चाएँ।

खड १० सघर्ष के प्रवाह मे

प्रतिबध के समय सरकार से हुआ पत्राचार। उस समय दिये गए वक्तव्य। आभार प्रदर्शन। बाद के अभिनदन समारोह। भारत–चीन व भारत–पाकिस्तान युद्ध के समय की जनसभाएँ, बैठके, शिविर पत्रकार वार्ता तथा वक्तव्य।

खड ११ चितन सुधा

सपादित विचार नवनीत

खड १२ स्मरणाजलि

श्री गुरुजी के बारे मे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो, ससद व विधानसभा तथा समाचार–पत्रो द्वारा श्रद्धाजलि।